MRS DALLOWAY

VIRGINIA WOOLF

Zenith Whispering Pines Publishers

Table of Contents

श्रीमती डैलोवे
वूल्फ के बारे में :
श्रीमती डैलोवे

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[redacted] [redacted]

[redacted] [redacted]

[redacted]: 1925

[redacted](s): [redacted], [redacted]

वूल्फ के बारे में:

वर्जीनिया वुल्फ (25 जनवरी, 1882 - 28 मार्च, 1941) एक अंग्रेजी उपन्यासकार और निबंधकार थीं, जिन्हें बीसवीं शताब्दी की अग्रणी आधुनिकतावादी साहित्यिक हस्तियों में से एक माना जाता है। दोनों विश्वयुद्धों के बीच के समय में, वुल्फ लंदन के साहित्यिक समाज में एक महत्वपूर्ण हस्ती थीं और ब्लूम्सबरी समूह की सदस्य थीं। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाओं में उपन्यास 'मिसेज डैलोवे' (1925), 'टू द लाइटहाउस' (1927) और 'ऑरलैंडो' (1928) और निबंध-पत्र 'ए रूम ऑफ वन ओन' (1929) शामिल हैं, जिसमें उनका प्रसिद्ध कथन है, "एक महिला को कथा लेखन के लिए धन और अपना एक कमरा होना चाहिए"।
फीडबुक्स वूल्फ पर भी उपलब्ध:
• प्रकाशस्तंभ की ओर (1927)
• एक प्रेतवाधित घर (1921)
• द वेव्स (1931)
• ऑरलैंडो (1928)
• बॉन्ड स्ट्रीट में श्रीमती डैलोवे (1923)
• अधिनियमों के बीच (1941)
• डचेस और जौहरी (1938)
• नई पोशाक (1927)
• दीवार पर निशान (1917)
• अपना एक कमरा (1929)

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[

एक खास खामोशी या गंभीरता महसूस होती है; एक अवर्णनीय ठहराव; एक अनिश्चितता (लेकिन शायद यह उसका दिल था, जो इन्फ्लूएंजा से प्रभावित था, जैसा कि लोगों ने कहा था) बिग बेन की घंटी बजने से पहले। लो! वो ज़ोर से बज उठा। पहले एक चेतावनी, संगीतमय; फिर घंटा, अटल। सीसे के गोले हवा में घुल गए। हम कितने मूर्ख हैं, उसने विक्टोरिया स्ट्रीट पार करते हुए सोचा। भगवान ही जाने क्यों कोई इसे इतना प्यार करता है, कैसे देखता है, इसे गढ़ता है, अपने चारों ओर बनाता है, गिराता है, हर पल इसे नए सिरे से बनाता है; लेकिन सबसे उदास, सबसे निराश लोग जो दरवाज़ों पर बैठे रहते हैं (उनका पतन तो शराब से ही हुआ) भी ऐसा ही करते हैं; उसे पूरा यकीन था कि संसद के अधिनियमों से उनका निपटारा नहीं हो सकता, इसी कारण से: वे जीवन से प्यार करते हैं। लोगों की आँखों में, झूलते, चलते और घिसटते हुए; शोरगुल और कोलाहल में; गाड़ियाँ, मोटरकारें, बसें, वैनें, सैंडविच बेचने वाले इधर-उधर घूमते और झूमते हुए; ब्रास बैंड; बैरल ऑर्गन; विजय की ध्वनि और झंकार में और ऊपर से उड़ते किसी हवाई जहाज के अजीबोगरीब ऊंचे गायन में वह सब कुछ था जो उसे प्रिय था; जीवन; लंदन; जून का यह क्षण।
क्योंकि जून का मध्य था। युद्ध समाप्त हो चुका था, सिवाय श्रीमती फॉक्सक्रॉफ्ट जैसी किसी के, जो कल रात दूतावास में बहुत दुखी थीं क्योंकि वह प्यारा लड़का मारा गया था और अब पुराना मनोर हाउस उनके चचेरे भाई को मिलना था; या लेडी बेक्सबोरो, जिन्होंने कहा जाता है कि अपने हाथ में टेलीग्राम लिए एक बाज़ार खोला था, जिसमें लिखा था कि उनका प्रिय जॉन मारा गया; लेकिन यह सब खत्म हो चुका था; ईश्वर का शुक्र है—खत्म हो गया था। जून का महीना था। राजा और रानी महल में थे। और हर जगह, हालांकि अभी बहुत सुबह थी, चहल-पहल थी, सरपट दौड़ते टट्टुओं की आवाज़ें थीं, क्रिकेट के बल्ले बज रहे थे; लॉर्ड्स, एस्कॉट, रैनेलाघ और बाकी सब जगह। सुबह की धूसर-नीली हवा के कोमल जाल में लिपटे हुए, जो दिन ढलने के साथ-साथ खुलती जाती, और उछलते- कूदते टट्टुओं को उनके लॉन और मैदानों पर उतार देती, जिनके अगले पैर ज़मीन पर पड़ते ही उछल पड़ते, नाचते हुए नौजवानों और पारदर्शी मलमल के वस्त्र पहने हँसती हुई लड़कियों को, जो रात भर नाचने के बाद भी अपने अजीब ऊनी कुत्तों को दौड़ाने ले जा रही थीं; और अभी भी, इस समय, समझदार बूढ़ी विधवाएँ रहस्यमयी कामों के लिए अपनी मोटर कारों में निकल रही थीं; और दुकानदार अपनी खिड़कियों में नकली और हीरे-जवाहरात, अठारहवीं सदी की

सेटिंग में बने अपने सुंदर पुराने समुद्री हरे ब्रोच से अमेरिकियों को लुभाने के लिए बेचैन थे (लेकिन एलिजाबेथ के लिए जल्दबाजी में चीजें नहीं खरीदनी चाहिए, मितव्ययी रहना चाहिए), और वह भी, इसे एक अजीब और निष्ठापूर्ण जुनून के साथ प्यार करती हुई, इसका हिस्सा होने के नाते, क्योंकि उसके लोग कभी जॉर्ज के समय में दरबारी थे, वह भी उसी रात रोशनी और प्रकाश फैलाने के लिए, अपनी पार्टी देने के लिए जा रही थी। लेकिन पार्क में प्रवेश करते ही कितना अजीब लगा, सन्नाटा; धुंध; भिनभिनाहट; धीरे-धीरे तैरती खुश बत्तखें; थैली वाले पक्षियों का लड़खड़ाते चलना; और कौन था जो सरकारी इमारतों की ओर पीठ करके, बिल्कुल उपयुक्त ढंग से, शाही प्रतीक चिन्ह से मुहर लगी एक संदेश पेटी लिए आ रहा था, और कोई नहीं बल्कि ह्यू व्हिटब्रेड; उसका पुराना दोस्त ह्यू—प्रशंसनीय ह्यू!
"सुप्रभात, क्लेरिसा!" ह्यू ने कुछ ज़्यादा ही भावुक होकर कहा, क्योंकि वे बचपन से एक-दूसरे को जानते थे। "आप कहाँ जा रही हैं?"
श्रीमती डैलोवे ने कहा, "मुझे लंदन में घूमना बहुत पसंद है। सच में, यह ग्रामीण इलाकों में घूमने से कहीं बेहतर है।"
वे दुर्भाग्यवश, डॉक्टर से मिलने आए थे। दूसरे लोग फ़िल्में देखने आते हैं; ओपेरा देखने जाते हैं; अपनी बेटियों को घुमाने ले जाते हैं; लेकिन व्हिटब्रेड परिवार "डॉक्टर से मिलने" आया था। क्लैरिसा अनगिनत बार एवलिन व्हिटब्रेड से नर्सिंग होम में मिलने गई थी। क्या एवलिन फिर से बीमार थीं? ह्यूग ने अपने सलीके से ढके, मर्दाना, बेहद आकर्षक और सुगठित शरीर को थोड़ा फुलाते हुए (वह लगभग हमेशा ज़रूरत से ज़्यादा सजे-धजे रहते थे, लेकिन शायद दरबार में अपनी छोटी-मोटी नौकरी के कारण ऐसा करना ज़रूरी था) कहा कि एवलिन की तबीयत कुछ ठीक नहीं है। उन्होंने इशारा किया कि उनकी पत्नी को कोई अंदरूनी बीमारी है, ज़्यादा गंभीर नहीं, जिसे क्लैरिसा डैलोवे, एक पुरानी दोस्त होने के नाते, बिना ज़्यादा स्पष्टीकरण मांगे ही समझ जाएगी। हाँ, बिल्कुल, वह समझ गई थी; कितनी परेशानी वाली बात है! और साथ ही साथ अपनी टोपी को लेकर बहुत सजग और अजीब तरह से सचेत भी थी। क्या यह टोपी सुबह-सुबह के लिए ठीक नहीं थी? ह्यू हमेशा उसे ऐसा महसूस कराता था, जैसे वह हड़बड़ी में अपनी टोपी को बड़े ही दिखावटी अंदाज़ में उठाकर उसे यकीन दिलाता था कि वह अठारह साल की लड़की हो सकती है, और बेशक वह आज रात उसकी पार्टी में आ रहा है, एवलिन ने पूरी ज़िद की, बस महल में पार्टी के बाद उसे थोड़ी देर हो सकती

है जहाँ उसे जिम के लड़कों में से एक को ले जाना है—वह हमेशा ह्यू के सामने खुद को थोड़ा कमज़ोर महसूस करती थी; स्कूली लड़की जैसी; लेकिन उससे लगाव भी था, कुछ हद तक इसलिए क्योंकि वह उसे हमेशा से जानती थी, लेकिन वह उसे अपने तरीके से एक अच्छा इंसान मानती थी, हालाँकि रिचर्ड उसके कारण लगभग पागल हो गया था, और जहाँ तक पीटर वॉल्श की बात है, उसने आज तक उसे पसंद करने के लिए माफ नहीं किया था।
उसे बोरटन के सारे दृश्य याद आ रहे थे—पीटर गुस्से से आग बबूला था; ह्यू, बेशक, किसी भी तरह से उसका मुकाबला नहीं कर सकता था, लेकिन फिर भी उतना मूर्ख नहीं था जितना पीटर ने बताया था; वह कोई मामूली नाई का औजार नहीं था। जब उसकी बूढ़ी माँ चाहती थी कि वह शिकार करना छोड़ दे या उसे बाथ ले जाए, तो उसने बिना कुछ कहे मान लिया; वह सचमुच निस्वार्थ था, और जहाँ तक पीटर के इस बयान की बात है कि उसके पास न दिल है, न दिमाग, बस एक अंग्रेज सज्जन के तौर-तरीके और शिष्टाचार हैं, तो यह तो उसके प्यारे पीटर का सबसे बुरा रूप था; और वह असहनीय हो सकता था; वह असंभव भी हो सकता था; लेकिन ऐसी सुबह में उसके साथ चलना कितना प्यारा लगता था।
(जून के महीने में पेड़ों के सारे पत्ते निकल आए थे। पिमलिको की माताएं अपने बच्चों को दूध पिला रही थीं। नौसेना से नौसेना को संदेश भेजे जा रहे थे। आर्लिंगटन स्ट्रीट और पिकाडिली पार्क की हवा को झकझोरते हुए, उस दिव्य जीवंतता की लहरों पर उसके पत्तों को तेज़ी से, चमकते हुए ऊपर उठा रहे थे, जिसे क्लैरिसा बहुत पसंद करती थी। नाचना, घुड़सवारी करना, उसे ये सब बहुत प्रिय था।)
क्योंकि हो सकता है कि वो और पीटर सैकड़ों वर्षों तक अलग रहें; उसने कभी कोई पत्र नहीं लिखा और उसके पत्र सूखी टहनियों जैसे थे; लेकिन अचानक उसके मन में यह विचार आता, अगर वो अब मेरे साथ होता तो क्या कहता?—कुछ दिन, कुछ दृश्य उसे शांत भाव से, पुरानी कड़वाहट के बिना, उसके पास वापस ले आते; जो शायद लोगों की परवाह करने का इनाम था; एक सुहावनी सुबह सेंट जेम्स पार्क के बीचोंबीच वे फिर से एक साथ आ गए—सचमुच ऐसा ही हुआ। लेकिन पीटर—चाहे दिन कितना भी सुंदर हो, पेड़-पौधे, घास और गुलाबी पोशाक वाली छोटी लड़की—पीटर को इनमें से कुछ भी नज़र नहीं आता था। अगर वो उसे कहती तो वो चश्मा लगा लेता; वो देखता। उसे दुनिया की हालत में दिलचस्पी थी; वैगनर, पोप की कविताएँ, लोगों के शाश्वत चरित्र और उसकी अपनी आत्मा की कमियाँ। वो उसे

कितना डांटता था! वे कितनी बहस करते थे! वो एक प्रधानमंत्री से शादी कर लेगी और सीढ़ियों के शीर्ष पर खड़ी रहेगी; उसने उसे एक आदर्श मेजबान कहा (वह अपने बेडरूम में इस बात पर रोई थी), उसने कहा कि उसमें एक आदर्श मेजबान बनने के सारे गुण थे।
इसलिए वह अब भी सेंट जेम्स पार्क में बहस करती रहती, यही जताती कि उसने उससे शादी न करके सही किया था—और वह सच में सही थी। क्योंकि शादी में थोड़ी आज़ादी, थोड़ी स्वतंत्रता तो होनी ही चाहिए, उन लोगों के बीच जो दिन-रात एक ही घर में साथ रहते हैं; जो रिचर्ड ने उसे दी थी, और उसने उसे। (उदाहरण के लिए, वह आज सुबह कहाँ था? किसी समिति में, उसने कभी नहीं पूछा कि किस बारे में।) लेकिन पीटर के साथ सब कुछ साझा करना पड़ता था; हर बात माननी पड़ती थी। और यह असहनीय था, और जब फव्वारे के पास छोटे से बगीचे में वह दृश्य आया, तो उसे उससे रिश्ता तोड़ना पड़ा, वरना वे दोनों बर्बाद हो जाते, उसे पूरा यकीन था; हालाँकि वह सालों से अपने दिल में तीर की तरह चुभते हुए उस दुख और पीड़ा को सहती रही थी; और फिर उस पल का खौफ जब किसी ने उसे एक संगीत कार्यक्रम में बताया कि उसने भारत जाने वाली नाव पर मिली एक औरत से शादी कर ली है! वह यह सब कभी नहीं भूल सकती! उसने उसे ठंडी, निर्दयी, दकियानूसी कहा। वह कभी समझ नहीं पाई कि उसे उसकी परवाह कैसे थी। लेकिन उन भारतीय महिलाओं ने शायद ऐसा किया होगा—बेवकूफ, सुंदर, नासमझ और मूर्ख। और उसने उन पर दया करके व्यर्थ ही किया। क्योंकि उसने उसे यकीन दिलाया था कि वह बहुत खुश है—पूरी तरह खुश, हालाँकि उसने कभी ऐसा कुछ नहीं किया था जिसके बारे में वे बातें कर रही थीं; उसका पूरा जीवन ही असफल रहा था। फिर भी उसे गुस्सा आ रहा था।
वह पार्क के द्वार पर पहुँच चुकी थी। वह कुछ पल के लिए खड़ी रही और पिकाडिली में खड़ी बसों को देखती रही।
अब वह दुनिया में किसी के बारे में यह नहीं कहती थी कि वह ऐसा है या वैसा है। वह खुद को बहुत जवान महसूस करती थी; साथ ही साथ असीम रूप से बूढ़ी भी। वह हर चीज़ को चाकू की तरह चीर देती थी; साथ ही साथ बाहर से सब कुछ देखती रहती थी। टैक्सी कैब को देखते हुए उसे हमेशा यह अहसास होता था कि वह बहुत दूर, समुद्र में अकेली है; उसे हमेशा लगता था कि एक दिन भी जीना बहुत, बहुत खतरनाक है। ऐसा नहीं था कि वह खुद को होशियार या असाधारण समझती थी। फ्रॉइलिन डेनियल्स ने उन्हें जो थोड़ा-बहुत ज्ञान दिया था, उससे वह कैसे

गुज़ारा करती थी, यह वह समझ नहीं पाती थी। वह कुछ नहीं जानती थी; न भाषा, न इतिहास; अब वह शायद ही कोई किताब पढ़ती थी, सिवाय बिस्तर पर बैठकर संस्मरण पढ़ने के; और फिर भी यह सब उसके लिए बेहद दिलचस्प था; टैक्सी कैब का आना- जाना; और वह पीटर के बारे में नहीं कहती थी, न खुद के बारे में, मैं ऐसी हूँ, मैं वैसी हूँ।
चलते-चलते उसने सोचा कि उसकी इकलौती खूबी लोगों को लगभग सहज ज्ञान से पहचान लेना थी। अगर उसे किसी के साथ एक कमरे में बिठा दिया जाए, तो उसकी पीठ बिल्ली की तरह तन जाती थी; या वह गुर्राती थी। डेवोनशायर हाउस, बाथ हाउस, चीनी मिट्टी के तोते वाला घर, उसने उन सभी को एक बार जगमगाते देखा था; और उसे सिल्विया, फ्रेड, सैली सेटन याद आए—कितने सारे लोग; और रात भर नाचना; और बाज़ार जाते हुए धीरे-धीरे चलती गाड़ियाँ; और पार्क से होते हुए घर लौटना। उसे याद आया कि एक बार उसने सर्पेन्टाइन नदी में एक शिलिंग फेंकी थी। लेकिन सबको याद था; उसे जो सबसे प्यारा था, वह था यह, यहाँ, अभी, उसके सामने; टैक्सी में बैठी मोटी औरत। तो क्या इससे कोई फर्क पड़ता है, उसने बॉन्ड स्ट्रीट की ओर चलते हुए खुद से पूछा, क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि उसका अंत होना तय है; यह सब उसके बिना चलता रहेगा; क्या उसे इस बात का दुख है; या क्या यह मानना सुकून नहीं देता कि मृत्यु का अंत सर्वथा होता है? लेकिन किसी तरह लंदन की गलियों में, उतार-चढ़ाव के बीच, यहाँ-वहाँ, वह बच गई, पीटर बच गया, एक-दूसरे में जीया, वह घर के पेड़ों का हिस्सा थी, वह सकारात्मक थी; उस घर का, जो बदसूरत था, टुकड़ों-टुकड़ों में बिखरा हुआ था; उन लोगों का हिस्सा जिनसे वह कभी नहीं मिली थी; उन लोगों के बीच धुंध की तरह फैली हुई थी जिन्हें वह सबसे अच्छी तरह जानती थी, जिन्होंने उसे अपनी शाखाओं पर उठा लिया था जैसे उसने पेड़ों को धुंध उठाते देखा था, लेकिन यह बहुत दूर तक फैल गया, उसका जीवन, वह स्वयं। लेकिन हैचर्ड्स की दुकान की खिड़की में देखते हुए वह क्या सपना देख रही थी? वह क्या पुनः प्राप्त करने की कोशिश कर रही थी? देश में सफेद भोर की कौन सी छवि, जब वह खुली किताब में पढ़ रही थी:
अब सूरज की गर्मी से मत डरो
और न ही भीषण सर्दी के प्रकोप से।
दुनिया के अनुभवों के इस उत्तरार्ध ने सभी पुरुषों और महिलाओं में आँसुओं का एक गहरा सागर भर दिया था। आँसू और दुःख; साहस और सहनशीलता; एक

पूर्णतः ईमानदार और संयमी स्वभाव। उदाहरण के लिए, उस महिला के बारे में सोचिए जिसकी वह सबसे अधिक प्रशंसा करती थीं, लेडी बेक्सबोरो, जिन्होंने बाज़ार खोला था।
वहाँ जोरॉक्स की सैर्ट्स एंड जॉलीटीज़, सोपी स्पंज, मिसेज़ एस्क्विथ की मेमोयर्स और बिग गेम शूटिंग इन नाइजीरिया जैसी किताबें खुली पड़ी थीं। अनगिनत किताबें थीं; लेकिन कोई भी ऐसी नहीं थी जो एवलिन व्हिटब्रेड को उनके नर्सिंग होम में ले जाने के लिए बिल्कुल सही लगे। ऐसी कोई किताब नहीं थी जो उन्हें खुश कर सके और उस बेहद रूखी-सूखी सी महिला को, जब क्लेरिसा अंदर आए, कुछ पल के लिए खुश कर दे; इससे पहले कि वे महिलाओं की बीमारियों पर हमेशा की तरह अंतहीन बातचीत में लग जाएँ। क्लेरिसा ने सोचा, काश लोग उसके आने पर खुश दिखते, और फिर वह मुड़ी और बॉन्ड स्ट्रीट की ओर वापस चली गई, नाराज़ होकर, क्योंकि किसी काम को करने के लिए दूसरे कारण रखना बेवकूफी थी। वह रिचर्ड जैसे लोगों में से एक होना ज़्यादा पसंद करती, जो अपने लिए काम करते हैं, जबकि, उसने सड़क पार करने का इंतज़ार करते हुए सोचा, आधे समय वह काम सिर्फ़ अपने लिए नहीं करती; बल्कि लोगों को यह या वह सोचने पर मजबूर करने के लिए करती है; वह जानती थी कि यह सरासर बेवकूफी थी (और अब पुलिसवाले ने अपना हाथ ऊपर उठा लिया), क्योंकि कोई भी पल भर के लिए भी धोखे में नहीं आता। काश उसे अपना जीवन दोबारा जीने का मौका मिलता! उसने फुटपाथ पर कदम रखते हुए सोचा, काश यह बिल्कुल अलग होता!
सबसे पहले तो, वह लेडी बेक्सबोरो की तरह सांवली, झुर्रीदार चमड़े जैसी त्वचा और खूबसूरत आंखों वाली होती। लेडी बेक्सबोरो की तरह ही वह धीमी और गरिमामयी होती; कुछ हद तक भारी-भरकम; पुरुषों की तरह राजनीति में रुचि रखने वाली; एक आलीशान घर की मालकिन; बेहद गरिमामय और बेहद ईमानदार। लेकिन इसके बजाय, उसका शरीर दुबला-पतला और पक्षी की चोंच जैसा छोटा सा था। यह सच था कि वह खुद को अच्छे से संभालती थी; उसके हाथ-पैर सुंदर थे; और कम खर्च करने के बावजूद वह अच्छे कपड़े पहनती थी। लेकिन अब अक्सर उसका यह शरीर (वह एक डच चित्र को देखने के लिए रुकी), अपनी सारी क्षमताओं के साथ, उसे कुछ भी नहीं लगता था—बिल्कुल कुछ भी नहीं। उसे एक अजीब सा एहसास होता था कि वह अदृश्य है; अनदेखी है; अज्ञात है; अब न तो शादी होगी, न ही बच्चे होंगे, बल्कि बाकी सबके साथ बॉन्ड स्ट्रीट पर बस यही आश्चर्यजनक और गंभीर सफर है, यही है मिसेज डैलोवे; अब क्लेरिसा भी नहीं; यही है मिसेज रिचर्ड डैलोवे।

बॉन्ड स्ट्रीट उसे बेहद आकर्षित करती थी; सीज़न के दौरान सुबह-सुबह बॉन्ड स्ट्रीट; लहराते झंडे; उसकी दुकानें; कोई चकाचौंध नहीं; कोई चमक-दमक नहीं; उस दुकान में ट्वीड का एक रोल जहाँ उसके पिता पचास वर्षों से अपने सूट खरीदते थे; कुछ मोती; बर्फ के टुकड़े पर रखी सैल्मन मछली।
"बस इतना ही," उसने मछली बेचने वाले की दुकान की ओर देखते हुए कहा। "बस इतना ही," उसने दोहराया, और एक दस्ताने की दुकान की खिड़की पर एक पल के लिए रुक गई, जहाँ युद्ध से पहले लगभग एकदम सही दस्ताने मिलते थे। और उसके बूढ़े चाचा विलियम कहा करते थे कि एक महिला की पहचान उसके जूतों और दस्तानों से होती है। युद्ध के बीच में एक सुबह वे बिस्तर पर करवट बदलते हुए बोले थे, "बस बहुत हो गया।" दस्ताने और जूते; उसे दस्तानों से बहुत लगाव था; लेकिन उसकी अपनी बेटी, उसकी एलिज़ाबेथ, को इन दोनों में से किसी की भी परवाह नहीं थी।
वह सोचती रही, बिलकुल भी नहीं, और बॉन्ड स्ट्रीट पर उस दुकान की ओर चल पड़ी जहाँ उसके लिए पार्टी देने पर फूल रखे जाते थे। एलिज़ाबेथ को अपने कुत्ते से सबसे ज़्यादा लगाव था। आज सुबह पूरे घर में तारकोल की गंध फैली हुई थी। फिर भी, बेचारे ग्रिज़ल से तो मिस किल्मन बेहतर ही था; डिस्टेंपर, तारकोल और बाकी सब कुछ, किसी घुटन भरे कमरे में प्रार्थना की किताब लेकर बैठे रहने से तो बेहतर ही था! कुछ भी बेहतर, वह कहना चाहती थी। लेकिन जैसा रिचर्ड ने कहा, यह महज़ एक दौर हो सकता है, जैसा कि सभी लड़कियाँ गुज़रती हैं। हो सकता है उसे प्यार हो गया हो। लेकिन मिस किल्मन से ही क्यों? जिनके साथ बेशक बुरा बर्ताव हुआ था; इसके लिए तो माफ़ी माँगनी ही पड़ेगी, और रिचर्ड ने कहा था कि वह बहुत काबिल थीं, उनका दिमाग़ इतिहास में बहुत तेज़ था। खैर, वे दोनों हमेशा साथ रहते थे, और एलिज़ाबेथ, उसकी अपनी बेटी, कम्युनियन में जाती थी; और वह कैसे कपड़े पहनती थी, दोपहर के खाने पर आने वाले लोगों के साथ कैसा बर्ताव करती थी, उसे ज़रा भी परवाह नहीं थी, क्योंकि उसका अनुभव था कि धार्मिक उन्माद लोगों को कठोर बना देता है (और धार्मिक कार्यों से भी ऐसा ही होता है); उनकी भावनाओं को कुंद कर दिया, क्योंकि मिस किल्मन रूसियों के लिए कुछ भी कर सकती थीं, ऑस्ट्रियाई लोगों के लिए खुद को भूखा रख सकती थीं, लेकिन निजी तौर पर वह इतनी असंवेदनशील थीं कि लोगों को घोर यातना देती थीं, हरे रंग के रेनकोट में लिपटी रहती थीं। साल दर साल वह वही कोट पहनती थीं; उन्हें पसीना आता था; वह कमरे में पाँच

मिनट भी नहीं रहती थीं कि आपको अपनी श्रेष्ठता और अपनी हीनता का एहसास न करा दें; कि वह कितनी गरीब थीं; आप कितने अमीर थे; कि वह बिना तकिये, बिस्तर, गलीचे या किसी भी चीज़ के झुग्गी बस्ती में रहती थीं, उनकी आत्मा उस शिकायत से जंग खा चुकी थी जो युद्ध के दौरान स्कूल से निकाले जाने से उनके दिल में घर कर गई थी—बेचारी, कड़वी, अभागी! क्योंकि नफरत उनसे नहीं थी, बल्कि उनके विचार से थी, जिसमें निस्संदेह बहुत कुछ ऐसा समाहित था जो मिस किल्मन नहीं थीं; वह उन प्रेतों में से एक बन गई थीं जिनसे रात में संघर्ष करना पड़ता है; उन प्रेतों में से एक जो हम पर सवार होकर हमारा आधा खून चूस लेते हैं, प्रभुत्वशाली और अत्याचारी। अगर पासे को एक बार फिर उछाला जाता और सफेद की जगह काला आता, तो वह मिस किल्मन से प्यार कर बैठती! लेकिन इस दुनिया में नहीं। बिलकुल नहीं।
लेकिन उसके भीतर इस क्रूर राक्षस की हलचल उसे अंदर तक झकझोर देती थी! टहनियों के टूटने की आवाज़ सुनना और उस घने, पत्तों से भरे जंगल की गहराई में खुरों की गड़गड़ाहट महसूस करना, उसकी आत्मा; कभी भी पूरी तरह से संतुष्ट या सुरक्षित न रह पाना, क्योंकि किसी भी क्षण वह दरिंदा जाग उठेगा, यह घृणा, जो विशेष रूप से उसकी बीमारी के बाद से, उसे खरोंच लगने जैसा, रीढ़ की हड्डी में दर्द होने जैसा महसूस कराती थी; उसे शारीरिक पीड़ा देती थी, और सुंदरता, मित्रता, स्वस्थ रहने, प्यार पाने और अपने घर को एक सुखद चट्टान बनाने के सभी सुखों को कांपने और झुकने पर मजबूर कर देती थी, मानो सचमुच कोई राक्षस जड़ों को कुरेद रहा हो, मानो संतोष का सारा ताना-बाना स्वार्थ के सिवा कुछ नहीं था! यह घृणा!
बकवास, बकवास! उसने खुद से कहा और मलबेरी के फूलों की दुकान के झूलते दरवाजों से अंदर घुस गई।
वह आगे बढ़ी, हल्की, लंबी, एकदम सीधी खड़ी हुई, और उसका स्वागत बटन जैसे चेहरे वाली मिस पिम ने किया, जिनके हाथ हमेशा चमकीले लाल रहते थे, मानो उन्हें फूलों के साथ ठंडे पानी में रखा गया हो।
वहाँ फूल थे: डेल्फ़िनियम, स्वीट पीज़, बकाइन के गुच्छे; और कार्नेशन, ढेर सारे कार्नेशन। वहाँ गुलाब थे; वहाँ आइरिस थे। आह हाँ—तो वह बगीचे की मिट्टी की मीठी खुशबू में साँस ले रही थी, जब वह मिस पिम से बात कर रही थी, जिन्होंने उसकी मदद की थी, और उन्हें दयालु समझ रही थी, क्योंकि वे वर्षों पहले दयालु थीं; बहुत दयालु, लेकिन इस साल वह थोड़ी बूढ़ी लग रही थीं,

आइरिस और गुलाबों के बीच अपना सिर इधर-उधर घुमा रही थीं और आधी बंद आँखों से बकाइन के हिलते हुए गुच्छों को छू रही थीं, सड़क के शोरगुल के बाद, उस मनमोहक खुशबू, उस अद्भुत ठंडक को महसूस कर रही थीं। और फिर, आँखें खोलकर, गुलाब कितने ताज़े लग रहे थे, जैसे कपड़े धोने के बाद साफ किए हुए झालरदार लिनेन को बेंत की ट्रे में रखा गया हो; और लाल कार्नेशन गहरे और सलीके से सिर ऊपर उठाए हुए थे; और सभी मीठे मटर अपने कटोरे में फैले हुए थे, बैंगनी रंग से रंगे, बर्फ जैसे सफेद, हल्के पीले रंग के—मानो शाम हो गई हो और मलमल की फ्रॉक पहने लड़कियाँ शानदार गर्मी के दिन के बाद मीठे मटर और गुलाब तोड़ने निकली हों, जिसमें लगभग नीला-काला आकाश था, डेल्फिनियम, कार्नेशन, अरम लिली खिले थे; और यह छह और सात बजे के बीच का समय था जब हर फूल—गुलाब, कार्नेशन, आइरिस, बकाइन—चमकता है; सफेद, बैंगनी, लाल, गहरा नारंगी; हर फूल धुंध भरी क्यारियों में धीरे-धीरे, शुद्ध रूप से जलता हुआ प्रतीत होता है; और उसे चेरी पाई के ऊपर, शाम के प्रिमरोज़ के ऊपर, धूसर-सफेद पतंगों का मंडराना कितना प्यारा लगता था!
और जैसे ही वह मिस पिम के साथ एक जार से दूसरे जार तक जाकर, चुनाव करते हुए, निरर्थक, निरर्थक बातें करने लगी, वह अपने आप से धीरे-धीरे कहने लगी, मानो यह सुंदरता, यह सुगंध, यह रंग, और मिस पिम का उसे पसंद करना, उस पर भरोसा करना, एक लहर हो जिसे वह अपने ऊपर बहने दे और उस नफरत, उस राक्षस, उस सब पर विजय प्राप्त कर ले; और यह उसे ऊपर उठाती चली गई, तभी—ओह! बाहर गली में पिस्तौल की गोली चली!
"अरे, ये मोटरगाड़ियाँ," मिस पायम ने खिड़की के पास जाकर देखा और वापस आकर मीठे मटर से भरे हाथों से माफी मांगते हुए मुस्कुराईं, मानो ये मोटरगाड़ियाँ, इन मोटरगाड़ियों के टायर, सब उनकी ही गलती हो।
श्रीमती डैलोवे को चौंका देने और मिस पिम को खिड़की पर जाकर माफी मांगने के लिए मजबूर करने वाला जोरदार धमाका एक कार से हुआ था, जो मलबेरी की दुकान की खिड़की के ठीक सामने फुटपाथ के किनारे आकर रुकी थी। राहगीर, जो स्वाभाविक रूप से रुक गए और घूरने लगे, उन्हें कबूतर-धूसर रंग के गद्दे के सामने एक अत्यंत महत्वपूर्ण चेहरा देखने का ही समय मिला, इससे पहले कि एक पुरुष के हाथ ने पर्दा खींच दिया और कबूतर-धूसर रंग के एक वर्ग के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

फिर भी अफवाहें तुरंत फैल गईं, एक तरफ बॉन्ड स्ट्रीट के मध्य से ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट तक, दूसरी तरफ एटकिंसन की इत्र की दुकान तक। ये अफवाहें अदृश्य और अनसुनी सी, बादल की तरह, पहाड़ियों पर तेज़ी से, घूंघट की तरह छा गईं, और सचमुच एक पल पहले पूरी तरह से अव्यवस्थित चेहरों पर बादल की अचानक गंभीरता और स्थिरता के साथ छा गईं। लेकिन अब रहस्य ने उन्हें अपने पंख से छू लिया था; उन्होंने सत्ता की आवाज़ सुनी थी; धर्म की आत्मा अपनी आँखों पर पट्टी बाँधे और होंठों को चौड़ा खोले हुए चारों ओर फैल गई थी। लेकिन किसी को नहीं पता था कि किसका चेहरा देखा गया था। क्या यह वेल्स के राजकुमार का था, रानी का, प्रधानमंत्री का? यह किसका चेहरा था? किसी को नहीं पता था। एडगर जे. वाटकिस ने, अपनी बांह के चारों ओर सीसे के पाइप का एक बंडल लटकाए हुए, स्पष्ट रूप से हास्यपूर्ण ढंग से कहा: "प्रथम मंत्री का क्यार।" सेप्टिमस वॉरेन स्मिथ, जो स्वयं पास होने में असमर्थ था, ने उसकी बात सुनी।
लगभग तीस वर्ष का सेप्टिमस वॉरेन स्मिथ, पीला चेहरा, नुकीली नाक, भूरे जूते और एक जर्जर ओवरकोट पहने हुए, भूरी आँखों में एक ऐसी आशंका झलकती थी जो अजनबियों को भी भयभीत कर देती थी। दुनिया ने अपना कोड़ा उठा लिया है; अब यह कहाँ गिरेगा?
सब कुछ थम सा गया था। मोटर इंजनों की धड़कन पूरे शरीर में अनियमित रूप से धड़कती हुई नब्ज़ जैसी लग रही थी। शहतूत की दुकान की खिड़की के बाहर मोटर कार के रुकने से सूरज असाधारण रूप से गर्म हो गया था; बसों की छतों पर बैठी बूढ़ी औरतें अपने काले छाते फैला रही थीं; कहीं हरा, कहीं लाल छाता हल्की सी आवाज़ के साथ खुल गया। श्रीमती डैलोवे, मीठे मटर से भरी बाहों के साथ खिड़की पर आईं और अपने छोटे से गुलाबी चेहरे को जिज्ञासा से सिकोड़कर बाहर देखने लगीं। हर कोई मोटर कार को देख रहा था। सेप्टिमस ने भी देखा। साइकिल पर सवार लड़के उछल पड़े। यातायात जाम हो गया। और मोटर कार वहीं खड़ी थी, परदे खींचे हुए थे, और उन पर एक अजीब सा पैटर्न बना हुआ था, जैसे कोई पेड़ हो, सेप्टिमस ने सोचा, और उसकी आँखों के सामने सब कुछ धीरे-धीरे एक केंद्र की ओर सिमट रहा था, मानो कोई भयानक चीज़ सतह पर आ गई हो और आग की लपटों में बदलने वाली हो, उसे डरा रहा था। दुनिया डगमगा रही थी, कांप रही थी और आग की लपटों में बदलने की धमकी दे रही थी। मैं ही रास्ता रोक रहा हूँ, उसने सोचा। क्या उसे देखा और उस पर उंगली नहीं उठाई जा रही थी? क्या वह वहाँ किसी

उद्देश्य से रुका हुआ नहीं था, फुटपाथ पर जड़वत जमा हुआ नहीं था? लेकिन किस उद्देश्य से?
"चलो चलते हैं, सेप्टिमस," उसकी पत्नी ने कहा, जो एक छोटी कद की महिला थी, जिसकी पीली नुकीली शक्ल में बड़ी-बड़ी आंखें थीं; वह एक इतालवी लड़की थी। लेकिन लुक्रेशिया खुद को उस मोटर कार और पर्दों पर बने पेड़ के पैटर्न को देखने से रोक नहीं पाई। क्या उसमें महारानी थीं—क्या महारानी खरीदारी करने गई थीं?
कुछ खोल रहा, कुछ घुमा रहा, कुछ बंद कर रहा ड्राइवर, उस डिब्बे में चढ़ गया।
"चलो," लुक्रेशिया ने कहा।
लेकिन उसका पति, क्योंकि उनकी शादी को अब चार-पांच साल हो चुके थे, उछल पड़ा, चौंक गया और गुस्से से बोला, "ठीक है!" मानो उसने उसे बीच में ही रोक दिया हो।
लोगों को ध्यान देना चाहिए; लोगों को देखना चाहिए। लोग, उसने सोचा, मोटर कार को घूरती भीड़ को देखते हुए; अंग्रेज लोग, अपने बच्चों, अपने घोड़ों और अपने कपड़ों के साथ, जिनकी वह एक तरह से प्रशंसा करती थी; लेकिन अब वे "लोग" थे, क्योंकि सेप्टिमस ने कहा था, "मैं खुद को मार डालूंगा"; यह कहना कितना भयानक था। मान लीजिए कि उन्होंने उसे सुन लिया होता? उसने भीड़ की ओर देखा। मदद करो, मदद करो! वह कसाई के लड़कों और महिलाओं से चिल्लाना चाहती थी। मदद करो! पिछली शरद ऋतु में ही वह और सेप्टिमस तटबंध पर एक ही लबादे में लिपटे खड़े थे और, सेप्टिमस बात करने के बजाय अखबार पढ़ रहा था, उसने उससे अखबार छीन लिया था और उन्हें देखने वाले बूढ़े आदमी के चेहरे पर हंस पड़ी थी! लेकिन असफलता को छिपाना पड़ता है। उसे उसे किसी पार्क में ले जाना होगा।
"अब हम पार करेंगे," उसने कहा।
उसका उस बांह पर पूरा अधिकार था, भले ही उसमें कोई भावना न हो। वह उसे, जो इतनी भोली, इतनी भावुक, मात्र चौबीस वर्ष की, इंग्लैंड में अकेली, जिसने उसके लिए इटली छोड़ दिया था, हड्डी का एक टुकड़ा दे देगा।
पर्दे लगे और रहस्यमयी संयम का भाव लिए वह कार पिकाडिली की ओर बढ़ रही थी। अब भी लोग उसे घूर रहे थे, सड़क के दोनों ओर खड़े लोगों के चेहरे उसी श्रद्धा भाव से सराबोर थे, चाहे वह रानी हो, राजकुमार हो या प्रधानमंत्री,

यह कोई नहीं जानता था। उस चेहरे को केवल तीन लोगों ने कुछ सेकंड के लिए ही देखा था। अब तो उसके लिंग पर भी संदेह था। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसके भीतर महानता समाई हुई थी; महानता बॉन्ड स्ट्रीट से गुज़र रही थी, छिपी हुई, आम लोगों से बस एक हाथ की दूरी पर, जो शायद अब पहली और आखिरी बार इंग्लैंड की शान, राज्य के उस चिरस्थायी प्रतीक के इतने करीब हों, जिसे जिज्ञासु पुरातत्वविद समय के खंडहरों को छानते हुए पहचानेंगे, जब लंदन घास से ढका एक रास्ता होगा और इस बुधवार की सुबह फुटपाथ पर भागते हुए सभी लोग केवल हड्डियाँ होंगे, जिनकी धूल में कुछ शादी की अंगूठियाँ और अनगिनत सड़े हुए दाँतों के सोने के टुकड़े मिले होंगे। तब उस कार में बैठे चेहरे की पहचान हो जाएगी।
श्रीमती डैलोवे ने सोचा, "शायद महारानी ही हैं, जो मलबेरी की दुकान से अपने फूलों के साथ बाहर आ रही हैं; महारानी।" और एक पल के लिए, धूप में फूलों की दुकान के पास खड़ी होकर, कार को धीमी गति से गुजरते हुए, जिसके पर्दे खींचे हुए थे, उनके चेहरे पर अत्यंत गरिमा का भाव आ गया। क्लैरिसा ने सोचा, "महारानी किसी अस्पताल जा रही हैं; महारानी किसी बाज़ार का उद्घाटन कर रही हैं।"
दिन के उस समय के हिसाब से भीड़ बहुत ज़्यादा थी। लॉर्ड्स, एस्कॉट, हर्लिंगहैम, ये क्या था? वह सोच रही थी, क्योंकि सड़क पूरी तरह से जाम थी। ब्रिटिश मध्यम वर्ग के लोग बसों की छतों पर पार्सल और छतरियों के साथ, हाँ, इस दिन फर के कपड़े भी लिए हुए, बैठे थे, उसे लगा कि ये पहले से कहीं ज़्यादा हास्यास्पद और अटपटा था; और खुद महारानी भी रुकी हुई थीं; महारानी खुद आगे नहीं बढ़ पा रही थीं। क्लेरिसा ब्रुक स्ट्रीट के एक तरफ अटकी हुई थी; सर जॉन बकहर्स्ट, बूढ़े जज, दूसरी तरफ, उनके बीच कार थी (सर जॉन कई सालों से कानून बनाते आ रहे थे और उन्हें सजी-धजी महिलाएँ पसंद थीं)। तभी ड्राइवर ने थोड़ा झुककर पुलिसवाले को कुछ कहा या दिखाया, जिसने सलाम किया, अपना हाथ उठाया, सिर झटका और बस को एक तरफ कर दिया और कार निकल गई। धीरे- धीरे और बिल्कुल चुपचाप कार आगे बढ़ गई।
क्लेरिसा ने अनुमान लगाया; क्लेरिसा को बेशक पता था; उसने नौकर के हाथ में कुछ सफेद, जादुई, गोलाकार देखा था, एक डिस्क जिस पर एक नाम खुदा हुआ था — रानी का, वेल्स के राजकुमार का, प्रधानमंत्री का?—जो अपनी चमक के बल पर (क्लेरिसा ने कार को छोटा होते, गायब होते देखा) जलता हुआ आगे बढ़ा और

मोमबत्तियों, जगमगाते तारों, ओक के पत्तों से सजी छातियों, ह्यूग व्हिटब्रेड और उनके सभी सहयोगियों, इंग्लैंड के सज्जनों के बीच उस रात बकिंघम पैलेस में चमक उठा। और क्लेरिसा ने भी एक पार्टी दी। वह थोड़ी सख़्त हो गई; इसलिए वह अपनी सीढ़ियों के शीर्ष पर खड़ी हो गई।
कार जा चुकी थी, लेकिन उसने एक हल्की सी हलचल छोड़ दी थी जो बॉन्ड स्ट्रीट के दोनों ओर दस्तानों, टोपियों और दर्ज़ियों की दुकानों में फैल गई। तीस सेकंड तक सभी के सिर एक ही दिशा में झुके रहे—खिड़की की ओर। दस्ताने चुनते समय—क्या वे कोहनी तक हों या उससे ऊपर, नींबू रंग के हों या हल्के भूरे रंग के?—महिलाएँ रुक गईं; जब यह वाक्य समाप्त हुआ तो कुछ घटित हुआ था। कुछ ऐसा मामूली सा जो एक-एक पल में इतना सूक्ष्म था कि कोई गणितीय यंत्र, भले ही वह चीन में झटके संचारित करने में सक्षम हो, उस कंपन को दर्ज नहीं कर सकता था; फिर भी अपने पूर्ण अर्थ में यह काफी प्रभावशाली और अपने सामान्य प्रभाव में भावनात्मक था; क्योंकि सभी टोपियों और दर्ज़ियों की दुकानों में अजनबी एक-दूसरे को देखकर मृतकों के बारे में, झंडे के बारे में, साम्राज्य के बारे में सोचने लगे। एक पिछड़ी गली के एक पब में एक औपनिवेशिक व्यक्ति ने हाउस ऑफ विंडसर का अपमान किया, जिससे कहा-सुनी हुई, बीयर के गिलास टूट गए और एक बड़ा हंगामा मच गया, जिसकी गूंज अजीब तरह से उन लड़कियों के कानों में सुनाई दी जो अपनी शादियों के लिए शुद्ध सफेद रिबन से पिरोए हुए सफेद अंडरलाइनर खरीद रही थीं। जैसे ही कार नीचे धंसने लगी, उसकी सतह पर हुई हलचल ने किसी बहुत ही गहरे अर्थ को छू लिया।
पिकाडिली से गुज़रते हुए, कार सेंट जेम्स स्ट्रीट की ओर मुड़ी। लंबे, हट्टे-कट्टे, सलीके से कपड़े पहने हुए, कोट और सफेद स्लिप पहने, पीछे की ओर कंघी किए बालों वाले कुछ पुरुष, जिनका कारण स्पष्ट करना मुश्किल है, ब्रूक्स की दुकान की आगे वाली खिड़की में अपने कोट के पीछे हाथ रखे बाहर देख रहे थे। उन्होंने सहज ही महसूस किया कि महानता का क्षण बीत रहा है, और अमर उपस्थिति का हल्का प्रकाश उन पर उसी तरह पड़ा जैसे क्लेरिसा डैलोवे पर पड़ा था। वे तुरंत और सीधे खड़े हो गए, अपने हाथ हटा लिए, और ऐसा लग रहा था मानो वे अपने सम्राट की सेवा करने के लिए तैयार हों, यदि आवश्यकता हो, तो तोप के मुँह तक, जैसे उनके पूर्वजों ने किया था। पृष्ठभूमि में सफेद मूर्तियाँ और छोटी मेजें, जिन पर टैटलर की प्रतियाँ और सोडा वाटर के साइफन रखे थे, मानो अनुमोदन कर रही हों; मानो इंग्लैंड के बहते अनाज और जागीरदार

घरों का संकेत दे रही हों; और मोटर के पहियों की धीमी गूंज, जैसे किसी शांत गैलरी की दीवारें एक अकेली आवाज़ को लौटाती हैं, जो पूरे गिरजाघर की शक्ति से विस्तृत और मधुर हो उठती है। शॉल ओढ़े मोल प्रैट, जिसके फूल फुटपाथ पर रखे थे, ने उस प्यारे लड़के के लिए शुभकामनाएं दीं (वह निश्चित रूप से वेल्स का राजकुमार था) और अगर उसने कांस्टेबल की निगाहें खुद पर न देखी होतीं, जो एक बूढ़ी आयरिश महिला की वफादारी को हतोत्साहित कर रही थीं, तो वह अपनी हल्की-फुल्की हंसी और गरीबी के प्रति तिरस्कार के कारण सेंट जेम्स स्ट्रीट में एक बर्तन बीयर की कीमत—गुलाबों का एक गुच्छा—फेंक देती। सेंट जेम्स के संतरियों ने सलाम किया; महारानी एलेक्जेंड्रा के पुलिसकर्मी ने इसकी पुष्टि की।
इसी बीच बकिंघम पैलेस के द्वार पर एक छोटी भीड़ जमा हो गई थी। बेमन से, फिर भी आत्मविश्वास से भरे हुए, सभी गरीब लोग, वे प्रतीक्षा कर रहे थे; लहराते झंडे वाले महल को देख रहे थे; अपनी मीनार पर लहराती विक्टोरिया को निहार रहे थे, उसके बहते पानी के नलों और गेरेनियम के फूलों की प्रशंसा कर रहे थे; मॉल में खड़ी कारों में से पहले इसे, फिर उसे चुन रहे थे; घूमने निकले आम लोगों पर व्यर्थ ही भावुक हो रहे थे; इस कार के गुजरने और उस कार के गुजरने के दौरान अपने भेंट को बचाकर रखने की याद दिला रहे थे; और हर समय राजघराने की ओर देखने, रानी के झुकने, राजकुमार के अभिवादन करने, राजाओं को दैवीय रूप से प्राप्त स्वर्गिक जीवन, घुड़सवारों और उनके द्वारा किए जाने वाले गहरे अभिवादन, रानी के पुराने गुड़ियाघर, एक अंग्रेज से शादी करने वाली राजकुमारी मैरी और राजकुमार—आह! राजकुमार! जो, जैसा कि उन्होंने कहा, पुराने राजा एडवर्ड से बिल्कुल मिलते-जुलते थे, लेकिन उनसे कहीं अधिक दुबले थे, के विचार से उनकी रगों में अफवाहें दौड़ रही थीं और उनकी जांघों की नसें सिहर रही थीं। राजकुमार सेंट जेम्स में रहते थे; लेकिन वे सुबह अपनी मां से मिलने आ सकते थे।
सारा ब्लेचली अपने बच्चे को गोद में लिए, पैर को ऊपर-नीचे हिलाते हुए, मानो पिमलिको में अपनी कार के पास खड़ी हो, मॉल पर नज़रें गड़ाए बैठी थीं। वहीं एमिली कोट्स महल की खिड़कियों से झांकती हुई नौकरानियों, अनगिनत नौकरानियों, शयनकक्षों, अनगिनत शयनकक्षों के बारे में सोच रही थीं। एक बुजुर्ग सज्जन, जिनके पास एबरडीन टेरियर कुत्ता था, और कुछ बेरोजगार लोग, उनके साथ शामिल हो गए और भीड़ बढ़ गई। छोटे श्री बाउली, जिनके अल्बानी होटल

में कमरे थे और जो जीवन की गहरी भावनाओं को मोम से ढक कर बैठे थे, लेकिन इस तरह की चीजों से अचानक, अनुचित रूप से, भावुकता से, उनकी भावनाएं उमड़ सकती थीं—बेचारी औरतें रानी को गुजरते देखने का इंतजार कर रही थीं—बेचारी औरतें, प्यारे छोटे बच्चे, अनाथ, विधवाएं, युद्ध—अरे बाप रे—उनकी आंखों में सचमुच आंसू आ गए। मॉल में पतले पेड़ों के बीच से बहती हुई हल्की-हल्की हवा, कांस्य की मूर्तियों के पास से गुज़रती हुई, श्री बाउली के सीने में लहराते ब्रिटिश झंडे को और भी फहरा रही थी। जैसे ही गाड़ी मॉल में मुड़ी, उन्होंने अपनी टोपी ऊपर उठाई और गाड़ी के पास आते ही उसे ऊँचा पकड़े रखा; और पिमलिको की गरीब माताओं को अपने करीब आने दिया, और सीधे खड़े रहे। गाड़ी आगे बढ़ गई।
अचानक श्रीमती कोट्स ने आसमान की ओर देखा। हवाई जहाज की तेज़ आवाज़ भीड़ के कानों में गूंज उठी। वह पेड़ों के ऊपर से आ रहा था, पीछे से सफ़ेद धुआँ छोड़ रहा था, जो घुमावदार होकर आसमान में कुछ लिख रहा था! आसमान में अक्षर बना रहा था! सबने ऊपर देखा।
अचानक नीचे गिरते ही हवाई जहाज सीधा ऊपर की ओर उठा, एक लूप में घूमा, दौड़ा, नीचे आया, ऊपर उठा, और जो भी करता, जहाँ भी जाता, उसके पीछे सफेद धुएँ की एक मोटी, लहराती पट्टी फड़फड़ाती हुई आसमान में अक्षरों की तरह घूमती और घेरा बनाती हुई दिखाई देती थी। लेकिन कौन से अक्षर? क्या वह C था? E, फिर L? वे बस एक पल के लिए स्थिर रहे; फिर वे हिले, पिघले और आसमान में मिट गए, और हवाई जहाज और दूर चला गया और फिर से, आसमान के एक नए हिस्से में, K, E, शायद Y लिखना शुरू कर दिया?
"ग्लेक्सो," श्रीमती कोट्स ने तनावपूर्ण, विस्मयकारी स्वर में कहा, सीधे ऊपर देखते हुए, और उनका बच्चा, जो उनकी बाहों में अकड़ा हुआ और सफेद पड़ा था, सीधे ऊपर देख रहा था।
"क्रीमो," श्रीमती ब्लेचली ने नींद में चलने वाले व्यक्ति की तरह गुनगुनाया। श्री बाउली ने अपनी टोपी को हाथ में बिल्कुल स्थिर पकड़े हुए, सीधे ऊपर की ओर देखा। मॉल के चारों ओर लोग खड़े होकर आकाश की ओर देख रहे थे। जैसे ही उन्होंने देखा, पूरी दुनिया एकदम शांत हो गई, और सीगलों का एक झुंड आकाश में उड़ गया, पहले एक सीगल आगे, फिर दूसरा, और इस असाधारण शांति और सन्नाटे में, इस उदासी में, इस पवित्रता में, ग्यारह बार घंटियाँ बजीं, जिनकी आवाज़ सीगलों के बीच ऊपर जाकर फीकी पड़ गई।

हवाई जहाज मुड़ा, तेजी से दौड़ा और ठीक उसी जगह झपटा जहाँ वह चाहता था, फुर्ती से, आजादी से, एक स्केटर की तरह—
"यह एक 'ई' है," श्रीमती ब्लेचले ने कहा—या फिर एक नर्तकी।
"यह टॉफ़ी है," श्री बाउली ने बुदबुदाते हुए कहा—(और कार गेट से अंदर चली गई और किसी ने उसकी तरफ देखा भी नहीं), और धुएं को रोकते हुए, वह तेजी से दूर चली गई, और धुआं गायब हो गया और बादलों के चौड़े सफेद आकार के चारों ओर इकट्ठा हो गया।
वह गायब हो चुका था; बादलों के पीछे छिप गया था। कोई आवाज़ नहीं थी। जिन बादलों से E, G या L अक्षर जुड़े हुए थे, वे स्वतंत्र रूप से चल रहे थे, मानो पश्चिम से पूर्व की ओर किसी अत्यंत महत्वपूर्ण मिशन पर जाने के लिए नियत हों, जिसका खुलासा कभी नहीं होगा, और निश्चित रूप से वह एक अत्यंत महत्वपूर्ण मिशन ही था। फिर अचानक, जैसे कोई ट्रेन सुरंग से बाहर आती है, हवाई जहाज फिर से बादलों से बाहर निकला, उसकी आवाज़ मॉल, ग्रीन पार्क, पिकाडिली, रीजेंट स्ट्रीट, रीजेंट्स पार्क में मौजूद सभी लोगों के कानों में गूंज उठी, और धुएं का गुबार पीछे मुड़कर नीचे गिरा, फिर ऊपर उठा और एक के बाद एक अक्षर लिखे—लेकिन वह कौन सा शब्द लिख रहा था?
ब्रॉड वॉक में रीजेंट्स पार्क में एक सीट पर अपने पति के बगल में बैठी लुक्रेशिया वॉरेन स्मिथ ने ऊपर की ओर देखा।
"देखो, देखो, सेप्टिमस!" वह चिल्लाई। क्योंकि डॉ. होम्स ने उसे अपने पति (जिसे कोई गंभीर बीमारी नहीं थी, लेकिन वह थोड़ा परेशान था) को अपने से बाहर की चीजों में रुचि लेने के लिए प्रेरित करने को कहा था।
तो, सेप्टिमस ने ऊपर देखते हुए सोचा, वे मुझे संकेत दे रहे हैं। सचमुच शब्दों में नहीं; यानी, वह अभी उस भाषा को पढ़ नहीं सकता था; लेकिन यह सुंदरता, यह अद्भुत सुंदरता, स्पष्ट थी। उसकी आँखों में आँसू भर आए जब उसने आकाश में धुएँ के शब्दों को क्षीण होते और पिघलते हुए देखा, जो अपनी असीम दया और प्रसन्नता से उसे एक के बाद एक अकल्पनीय सुंदरता की आकृतियाँ प्रदान कर रहे थे और संकेत दे रहे थे कि वे उसे बिना किसी शुल्क के, हमेशा के लिए, केवल देखने मात्र से, सुंदरता से और अधिक सुंदरता प्रदान करेंगे! उसके गालों पर आँसू बह रहे थे।
यह टॉफ़ी थी; वे टॉफ़ी का विज्ञापन कर रहे थे, एक आया ने रेज़िया को बताया। दोनों ने मिलकर t … o … f … लिखना शुरू किया।

"क...र..." दाई ने कहा, और सेप्टिमस ने उसके कान के पास, गहरी, कोमल आवाज़ में "के आर" सुना, जैसे कोई मधुर ऑर्गन बज रहा हो, लेकिन उसकी आवाज़ में टिड्डे जैसी खुरदरीपन थी, जिसने उसकी रीढ़ की हड्डी में एक सुखद झनझनाहट पैदा कर दी और उसके दिमाग में ध्वनि की तरंगें दौड़ा दीं, जो टकराकर टूट गईं। वाकई एक अद्भुत खोज—कि कुछ खास वायुमंडलीय परिस्थितियों में (क्योंकि वैज्ञानिक होना सबसे ज़रूरी है) मानव आवाज पेड़ों में जान डाल सकती है! खुशी से रेज़िया ने अपना हाथ भारी वज़न से उसके घुटने पर रख दिया, जिससे वह स्थिर हो गया, वरना एल्म के पेड़ों का उठना-गिरना, उनके सभी पत्तों का जलना और नीले से हरे रंग में बदलना, घोड़ों के सिर पर पंखों की तरह, महिलाओं के पंखों की तरह, इतनी शान से उठना-गिरना, इतनी खूबसूरती से, उसे पागल कर देता। लेकिन वह पागल नहीं हुआ। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं; वह और कुछ नहीं देखेगा।
लेकिन वे इशारा कर रहे थे; पत्तियाँ जीवित थीं; पेड़ जीवित थे। और लाखों रेशों से जुड़ी हुई पत्तियाँ, आसन पर बैठे उसके शरीर को ऊपर-नीचे हिला रही थीं; जब शाखा फैली, तो उसने भी वही भाव व्यक्त किया। नुकीली फव्वारों की तरह फड़फड़ाती, उठती और गिरती गौरैया उस पैटर्न का हिस्सा थीं; सफेद और नीले रंग पर काली पट्टियाँ थीं। ध्वनियों ने सुनियोजित ढंग से सामंजस्य स्थापित किया; उनके बीच की जगहें ध्वनियों जितनी ही महत्वपूर्ण थीं। एक बच्चा रोया। दूर कहीं से एक सींग की आवाज़ आई। इन सबका एक साथ अर्थ था एक नए धर्म का जन्म।
"सेप्टिमस!" रेज़िया ने कहा। वह अचानक चौंक गया। लोगों को ज़रूर ध्यान देना चाहिए।
"मैं फव्वारे तक पैदल जाऊंगी और वापस आऊंगी," उसने कहा।
अब वह इसे और सहन नहीं कर सकती थी। डॉक्टर होम्स शायद कहते कि कुछ भी नहीं हुआ है। लेकिन वह तो यही चाहती थी कि वह मर जाए! जब वह इस तरह घूरता और उसे देखता भी नहीं, तो वह उसके पास नहीं बैठ सकती थी; आकाश और पेड़, खेलते बच्चे, गाड़ियाँ खींचते बच्चे, सीटी बजाते बच्चे, गिरते बच्चे; सब कुछ भयानक लगता था। और वह आत्महत्या नहीं करना चाहता था; और वह किसी को बता भी नहीं सकती थी। "सेप्टिमस बहुत ज़्यादा काम कर रहा है"—बस यही वह अपनी माँ से कह पाई। प्रेम इंसान को अकेला कर देता है, उसने सोचा। वह किसी को नहीं बता सकती थी, अब सेप्टिमस को भी नहीं, और पीछे मुड़कर देखने पर उसने उसे

अपने पुराने ओवरकोट में अकेले, सीट पर, झुका हुआ, घूरते हुए देखा। और किसी आदमी के लिए आत्महत्या करने की बात कहना कायरता थी, लेकिन सेप्टिमस ने संघर्ष किया था; वह बहादुर था; अब वह सेप्टिमस नहीं था। उसने अपना लेस वाला कॉलर पहना। उसने अपनी नई टोपी पहनी और उसने ध्यान भी नहीं दिया; और वह उसके बिना खुश था। उसके बिना उसे कोई भी चीज़ खुश नहीं कर सकती थी! कुछ भी नहीं! वह स्वार्थी था। पुरुष ऐसे ही होते हैं। क्योंकि वह बीमार नहीं था। डॉक्टर होम्स ने कहा कि उसे कोई बीमारी नहीं है। उसने अपना हाथ आगे फैलाया। देखो! उसकी शादी की अंगूठी फिसल गई—वह इतनी दुबली हो गई थी। तकलीफ तो उसे थी—पर उसे बताने वाला कोई नहीं था।
इटली बहुत दूर था, और वो सफेद घर, वो कमरा जहाँ उसकी बहनें टोपियाँ बनाती थीं, और वो सड़कें जो हर शाम लोगों से भरी रहती थीं, जो चलते-फिरते, ज़ोर-ज़ोर से हँसते थे, यहाँ के लोगों की तरह आधे-अधूरे भी नहीं, जो बाथटब की कुर्सियों में दुबके बैठे गमलों में लगे कुछ बदसूरत फूलों को देख रहे थे! "आपको मिलान के बगीचे देखने चाहिए," उसने ज़ोर से कहा। लेकिन किसे?
वहाँ कोई नहीं था। उसके शब्द लुप्त हो गए। जैसे कोई रॉकेट लुप्त हो जाता है। उसकी चिंगारियाँ, रात के अंधेरे में अपना रास्ता बनाते हुए, उसमें विलीन हो जाती हैं, अंधेरा छा जाता है, घरों और मीनारों की रूपरेखाओं पर छा जाता है; उजाड़ पहाड़ियाँ नरम होकर नीचे गिर जाती हैं। लेकिन भले ही वे चले गए हों, रात उनसे भरी हुई है; रंगहीन, खिड़कियों से रहित, वे अधिक भारीपन से विद्यमान हैं, वह सब कुछ प्रकट करते हैं जो स्पष्ट दिन का प्रकाश व्यक्त करने में विफल रहता है—अंधेरे में एकत्रित चीजों की परेशानी और अनिश्चितता; अंधेरे में एक साथ सिमटी हुई; उस राहत से वंचित जो भोर लाती है जब, दीवारों को सफेद और धूसर रंग से रंगते हुए, प्रत्येक खिड़की के शीशे पर धब्बे लगाते हुए, खेतों से कोहरा हटाते हुए, लाल-भूरी गायों को शांति से चरते हुए दिखाते हुए, सब कुछ एक बार फिर आँखों के सामने सज जाता है; फिर से अस्तित्व में आ जाता है। मैं अकेला हूँ; मैं अकेला हूँ! रीजेंट्स पार्क के फव्वारे के पास (भारतीय और उसके क्रॉस को घूरते हुए) वह रोई, मानो आधी रात को, जब सारी सीमाएँ मिट जाती हैं, देश अपने प्राचीन स्वरूप में लौट आता है, जैसा कि रोमनों ने देखा था, जब वे उतरे थे तब बादल छाए हुए थे, पहाड़ियाँ अनाम थीं और नदियाँ ऐसी बहती थीं जिनका उन्हें पता नहीं था—ऐसा ही अंधेरा उसका था; तभी अचानक, मानो कोई तख्ता अचानक प्रकट हुआ हो और वह उस पर खड़ी हो

गई हो, उसने कहा कि वह उसकी पत्नी है, वर्षों पहले मिलान में शादी हुई थी, उसकी पत्नी है, और वह कभी नहीं बताएगी कि वह पागल है! मुड़ते ही तख्ता गिर गया; वह नीचे, नीचे गिर गई। क्योंकि वह चला गया था, उसने सोचा—चला गया था, जैसा कि उसने धमकी दी थी, खुद को मारने के लिए—खुद को गाड़ी के नीचे फेंकने के लिए! लेकिन नहीं; वह वहीं था; अभी भी अकेले अपनी सीट पर बैठा था, अपने फटे-पुराने ओवरकोट में, पैर क्रॉस किए हुए, घूर रहा था, ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहा था।
मनुष्य को पेड़ नहीं काटने चाहिए। ईश्वर है। (उसने इस तरह के विचारों को लिफाफों के पीछे लिख लिया।) दुनिया बदलो। कोई भी नफरत से हत्या नहीं करता। इसे सबको बताओ (उसने इसे लिख लिया)। वह इंतजार करता रहा। वह सुनता रहा। सामने की रेलिंग पर बैठी एक गौरैया ने चार-पाँच बार चहचहाते हुए कहा, "सेप्टिमस, सेप्टिमस," और फिर अपनी आवाज़ को खींचते हुए, यूनानी शब्दों में नए और मर्मस्पर्शी स्वर में गाने लगी कि कोई अपराध नहीं है, और एक और गौरैया के साथ मिलकर, उन्होंने नदी के उस पार जीवन के मैदान में पेड़ों से, जहाँ मुर्दे चलते हैं, यूनानी शब्दों में लंबे और मर्मस्पर्शी स्वर में गाया कि कोई मृत्यु नहीं है।
वहाँ उसका हाथ था; वहाँ मृत शरीर था। सामने की रेलिंग के पीछे सफेद आकृतियाँ जमा हो रही थीं। लेकिन उसने देखने की हिम्मत नहीं की। इवांस रेलिंग के पीछे था!
"तुम क्या कह रहे हो?" रेजिया ने अचानक उसके पास बैठते हुए कहा।
फिर से बीच में टोकना! वह हमेशा ही टोकने की आदत रखती थी।
लोगों से दूर—उन्हें लोगों से दूर जाना होगा, उसने उछलते हुए कहा, तुरंत उधर, जहाँ एक पेड़ के नीचे कुर्सियाँ थीं और पार्क का लंबा ढलान हरे रंग की पट्टी की तरह नीचे की ओर झुका हुआ था, जिसके ऊपर नीले और गुलाबी धुएँ की चादर बिछी थी, और दूर-दूर तक फैले टेढ़े-मेढ़े घरों की एक दीवार धुएँ से ढकी हुई थी, गाड़ियाँ गोल-गोल घूम रही थीं, और दाईं ओर, भूरे रंग के जानवर चिड़ियाघर की बाड़ के ऊपर अपनी लंबी गर्दन फैलाकर भौंक रहे थे, चिल्ला रहे थे। वहाँ वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए।
"देखो," उसने उससे विनती करते हुए क्रिकेट स्टंप लिए लड़कों के एक छोटे समूह की ओर इशारा किया, और उनमें से एक लड़का लड़खड़ाते हुए, अपनी एड़ी पर

घूमकर फिर से लड़खड़ाने लगा, मानो वह संगीत हॉल में एक विदूषक का अभिनय कर रहा हो।
"देखो," उसने उससे विनती की, क्योंकि डॉ. होम्स ने उससे कहा था कि वह उसे वास्तविक चीजों पर ध्यान दिलाए, किसी संगीत हॉल में जाए, क्रिकेट खेले - डॉ. होम्स ने कहा था कि यही वह खेल है, एक अच्छा बाहरी खेल, उसके पति के लिए एकदम सही खेल।
"देखो," उसने दोहराया।
अदृश्य ने उसे देखने का आदेश दिया, वह आवाज़ जो अब मानव जाति के सबसे महान व्यक्ति, सेप्टिमस से संवाद कर रही थी, जो हाल ही में जीवन से मृत्यु की ओर ले जाया गया था, वह प्रभु जो समाज को नया जीवन देने आया था, जो एक चादर की तरह, सूर्य की किरणों से झुलसी बर्फ की चादर की तरह, सदा अक्षुण्ण, सदा पीड़ा भोगने वाला पड़ा था, लेकिन वह इसे नहीं चाहता था, वह विलाप करते हुए अपने हाथ के इशारे से उस शाश्वत पीड़ा, उस शाश्वत अकेलेपन को अपने से दूर कर दिया।
"देखो," उसने दोहराया, क्योंकि उसे घर के बाहर ज़ोर से खुद से बात नहीं करनी चाहिए।
"अरे देखो," उसने उससे विनती की। लेकिन देखने लायक क्या था? कुछ भेड़ें।
बस इतना ही।
मैसी जॉनसन यह जानना चाहती थी कि रीजेंट्स पार्क ट्यूब स्टेशन का रास्ता क्या है—क्या वे उसे रीजेंट्स पार्क ट्यूब स्टेशन का रास्ता बता सकते हैं? वह दो दिन पहले ही एडिनबर्ग से आई थी।
"इस तरफ नहीं—वहाँ!" रेज़िया ने चिल्लाते हुए उसे एक तरफ इशारा किया, कहीं ऐसा न हो कि वह सेप्टिमस को देख ले।
मेज़ी जॉनसन को लगा कि दोनों ही अजीब लग रहे थे। सब कुछ बहुत अजीब लग रहा था। पहली बार लंदन आई थी, लीडेनहॉल स्ट्रीट में अपने चाचा के यहाँ नौकरी करने आई थी, और अब सुबह रीजेंट्स पार्क से गुज़रते हुए, कुर्सियों पर बैठे इस जोड़े ने उसे चौंका दिया; युवती विदेशी लग रही थी, पुरुष अजीब सा दिख रहा था; इतना कि अगर वह बहुत बूढ़ी भी हो जाए, तो भी उसे याद रहेगा और उसकी यादों में पचास साल पहले एक सुहावनी गर्मी की सुबह रीजेंट्स पार्क से गुज़रने का वो पल फिर से गूंज उठेगा। क्योंकि वह केवल उन्नीस साल की थी और आखिरकार लंदन आने का उसका सपना पूरा हो ही गया था; और अब ये कितना अजीब था,

जिस जोड़े से उसने रास्ता पूछा, लड़की चौंक गई और उसने अपना हाथ झटक दिया, और पुरुष—वह बहुत ही अजीब लग रहा था; शायद झगड़ा कर रहे थे; शायद हमेशा के लिए बिछड़ रहे थे; कुछ तो गड़बड़ थी, वह जानती थी; और अब ये सारे लोग (क्योंकि वह ब्रॉड वॉक पर लौट आई थी), पत्थर के कुंड, सजे-धजे फूल, बूढ़े पुरुष और महिलाएं, जिनमें से अधिकतर बीमार थे और बाथ चेयर पर बैठे थे— एडिनबर्ग के बाद ये सब कुछ अजीब सा लग रहा था। और मेज़ी जॉनसन, जब उस धीरे- धीरे चलते, धुंधली निगाहों से देखते, हवा से सराबोर समूह में शामिल हुई— गिलहरियाँ बैठी और खुद को संवार रही थीं, गौरैया दानों के लिए फड़फड़ा रही थीं, कुत्ते रेलिंग से खेल रहे थे, एक-दूसरे से खेल रहे थे, जबकि नरम गर्म हवा उन पर बह रही थी और जीवन को निहारने वाली उनकी स्थिर, अचंभित निगाहों को कुछ चंचल और शांत कर रही थी—मेज़ी जॉनसन को सचमुच लगा कि उसे 'ओह!' कहना चाहिए (क्योंकि उस सीट पर बैठे युवक ने उसे चौंका दिया था। कुछ तो गड़बड़ है, वह जानती थी।)
हे भगवान! हे भगवान! वह रोना चाहती थी। (उसने अपने लोगों को छोड़ दिया था; उन्होंने उसे पहले ही चेतावनी दे दी थी कि क्या होगा।)
वह घर पर क्यों नहीं रुकी? उसने लोहे की रेलिंग के हैंडल को घुमाते हुए रोते हुए कहा।
श्रीमती डेम्पस्टर (जो गिलहरियों के लिए रोटी के टुकड़े बचाकर रखती थीं और अक्सर रीजेंट्स पार्क में दोपहर का भोजन करती थीं) ने सोचा, वह लड़की अभी कुछ नहीं जानती; और वास्तव में उन्हें लगता था कि थोड़ा मोटा, थोड़ा लापरवाह और अपनी अपेक्षाओं में थोड़ा संयमित होना बेहतर है। पर्सी शराब पीता था। खैर, बेटा होना बेहतर है, श्रीमती डेम्पस्टर ने सोचा। उन्होंने बहुत कठिन समय देखा था, और ऐसी लड़की को देखकर मुस्कुराए बिना नहीं रह सकीं। तुम्हारी शादी हो जाएगी, क्योंकि तुम काफी सुंदर हो, श्रीमती डेम्पस्टर ने सोचा। शादी कर लो, उन्होंने सोचा, और फिर तुम्हें पता चल जाएगा। ओह, रसोइये, और इसी तरह। हर आदमी के अपने तरीके होते हैं। लेकिन अगर मुझे पता होता तो क्या मैं इस तरह चुनती, श्रीमती डेम्पस्टर ने सोचा, और मेज़ी जॉनसन से एक शब्द फुसफुसाने की इच्छा हुई; उसके थके हुए बूढ़े चेहरे की झुर्रियों पर दया का चुंबन महसूस करने की। क्योंकि जीवन कठिन रहा है, श्रीमती डेम्पस्टर ने सोचा। उन्होंने इसे क्या नहीं दिया था? गुलाब; उसका

शरीर; उसके पैर भी। (उसने अपनी स्कर्ट के नीचे उभरे हुए हिस्सों को चित्रित किया।)
गुलाब, उसने व्यंग्यपूर्वक सोचा। सब बेकार हैं, प्रिये। दरअसल, खान-पान, प्रेम-प्रसंग, अच्छे-बुरे दिन, जीवन केवल गुलाबों से भरा नहीं था, और इससे भी बढ़कर, मैं आपको बता दूं, कैरी डेम्पस्टर केंटिश टाउन की किसी भी महिला से अपनी किस्मत बदलना नहीं चाहती थी! लेकिन, उसने विनती की, दया करो। गुलाबों के खो जाने पर दया करो। उसने जलकुंभी के क्यारियों के पास खड़ी मेज़ी जॉनसन से दया की गुहार लगाई।
आह, वह हवाई जहाज! क्या श्रीमती डेम्पस्टर हमेशा से विदेशी जगहों को देखने की ख्वाहिश नहीं रखती थीं? उनका एक भतीजा था, जो एक मिशनरी था। वह हवाई जहाज आसमान में उड़ा और तेज़ी से आगे बढ़ा। वह हमेशा मार्गेट में समुद्र में जाती थीं, ज़मीन से दूर नहीं, लेकिन उन्हें उन महिलाओं से चिढ़ थी जो पानी से डरती थीं। वह तेज़ी से उड़ा और नीचे आया। उनका दिल बैठ गया। फिर ऊपर उठा। श्रीमती डेम्पस्टर ने शर्त लगाई, "इसमें एक बढ़िया नौजवान सवार है," और वह हवाई जहाज दूर चला गया, तेज़ी से और धुंधलाता हुआ, दूर और दूर हवाई जहाज उड़ता चला गया; ग्रीनविच और सभी मस्तूलों के ऊपर से; धूसर चर्चों के छोटे से द्वीप के ऊपर से, सेंट पॉल और बाकी सब, लंदन के दोनों ओर फैले खेतों और गहरे भूरे जंगलों तक, जहाँ साहसी थ्रश पक्षी बेखौफ फुदकते हुए, तेज़ी से नज़र डालते हुए, घोंघे को पकड़ते और उसे एक पत्थर पर एक बार, दो बार, तीन बार थपथपाते थे।
हवाई जहाज दूर और दूर उड़ता चला गया, जब तक कि वह एक चमकदार चिंगारी के अलावा कुछ नहीं रह गया; एक आकांक्षा; एक एकाग्रता; एक प्रतीक (ग्रीनविच में अपनी घास की पट्टी को जोर-शोर से रोल करते हुए श्री बेंटली को ऐसा ही लगा) मनुष्य की आत्मा का; उसके दृढ़ संकल्प का, श्री बेंटली ने देवदार के पेड़ के चारों ओर घूमते हुए सोचा, अपने शरीर से बाहर निकलने का, अपने घर से परे, विचार, आइंस्टीन, अटकलबाजी, गणित, मेंडेलियन सिद्धांत के माध्यम से—हवाई जहाज दूर उड़ गया।
फिर, एक मैला-कुचैला, साधारण सा दिखने वाला आदमी चमड़े का थैला लिए सेंट पॉल कैथेड्रल की सीढ़ियों पर खड़ा था और हिचकिचा रहा था, क्योंकि अंदर कैसा सुकून था, कैसा स्वागत था, कितनी सारी कब्रें थीं जिन पर झंडे लहरा रहे थे, ये विजय के प्रतीक थे, सेनाओं पर नहीं, बल्कि उस सत्य की खोज की

पीड़ादायक भावना पर, जिसने मुझे इस समय बेरोजगार छोड़ दिया है। और इससे भी बढ़कर, कैथेड्रल साथ देता है, उसने सोचा, एक समाज की सदस्यता के लिए आमंत्रित करता है; महान लोग इसके सदस्य हैं; शहीद इसके लिए मर चुके हैं; क्यों न अंदर जाऊं, उसने सोचा, क्यों न इस चमड़े के थैले को, जो पर्चों से भरा है, एक वेदी के सामने रख दूं, एक क्रॉस के सामने, जो किसी ऐसी चीज का प्रतीक है जो खोज, अन्वेषण और शब्दों के जोड़-तोड़ से परे जाकर पूर्ण रूप से आत्मा बन गई है, निराकार, प्रेत जैसी—क्यों न अंदर जाऊं? उसने सोचा और जब वह हिचकिचा रहा था, तभी लुडगेट सर्कस के ऊपर से हवाई जहाज उड़ गया।
यह अजीब था; एकदम सन्नाटा था। यातायात के शोर के बीच कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। मानो बिना किसी दिशा के, अपनी मर्ज़ी से आगे बढ़ रहा हो। और अब, ऊपर की ओर, सीधे ऊपर की ओर, मानो परमानंद में, शुद्ध आनंद में, पीछे से सफेद धुआँ गोल-गोल घूमता हुआ निकला, मानो T, O और F लिख रहा हो।
"ये लोग क्या देख रहे हैं?" क्लेरिसा डैलोवे ने दरवाजा खोलने वाली नौकरानी से कहा।
घर का हॉल एकदम ठंडा था। श्रीमती डैलोवे ने अपनी आँखों पर हाथ रखा, और जैसे ही नौकरानी ने दरवाजा बंद किया और लूसी के स्कर्ट की सरसराहट सुनी, उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई नन संसार छोड़कर चली गई हो और उसे अपने परिचित घूंघट और पुरानी प्रार्थनाओं का प्रतिसाद महसूस हो रहा हो। रसोइया ने रसोई में सीटी बजाई। उन्होंने टाइपराइटर की क्लिक सुनी। यही उनका जीवन था, और हॉल की मेज पर सिर झुकाकर, उन्होंने उस प्रभाव में सिर झुकाया, खुद को धन्य और पवित्र महसूस किया, और टेलीफोन संदेश वाला पैड उठाते हुए मन ही मन कहा, कि ऐसे क्षण जीवन के वृक्ष की कलियाँ हैं, अंधकार के फूल हैं, उन्होंने सोचा (जैसे कोई सुंदर गुलाब केवल उनकी आँखों के लिए खिला हो); एक पल के लिए भी उन्हें ईश्वर पर विश्वास नहीं था; लेकिन उससे भी कहीं ज़्यादा, उसने पैड उठाते हुए सोचा, हमें रोज़मर्रा की ज़िंदगी में नौकरों, हाँ, कुत्तों और कैनरी पक्षियों, और सबसे बढ़कर अपने पति रिचर्ड को चुकाना होगा, जो इस सब की नींव थे—खुशनुमा आवाज़ों की, हरी बत्तियों की, यहाँ तक कि रसोइए की सीटी की भी, क्योंकि श्रीमती वॉकर आयरिश थीं और दिन भर सीटी बजाती रहती थीं—हमें इन अनमोल पलों के गुप्त भंडार से चुकाना होगा, उसने पैड उठाते हुए सोचा, जबकि लूसी उसके पास खड़ी होकर समझाने की कोशिश कर रही थी कि कैसे

"श्रीमान डैलोवे, महोदया"—
क्लेरिसा ने टेलीफोन पैड पर पढ़ा, "लेडी ब्रूटन जानना चाहती हैं कि क्या मिस्टर डैलोवे आज उनके साथ दोपहर का भोजन करेंगे।"
"श्री डैलोवे ने मुझे आपसे यह कहने के लिए कहा था कि वह दोपहर का भोजन बाहर करेंगे।"
"अरे वाह!" क्लैरिसा ने कहा, और लूसी ने मानो उसे निराश करने के इरादे से ऐसा कहा (परंतु उसे दुख नहीं पहुँचाया); उनके बीच सामंजस्य महसूस किया; संकेत समझ गई; सोचा कि कुलीन लोग कैसे प्रेम करते हैं; अपने भविष्य को शांति से संजोया; और श्रीमती डैलोवे की छतरी लेकर, उसे एक पवित्र हथियार की तरह संभाला, जिसे कोई देवी युद्ध के मैदान में सम्मानपूर्वक प्रदर्शन करने के बाद त्याग देती है, और उसे छतरी स्टैंड में रख दिया।
"अब और मत डरो," क्लेरिसा ने कहा। सूरज की गर्मी से अब और मत डरो; क्योंकि लेडी ब्रूटन द्वारा रिचर्ड को उसके बिना दोपहर के भोजन पर बुलाने के सदमे ने उस पल को हिलाकर रख दिया था, जिस पल वह खड़ी थी, ठीक वैसे ही जैसे नदी के तल पर कोई पौधा नाव के चप्पू के झटके से कांप उठता है: वह भी कांप उठी: वह भी कांप उठी।
मिलिसेंट ब्रूटन, जिनकी लंच पार्टियाँ बेहद मनोरंजक मानी जाती थीं, ने उनसे नहीं पूछा था। कोई तुच्छ ईर्ष्या उन्हें रिचर्ड से अलग नहीं कर सकती थी। लेकिन वह समय से भयभीत थीं, और लेडी ब्रूटन के चेहरे पर, मानो किसी भावहीन पत्थर पर खुदी हुई घड़ी हो, जीवन के क्षय को पढ़ सकती थीं; कैसे साल दर साल उनका हिस्सा कम होता जा रहा था; कैसे बचा हुआ हिस्सा अब उतना विस्तार करने, उतना समाहित करने में असमर्थ था, जितना कि जवानी के दिनों में, जीवन के रंगों, लवणों, स्वरों को, जिससे वह जिस कमरे में प्रवेश करती थीं, उसे भर देती थीं, और अक्सर जब वह अपने ड्राइंग रूम की दहलीज पर एक पल के लिए हिचकिचाती खड़ी होती थीं, तो एक अद्भुत अनिश्चितता महसूस करती थीं, जैसी किसी गोताखोर को गोता लगाने से पहले रोक सकती है, जब समुद्र उसके नीचे अंधेरा और उजाला होता है, और लहरें जो टूटने की धमकी देती हैं, लेकिन केवल धीरे से अपनी सतह को चीरती हैं, लुढ़कती हैं, छुपाती हैं और मोतियों से सजी समुद्री घास को ढक लेती हैं।
उसने पैड को हॉल की मेज पर रख दिया। वह धीरे-धीरे सीढ़ियों की रेलिंग पर हाथ रखकर ऊपर जाने लगी, मानो वह किसी पार्टी से लौटी हो, जहाँ अब उसकी यह

सहेली, जिसने अब उसका चेहरा, उसकी आवाज़ उसे याद दिला दी थी, दरवाज़ा बंद करके बाहर चली गई थी और अकेली खड़ी थी, उस भयानक रात के बीच एक अकेली आकृति, या यूँ कहें कि इस नीरस जून की सुबह की घूरती निगाहों के बीच; कुछ लोगों के लिए गुलाब की पंखुड़ियों की कोमल चमक से भरी हुई, वह जानती थी, और उसने इसे महसूस किया, जब वह खुली सीढ़ी की खिड़की के पास रुकी, जिससे पर्दे फड़फड़ा रहे थे, कुत्ते भौंक रहे थे, अंदर आ रहे थे, उसने सोचा, खुद को अचानक मुरझाया हुआ, बूढ़ा, निर्जीव महसूस करते हुए, दिन की पीसने, बहने, खिलने की आवाज़, बाहर, खिड़की से बाहर, उसके शरीर और दिमाग से बाहर, जो अब काम नहीं कर रहा था, क्योंकि लेडी ब्रूटन, जिनकी लंच पार्टियाँ असाधारण रूप से मनोरंजक मानी जाती थीं, ने उसे नहीं बुलाया था।
जैसे कोई साध्वी एकांतवास में जाती है, या कोई बच्चा किसी मीनार की खोज करता है, वैसे ही वह ऊपर गई, खिड़की पर रुकी, और बाथरूम में आ गई। वहाँ हरे रंग का लिनोलियम था और नल से पानी टपक रहा था। जीवन के केंद्र में एक खालीपन था; एक अटारी जैसा कमरा। महिलाओं को अपने महंगे वस्त्र उतारने पड़ते हैं। दोपहर में उन्हें कपड़े उतारने पड़ते हैं। उसने पिनकुशन में छेद किया और अपनी पंखों वाली पीली टोपी बिस्तर पर रख दी। चादरें साफ थीं, एक चौड़ी सफेद पट्टी की तरह एक तरफ से दूसरी तरफ तक कसकर बिछी हुई थीं। उसका बिस्तर संकरा होता चला जाएगा। मोमबत्ती आधी जल चुकी थी और वह बैरन मार्बोट के संस्मरणों को गहराई से पढ़ रही थी। उसने देर रात तक मॉस्को से वापसी के बारे में पढ़ा था। घर में इतनी देर तक सन्नाटा छाया रहा कि रिचर्ड ने उसकी बीमारी के बाद जोर देकर कहा कि उसे बिना किसी बाधा के सोना चाहिए। और वास्तव में उसे मॉस्को से वापसी के बारे में पढ़ना ज्यादा पसंद था। वह यह जानता था। इसलिए कमरा एक अटारी जैसा था; बिस्तर संकरा था; और वहाँ लेटे- लेटे पढ़ते हुए, क्योंकि उसे नींद नहीं आती थी, वह प्रसव के दौरान संरक्षित अपनी पवित्रता को दूर नहीं कर पा रही थी, जो उस पर चादर की तरह चिपकी हुई थी। बचपन में प्यारी, अचानक एक ऐसा क्षण आया—उदाहरण के लिए क्लीवेडेन के जंगलों के नीचे नदी पर—जब, इस ठंडे स्वभाव के किसी संकुचन के कारण, वह उसे धोखा दे बैठी। और फिर कॉन्स्टेंटिनोपल में, और बार-बार। वह देख सकती थी कि उसमें क्या कमी थी। यह सुंदरता नहीं थी; यह बुद्धि नहीं थी। यह कुछ ऐसा आंतरिक था जो व्याप्त था; कुछ ऐसा गर्म जो सतहों को तोड़ता था और पुरुष और स्त्री के, या स्त्रियों के एक साथ, ठंडे संपर्क में लहरें पैदा करता था।

इसे वह धुंधला सा महसूस कर सकती थी। वह इससे नाराज़ थी, उसके मन में कहीं न कहीं एक संशय था, या जैसा कि वह महसूस करती थी, प्रकृति द्वारा भेजा गया था (जो हमेशा बुद्धिमान होती है); फिर भी वह कभी-कभी एक स्त्री के आकर्षण के आगे झुकने से खुद को रोक नहीं पाती थी, एक लड़की के नहीं, एक ऐसी स्त्री के आकर्षण के आगे जो, जैसा कि वे अक्सर उसके सामने, किसी परेशानी, किसी मूर्खता को स्वीकार करती थीं। और चाहे वह दया हो, उनकी सुंदरता हो, या उनका उम्र से अधिक होना हो, या कोई संयोग हो—जैसे कोई हल्की सी खुशबू, या बगल के कमरे में बजता वायलिन (कुछ क्षणों में आवाज़ों की शक्ति कितनी विचित्र होती है), उसने निस्संदेह उस पल वही महसूस किया जो पुरुष महसूस करते हैं। बस एक पल के लिए; लेकिन इतना काफी था। यह एक अचानक रहस्योद्घाटन था, एक शर्मिंदगी जैसी लाली जिसे रोकने की कोशिश की जाती है और फिर, जैसे-जैसे वह फैलती है, व्यक्ति उसके विस्तार के आगे झुक जाता है, और सबसे दूर के किनारे तक दौड़ता है और वहाँ कांपता है और दुनिया को करीब आते हुए महसूस करता है, किसी आश्चर्यजनक महत्व से भरी हुई, परमानंद के किसी दबाव से भरी हुई, जिसने उसकी पतली त्वचा को चीर दिया और दरारों और घावों पर असाधारण राहत के साथ बह निकला! फिर, उस क्षण के लिए, उसने एक प्रकाश देखा; एक क्रोकस में जलती हुई माचिस; एक आंतरिक अर्थ लगभग व्यक्त हो गया। लेकिन निकटता दूर हो गई; कठोरता नरम हो गई। वह क्षण समाप्त हो गया। ऐसे क्षणों के विपरीत (महिलाओं के साथ भी) (जैसे ही उसने अपनी टोपी नीचे रखी) बिस्तर, बैरन मार्बोट और आधी जली मोमबत्ती दिखाई दी। नींद से जागते हुए, फर्श चरमरा उठा; रोशन घर अचानक अंधेरा हो गया, और अगर वह अपना सिर उठाती तो उसे रिचर्ड द्वारा हैंडल को जितना हो सके धीरे से छोड़ने की हल्की सी आवाज़ सुनाई देती, जो मोज़े पहने हुए ही सीढ़ियों से ऊपर चला गया और फिर, अक्सर की तरह, अपनी गर्म पानी की बोतल गिरा देता और गालियाँ देता! वह कितना हँसी!
लेकिन प्यार का ये सवाल (उसने अपना कोट उतारते हुए सोचा), महिलाओं से प्यार हो जाना। सैली सेटन को ही ले लो; पुराने दिनों में सैली सेटन के साथ उसका रिश्ता। क्या वो भी आखिरकार प्यार ही था?
वह ज़मीन पर बैठी थी—सैली को देखकर उसकी पहली छाप यही थी—वह घुटनों के बल बैठी सिगरेट पी रही थी। कहाँ हो सकता था? मैनिंग के घर? किनलॉक-जोन्स के घर? किसी पार्टी में (कहाँ, उसे ठीक से याद नहीं था), क्योंकि उसे अच्छी तरह याद था कि उसने अपने साथ बैठे आदमी से पूछा था, "वह कौन है?" और उसने उसे

बताया था, और कहा था कि सैली के माता-पिता की आपस में नहीं बनती (यह सुनकर उसे कितना झटका लगा—कि किसी के माता-पिता आपस में झगड़ते हैं!)। लेकिन उस पूरी शाम वह सैली से अपनी नज़रें नहीं हटा पाई। वह असाधारण रूप से सुंदर थी, वैसी सुंदरता जिसकी वह सबसे ज़्यादा तारीफ़ करती थी, सांवली, बड़ी-बड़ी आँखों वाली, और उसमें वह गुण था, जो उसके पास न होने के कारण वह हमेशा से चाहती थी—एक तरह की बेफिक्री, मानो वह कुछ भी कह सकती हो, कुछ भी कर सकती हो; यह गुण अंग्रेज़ महिलाओं की तुलना में विदेशियों में ज़्यादा आम है। सैली हमेशा कहती थी कि उसकी रगों में फ्रांसीसी खून है, उसके एक पूर्वज का मैरी एंटोनेट से संबंध था, उनका सिर काट दिया गया था, और वे एक माणिक की अंगूठी छोड़ गए थे। शायद उसी गर्मी में वह बॉर्टन में रहने आई थी, एक रात खाने के बाद अचानक बिना पैसे लिए, और बेचारी आंटी हेलेना को इतना परेशान कर दिया कि उन्होंने उसे कभी माफ़ नहीं किया। घर में कुछ कहासुनी हुई थी। उस रात जब वह आई थी, उसके पास सचमुच एक पैसा भी नहीं था—आने के लिए उसने एक ब्रोच गिरवी रख दी थी। वह गुस्से में जल्दी में आई थी। वे रात भर बातें करती रहीं। सैली ने ही हेलेना को पहली बार बॉर्टन के सुरक्षित माहौल का एहसास कराया। उसे यौन संबंधों के बारे में कुछ नहीं पता था—सामाजिक समस्याओं के बारे में भी कुछ नहीं। उसने एक बार एक बूढ़े आदमी को खेत में मरते हुए देखा था—उसने बछड़ों के जन्म के तुरंत बाद गायों को देखा था। लेकिन आंटी हेलेना को किसी भी विषय पर चर्चा पसंद नहीं थी (जब सैली ने उन्हें विलियम मॉरिस की किताब दी, तो उसे भूरे कागज़ में लपेटना पड़ा)। वे घंटों घर के सबसे ऊपरी हिस्से में बने उनके शयनकक्ष में बैठी रहीं, जीवन के बारे में, दुनिया को कैसे सुधारेंगी, इस बारे में बातें करती रहीं। उनका इरादा निजी संपत्ति को समाप्त करने के लिए एक संस्था स्थापित करने का था, और उन्होंने वास्तव में एक पत्र भी लिख लिया था, हालांकि उसे भेजा नहीं गया था। ये विचार ज़ाहिर तौर पर सैली के थे—लेकिन बहुत जल्द वह भी उतनी ही उत्साहित हो गईं—नाश्ते से पहले बिस्तर पर प्लेटो पढ़ती थीं; मॉरिस पढ़ती थीं; घंटों शेली पढ़ती थीं।
सैली की शक्ति अद्भुत थी, उसका हुनर, उसका व्यक्तित्व। उदाहरण के लिए, फूलों के साथ उसका हुनर ही कुछ और था। बॉर्टन में, मेज पर हमेशा छोटे-छोटे कड़े फूलदान रखे रहते थे। सैली बाहर जाती, हॉलीहॉक, डहलिया—हर तरह के फूल जो पहले कभी एक साथ नहीं देखे गए थे—उन्हें तोड़ती, और उन्हें कटोरियों

में पानी की सतह पर तैरा देती। सूर्यास्त के समय खाना खाने आना अद्भुत नज़ारा होता था। (ज़ाहिर है, आंटी हेलेना को फूलों के साथ ऐसा बर्ताव करना बुरा लगता था।) फिर वह अपना स्पंज भूल गई, और नग्न अवस्था में गलियारे में दौड़ने लगी। वह गंभीर बूढ़ी नौकरानी, एलेन एटकिंस, बड़बड़ाती हुई इधर-उधर घूमने लगी—"अगर किसी सज्जन ने देख लिया होता तो?" सचमुच, उसने लोगों को चौंका दिया था। पापा कहते थे, वह बहुत ही अस्त-व्यस्त रहती थी।
पीछे मुड़कर देखने पर सबसे अजीब बात यह थी कि सैली के लिए उसके दिल में कितनी पवित्रता और ईमानदारी थी। यह किसी पुरुष के लिए होने वाली भावना जैसी नहीं थी। यह पूरी तरह निस्वार्थ थी, और इसके अलावा, इसमें एक ऐसा गुण था जो केवल स्त्रियों के बीच, नवविकसित स्त्रियों के बीच ही हो सकता है। यह उसकी ओर से सुरक्षात्मक थी; एक साथ होने की भावना से उपजी थी, एक ऐसी आशंका से जो उन्हें अलग कर देगी (वे हमेशा शादी को एक आपदा की तरह देखती थीं), जिसने इस शूरवीरता, इस सुरक्षात्मक भावना को जन्म दिया जो सैली की तुलना में उसकी ओर कहीं अधिक थी। क्योंकि उन दिनों वह पूरी तरह लापरवाह थी; बहादुरी दिखाने के लिए सबसे मूर्खतापूर्ण काम करती थी; छत पर साइकिल चलाती थी; सिगार पीती थी। वह बेतुकी थी—बहुत बेतुकी। लेकिन उसका आकर्षण इतना प्रबल था, कम से कम उसके लिए, कि उसे याद है कि वह घर के सबसे ऊपरी हिस्से में अपने शयनकक्ष में गर्म पानी का कैन हाथों में लिए खड़ी होकर जोर से कह रही थी, "वह इस छत के नीचे है... वह इस छत के नीचे है!"
नहीं, अब उन शब्दों का उसके लिए कोई अर्थ नहीं था। उसे अपनी पुरानी भावना की एक झलक भी नहीं मिल रही थी। लेकिन उसे याद था कि वह उत्साह से कांप रही थी, और एक तरह के परमानंद में अपने बाल संवार रही थी (अब पुरानी भावना उसके मन में लौटने लगी थी, जब उसने अपने हेयरपिन निकाले, उन्हें ड्रेसिंग टेबल पर रखा और बाल संवारने लगी), गुलाबी शाम की रोशनी में कौवे इधर-उधर चहचहा रहे थे, और वह तैयार होकर नीचे गई, और हॉल पार करते हुए उसे लगा "अगर अब मरना हो तो अब मरना ही सबसे सुखद होगा।" यही उसकी भावना थी—ओथेलो की भावना, और वह इसे महसूस कर रही थी, उसे पूरा यकीन था, उतनी ही दृढ़ता से जितना शेक्सपियर ने ओथेलो को महसूस कराने का इरादा किया था, और यह सब इसलिए क्योंकि वह सैली सेटन से मिलने के लिए सफेद फ्रॉक पहनकर डिनर पर नीचे आ रही थी!

उसने गुलाबी जालीदार कपड़ा पहना हुआ था—क्या ऐसा मुमकिन था? वह मानो प्रकाश से जगमगा रही थी, मानो कोई पक्षी या हवा का गोला उड़कर आया हो और पल भर के लिए किसी झाड़ी से चिपक गया हो। लेकिन जब कोई प्यार में होता है (और यह प्यार के सिवा और क्या था?), तो दूसरों की पूरी तरह से उदासीनता से ज़्यादा अजीब कुछ नहीं होता। आंटी हेलेना रात के खाने के बाद यूँ ही चली गईं; पापा अख़बार पढ़ रहे थे। पीटर वॉल्श शायद वहाँ थे, और बूढ़ी मिस कमिंग्स भी; जोसेफ ब्रेटकॉफ तो ज़रूर थे, क्योंकि बेचारा बूढ़ा हर गर्मी में हफ़्तों तक आता था और उनके साथ जर्मन पढ़ने का नाटक करता था, लेकिन असल में पियानो बजाता था और बिना आवाज़ के ब्रह्म्स के गीत गाता था।
सैली के लिए ये सब महज़ एक पृष्ठभूमि थी। वह अंगीठी के पास खड़ी होकर पापा से बातें कर रही थी, उसकी उस सुरीली आवाज़ में, जिससे उसकी हर बात एक दुलार जैसी लगती थी। पापा उसकी ओर कुछ हद तक अपनी इच्छा के विरुद्ध आकर्षित होने लगे थे (वे उसे अपनी एक किताब उधार देने और उसे छत पर भीगी हुई पाने की घटना को कभी भुला नहीं पाए थे)। तभी अचानक उसने कहा, "अंदर बैठे रहना कितना अफ़सोस की बात है!" और वे सब छत पर चले गए और इधर-उधर टहलने लगे। पीटर वॉल्श और जोसेफ ब्रेटकॉफ वैगनर के संगीत पर बातें करते रहे। वह और सैली थोड़ा पीछे रह गईं। फिर उसके जीवन का सबसे खूबसूरत पल आया, जब वह फूलों से भरे एक पत्थर के कलश के पास से गुज़री। सैली रुकी; एक फूल तोड़ा; उसके होठों पर चूमा। मानो पूरी दुनिया उलट-पुलट हो गई हो! बाकी सब गायब हो गए; वह वहाँ सैली के साथ अकेली रह गई। और उसे ऐसा लगा जैसे उसे एक उपहार दिया गया हो, लपेटकर, और कहा गया हो कि बस इसे अपने पास रखो, इसे मत देखो—एक हीरा, कोई असीम रूप से कीमती वस्तु, लपेटी हुई, जिसे जैसे-जैसे वे चलते रहे (ऊपर-नीचे, ऊपर-नीचे), उसने खोला, या उसकी चमक से रोशनी निकली, रहस्योद्घाटन हुआ, धार्मिक भावना जागी!—जब बूढ़े यूसुफ और पतरस उनके सामने आए:
"तारे निहारना?" पीटर ने कहा।
ऐसा लग रहा था मानो अंधेरे में किसी ग्रेनाइट की दीवार पर अपना चेहरा रगड़ रहे हों! यह चौंकाने वाला था; यह भयानक था!
अपने लिए नहीं। उसे बस यही महसूस हो रहा था कि सैली को पहले से ही कितना सताया जा रहा था, उसके साथ कितना बुरा बर्ताव किया जा रहा था; उसे उसकी शत्रुता, उसकी ईर्ष्या, और उनके बीच की दोस्ती तोड़ने का उसका दृढ़ निश्चय महसूस हो रहा था। यह सब उसने ऐसे देखा जैसे कोई बिजली की चमक में किसी

परिदृश्य को देख रहा हो—और सैली (उसने पहले कभी उसकी इतनी प्रशंसा नहीं की थी!) अदम्य साहस के साथ अपने रास्ते पर आगे बढ़ रही थी। वह हँसी। उसने बूढ़े जोसेफ से तारों के नाम बताने को कहा, जो वह बड़े चाव से करता था। वह वहीं खड़ी रही: उसने सुना। उसने तारों के नाम सुने।
"ओह, यह तो भयानक है!" उसने मन ही मन कहा, मानो उसे पहले से ही पता था कि कुछ न कुछ बाधा डालेगा, उसकी खुशी के पल को कड़वा कर देगा।
फिर भी, आखिर में वह उसकी कितनी ऋणी थी। जब भी वह उसके बारे में सोचती, तो किसी न किसी कारण से उसके झगड़े याद आ जाते—शायद इसलिए कि वह उसकी अच्छी राय बहुत चाहती थी। वह उसे "भावुक" और "सभ्य" जैसे शब्द कहने के लिए बाध्य थी; ये शब्द उसके जीवन के हर दिन शुरू हो जाते थे, मानो वह उसकी रक्षा कर रहा हो। एक किताब भावुक थी; जीवन के प्रति दृष्टिकोण भावुक था। "भावुक" शायद वह अतीत के बारे में सोच रही थी। वह सोचती थी, जब वह वापस आएगा तो क्या सोचेगा?
क्या वह बूढ़ी हो गई थी? क्या वह ऐसा कहेगा, या जब वह वापस आएगा तो क्या वह उसे यह सोचते हुए देखेगी कि वह बूढ़ी हो गई है? यह सच था। बीमारी के बाद से उसका रंग लगभग पीला पड़ गया था।
अपना ब्रोच मेज पर रखते हुए, उसे अचानक एक झटका लगा, मानो सोचते-सोचते बर्फीले पंजे उस पर जम गए हों। वह अभी बूढ़ी नहीं हुई थी। उसने अभी-अभी बावनवाँ साल शुरू किया था। कई महीने अभी बाकी थे। जून, जुलाई, अगस्त! हर महीना लगभग पूरा था, और मानो गिरती हुई बूँद को पकड़ने के लिए, क्लैरिसा (ड्रेसिंग टेबल की ओर बढ़ते हुए) उस पल के बिल्कुल केंद्र में डूब गई, उसे वहीं ठहर गई—जून की उस सुबह का पल, जिस पर बाकी सभी सुबहों का दबाव था, शीशे, ड्रेसिंग टेबल और सभी बोतलों को नए सिरे से देखते हुए, खुद को एक बिंदु पर समेटते हुए (जैसे ही उसने शीशे में देखा), उस महिला का कोमल गुलाबी चेहरा देखा जो उसी रात पार्टी देने वाली थी; क्लैरिसा डैलोवे का; खुद का।
उसने अपना चेहरा कितनी ही बार देखा होगा, और हर बार उसी सूक्ष्म संकुचन के साथ! जब वह शीशे में देखती तो अपने होंठ सिकोड़ लेती। यह उसके चेहरे को एक तीक्ष्णता देने के लिए था। यही उसका असली रूप था—तीक्ष्ण; तीर की तरह; निश्चित। यही उसका असली रूप था जब किसी प्रयास, किसी पुकार ने उसे खुद को वैसे ही प्रकट करने के लिए प्रेरित किया, और उसके सभी हिस्सों को एक साथ

मिला दिया, जिसे केवल वही जानती थी कि वे कितने भिन्न, कितने असंगत और दुनिया के लिए केवल एक केंद्र, एक हीरा, एक ऐसी स्त्री में सिमटे हुए थे जो उसके ड्राइंग रूम में बैठकर मिलन बिंदु बन जाती थी, कुछ नीरस जिंदगियों में एक चमक, शायद अकेले लोगों के लिए एक आश्रय; उसने युवाओं की मदद की थी, जो उसके प्रति कृतज्ञ थे; उसने हमेशा एक जैसी रहने की कोशिश की थी, अपने अन्य पहलुओं—कमियों, ईर्ष्याओं, घमंड, संदेहों—को कभी नहीं दिखाया, जैसे कि लेडी ब्रूटन का उसे दोपहर के भोजन पर न बुलाना; जो, उसने सोचा (अंत में अपने बाल संवारते हुए), बिल्कुल घटिया है! अब, उसकी पोशाक कहाँ थी?
उसकी शाम की पोशाकें अलमारी में टंगी थीं। क्लैरिसा ने अपना हाथ अलमारी में डाला और धीरे से हरी पोशाक उतारकर खिड़की के पास ले गई। यह फट गई थी। किसी ने इसके निचले हिस्से पर पैर रख दिया था। दूतावास की पार्टी में उसने महसूस किया था कि ऊपर की ओर सिलवटों के बीच से यह फट गई है। कृत्रिम रोशनी में हरा रंग चमक रहा था, लेकिन धूप में अब उसका रंग फीका पड़ गया था। वह इसे सिल लेगी। उसकी नौकरानियों के पास बहुत काम था। वह इसे आज रात पहनेगी। वह अपने रेशमी कपड़े, कैंची और—क्या था वो?—अपनी अंगुली, ज़ाहिर है, ड्राइंग रूम में ले जाएगी, क्योंकि उसे लिखना भी है और यह भी देखना है कि सब कुछ ठीक-ठाक है।
अजीब बात है, उसने सोचा, सीढ़ियों पर रुककर, उस हीरे जैसी आकृति, उस अकेले व्यक्ति को याद करते हुए, अजीब बात है कि एक मालकिन अपने घर के हर पल, हर मिजाज को कैसे जान लेती है! सीढ़ियों से हल्की-हल्की आवाज़ें घुमावदार तरीके से ऊपर उठ रही थीं; पोछे की सरसराहट; थपथपाहट; खटखटाहट; सामने का दरवाजा खुलने पर तेज़ आवाज़; तहखाने में किसी के संदेश को दोहराने की आवाज़; ट्रे पर चांदी के बर्तनों की खनक; पार्टी के लिए साफ चांदी के बर्तन। सब कुछ पार्टी के लिए था।
(और लूसी, हाथ में ट्रे लिए ड्राइंग रूम में आकर, विशाल मोमबत्तियों को मेंटलपीस पर रखा, बीच में चांदी का डिब्बा रखा, और क्रिस्टल डॉल्फिन को घड़ी की ओर घुमा दिया। वे आते; वे खड़े होते; वे उन नज़ाकत भरी बातों में बोलते जिनकी वह नकल कर सकती थी, देवियों और सज्जनों। उन सब में, उसकी मालकिन सबसे प्यारी थी—चांदी, लिनन, चीनी मिट्टी के बर्तनों की मालकिन, क्योंकि सूरज, चांदी, कब्ज़ों से उतरे दरवाजे, रम्पेलमेयर के आदमी, उसे एक एहसास दिलाते थे, जब वह पेपर-नाइफ को जड़ाऊ मेज पर रखती थी, कि उसने कुछ

हासिल कर लिया है। देखो! देखो! उसने बेकरी की दुकान में अपने पुराने दोस्तों से कहा, जहाँ उसने पहली बार कैटरहम में काम देखा था, और शीशे में झाँक रही थी। वह लेडी एंजेला थी, राजकुमारी मैरी की सेवा कर रही थी, तभी श्रीमती डैलोवे अंदर आईं।)
"ओह लूसी," उसने कहा, "चांदी वाकई बहुत अच्छी लग रही है!"
"और हाँ," उसने क्रिस्टल डॉल्फ़िन को सीधा करते हुए कहा, "कल रात का नाटक तुम्हें कैसा लगा?" "ओह, उन्हें तो नाटक खत्म होने से पहले ही जाना पड़ा!" उसने कहा। "उन्हें दस बजे तक वापस आना था!" उसने कहा। "तो उन्हें पता ही नहीं चला कि क्या हुआ," उसने कहा। "यह तो वाकई बदकिस्मती है," उसने कहा (क्योंकि अगर उसके नौकर उससे कहते तो वे देर तक रुकते थे)। "यह तो वाकई अफ़सोस की बात है," उसने सोफे के बीच में पड़े पुराने, गंजे से दिखने वाले कुशन को उठाकर लूसी की बाहों में रखते हुए, उसे हल्का सा धक्का दिया और रोने लगी।
"इसे ले जाओ! मेरी शुभकामनाओं सहित इसे श्रीमती वॉकर को दे दो! इसे ले जाओ!" वह चिल्लाई।
और लूसी ड्राइंग रूम के दरवाजे पर तकिया पकड़े हुए रुक गई और बहुत शर्माते हुए, थोड़ा सा चेहरा लाल करते हुए बोली, क्या वह उस ड्रेस की मरम्मत करने में मदद नहीं कर सकती?
लेकिन, श्रीमती डैलोवे ने कहा, उनके पास पहले से ही काफी काम है, इतना काम है कि उन्हें इसकी जरूरत ही नहीं है।
"लेकिन, शुक्रिया, लूसी, ओह, शुक्रिया," श्रीमती डैलोवे ने कहा, और शुक्रिया, शुक्रिया, वह कहती रहीं (सोफे पर बैठते हुए, अपनी पोशाक घुटनों पर रखे, कैंची और रेशमी कपड़े), शुक्रिया, शुक्रिया, वह अपने नौकरों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती रहीं, जिन्होंने उन्हें ऐसा बनने में मदद की, जैसा वह बनना चाहती थीं, कोमल, उदार हृदय वाली। उनके नौकर उन्हें पसंद करते थे। और फिर उनकी यह पोशाक—यह फटी हुई कहाँ थी? और अब उनकी सुई में धागा डालना था। यह उनकी पसंदीदा पोशाक थी, सैली पार्कर की, लगभग आखिरी जो उन्होंने बनाई थी, अफसोस, क्योंकि सैली अब सेवानिवृत्त हो चुकी थीं, ईलिंग में रहती थीं, और अगर मुझे कभी एक पल भी मिला, क्लैरिसा ने सोचा (लेकिन अब उसे कभी एक पल भी नहीं मिलेगा), तो मैं ईलिंग जाकर उनसे मिलूंगी। क्योंकि वह एक विलक्षण व्यक्तित्व थीं, क्लैरिसा ने सोचा, एक सच्ची कलाकार। वह

छोटी-छोटी अनोखी चीजों के बारे में सोचती थीं; फिर भी उनकी पोशाकें कभी अजीब नहीं होती थीं। आप उन्हें हैटफील्ड में पहन सकते थे; बकिंघम पैलेस में। उन्होंने इन्हें हैटफील्ड में पहना था; बकिंघम पैलेस में भी।
उस पर शांति छा गई, एक सुकून, एक संतोष, जैसे उसकी सुई रेशम को धीरे-धीरे खींचते हुए, हरे रंग की तहों को समेटकर, बड़ी कोमलता से, कमरबंद से जोड़ रही हो। ठीक वैसे ही जैसे गर्मी के दिनों में लहरें इकट्ठा होती हैं, असंतुलित होती हैं और गिरती हैं; इकट्ठा होती हैं और गिरती हैं; और ऐसा लगता है जैसे पूरी दुनिया भारीपन से कह रही हो "बस इतना ही", यहाँ तक कि समुद्र तट पर धूप में लेटे शरीर का हृदय भी यही कहता है, बस इतना ही। अब और डर नहीं, हृदय कहता है। अब और डर नहीं, हृदय अपना बोझ किसी सागर को सौंपते हुए कहता है, जो सभी दुखों के लिए सामूहिक रूप से आहें भरता है, और नवगठित होता है, शुरू होता है, इकट्ठा होता है, और गिरने देता है। और केवल शरीर ही गुजरती हुई मधुमक्खी की आवाज सुनता है; लहरों के टूटने की आवाज; दूर से भौंकते हुए कुत्ते की आवाज।
"हे भगवान, दरवाजे की घंटी!" क्लेरिसा ने अपनी सुई रोकते हुए कहा। जागकर उसने ध्यान से सुना।
हॉल में खड़े बुजुर्ग व्यक्ति ने कहा, "श्रीमती डैलोवे मुझसे मिलेंगी।" "जी हाँ, वो मुझसे मिलेंगी," उन्होंने लूसी को बड़े प्यार से एक तरफ रखते हुए दोहराया और तेज़ी से ऊपर की ओर दौड़ पड़े। "हाँ, हाँ, हाँ," वे ऊपर दौड़ते हुए बुदबुदाए। "वो मुझसे मिलेंगी। भारत में पाँच साल बिताने के बाद, क्लैरिसा मुझसे मिलेगी।"
"कौन कर सकता है—क्या कर सकता है?" श्रीमती डैलोवे ने पूछा (उन्हें लगा कि जिस दिन उनकी पार्टी थी, उस दिन सुबह ग्यारह बजे इस तरह की बाधा आना बहुत ही अपमानजनक था), तभी उन्हें सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनाई दी। उन्होंने दरवाजे पर किसी के हाथ की दस्तक सुनी। उन्होंने अपनी पोशाक को छुपाने की कोशिश की, मानो कोई कुंवारी लड़की अपनी पवित्रता की रक्षा कर रही हो, निजता का सम्मान कर रही हो। तभी पीतल का हैंडल सरक गया। तभी दरवाजा खुला और अंदर आया—एक पल के लिए तो उन्हें याद ही नहीं आया कि उसका नाम क्या था! उसे देखकर वह इतनी हैरान, इतनी खुश, इतनी शर्मीली और इतनी अचंभित थीं कि पीटर वॉल्श सुबह-सुबह अचानक उनके पास आ गया! (उन्होंने उसका पत्र नहीं पढ़ा था।)

"और आप कैसी हैं?" पीटर वॉल्श ने कांपते हुए कहा; उसके दोनों हाथ पकड़कर चूमते हुए। बैठते हुए उसने सोचा, वह बूढ़ी हो गई है। उसने सोचा, मैं उसे इसके बारे में कुछ नहीं बताऊंगा, क्योंकि वह बूढ़ी हो गई है। उसने सोचा, वह मुझे देख रही है, अचानक उसे शर्मिंदगी महसूस हुई, हालांकि उसने उसके हाथों को चूमा था। उसने जेब में हाथ डालकर एक बड़ा चाकू निकाला और उसकी धार आधी खोल दी।
क्लैरिसा ने सोचा, बिलकुल वही; वही विचित्र चेहरा; वही चेक सूट; उसका चेहरा थोड़ा टेढ़ा है, थोड़ा पतला, शायद थोड़ा रूखा, लेकिन वह बहुत अच्छा दिखता है, और बिल्कुल वैसा ही है।
"तुम्हें फिर से देखकर कितना अच्छा लग रहा है!" उसने खुशी से कहा। उसके हाथ में चाकू था। उसने सोचा, ये तो बिलकुल उसी की तरह है।
उन्होंने कहा कि वह कल रात ही शहर पहुंचे थे; उन्हें तुरंत गांव जाना होगा; और सब कैसा चल रहा है, सब लोग कैसे हैं—रिचर्ड? एलिजाबेथ?
"और यह सब क्या है?" उसने अपनी कलम-चाकू को उसकी हरी पोशाक की ओर झुकाते हुए कहा।
क्लैरिसा ने सोचा, वह बहुत अच्छे कपड़े पहनता है; फिर भी वह हमेशा मेरी आलोचना करता है।
वह यहाँ अपनी पोशाक ठीक कर रही है; हमेशा की तरह, उसने सोचा; जब से मैं भारत में हूँ, वह यहाँ बैठी है; अपनी पोशाक ठीक कर रही है; खेल रही है; पार्टियों में जा रही है; सदन में भाग-दौड़ कर रही है और वापस आ रही है, उसने सोचा, और वह और भी ज़्यादा चिड़चिड़ा और बेचैन होता जा रहा था, क्योंकि दुनिया में कुछ महिलाओं के लिए शादी से ज़्यादा बुरी कोई चीज़ नहीं है, उसने सोचा; और राजनीति; और एक रूढ़िवादी पति का होना, जैसे कि प्रशंसनीय रिचर्ड। ऐसा ही है, ऐसा ही है, उसने सोचा, और झट से अपना चाकू बंद कर लिया।
"रिचर्ड बिल्कुल ठीक हैं। रिचर्ड एक समिति में हैं," क्लेरिसा ने कहा।
और उसने अपनी कैंची खोली और कहा, क्या उसे इस बात से कोई आपत्ति है कि वह अभी अपनी ड्रेस पर जो काम कर रही है उसे पूरा कर ले, क्योंकि उस रात एक पार्टी थी?
"मैं तुमसे ऐसा करने के लिए नहीं कहूंगी," उसने कहा। "मेरे प्यारे पीटर!" उसने कहा।

लेकिन यह सुनकर कितना अच्छा लगा—मेरे प्यारे पीटर! सचमुच, सब कुछ कितना अच्छा था—चांदी के बर्तन, कुर्सियाँ; सब कुछ कितना अच्छा था!
उसने पूछा, "वह उसे अपनी पार्टी में क्यों नहीं बुलाएगी?"
क्लैरिसा ने सोचा, अब तो वह वाकई मनमोहक है! बेहद मनमोहक! अब मुझे याद आया कि उस भयानक गर्मी के मौसम में उससे शादी न करने का फैसला करना कितना मुश्किल था—और मैंने उससे शादी न करने का फैसला क्यों किया था? उसने सोचा।
"लेकिन यह तो बहुत ही असाधारण बात है कि तुम आज सुबह आ गए!" वह चिल्लाई और अपने हाथों को एक के ऊपर एक रखकर अपनी पोशाक पर रख दिया।
"क्या आपको याद है," उसने कहा, "बोरटन में पर्दे कैसे फड़फड़ाते थे?" "उन्होंने किया था," उसने कहा; और उसे याद आया कि उसने क्लैरिसा के पिता के साथ अकेले, बड़े अजीब तरीके से नाश्ता किया था; जिनकी मृत्यु हो चुकी थी; और उन्होंने क्लैरिसा को कोई पत्र नहीं लिखा था। लेकिन क्लैरिसा के पिता, जस्टिन पैरी, उस चिड़चिड़े, डरपोक बूढ़े आदमी के साथ उसकी कभी अच्छी नहीं बनती थी।
उन्होंने कहा, "मैं अक्सर सोचता हूं कि काश तुम्हारे पिता के साथ मेरे संबंध बेहतर होते।"
"लेकिन उसे कभी भी कोई ऐसा व्यक्ति पसंद नहीं आया जो—हमारे दोस्त हों," क्लैरिसा ने कहा; और पीटर को यह याद दिलाने पर कि वह उससे शादी करना चाहता था, वह अपनी जीभ काट सकती थी।
पीटर ने सोचा, "हाँ, मैंने किया था।" उसे लगा कि मेरा दिल भी लगभग टूट गया था। वह अपने ही दुख से भर गया, जो किसी चबूतरे से देखे गए चाँद की तरह उभर रहा था, ढलते सूरज की रोशनी में भयानक रूप से सुंदर। उसने सोचा, "मैं तब से इतना दुखी कभी नहीं हुआ।" और मानो सचमुच वह चबूतरे पर बैठा हो, वह थोड़ा सा क्लैरिसा की ओर बढ़ा; अपना हाथ बढ़ाया; उठाया; और फिर नीचे गिरा दिया। उनके ऊपर वह चाँद लटका हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो वह भी उसके साथ चबूतरे पर चाँदनी में बैठी हो।
"अब यह हर्बर्ट के पास है," उसने कहा। "मैं अब वहां कभी नहीं जाती," उसने कहा।
फिर, ठीक वैसे ही जैसे चांदनी रात में छत पर होता है, जब एक व्यक्ति को इस बात का शर्मिंदगी महसूस होने लगती है कि वह ऊब चुका है, और दूसरा चुपचाप,

शांत, उदास होकर चांद को देखता रहता है, बोलना नहीं चाहता, बस अपना पैर हिलाता है, गला साफ करता है, मेज के एक पैर पर रखे लोहे के किसी स्क्रॉल को देखता है, एक पत्ता हिलाता है, लेकिन कुछ नहीं कहता—ठीक वैसे ही पीटर वॉल्श ने अब किया। आखिर अतीत में वापस क्यों जाना? उसने सोचा। उसे फिर से उसके बारे में क्यों सोचने पर मजबूर करना? उसे क्यों पीड़ा देना, जब उसने उसे इतनी बुरी तरह से सताया था? क्यों?
"क्या तुम्हें वह झील याद है?" उसने अचानक, तीव्र भावनाओं के आवेश में कहा, मानो उसका दिल किसी चीज़ से टकरा गया हो, उसके गले की मांसपेशियां अकड़ गई हों और "झील" कहते ही उसके होंठ फड़कने लगे हों। वह एक बच्ची थी, अपने माता-पिता के बीच बत्तखों को रोटी खिलाती थी, और साथ ही एक बड़ी औरत भी थी जो झील के किनारे खड़े अपने माता-पिता के पास आ रही थी, मानो उसने अपनी जिंदगी को अपनी बाहों में थामे रखा हो, जो उनके पास आते-आते उसकी बाहों में बड़ी होती जा रही थी, मानो एक पूरी जिंदगी बन गई हो, एक संपूर्ण जिंदगी, जिसे उसने उनके पास रखकर कहा, "मैंने इसे यही बनाया है! यही!" और उसने इसे क्या बनाया था? वास्तव में क्या? आज सुबह पीटर के साथ बैठकर सिलाई करते हुए।
उसने पीटर वॉल्श की ओर देखा; उसकी निगाहें इतने समय और इतने भावों से गुज़रते हुए संदेह से उस तक पहुँचीं; आँसुओं से भरी निगाहों से उस पर टिक गईं; और फिर उठीं और दूर चली गईं, जैसे कोई पक्षी डाल को छूता है और उड़कर दूर चला जाता है। उसने बस अपनी आँखें पोंछ लीं।
"हाँ," पीटर ने कहा। "हाँ, हाँ, हाँ," उसने कहा, मानो वह कोई ऐसी बात सतह पर ला रही हो जो उसे सचमुच चोट पहुँचा रही हो। रुको! रुको! वह चिल्लाना चाहता था। क्योंकि वह बूढ़ा नहीं था; उसका जीवन समाप्त नहीं हुआ था; बिल्कुल भी नहीं। वह अभी पचास से थोड़ा ही ऊपर था। क्या मैं उसे बताऊँ, उसने सोचा, या नहीं? वह सब कुछ साफ-साफ बता देना चाहता था। लेकिन वह बहुत ठंडी है, उसने सोचा; कैंची से सिलाई करती हुई; क्लेरिसा के सामने डेज़ी साधारण लगेगी। और वह मुझे असफल समझेगी, जो मैं उनके हिसाब से हूँ, उसने सोचा; डैलोवेज़ के हिसाब से। ओह हाँ, उसे इसमें कोई संदेह नहीं था; वह असफल था, इन सब के मुकाबले—जड़ी हुई मेज, जड़ा हुआ कागज काटने वाला चाकू, डॉल्फिन और मोमबत्तियाँ, कुर्सी के कवर और पुराने कीमती अंग्रेजी रंगीन प्रिंट—वह असफल था! मुझे इस पूरे मामले की आत्मसंतुष्टि से नफरत है, उसने सोचा;

रिचर्ड की करतूत, क्लेरिसा की नहीं; सिवाय इसके कि उसने उससे शादी कर ली। (तभी लूसी चांदी के गहने लेकर कमरे में आई, और भी चांदी के गहने, लेकिन झुककर उन्हें नीचे रखते हुए वह बेहद आकर्षक, पतली और सुंदर लग रही थी, उसने सोचा।) और यह सब तो हमेशा से चलता आ रहा है! उसने सोचा; सप्ताह दर सप्ताह; क्लैरिसा का जीवन; जबकि मैं—उसने सोचा; और अचानक सब कुछ उससे निकलता हुआ प्रतीत हुआ; यात्राएँ; घुड़सवारी; झगड़े; रोमांच; ब्रिज खेल; प्रेम प्रसंग; काम; काम, काम! और उसने खुलेआम अपना चाकू निकाला—उसका पुराना सींग के हैंडल वाला चाकू जिसके बारे में क्लैरिसा कसम खा सकती थी कि वह तीस साल से उसके पास था—और उस पर अपनी मुट्ठी भींच ली।
क्लैरिसा ने सोचा, यह कितनी अजीब आदत थी; हमेशा चाकू से खेलना। हमेशा ऐसा महसूस कराती थी जैसे कोई तुच्छ, खोखला, महज़ एक बेवकूफ बकबक करने वाला हो, जैसा कि वह अक्सर करता था। लेकिन मैं भी, उसने सोचा, और अपनी सुई उठाते हुए, एक रानी की तरह, जिसके रक्षक सो गए हों और उसे असुरक्षित छोड़ गए हों (वह इस मुलाकात से पूरी तरह हैरान थी - इसने उसे परेशान कर दिया था), ताकि कोई भी अंदर आकर उसे देख सके जहाँ वह कंटीली झाड़ियों से घिरी हुई लेटी है, मैंने अपनी मदद के लिए उन चीजों को बुलाया जो वह करती थी; जो उसे पसंद थीं; उसका पति; एलिजाबेथ; संक्षेप में, उसका स्वयं, जिसे पीटर अब शायद ही जानता था, सब कुछ उसके चारों ओर आ जाए और दुश्मन को हरा दे।
"अच्छा, और तुम्हारे साथ क्या हुआ है?" उसने कहा। युद्ध शुरू होने से पहले, घोड़े ज़मीन पर अपने खुर मारते हैं; अपने सिर हिलाते हैं; रोशनी उनके किनारों पर पड़ती है; उनकी गर्दनें झुक जाती हैं। ठीक इसी तरह, पीटर वॉल्श और क्लैरिसा, नीले सोफे पर अगल-बगल बैठे, एक-दूसरे को चुनौती दे रहे थे। उसकी शक्तियाँ उसके भीतर उथल-पुथल मचा रही थीं। उसने अलग-अलग स्रोतों से तरह-तरह की बातें इकट्ठा कीं; प्रशंसा; ऑक्सफोर्ड में उसका करियर; उसकी शादी, जिसके बारे में उसे ज़रा भी पता नहीं था; उसने कैसे प्यार किया था; और कुल मिलाकर उसने अपना काम कर दिया था।
"लाखों चीज़ें!" उसने विस्मय से कहा, और शक्तियों के उस समूह से प्रेरित होकर, जो अब इधर-उधर मंडरा रहा था और उसे एक साथ डरावना और बेहद रोमांचक एहसास दे रहा था, जैसे कि वह उन लोगों के कंधों पर हवा में उड़ रहा हो जिन्हें वह अब देख नहीं सकता था, उसने अपने हाथ माथे पर रख लिए।
क्लेरिसा एकदम सीधी बैठी थी; उसने गहरी सांस ली।

"मैं प्यार में हूँ," उसने कहा, लेकिन उससे नहीं, बल्कि किसी ऐसी स्त्री से जो अंधेरे में इस कदर खड़ी थी कि आप उसे छू नहीं सकते थे, बल्कि अंधेरे में घास पर अपनी माला रखनी पड़ती थी।
"मैं प्यार में हूँ," उसने क्लैरिसा डैलोवे से कुछ रूखेपन से कहा; "भारत की एक लड़की से प्यार हो गया है।" उसने अपनी माला उतार दी थी। क्लैरिसा अब इसका जो मतलब चाहे निकाल ले।
"प्यार में!" उसने कहा। इतनी कम उम्र में उस राक्षस के हाथों में इतना दुबला-पतला कैसे समा गया! उसकी गर्दन पर तो मांस ही नहीं है; उसके हाथ लाल हैं; और वो मुझसे छह महीने बड़ा है! उसकी नज़रें अचानक खुद पर टिक गईं; लेकिन दिल ही दिल में उसे महसूस हुआ कि वो प्यार में है। उसे लगा कि वो प्यार में है।
लेकिन वह अदम्य अहंकार जो हमेशा अपने विरोधियों को कुचल देता है, वह नदी जो बहती ही रहती है; भले ही वह मानती हो कि हमारा कोई लक्ष्य नहीं है, फिर भी बहती ही रहती है; इस अदम्य अहंकार ने उसके गालों को लाली से भर दिया; उसे बहुत जवान, बहुत गुलाबी और बहुत चमकीली आँखों वाला बना दिया, जब वह अपनी पोशाक को घुटनों पर रखे और हरे रेशम के सिरे पर सुई पकड़े, थोड़ा कांपते हुए बैठी थी। वह प्यार में था! उससे नहीं। किसी जवान औरत से, बेशक।
"और वह कौन है?" उसने पूछा।
अब इस मूर्ति को उसकी ऊंचाई से नीचे लाकर उनके बीच में स्थापित करना होगा।
उन्होंने कहा, "दुर्भाग्यवश, वह एक विवाहित महिला हैं; भारतीय सेना में एक मेजर की पत्नी।"
और एक विचित्र व्यंग्यात्मक मिठास के साथ उसने मुस्कुराते हुए उसे इस हास्यास्पद तरीके से क्लेरिसा के सामने रख दिया।
(फिर भी, वह प्यार में है, क्लैरिसा ने सोचा।)
उन्होंने बड़ी तर्कसंगतता से आगे कहा, "उसके दो छोटे बच्चे हैं; एक लड़का और एक लड़की; और मैं तलाक के बारे में अपने वकीलों से मिलने आया हूं।"
ये रहे! उसने सोचा। क्लैरिसा, इनके साथ जो चाहो करो! ये रहे! और पल-पल उसे ऐसा लग रहा था कि भारतीय सेना में मेजर की पत्नी (उसकी डेज़ी) और उसके दो छोटे बच्चे क्लैरिसा के देखते ही और भी प्यारे होते जा रहे थे; मानो उसने

थाली में रखी एक भूरी गोली में आग लगा दी हो और उनकी अंतरंगता की ताज़ी, नमकीन समुद्री हवा में एक सुंदर पेड़ उग आया हो (क्योंकि कुछ मायनों में कोई भी उसे उतना नहीं समझता था, उतना महसूस नहीं करता था जितना क्लैरिसा करती थी)—उनकी अद्भुत अंतरंगता।
क्लैरिसा ने सोचा, उसने उसकी चापलूसी की; उसे बेवकूफ बनाया; भारतीय सेना के मेजर की पत्नी को तीन ही झटकों में तराश दिया। कितना बड़ा नुकसान! कितनी बड़ी मूर्खता! पीटर को जीवन भर इसी तरह बेवकूफ बनाया गया था; पहले ऑक्सफोर्ड से निकाल दिया गया; फिर भारत जाने वाली नाव पर एक लड़की से शादी कर ली; अब भारतीय सेना के मेजर की पत्नी—भगवान का शुक्र है कि उसने उससे शादी करने से इनकार कर दिया! फिर भी, वह प्यार में था; उसका पुराना दोस्त, उसका प्यारा पीटर, वह उससे प्यार करता था।
"लेकिन तुम क्या करोगे?" उसने उससे पूछा। "अरे, लिंकन इन के वकील और सॉलिसिटर, श्रीमान हूपर और ग्रेटली, वे ही यह काम करेंगे," उसने कहा। और उसने सचमुच अपनी जेब में रखे चाकू से अपने नाखून छील लिए।
भगवान के लिए, अपनी छुरी छोड़ दो! वह अनियंत्रित चिड़चिड़ाहट में खुद से चिल्लाई; उसकी बेतुकी गैर-परंपरागतता, उसकी कमजोरी; दूसरों की भावनाओं की जरा सी भी समझ न होना ही उसे परेशान करता था, हमेशा से करता आया था; और अब इस उम्र में, यह कितना मूर्खतापूर्ण है!
पीटर ने सोचा, "मैं ये सब जानता हूँ; मुझे पता है कि मुझे किससे मुकाबला करना है," उसने अपनी चाकू की धार पर उंगली फेरते हुए सोचा, "क्लैरिसा और डैलोवे और बाकी सब; लेकिन मैं क्लैरिसा को सबक सिखाऊंगा"—और फिर अचानक, उन अनियंत्रित शक्तियों के कारण हवा में उछलते हुए, वह पूरी तरह से आश्चर्यचकित होकर फूट-फूट कर रोने लगा; वह बिना किसी शर्म के सोफे पर बैठा रोता रहा, उसके गालों पर आंसू बह रहे थे।
और क्लैरिसा आगे झुकी, उसका हाथ पकड़ा, उसे अपनी ओर खींचा, उसे चूमा— दरअसल, इससे पहले कि वह अपने सीने में उमड़ रही चांदी जैसी चमकती उमंगों को शांत कर पाती, मानो उष्णकटिबंधीय तूफान में घास के पंख जैसे लग रहे हों— जो धीरे-धीरे शांत होकर उसे उसका हाथ थामे, उसके घुटने को थपथपाते हुए छोड़ गई, और जैसे ही वह उसके साथ बेहद सहज और खुशमिजाज होकर बैठी, अचानक उसके मन में यह विचार आया, "अगर मैंने उससे शादी की होती, तो यह खुशी मुझे दिन भर सकती रहती!"

उसके लिए सब कुछ खत्म हो चुका था। चादर फैली हुई थी और बिस्तर संकरा था। वह अकेले ही टावर में चली गई थी और उन्हें धूप में जामुन तोड़ते हुए छोड़ गई थी। दरवाजा बंद हो चुका था, और गिरे हुए प्लास्टर की धूल और चिड़ियों के घोंसलों के ढेर के बीच नज़ारा कितना दूर लग रहा था, और आवाज़ें पतली और ठंडी आ रही थीं (लीथ हिल पर, उसे याद आया), और रिचर्ड, रिचर्ड! वह चिल्लाई, जैसे रात में सो रहा कोई व्यक्ति अचानक चौंककर अंधेरे में मदद के लिए हाथ बढ़ाता है। लेडी ब्रूटन के साथ दोपहर का भोजन करते समय, उसे फिर से याद आया। वह मुझे छोड़कर चला गया है; मैं हमेशा के लिए अकेली रह गई हूँ, उसने अपने घुटनों पर हाथ रखते हुए सोचा।
पीटर वॉल्श उठकर खिड़की के पास गया और उसकी तरफ पीठ करके खड़ा हो गया, अपने रुमाल को इधर-उधर झटकते हुए। वह गंभीर, शांत और उदास दिख रहा था, उसकी पतली कंधे की हड्डियाँ उसके कोट को थोड़ा ऊपर उठा रही थीं; वह ज़ोर से नाक पोंछ रहा था। क्लैरिसा ने अचानक सोचा, मानो वह किसी महान यात्रा पर निकल रहा हो, मुझे भी अपने साथ ले चलो; और फिर, अगले ही पल, ऐसा लगा जैसे किसी बेहद रोमांचक और भावपूर्ण नाटक के पाँच अंक अब समाप्त हो गए हों और उसने उनमें एक जीवन बिताया हो, भाग गई हो, पीटर के साथ रही हो, और अब सब कुछ खत्म हो गया हो।
अब जाने का समय था, और जैसे कोई महिला अपना सामान, अपना लबादा, अपने दस्ताने, अपने चश्मे समेटती है और थिएटर से बाहर सड़क पर जाने के लिए उठती है, वैसे ही वह सोफे से उठी और पीटर के पास गई।
और यह बेहद अजीब था, उसने सोचा, कि कैसे उसमें अभी भी वह शक्ति थी, जब वह झनझनाती, सरसराती हुई आती थी, जब वह कमरे के उस पार आती थी, तब भी उसमें वह शक्ति थी कि वह उस चंद्रमा को, जिससे वह घृणा करता था, बोर्टन में गर्मियों के आकाश में छत पर उगा सके।
"बताओ," उसने उसके कंधों को पकड़ते हुए कहा। "क्या तुम खुश हो, क्लेरिसा? क्या रिचर्ड—"
दरवाजा खुल गया।
"ये रही मेरी एलिजाबेथ," क्लेरिसा ने भावुक होकर, शायद नाटकीय ढंग से कहा।
"आप लोग कैसे हैं?" एलिजाबेथ ने आगे आकर पूछा।

बिग बेन की आधे घंटे की घंटी बजने की आवाज़ उनके बीच असाधारण जोश के साथ गूंजी, मानो कोई जवान, मजबूत, उदासीन, बेपरवाह आदमी इधर-उधर डम्बल घुमा रहा हो।
"हैलो, एलिज़ाबेथ!" पीटर चिल्लाया, अपना रूमाल जेब में रखते हुए, तेज़ी से उसके पास गया, उसकी ओर देखे बिना "अलविदा, क्लैरिसा" कहा, कमरे से जल्दी से बाहर निकला और दौड़कर नीचे गया और हॉल का दरवाजा खोला।
"पीटर! पीटर!" क्लैरिसा चिल्लाई और उसके पीछे-पीछे सीढ़ियों पर आ गई। "आज रात मेरी पार्टी है! आज रात मेरी पार्टी याद रखना!" खुले आसमान के शोर में अपनी आवाज़ बुलंद करते हुए वह बोली, और गाड़ियों के शोर और घड़ियों की आवाज़ से दबकर, उसकी "आज रात मेरी पार्टी याद रखना!" की आवाज़ कमज़ोर, पतली और बहुत दूर से आती हुई सुनाई दी, तभी पीटर वॉल्श ने दरवाज़ा बंद कर दिया। मेरी पार्टी याद रखना, मेरी पार्टी याद रखना, पीटर वॉल्श सड़क पर चलते हुए खुद से लयबद्ध ढंग से बात कर रहा था, बिग बेन की आधी घंटे की सीधी और स्पष्ट ध्वनि की ताल में। (भारी गोले हवा में घुल गए।) ओह, ये पार्टियाँ, उसने सोचा; क्लैरिसा की पार्टियाँ। वह ये पार्टियाँ क्यों देती है, उसने सोचा। ऐसा नहीं था कि वह उसे या उसकी ओर आते हुए टेल-कोट पहने, बटनहोल में कार्नेशन लगाए उस आदमी की छवि को दोष दे रहा था। दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति उसके जैसा हो सकता था, प्यार में। और वह खुद, यह भाग्यशाली व्यक्ति, विक्टोरिया स्ट्रीट में एक मोटर-कार निर्माता की प्लेट-ग्लास खिड़की में प्रतिबिंबित हो रहा था। उसके पीछे पूरा भारत फैला हुआ था; मैदान, पहाड़; हैजा की महामारी; आयरलैंड से दुगना बड़ा एक जिला; वे निर्णय जो उसने अकेले लिए थे—वह, पीटर वॉल्श; जो अब वास्तव में अपने जीवन में पहली बार प्यार में था। क्लैरिसा कठोर हो गई थी, उसने सोचा; और साथ ही, उसे शक था कि वह थोड़ा भावुक भी था, क्योंकि वह उन बड़ी-बड़ी मोटरगाड़ियों को देख रहा था जो कितने गैलन ईंधन में कितने मील चल सकती थीं? क्योंकि उसे यांत्रिकी में रुचि थी; उसने अपने इलाके में एक हल का आविष्कार किया था, इंग्लैंड से ठेले मंगवाए थे, लेकिन कुली उनका इस्तेमाल नहीं करते थे, और इन सब बातों के बारे में क्लैरिसा को बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी।
जिस तरह से उसने कहा, "ये रही मेरी एलिज़ाबेथ!"—उससे उसे चिढ़ हुई। सीधे-सीधे "ये रही एलिज़ाबेथ" क्यों नहीं कहा? यह बनावटी था। और एलिज़ाबेथ को भी यह पसंद नहीं आया। (अभी भी उस बुलंद आवाज़ की आखिरी कंपकंपी उसके

आसपास की हवा को हिला रही थी; आधा घंटा; अभी भी जल्दी थी; अभी केवल साढ़े ग्यारह बजे थे।) क्योंकि वह युवाओं को समझता था; वह उन्हें पसंद करता था। उसने सोचा कि क्लैरिसा में हमेशा कुछ ठंडापन रहता था। बचपन से ही उसमें एक तरह की झिझक थी, जो अधेड़ उम्र में रूढ़िवादिता बन जाती है, और फिर सब कुछ खत्म हो जाता है, सब कुछ खत्म हो जाता है, उसने उदास निगाहों से उसकी आँखों में देखते हुए सोचा, और सोचने लगा कि क्या उस समय फोन करके उसने उसे नाराज़ कर दिया था; अचानक अपनी मूर्खता पर शर्मिंदा होकर; रोया; भावुक हो गया; हमेशा की तरह, उसे सब कुछ बता दिया।
जैसे बादल सूरज को ढक लेता है, लंदन पर सन्नाटा छा जाता है; और मन पर भी। प्रयास रुक जाता है। समय मस्तूल पर फड़फड़ाता है। हम वहीं रुक जाते हैं; वहीं खड़े रह जाते हैं। कठोर, केवल आदत का ढांचा ही मानव शरीर को सहारा देता है। जहाँ कुछ नहीं है, पीटर वॉल्श ने स्वयं से कहा; अंदर से खोखला, बिल्कुल खाली महसूस करते हुए। क्लेरिसा ने मुझे ठुकरा दिया, उसने सोचा। वह वहीं खड़ा सोचता रहा, क्लेरिसा ने मुझे ठुकरा दिया।
आह, सेंट मार्गरेट ने कहा, मानो कोई मेज़बान ठीक समय पर अपने ड्राइंग रूम में आती है और देखती है कि उसके मेहमान पहले से ही वहाँ मौजूद हैं। मैं देर से नहीं आई हूँ। नहीं, ठीक साढ़े ग्यारह बजे हैं, वह कहती है। फिर भी, यद्यपि वह बिल्कुल सही है, मेज़बान की आवाज़ होने के कारण, वह अपनी विशिष्टता को प्रकट करने में हिचकिचाती है। अतीत का कुछ दुख उसे रोके रखता है; वर्तमान की कुछ चिंता। साढ़े ग्यारह बज गए हैं, वह कहती है, और सेंट मार्गरेट की आवाज़ दिल की गहराइयों में उतर जाती है और एक के बाद एक ध्वनि की गूंज में समा जाती है, मानो कोई जीवित चीज़ हो जो खुद को प्रकट करना चाहती हो, खुद को बिखेरना चाहती हो, आनंद की एक सिहरन के साथ आराम करना चाहती हो—जैसे खुद क्लेरिसा, पीटर वॉल्श ने सोचा, ठीक समय पर सफेद पोशाक में सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए। गहरी भावना से भरे हुए, और क्लैरिसा की असाधारण रूप से स्पष्ट, फिर भी रहस्यमयी यादों के साथ, उसने सोचा, मानो यह घंटी वर्षों पहले उस कमरे में आई हो, जहाँ वे किसी अंतरंग क्षण में बैठे थे, और एक-दूसरे के पास गई और शहद से लदी मधुमक्खी की तरह उस पल को अपने साथ ले गई। लेकिन कौन सा कमरा? कौन सा क्षण? और घड़ी बजते ही वह इतना खुश क्यों था? फिर, जैसे ही सेंट मार्गरेट की आवाज़ धीमी हुई, उसने सोचा, वह बीमार थी, और आवाज़ में सुस्ती और पीड़ा झलक रही थी। उसे याद आया, यह उसका दिल था; और

अंतिम घंटी की अचानक तेज़ आवाज़ ने मृत्यु का संकेत दिया, जिसने जीवन के बीचोंबीच क्लैरिसा को चौंका दिया, और वह अपने ड्राइंग रूम में जहाँ खड़ी थी वहीं गिर पड़ी। नहीं! नहीं! वह चिल्लाया। वह मरी नहीं है! मैं बूढ़ा नहीं हूँ, वह चिल्लाया, और व्हाइटहॉल की ओर चल पड़ा, मानो उसका भविष्य उसके सामने जीवंत, अनंत रूप से लुढ़क रहा हो।
वह न तो बूढ़ा था, न स्थिर, और न ही जरा भी नीरस। डैलोवेज़, व्हिटब्रेड और उनके साथियों की बातों की उसे जरा भी परवाह नहीं थी (हालाँकि यह सच था कि वह कभी न कभी यह जरूर देखना चाहता था कि क्या रिचर्ड उसे कोई नौकरी दिलवा सकता है)। चलते-चलते, टकटकी लगाए, उसने ड्यूक ऑफ कैम्ब्रिज की मूर्ति को घूरा। उसे ऑक्सफोर्ड से निकाल दिया गया था - यह सच था। वह एक समाजवादी था, एक तरह से असफल - यह भी सच था। फिर भी, उसने सोचा, सभ्यता का भविष्य ऐसे ही नौजवानों के हाथों में है; ऐसे नौजवानों के हाथों में, जैसे वह तीस साल पहले था; अमूर्त सिद्धांतों के प्रति प्रेम रखने वाले; लंदन से हिमालय की चोटी तक किताबें मंगवाने वाले; विज्ञान पढ़ने वाले; दर्शन पढ़ने वाले। उसने सोचा, भविष्य ऐसे ही नौजवानों के हाथों में है।
जंगल में पत्तों के सरसराने जैसी एक हल्की सी आहट पीछे से सुनाई दी, और उसके साथ ही एक सरसराहट भरी, नियमित धमक की आवाज़ भी आई, जिसने उसे घेर लिया और उसके विचारों को, बिना उसकी इच्छा के, व्हाइटहॉल की ओर, एक सख्त लय में आगे बढ़ा दिया। वर्दी पहने, बंदूकें लिए लड़के, अपनी निगाहें आगे रखते हुए, अपनी भुजाओं को समेटे हुए, और अपने चेहरों पर एक ऐसे भाव के साथ मार्च कर रहे थे जैसे किसी मूर्ति के आधार पर लिखे गए शिलालेखों में कर्तव्य, कृतज्ञता, निष्ठा और इंग्लैंड के प्रति प्रेम की प्रशंसा की गई हो।
पीटर वॉल्श ने उनके साथ कदम मिलाकर चलना शुरू करते हुए सोचा, यह एक बहुत ही बढ़िया प्रशिक्षण है। लेकिन वे तंदुरुस्त नहीं दिख रहे थे। सोलह साल के लड़के, जो ज़्यादातर दुबले-पतले थे, शायद कल चावल के कटोरे या काउंटर पर साबुन की टिकिया के पीछे खड़े हों। अब उनके चेहरे पर सांसारिक सुख या रोज़मर्रा की चिंताओं से रहित, उस पुष्पमाला की गंभीरता झलक रही थी जिसे वे फिन्सबरी पेवमेंट से खाली मकबरे तक लाए थे। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा ले ली थी। यातायात ने उसका सम्मान किया; वैनें रुक गईं।
पीटर वॉल्श ने सोचा, "मैं इनके साथ कदम नहीं मिला पा रहा हूँ," जैसे ही वे व्हाइटहॉल की ओर बढ़े। और सचमुच, वे आगे बढ़ते गए, उसके आगे, सबके आगे, अपनी

स्थिर गति से, मानो एक ही इच्छाशक्ति से पैरों और हाथों को एकसमान रूप से चला रहे हों, और जीवन, अपनी विविधताओं, अपनी अनिश्चितताओं के साथ, स्मारकों और पुष्पमालाओं के फर्श के नीचे दबा दिया गया हो और अनुशासन द्वारा एक कठोर, फिर भी घूरती हुई लाश में बदल दिया गया हो। इसका सम्मान करना ही था; हँसी आ सकती थी; लेकिन इसका सम्मान करना ही था, उसने सोचा। "देखो, वे जा रहे हैं," पीटर वॉल्श ने फर्श के किनारे रुकते हुए सोचा; और सभी भव्य मूर्तियाँ, नेल्सन, गॉर्डन, हैवेलॉक, अश्वेत, महान सैनिकों की शानदार छवियाँ उनके आगे देख रही थीं, मानो उन्होंने भी वही त्याग किया हो (पीटर वॉल्श को लगा कि उसने भी वही महान त्याग किया है), उन्हीं प्रलोभनों के आगे कुचले गए हों, और अंततः संगमरमर जैसी घूरती हुई नज़र प्राप्त की हो। लेकिन पीटर वॉल्श खुद के लिए ऐसी घूरती हुई नज़र बिल्कुल नहीं चाहता था; हालाँकि वह दूसरों में इसका सम्मान कर सकता था। वह लड़कों में इसका सम्मान कर सकता था। उन्होंने सोचा, "अभी तो उन्हें शारीरिक कष्टों का पता नहीं है," जैसे ही मार्च करते हुए लड़के स्ट्रैंड की दिशा में गायब हो गए—उन्होंने सोचा, "मैंने क्या-क्या सहा है," सड़क पार करते हुए और गॉर्डन की मूर्ति के नीचे खड़े होते हुए, गॉर्डन जिसकी वह बचपन में पूजा करता था; गॉर्डन एक पैर ऊपर उठाए और बाहें मोड़े अकेला खड़ा था—बेचारा गॉर्डन, उन्होंने सोचा।
और चूंकि क्लैरिसा के अलावा अभी तक किसी को नहीं पता था कि वह लंदन में है, और यात्रा के बाद धरती अभी भी उसके लिए एक द्वीप जैसी लग रही थी, इसलिए ट्राफलगर स्क्वायर में साढ़े ग्यारह बजे अकेले, जीवित, अनजान खड़े होने का अजीब सा एहसास उस पर हावी हो गया। यह क्या है? मैं कहाँ हूँ? और आखिर कोई ऐसा क्यों करता है? उसने सोचा, तलाक मानो एक कोरी कल्पना हो। और उसका दिमाग दलदल की तरह धंस गया, और तीन तीव्र भावनाएँ उस पर हावी हो गईं; समझ; एक विशाल परोपकारिता; और अंत में, मानो इन सभी का परिणाम, एक अनियंत्रित, अद्भुत आनंद; मानो उसके दिमाग के अंदर किसी और ने तार खींचे हों, पर्दे हिलाए हों, और वह, जिसका इससे कोई लेना-देना नहीं था, फिर भी अंतहीन रास्तों के मुहाने पर खड़ा था, जिन पर वह चाहे तो भटक सकता था। उसने वर्षों से इतना युवा महसूस नहीं किया था।
वह बच निकला था! पूरी तरह से आज़ाद था—जैसा कि आदत के पतन में होता है जब मन, एक अनियंत्रित लौ की तरह, झुकता और मुड़ता है और ऐसा लगता है जैसे अपनी पकड़ से निकलकर बुझने वाला है। "मैं इतने सालों में इतना जवान कभी नहीं

हुआ!" पीटर ने सोचा, ठीक उसी चीज़ से बचकर (बेशक, केवल एक घंटे के लिए) जो वह था, और एक ऐसे बच्चे की तरह महसूस कर रहा था जो घर से बाहर भागता है, और भागते हुए देखता है कि उसकी बूढ़ी नर्स गलत खिड़की पर हाथ हिला रही है। "लेकिन वह असाधारण रूप से आकर्षक है," उसने सोचा, जैसे ही वह ट्रैफ़लगर स्क्वायर से हेमार्केट की दिशा में चल रहा था, एक युवती आई, जो गॉर्डन की मूर्ति के पास से गुज़रते हुए, पीटर वॉल्श (अपनी संवेदनशीलता के कारण) के विचार से, एक-एक करके अपने घूंघट उतारती हुई प्रतीत हुई, जब तक कि वह वही स्त्री नहीं बन गई जिसकी उसने हमेशा कल्पना की थी; युवा, लेकिन गरिमामय; हंसमुख, लेकिन विवेकशील; सांवली, लेकिन मनमोहक।
खुद को सीधा करते हुए और चुपके से अपनी जेब में रखे चाकू को टटोलते हुए वह उस महिला के पीछे चल पड़ा, उस उत्तेजना का पीछा करने के लिए, जो मानो पीठ फेरे भी उस पर एक ऐसी रोशनी बिखेर रही थी जो उन्हें जोड़ती थी, जो उसे अलग करती थी, मानो यातायात के बेतरतीब शोर ने खोखले हाथों से उसका नाम फुसफुसाया हो, पीटर नहीं, बल्कि उसका निजी नाम जिसे वह अपने मन में पुकारता था। "तुम," उसने कहा, केवल "तुम," अपने सफेद दस्तानों और कंधों से कहते हुए। फिर कॉकस्पूर स्ट्रीट में डेंट की दुकान के पास से गुजरते हुए हवा से लहराता हुआ उसका पतला लंबा लबादा एक कोमल स्नेह और शोकपूर्ण कोमलता के साथ उड़ उठा, मानो बाहें खुल कर थके हुए को गले लगा लें।
लेकिन वो अविवाहित है; वो जवान है; काफी जवान, पीटर ने सोचा, ट्रैफ़लगर स्क्वायर से गुज़रते समय उसने जो लाल कार्नेशन पहना था, वो उसकी आँखों में फिर से चमक रहा था और उसके होंठों को लाल कर रहा था। लेकिन वो फुटपाथ पर रुकी रही। उसमें एक गरिमा थी। वो क्लैरिसा की तरह दुनियादारी नहीं जानती थी; क्लैरिसा की तरह अमीर नहीं थी। जैसे ही वो आगे बढ़ी, पीटर ने सोचा, क्या वो सभ्य थी? उसने सोचा, वो चतुर थी, जैसे छिपकली की जीभ की तरह फुर्तीली (क्योंकि कल्पना तो करनी ही पड़ती है, थोड़ा मनोरंजन तो करना ही पड़ता है), एक शांत, सधी हुई बुद्धि, एक तेज़ बुद्धि; शोर-शराबा नहीं करती थी।
वह चली; उसने सड़क पार की; वह उसके पीछे-पीछे गया। उसे शर्मिंदा करना उसकी आखिरी इच्छा थी। फिर भी अगर वह रुक जाती तो वह कहता, "आओ, आइसक्रीम खा लो," और वह बड़ी सरलता से जवाब देती, "हाँ, बिल्कुल।"
लेकिन सड़क पर दूसरे लोग उनके बीच आ गए, उसे रोक दिया, उसे ओझल कर दिया। वह उसके पीछे भागा; वह बदल गई। उसके गालों पर लाली थी; उसकी आँखों में

व्यंग्य था; वह एक साहसी, बेपरवाह, तेज, दिलेर था, वास्तव में (क्योंकि वह कल रात ही भारत से लौटा था) एक रोमांटिक समुद्री लुटेरा, इन सभी शापित शिष्टाचारों की परवाह किए बिना, दुकानों की खिड़कियों में सजे पीले ड्रेसिंग-गाउन, पाइप, मछली पकड़ने की छड़ें; और मान-सम्मान, शाम की पार्टियाँ और सजे-धजे बूढ़े लोग जो अपनी जैकेट के नीचे सफेद स्लिप पहनते थे। वह एक समुद्री लुटेरा था। वह लगातार आगे बढ़ती रही, पिकाडिली के पार, और रीजेंट स्ट्रीट पर, उससे आगे, उसका लबादा, उसके दस्ताने, उसके कंधे, खिड़कियों में सजे झालर, फीते और पंखों वाले बोआ के साथ मिलकर एक ऐसी भव्यता और सनक का भाव पैदा कर रहे थे जो दुकानों से निकलकर फुटपाथ पर ऐसे बिखर रहा था जैसे रात में अंधेरे में झाड़ियों के ऊपर दीपक की रोशनी टिमटिमाती है।
हंसती-खेलती, प्रसन्न होकर वह ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट और ग्रेट पोर्टलैंड स्ट्रीट पार करके एक छोटी सी गली में मुड़ गई, और अब, अब, वह बड़ा पल नज़दीक आ रहा था। अब वह रुकी, अपना बैग खोला, और उसकी ओर एक नज़र डाली, लेकिन उसकी ओर नहीं, एक ऐसी नज़र जो विदाई का संकेत दे रही थी, जिसने पूरी स्थिति को समेट लिया और उसे विजयी रूप से हमेशा के लिए समाप्त कर दिया। उसने चाबी लगाई, दरवाज़ा खोला और चली गई! क्लेरिसा की आवाज़, "मेरी पार्टी याद रखना, मेरी पार्टी याद रखना," उसके कानों में गूंज रही थी। वह घर उन सपाट लाल घरों में से एक था जिन पर कुछ अजीबोगरीब ढंग से लटकती फूलों की टोकरियाँ थीं। सब कुछ खत्म हो गया था।
खैर, मैंने अपना मज़ा ले लिया; बस, हो गया, उसने हल्के पीले रंग के फूलों से भरी झूलती हुई टोकरियों को देखते हुए सोचा। और वह सारा मज़ा चकनाचूर हो गया—उसका मज़ा, क्योंकि वह आधा बनावटी था, जैसा कि वह अच्छी तरह जानता था; लड़की के साथ यह सारा रोमांच मनगढ़ंत था; जैसे कोई जीवन का अधिकांश हिस्सा बनाता है, वैसे ही गढ़ा हुआ था, उसने सोचा—खुद को गढ़ना; उसे गढ़ना; एक अद्भुत मनोरंजन और उससे भी कुछ अधिक बनाना। लेकिन यह अजीब था, और बिल्कुल सच भी; यह सब कोई कभी साझा नहीं कर सकता था—यह चकनाचूर हो गया।
वह मुड़ा; गली में आगे बढ़ा, यह सोचकर कि लिंकन इन (Hooper और Grateley के यहाँ जाने का समय होने तक बैठने की जगह मिल जाए। कहाँ जाए? कोई बात नहीं। फिर गली में आगे, रीजेंट्स पार्क की ओर। उसके जूतों की आवाज़ फुटपाथ पर गूंज रही थी, मानो "कोई बात नहीं"; क्योंकि अभी सुबह थी, बहुत सुबह।

वह सुबह भी बेहद खूबसूरत थी। मानो किसी परिपूर्ण हृदय की धड़कन हो, जीवन गलियों में धड़कता हुआ सा लग रहा था। कोई झिझक नहीं थी—कोई संकोच नहीं था। तेज़ी से मुड़ती, सटीक, समयबद्ध, बिना किसी शोर के, ठीक उसी क्षण, कार दरवाजे पर आकर रुकी। रेशमी मोज़े पहने, पंखों से सजी, क्षणभंगुर सी दिखने वाली वह लड़की, जो पीटर को खास आकर्षक नहीं लगी (क्योंकि उसका पहले भी प्रेम प्रसंग चल चुका था), कार से उतरी। प्रशंसनीय बटलर, भूरे रंग के चाउ डॉग, काले और सफेद रंग के चबूतरे से सजे हॉल, जिनमें सफेद पर्दे लहरा रहे थे, पीटर ने खुले दरवाजे से देखा और उसे ये सब अच्छा लगा। आखिरकार, लंदन, मौसम और सभ्यता अपने आप में एक शानदार उपलब्धि थी। एक सम्मानित एंग्लो- इंडियन परिवार से आने के कारण, जिसने कम से कम तीन पीढ़ियों तक एक महाद्वीप के मामलों का संचालन किया था (यह अजीब है, उन्होंने सोचा, भारत, साम्राज्य और सेना से नफरत करने के बावजूद मेरे मन में इसके प्रति ऐसी भावना क्यों है?), ऐसे क्षण भी आए जब इस प्रकार की सभ्यता भी उन्हें निजी संपत्ति की तरह प्रिय लगी; इंग्लैंड पर गर्व के क्षण; बटलर पर; चाउ डॉग्स पर; लड़कियों की सुरक्षा पर। हास्यास्पद है, फिर भी यह सब है, उन्होंने सोचा। और डॉक्टर, व्यापारी और सक्षम महिलाएं, सभी अपने-अपने काम में व्यस्त, समय के पाबंद, सतर्क और मजबूत, उन्हें पूरी तरह से प्रशंसनीय, अच्छे लोग लगे, जिन पर कोई अपना जीवन सौंप सकता है, जीवन जीने की कला में साथी, जो साथ देंगे। इन सब बातों के बावजूद, यह सब वास्तव में काफी सहनीय था; और वह छांव में बैठकर सिगरेट पीते।
रीजेंट्स पार्क था। हाँ। बचपन में वह रीजेंट्स पार्क में घूमा करता था — अजीब बात है, उसने सोचा, बचपन की यादें बार-बार कैसे लौट आती हैं—शायद क्लेरिसा को देखने का नतीजा; क्योंकि औरतें हमसे ज़्यादा अतीत में जीती हैं, उसने सोचा। वे जगहों से जुड़ जाती हैं; और अपने पिताओं से—एक औरत हमेशा अपने पिता पर गर्व करती है। बॉर्टन एक अच्छी जगह थी, बहुत अच्छी जगह, लेकिन मैं उस बूढ़े आदमी के साथ कभी घुल-मिल नहीं पाया, उसने सोचा। एक रात वहाँ काफी हंगामा हुआ—किसी बात पर बहस हुई थी, क्या, उसे याद नहीं आ रहा था। शायद राजनीति पर।
हाँ, उसे रीजेंट्स पार्क याद था; लंबा सीधा रास्ता; बाईं ओर वह छोटा सा घर जहाँ से हवा में उड़ने वाली गेंदें खरीदी जाती थीं; कहीं न कहीं कुछ लिखा हुआ एक अजीब सी मूर्ति। उसने खाली सीट ढूँढी। वह नहीं चाहता था कि लोग

उससे समय पूछें (क्योंकि उसे थोड़ी नींद आ रही थी)। एक बूढ़ी, सफ़ेद बालों वाली नर्स, जिसके साथ एक बच्चा अपनी प्रैम में सो रहा था—यही उसके लिए सबसे अच्छा उपाय था; वह उस नर्स के बगल वाली सीट के आखिरी छोर पर बैठ गया। वह एक अजीब सी दिखने वाली लड़की है, उसने सोचा, अचानक उसे एलिज़ाबेथ याद आ गई जब वह कमरे में आई और अपनी माँ के पास खड़ी हो गई। बड़ी हो गई है; काफी समझदार, सुंदर तो नहीं; बल्कि आकर्षक; और वह अठारह साल से ज़्यादा की नहीं होगी। शायद उसकी क्लैरिसा से नहीं बनती। "ये रही मेरी एलिज़ाबेथ"—इस तरह की बातें—सीधे "ये रही एलिज़ाबेथ" क्यों नहीं?—ज़्यादातर माताओं की तरह, चीज़ों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की कोशिश कर रही है। वह अपने आकर्षण पर बहुत ज़्यादा भरोसा करती है, उसने सोचा। वह ज़रूरत से ज़्यादा दिखावा करती है।
सिगार का मीठा, सौम्य धुआँ उसके गले से नीचे उतरा; उसने उसे फिर से छल्लों में फैलाया, जो एक पल के लिए हवा में बुलंदियों से लहराते रहे; नीले, गोलाकार—आज रात एलिज़ाबेथ से अकेले में बात करने की कोशिश करूँगा, उसने सोचा—फिर धीरे-धीरे रेतघड़ी के आकार में बदलने लगे और पतले होते चले गए; अजीब आकार ले रहे हैं, उसने सोचा। अचानक उसने अपनी आँखें बंद कर लीं, ज़ोर लगाकर हाथ उठाया और सिगार का भारी सिरा फेंक दिया। एक तेज़ लहर उसके दिमाग में दौड़ गई, हिलती हुई डालियाँ, बच्चों की आवाज़ें, कदमों की आहट, गुज़रते लोग, गुनगुनाता ट्रैफिक, ऊपर-नीचे होता ट्रैफिक। वह नींद की गहरी परतों में डूब गया, डूब गया और नींद की चादर में समा गया।
धूसर रंग की पोशाक पहने नर्स ने अपना बुनाई का काम फिर से शुरू कर दिया, तभी उसके बगल वाली कुर्सी पर बैठा पीटर वॉल्श खर्राटे लेने लगा। अपनी धूसर पोशाक में, अपने हाथों को निरंतर लेकिन शांत भाव से हिलाते हुए, वह मानो सोने वालों के अधिकारों की रक्षक हो, मानो आकाश और शाखाओं से बने जंगलों में गोधूलि बेला में प्रकट होने वाली उन रहस्यमयी आकृतियों में से एक हो। गलियों में भटकने वाला, फर्न को व्याकुल करने वाला और विशाल हेमलॉक पौधों को नष्ट करने वाला अकेला यात्री ऊपर देखते ही अचानक यात्रा के अंत में उस विशाल आकृति को देखता है।
दृढ़ विश्वास से शायद नास्तिक होने के कारण, वह असाधारण उल्लास के क्षणों से आश्चर्यचकित हो जाता है। वह सोचता है कि हमारे बाहर मन की अवस्था के अलावा कुछ भी अस्तित्व में नहीं है; उसे सांत्वना, राहत, इन

दयनीय बौनों, इन कमजोर, इन बदसूरत, इन कायर पुरुषों और महिलाओं से परे किसी चीज़ की चाहत है। लेकिन अगर वह उसकी कल्पना कर सकता है, तो किसी न किसी रूप में वह अस्तित्व में है, वह सोचता है, और आकाश और शाखाओं पर निगाहें गड़ाए हुए रास्ते पर आगे बढ़ते हुए वह उन्हें तुरंत नारीत्व प्रदान करता है; आश्चर्य से देखता है कि वे कितनी गंभीर हो जाती हैं; हवा के झोंके से वे कितनी भव्यता से पत्तों की एक काली फड़फड़ाहट, दया, समझ, क्षमा को त्याग देती हैं, और फिर अचानक ऊपर की ओर उछलकर, अपने शांत चेहरे को एक बेतहाशा उत्सव में बदल देती हैं।
ये ऐसे दृश्य हैं जो अकेले यात्री को फलों से भरे विशाल भंडार प्रस्तुत करते हैं, या उसके कान में हरी समुद्री लहरों पर मंडराती जलपरियों की तरह फुसफुसाते हैं, या उसके चेहरे पर गुलाब के गुच्छों की तरह टकराते हैं, या उन पीले चेहरों की तरह सतह पर उभरते हैं जिन्हें मछुआरे बाढ़ में से होकर गले लगाने के लिए संघर्ष करते हैं।
ये ऐसे दृश्य हैं जो निरंतर उभरते रहते हैं, साथ-साथ चलते हैं, वास्तविकता के सामने अपना चेहरा रख देते हैं; अक्सर अकेले यात्री को अभिभूत कर देते हैं और उससे धरती का बोध, वापस लौटने की इच्छा छीन लेते हैं, और बदले में उसे एक सामान्य शांति प्रदान करते हैं, मानो (जैसे-जैसे वह जंगल के रास्ते पर आगे बढ़ता है, वह सोचता है) जीवन का यह सारा उन्माद ही सरलता हो; और असंख्य चीजें एक में विलीन हो गई हों; और यह आकृति, जो आकाश और शाखाओं से बनी है, अशांत सागर से उठी हो (वह बूढ़ा है, अब पचास से अधिक का है) जैसे कोई आकृति लहरों से ऊपर उठकर अपने भव्य हाथों से करुणा, समझ और मुक्ति बरसा रही हो। इसलिए, वह सोचता है, काश मैं कभी दीपक की रोशनी में वापस न जाऊं; बैठक में न जाऊं; कभी अपनी किताब पूरी न करूं; कभी अपना पाइप न बुझाऊं; कभी श्रीमती टर्नर को जाने के लिए न बुलाऊं; बल्कि सीधे इस महान आकृति की ओर चलूं, जो अपने सिर को झटककर मुझे अपने झंडों पर बिठा लेगी और मुझे बाकी सब के साथ शून्य में विलीन कर देगी।
कुछ ऐसे ही दृश्य हैं। अकेला यात्री जल्द ही जंगल पार कर जाता है; और वहाँ, धुंधली आँखों से, शायद उसके लौटने की प्रतीक्षा में, हाथ उठाए, सफेद एप्रन हवा में लहराते हुए, एक वृद्ध महिला दरवाजे पर आती है जो (उसकी दुर्बलता इतनी प्रबल है) मानो किसी रेगिस्तान में खोए हुए बेटे को खोज रही हो; किसी शहीद घुड़सवार की तलाश कर रही हो; मानो वह उस माँ की आकृति हो

जिसके बेटे दुनिया के युद्धों में शहीद हो गए हों। इस प्रकार, जैसे ही अकेला यात्री गाँव की उस गली में आगे बढ़ता है जहाँ औरतें बुनाई कर रही हैं और पुरुष बगीचे में खुदाई कर रहे हैं, शाम अशुभ सी लगने लगती है; आकृतियाँ स्थिर हैं; मानो कोई भयानक भाग्य, जिसे वे जानते हैं, निडर होकर उनकी प्रतीक्षा कर रहा हो, और उन्हें पूर्ण विनाश में ले जाने वाला हो।
घर के अंदर साधारण चीजों के बीच, अलमारी, मेज, खिड़की की चौखट पर खिले गेरानियम के फूलों के बीच, अचानक मकान मालकिन की आकृति, कपड़ा हटाने के लिए झुकती हुई, प्रकाश से कोमल हो उठती है, एक मनमोहक प्रतीक जिसे केवल ठंडे मानवीय संपर्कों की याद ही हमें गले लगाने से रोकती है। वह मुरब्बा उठाती है; उसे अलमारी में बंद कर देती है।
"आज रात के लिए और कुछ नहीं है, महोदय?"
लेकिन एकाकी यात्री किसे जवाब देता है?
तो रीजेंट्स पार्क में सो रहे बच्चे के ऊपर एक बुजुर्ग नर्स बुनाई कर रही थी। और पीटर वॉल्श खर्राटे ले रहा था।
वह अत्यंत अचानक जाग उठा और मन ही मन कहने लगा, "आत्मा की मृत्यु।"
"हे प्रभु, हे प्रभु!" उसने अंगड़ाई लेते हुए और आँखें खोलते हुए ज़ोर से कहा। "आत्मा की मृत्यु।" ये शब्द किसी दृश्य, किसी कमरे, किसी अतीत से जुड़ गए जिसका वह सपना देख रहा था। सब कुछ स्पष्ट होता चला गया; वह दृश्य, वह कमरा, वह अतीत जिसका वह सपना देख रहा था।
नब्बे के दशक की शुरुआत में, उस गर्मी के मौसम में, जब वह क्लैरिसा के प्यार में पूरी तरह डूबा हुआ था, बोर्टन में ही था। वहाँ बहुत सारे लोग थे, हँसते-हँसते बातें कर रहे थे, चाय के बाद मेज के चारों ओर बैठे थे और कमरा पीली रोशनी से नहाया हुआ था और सिगरेट के धुएँ से भरा हुआ था। वे एक ऐसे आदमी के बारे में बात कर रहे थे जिसने अपनी नौकरानी से शादी कर ली थी, जो पड़ोस के जमींदारों में से एक थी, जिसका नाम वह भूल गया था। उसने अपनी नौकरानी से शादी कर ली थी और उसे बोर्टन में मिलने के लिए बुलाया गया था - वह मुलाकात बहुत ही भयानक रही थी। वह बेतुके ढंग से बहुत सजी-धजी थी, "एक तोते की तरह," क्लैरिसा ने उसकी नकल करते हुए कहा था, और वह लगातार बोलती ही जा रही थी। वह बोलती ही जा रही थी, बोलती ही जा रही थी। क्लैरिसा उसकी नकल करती रही। तभी किसी ने कहा - सैली सेटन ने - क्या किसी की भावनाओं में कोई फर्क पड़ता है यह जानकर कि शादी से पहले उसका एक बच्चा था? (उन दिनों, मिली-

जुली सभा में, यह कहना एक साहसी बात मानी जाती थी।) वह अब क्लैरिसा को देख सकता था, जो एकदम गुलाबी हो रही थी; जैसे सिकुड़ रही हो; और यह कहते हुए, "ओह, मैं अब उससे कभी बात नहीं कर पाऊँगी!" यह सुनकर चाय की मेज के चारों ओर बैठे सभी लोग जैसे कांपने लगे। यह बहुत असहज स्थिति थी।
उसे इस बात पर आपत्ति नहीं थी, क्योंकि उन दिनों जिस तरह से उसकी परवरिश हुई थी, उसे कुछ पता नहीं था, लेकिन उसका व्यवहार उसे परेशान करता था; डरपोक; कठोर; कुछ हद तक अभिमानी; कल्पनाहीन; रूढ़िवादी। "आत्मा की मृत्यु।" उसने सहज ही कह दिया, ठीक उसी क्षण को चिह्नित करते हुए जैसा वह अक्सर करता था—उसकी आत्मा की मृत्यु।
सब लोग लड़खड़ा गए; जैसे ही वह बोली, सब झुकते हुए प्रतीत हुए, और फिर अलग तरह से खड़े हो गए। वह सैली सेटन को देख सकता था, जैसे कोई शरारती बच्चा आगे की ओर झुका हुआ हो, चेहरा लाल हो गया हो, बात करना चाहती हो, लेकिन डरी हुई हो, और क्लैरिसा लोगों को डरा देती थी। (वह क्लैरिसा की सबसे अच्छी दोस्त थी, हमेशा आसपास रहती थी, उससे बिल्कुल अलग, एक आकर्षक महिला, सुंदर, सांवली, उन दिनों में बड़ी साहसी होने के लिए मशहूर थी और वह उसे सिगार दिया करता था, जिसे वह अपने बेडरूम में पीती थी। या तो उसकी किसी से सगाई हो चुकी थी या उसका अपने परिवार से झगड़ा हुआ था और बूढ़ा पैरी उन दोनों को बराबर नापसंद करता था, जो एक बड़ा बंधन था।) फिर क्लैरिसा, अभी भी उन सबसे नाराज़ होने का भाव लिए, उठी, कोई बहाना बनाया और अकेली चली गई। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, वह बड़ा सा रोएंदार कुत्ता अंदर आ गया जो भेड़ों के पीछे दौड़ता था। उसने खुद को उस पर फेंक दिया, खुशी से झूम उठी। ऐसा लग रहा था मानो वह पीटर से कह रही हो—यह सब उसी पर लक्षित था, वह जानता था—"मुझे पता है कि तुमने अभी उस औरत के बारे में मेरी बातों को बेतुका समझा; लेकिन देखो मैं कितनी असाधारण रूप से सहानुभूति रखती हूँ; देखो मैं अपने रॉब से कितना प्यार करती हूँ!"
उनमें हमेशा से बिना शब्दों के संवाद करने की एक अनोखी शक्ति थी। वह सीधे समझ जाती थी कि वह उसकी आलोचना कर रहा है। फिर वह खुद का बचाव करने के लिए कुछ स्पष्ट हरकत करती, जैसे कुत्ते के साथ यह झगड़ा—लेकिन वह कभी भी उसकी चाल में नहीं आता था, वह हमेशा क्लैरिसा की असलियत जान लेता था। बेशक, वह कुछ कहता नहीं था; बस उदास बैठा रहता था। उनके झगड़े अक्सर इसी तरह शुरू होते थे।

उसने दरवाजा बंद कर दिया। देखते ही देखते वह बेहद उदास हो गया। उसे सब कुछ व्यर्थ लगने लगा—प्यार करते रहना; झगड़ते रहना; सुलह करते रहना, और वह अकेला ही इधर-उधर भटकने लगा, बाहरी कमरों और अस्तबलों के बीच घोड़ों को देखने लगा। (वह जगह काफी साधारण थी; पैरी परिवार कभी बहुत अमीर नहीं था; लेकिन वहाँ हमेशा घोड़ों की देखभाल करने वाले और अस्तबल के लड़के मौजूद रहते थे—क्लेरिसा को घुड़सवारी बहुत पसंद थी—और एक बूढ़ा कोचवान—उसका क्या नाम था?—एक बूढ़ी नर्स, बूढ़ी मूडी, बूढ़ी गुडी, ऐसे ही किसी नाम से उसे पुकारते थे, जिससे मिलने के लिए उसे एक छोटे से कमरे में ले जाया जाता था जहाँ बहुत सारी तस्वीरें और बहुत सारे पक्षी पिंजरे थे।)
वह शाम बहुत भयानक थी! वह और भी उदास होता जा रहा था, सिर्फ़ उस बात को लेकर ही नहीं; हर बात को लेकर। और वह उसे देख नहीं पा रहा था; उसे समझा नहीं पा रहा था; उससे खुलकर बात नहीं कर पा रहा था। आस-पास हमेशा लोग होते थे—वह ऐसे बर्ताव करती जैसे कुछ हुआ ही न हो। यही उसका शैतानी पहलू था—यह ठंडक, यह बेजानपन, उसके अंदर कुछ बहुत गहरा, जिसे उसने आज सुबह उससे बात करते हुए फिर से महसूस किया था; एक तरह की अभेद्यता। फिर भी भगवान जानता है कि वह उससे प्यार करता था। उसमें किसी की नसों से खेलने की एक अजीब सी शक्ति थी, हमारी नसों को वायलिन के तारों की तरह झुलाने की शक्ति थी, हाँ।
वह किसी बेवकूफी भरे विचार से खाना खाने के लिए देर से आया था, मानो अपनी मौजूदगी का एहसास कराना चाहता हो, और बूढ़ी मिस पैरी—आंटी हेलेना— मिस्टर पैरी की बहन के पास बैठ गया, जिन्हें खाने की अध्यक्षता करनी थी। वह सफेद कश्मीरी शॉल ओढ़े खिड़की से सिर टिकाए बैठी थीं—एक प्रभावशाली बुढ़िया, लेकिन उसके प्रति दयालु, क्योंकि उसने उनके लिए कोई दुर्लभ फूल ढूंढा था, और वह एक महान वनस्पतिशास्त्री थीं, जो मोटे बूट पहने, कंधों पर एक काला संग्रहण बक्सा लटकाए, चली गईं। वह उनके बगल में बैठ गया, और कुछ बोल नहीं सका। सब कुछ उसके सामने से तेज़ी से गुज़रता हुआ प्रतीत हुआ; वह बस वहीं बैठा खाता रहा। और फिर खाने के बीच में उसने पहली बार क्लेरिसा की ओर देखा। वह अपने दाहिनी ओर बैठे एक युवक से बात कर रही थी। उसे अचानक एक अहसास हुआ। "वह उस आदमी से शादी करेगी," उसने मन ही मन कहा। उसे उसका नाम तक नहीं पता था।
दरअसल, उसी दोपहर, ठीक उसी दोपहर, डैलोवे आया था; और क्लैरिसा ने उसे "विकहम" कहकर पुकारा; यहीं से सब कुछ शुरू हुआ। कोई उसे लेकर आया था; और

क्लैरिसा ने उसका नाम गलत ले लिया। उसने सबसे उसका परिचय विकहम के रूप में कराया। आखिरकार उसने कहा, "मेरा नाम डैलोवे है!"—यह रिचर्ड को देखने का उसका पहला अनुभव था—एक गोरा, कुछ अटपटा नौजवान, डेक-चेयर पर बैठा हुआ, और अचानक बोल पड़ा, "मेरा नाम डैलोवे है!" सैली ने इसे पकड़ लिया; उसके बाद से वह हमेशा उसे "मेरा नाम डैलोवे है!" कहकर पुकारती रही।
उस समय वह कई खुलासों से अभिभूत था। यह खुलासा—कि वह डैलोवे से शादी करेगी—उसके लिए चौंकाने वाला था—उस क्षण वह पूरी तरह से अभिभूत हो गया था। उसके व्यवहार में एक तरह की सहजता थी—वह इसे कैसे व्यक्त करे?—एक तरह की मातृत्व भावना; एक तरह की कोमलता। वे राजनीति पर चर्चा कर रहे थे। पूरे भोजन के दौरान उसने उनकी बातें सुनने की कोशिश की।
बाद में उसे याद आया कि वह ड्राइंग रूम में बूढ़ी मिस पैरी की कुर्सी के पास खड़ा था। क्लैरिसा अपने सलीके से, एक सच्ची मेज़बान की तरह, उसके पास आई और उसे किसी से मिलवाना चाहती थी—उसने ऐसे बात की जैसे वे पहले कभी मिले ही न हों, जिससे वह क्रोधित हो गया। फिर भी, उस समय भी वह उसकी इस बात की प्रशंसा करता था। वह उसके साहस की, उसकी सामाजिक कुशलता की, और किसी भी काम को पूरा करने की उसकी क्षमता की प्रशंसा करता था। "एक आदर्श मेज़बान," उसने उससे कहा, जिस पर वह दर्द से कराह उठी। लेकिन वह उसे ऐसा महसूस कराना चाहता था। डैलोवे के साथ उसे देखने के बाद वह उसे चोट पहुँचाने के लिए कुछ भी कर सकता था। इसलिए वह उसे छोड़कर चली गई। और उसे ऐसा लगा जैसे वे सब उसके खिलाफ साजिश रच रहे हों—उसके पीठ पीछे हंसते-हंसते बातें कर रहे हों। वह मिस पैरी की कुर्सी के पास ऐसे खड़ा था जैसे लकड़ी का बना हो, जंगली फूलों के बारे में बातें कर रहा हो। उसने कभी इतना कष्ट नहीं सहा था! वह सुनने का नाटक करना भी भूल गया होगा; आखिरकार वह जागा; उसने देखा कि मिस पैरी कुछ परेशान, कुछ नाराज़ लग रही थीं, उनकी उभरी हुई आँखें टकटकी लगाए हुए थीं। वह लगभग चिल्लाते हुए बोला कि वह नहीं आ सकता क्योंकि वह नरक में है! लोग कमरे से बाहर जाने लगे। उसने उन्हें लबादे लाने की बातें करते सुना; पानी में ठंड होने की बातें करते सुना, वगैरह। वे चांदनी रात में झील में नाव चलाने जा रहे थे—यह सैली का एक अजीबोगरीब विचार था। वह उसे चांद का वर्णन करते सुन सकता था। और वे सब बाहर चले गए। वह बिलकुल अकेला रह गया। "क्या तुम उनके साथ नहीं जाना चाहते?" आंटी हेलेना—बुजुर्ग मिस पैरी!— ने सही अंदाज़ा लगाया था। और वह मुड़ा तो वहाँ फिर से क्लैरिसा खड़ी थी। वह

उसे लेने वापस आई थी। वह उसकी उदारता—उसके अच्छे स्वभाव से अभिभूत हो गया।
“चलो,” उसने कहा। “वे इंतज़ार कर रहे हैं।” वह अपने पूरे जीवन में इतना खुश कभी नहीं हुआ था! बिना कुछ कहे ही उन्होंने योजना बना ली। वे झील की ओर चल पड़े। उसे बीस मिनट की असीम खुशी मिली। उसकी आवाज़, उसकी हंसी, उसका पहनावा (कुछ तैरता हुआ सा, सफेद, गहरा लाल), उसका उत्साह, उसका साहसिक स्वभाव; उसने सबको नाव से उतरकर द्वीप घूमने के लिए प्रेरित किया; उसने एक मुर्गी को चौंका दिया; वह हँसी; वह गाई। और इस पूरे समय, वह अच्छी तरह जानता था, डैलोवे उससे प्यार करने लगा था; वह डैलोवे से प्यार करने लगी थी; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। कुछ भी मायने नहीं रखता था। वे ज़मीन पर बैठ गए और बातें करने लगे—वह और क्लैरिसा। वे बिना किसी प्रयास के एक-दूसरे के विचारों में खो जाते थे। और फिर पल भर में सब खत्म हो गया। नाव में चढ़ते समय उसने मन ही मन कहा, “वह उस आदमी से शादी करेगी,” नीरसता से, बिना किसी नाराजगी के; लेकिन यह स्पष्ट था। डैलोवे क्लैरिसा से शादी करेगा। डैलोवे उन्हें नाव में बिठाकर ले आया। उसने कुछ नहीं कहा। लेकिन जैसे ही उन्होंने उसे अपनी साइकिल पर सवार होकर जंगल के बीचोंबीच बीस मील की यात्रा करते हुए, लड़खड़ाते हुए सड़क पर जाते हुए, हाथ हिलाते हुए और गायब होते हुए देखा, उसे सहज रूप से, ज़बरदस्त तरीके से, पूरी शिद्दत से, सब कुछ महसूस हो रहा था; वो रात; वो रोमांस; क्लैरिसा। वो उसे पाने का हकदार था। अपने लिए, वह बेतुका था। क्लैरिसा से उसकी माँगें (अब उसे समझ आ रहा था) बेतुकी थीं। वह असंभव चीज़ें माँगता था। वह भयानक तमाशे करता था। अगर वह थोड़ा कम बेतुका होता, तो शायद क्लैरिसा उसे स्वीकार कर लेती। सैली को ऐसा ही लगता था। उसने पूरी गर्मी भर उसे पत्र लिखे; कि कैसे उन्होंने उसके बारे में बातें कीं; कैसे उसने उसकी प्रशंसा की, कैसे क्लैरिसा फूट-फूटकर रोई! वह एक असाधारण गर्मी थी—पत्रों, दृश्यों, टेलीग्रामों से भरी हुई—सुबह-सुबह बॉर्टन पहुँचना, नौकरों के उठने तक वहीं रुके रहना; नाश्ते में बूढ़े मिस्टर पैरी के साथ भयानक बातचीत; आंटी हेलेना सख्त लेकिन दयालु; सैली उसे सब्जी के बगीचे में बातचीत के लिए ले जाती; क्लैरिसा सिरदर्द से बिस्तर पर पड़ी रहती।
अंतिम दृश्य, वह भयानक दृश्य जिसे वह अपने पूरे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण मानता था (यह अतिशयोक्ति हो सकती है—लेकिन अब भी ऐसा ही लगता

था), एक बेहद गर्म दिन की दोपहर तीन बजे घटित हुआ। इसकी शुरुआत एक छोटी सी घटना से हुई—दोपहर के भोजन के दौरान सैली ने डैलोवे के बारे में कुछ कहा और उसे "मेरा नाम डैलोवे है" कहकर पुकारा; जिस पर क्लैरिसा अचानक अकड़ गई, उसका चेहरा लाल हो गया, जैसा कि वह अक्सर करती थी, और उसने तीखे स्वर में कहा, "बहुत हो गया यह घटिया मज़ाक।" बस इतना ही; लेकिन उसके लिए यह ठीक वैसा ही था जैसे उसने कहा हो, "मैं बस तुम्हारे साथ मज़ाक कर रही हूँ; मेरा रिचर्ड डैलोवे के साथ एक समझौता है।" उसने इसे इसी तरह समझा। वह कई रातों से सोया नहीं था। "इसे किसी न किसी तरह खत्म करना ही होगा," उसने खुद से कहा। उसने सैली के ज़रिए क्लैरिसा को एक पत्र भेजा जिसमें उसे तीन बजे फव्वारे के पास मिलने के लिए कहा गया था। "कुछ बहुत महत्वपूर्ण हुआ है," उसने पत्र के अंत में लिखा।
फव्वारा घर से दूर, एक छोटी सी झाड़ी के बीच में था, जिसके चारों ओर झाड़ियाँ और पेड़ थे। वह समय से पहले ही वहाँ पहुँच गई, और वे दोनों फव्वारे के बीच खड़े हो गए, जिसका नल (टूटा हुआ) लगातार पानी टपका रहा था। दृश्य मन में कैसे बस जाते हैं! उदाहरण के लिए, चमकीली हरी काई।
वह हिली तक नहीं। "सच बताओ, सच बताओ," वह बार-बार कहता रहा। उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसका माथा फट जाएगा। वह एकदम सिकुड़ी हुई, पत्थर जैसी लग रही थी। वह हिली तक नहीं। "सच बताओ," उसने दोहराया, तभी अचानक बूढ़ा ब्रेटकोफ़ अखबार लिए हुए अंदर आया; उन्हें घूरा; अवाक रह गया; और चला गया। दोनों में से कोई नहीं हिला। "सच बताओ," उसने दोहराया। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी कठोर चीज़ से रगड़ रहा हो; वह अडिग थी। वह लोहे जैसी, पत्थर जैसी, रीढ़ की हड्डी तक सख्त थी। और जब उसने कहा, "कोई फायदा नहीं। कोई फायदा नहीं। यही अंत है"—ऐसा लग रहा था जैसे वह घंटों बोल चुका हो, उसकी आँखों से आंसू बह रहे थे—तो ऐसा लगा जैसे उसने उसके चेहरे पर ज़ोर से मारा हो। वह मुड़ी, उसे छोड़कर चली गई।
"क्लेरिसा!" वह चिल्लाया। "क्लेरिसा!" लेकिन वह कभी वापस नहीं आई। सब खत्म हो गया था। वह उसी रात चला गया। उसने उसे फिर कभी नहीं देखा।
वह रोते हुए बोला, "यह बहुत भयानक था, बहुत भयानक, बहुत भयानक!"
फिर भी, धूप तेज़ थी। फिर भी, ज़िंदगी किसी तरह दिन गुज़ार लेती है। फिर भी, जम्हाई लेते हुए और ध्यान देने की कोशिश करते हुए उसने सोचा—रीजेंट्स पार्क उसके बचपन से बहुत कम बदला था, गिलहरियों को छोड़कर—फिर भी, शायद

कुछ अच्छी बातें भी थीं—तभी छोटी एलिस मिशेल, जो अपने भाई के साथ नर्सरी के शेल्फ पर कंकड़ों का संग्रह बना रही थी, ने मुट्ठी भर कंकड़ नर्स के घुटने पर रख दिए और तेज़ी से दौड़कर एक महिला के पैरों में जा गिरी। पीटर वॉल्श ज़ोर से हँस पड़ा।
लेकिन लुक्रेशिया वॉरेन स्मिथ मन ही मन सोच रही थी, "यह तो बहुत बुरा है; मुझे क्यों सहना चाहिए?" वह चौड़े रास्ते पर चलते हुए खुद से पूछ रही थी। "नहीं; मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकती," वह सेप्टिमस को वहीं छोड़कर चली गई, जो अब सेप्टिमस नहीं रहा था, कठोर, क्रूर, दुष्ट बातें कह रहा था, खुद से बातें कर रहा था, एक मरे हुए आदमी से बातें कर रहा था, उस सीट पर; तभी बच्चा पूरी रफ्तार से उसकी ओर दौड़ा, ज़मीन पर गिर पड़ा और फूट-फूट कर रोने लगा। यह बात कुछ हद तक सुकून देने वाली थी। उसने उसे सीधा खड़ा किया, उसकी फ्रॉक से धूल झाड़ी और उसे चूमा।
लेकिन उसने खुद कुछ भी गलत नहीं किया था; वह सेप्टिमस से प्यार करती थी; वह खुश थी; उसका एक सुंदर घर था, और उसकी बहनें अभी भी वहीं रहती थीं और टोपियाँ बनाती थीं। उसे क्यों भुगतना चाहिए?
बच्ची दौड़कर सीधे अपनी नर्स के पास लौट गई, और रेज़िया ने देखा कि नर्स ने उसे डांटा, दिलासा दिया, और बुनाई का काम छोड़कर उसे गोद में उठा लिया, और दयालु दिखने वाले उस आदमी ने उसे दिलासा देने के लिए अपनी घड़ी उसे फोड़ने को दी—लेकिन उसे इस तरह क्यों उजागर किया गया? मिलान में क्यों नहीं छोड़ा गया? क्यों यातना दी गई? क्यों?
आँसुओं से हल्का हिलता हुआ चौड़ा रास्ता, नर्स, धूसर वस्त्रधारी व्यक्ति, और बच्चों की गाड़ी, उसकी आँखों के सामने उठते-गिरते रहे। इस क्रूर यातना के हाथों हिलना-डुलना ही उसकी नियति थी। पर क्यों? वह एक पतले पत्ते के खोखले भाग में शरण लिए बैठी चिड़िया की तरह थी, जो पत्ते के हिलने पर सूरज को देखकर पलकें झपकाती है; सूखी टहनी के टूटने पर चौंक जाती है। वह असुरक्षित थी; वह विशाल वृक्षों से घिरी हुई थी, एक उदासीन दुनिया के विशाल बादलों से घिरी हुई थी; असुरक्षित; यातनाग्रस्त; और उसे क्यों सहना चाहिए? क्यों?
वह भौंहें चढ़ाकर खड़ी हो गई; उसने पैर पटका। उसे सेप्टिमस के पास वापस जाना ही था क्योंकि सर विलियम ब्रैडशॉ जाने का समय लगभग हो चुका था। उसे वापस जाकर उसे बताना ही था, उसके पास वापस जाना था जो पेड़ के नीचे हरी

अब वह उसके करीब थी, उसे आसमान की ओर घूरते, कुछ बुदबुदाते और हाथ जोड़े देख सकती थी। फिर भी डॉ. होम्स ने कहा कि उसे कुछ भी नहीं हुआ है। तो फिर हुआ क्या था—वह क्यों चला गया था, और जब वह उसके पास बैठी तो वह क्यों चौंक गया, उस पर भौंहें चढ़ाकर दूर हट गया, और उसके हाथ की ओर इशारा करके उसका हाथ पकड़ लिया, और भयभीत होकर उसे देखने लगा?
क्या उसने अपनी शादी की अंगूठी उतार दी थी? "मेरा हाथ बहुत पतला हो गया है," उसने कहा। "मैंने इसे अपने पर्स में रख दिया है," उसने उसे बताया। उसने उसका हाथ छोड़ दिया। उसने पीड़ा और राहत के साथ सोचा, उनका विवाह समाप्त हो गया था। रस्सी कट गई थी; वह घोड़े पर सवार हो गया; वह स्वतंत्र था, क्योंकि यह तय था कि वह, सेप्टिमस, मनुष्यों का स्वामी, स्वतंत्र होगा; अकेला (क्योंकि उसकी पत्नी ने अपनी शादी की अंगूठी फेंक दी थी; क्योंकि वह उसे छोड़कर चली गई थी), वह, सेप्टिमस, अकेला था, मनुष्यों के समूह से पहले सत्य सुनने, अर्थ जानने के लिए बुलाया गया था, जो अब अंततः, सभ्यता के सभी परिश्रमों के बाद—यूनानियों, रोमनों, शेक्सपियर, डार्विन, और अब स्वयं— पूरी तरह से दिया जाना था…। "किसे?" उसने जोर से पूछा। "प्रधानमंत्री को," उसके सिर के ऊपर गूंजती आवाजों ने उत्तर दिया। सर्वोच्च रहस्य मंत्रिमंडल को बताया जाना चाहिए; पहले कि पेड़ जीवित हैं; फिर कि कोई अपराध नहीं है; अगला प्रेम, सार्वभौमिक प्रेम, वह हांफते हुए, कांपते हुए, दर्द से कराहते हुए बुदबुदाया, उन गहन सच्चाइयों को बाहर निकालते हुए जिन्हें व्यक्त करने के लिए एक बहुत बड़े प्रयास की आवश्यकता थी, वे इतनी गहरी और इतनी कठिन थीं, लेकिन इन सच्चाइयों ने दुनिया को हमेशा के लिए पूरी तरह से बदल दिया।
कोई अपराध नहीं; प्यार; उसने अपना कार्ड और पेंसिल ढूंढते हुए दोहराया, तभी एक स्काई टेरियर कुत्ते ने उसकी पतलून सूंघी और वह डर के मारे कांप उठा। वह आदमी में बदल रहा था! वह यह सब होते हुए नहीं देख सकता था! एक कुत्ते को आदमी बनते देखना भयानक, डरावना था! तुरंत ही कुत्ता भाग गया। स्वर्ग असीम दयालु और कृपालु था। उसने उसे बख्श दिया, उसकी कमजोरी को क्षमा कर दिया। लेकिन इसका वैज्ञानिक स्पष्टीकरण क्या था (क्योंकि वैज्ञानिक होना सर्वोपरि है)? वह शरीरों के आर-पार कैसे देख सकता था, भविष्य में कैसे देख सकता था, जब कुत्ते मनुष्य बन जाएंगे? संभवतः यह भीषण गर्मी का प्रभाव था, जो युगों के विकास से संवेदनशील हुए मस्तिष्क पर पड़

रहा था। वैज्ञानिक दृष्टि से, शरीर का मांस पिघल कर दुनिया से अलग हो गया था। उसका शरीर तब तक गलता रहा जब तक कि केवल तंत्रिका तंतु ही शेष नहीं रह गए। यह एक चट्टान पर बिछे पर्दे की तरह फैल गया था।
वह अपनी कुर्सी पर थका-हारा, लेकिन सहारा लिए लेटा रहा। वह आराम कर रहा था, इंतज़ार कर रहा था, इससे पहले कि वह फिर से, प्रयास और पीड़ा के साथ, मानवता के लिए व्याख्या करे। वह बहुत ऊँचाई पर, दुनिया के पीछे लेटा था। धरती उसके नीचे काँप रही थी। लाल फूल उसके शरीर से उग रहे थे; उनकी सख्त पत्तियाँ उसके सिर के पास सरसरा रही थीं। यहाँ ऊपर चट्टानों से संगीत की गूँज सुनाई देने लगी। उसने बुदबुदाते हुए कहा, "यह तो सड़क पर मोटर का हॉर्न है; लेकिन यहाँ ऊपर यह चट्टान से चट्टान तक गूँथ रहा है, बँट रहा है, ध्वनि के झटकों में मिल रहा है जो चिकने स्तंभों में ऊपर उठते हैं (संगीत का दिखाई देना एक खोज थी) और एक राष्ट्रगान बन जाता है, एक ऐसा राष्ट्रगान जो अब एक चरवाहे लड़के की बांसुरी की धुन से लिपटा हुआ है (उसने बुदबुदाते हुए कहा, "यह एक बूढ़ा आदमी है जो पब के पास एक पैसे की सीटी बजा रहा है") जो, जैसे ही लड़का स्थिर खड़ा रहा, उसकी बांसुरी से बुदबुदाती हुई निकली, और फिर, जैसे-जैसे वह ऊपर चढ़ता गया, नीचे से गुजरते यातायात के बीच अपनी मधुर विलाप ध्वनि बिखेरती गई। सेप्टिमस ने सोचा, "इस लड़के का शोकगीत यातायात के बीच बज रहा है।" अब वह बर्फ में ऊपर चला जाता है, और उसके चारों ओर गुलाब लटके हुए हैं—वही घने लाल गुलाब जो मेरे बेडरूम की दीवार पर उगते हैं, उसने खुद को याद दिलाया। संगीत बंद हो गया। उसने सोचा कि उसके पास उसका एक पैसा है, और वह अगले पब की ओर चल पड़ा है।
लेकिन वह स्वयं अपनी चट्टान पर ऊँचाई पर ही टिका रहा, मानो कोई डूबा हुआ नाविक चट्टान पर बैठा हो। उसने सोचा, मैं नाव के किनारे झुक गया और गिर पड़ा। मैं समुद्र के नीचे चला गया। मैं मर चुका था, और फिर भी अब जीवित हूँ, लेकिन मुझे शांति से आराम करने दो; उसने विनती की (वह फिर से स्वयं से बात कर रहा था—यह भयानक था, बहुत भयानक!); और जैसे जागने से पहले, पक्षियों की आवाज़ें और पहियों की आवाज़ एक विचित्र सामंजस्य में गूंजती हैं, और तेज़ होती जाती हैं और सोने वाला व्यक्ति स्वयं को जीवन के किनारों की ओर खिंचता हुआ महसूस करता है, वैसे ही उसने स्वयं को जीवन की ओर खिंचता हुआ महसूस किया, सूरज और गर्म होता जा रहा था, चीखें तेज़ होती जा रही थीं, कुछ भयानक होने वाला था।

उसे बस अपनी आँखें खोलनी थीं; लेकिन उन पर एक बोझ था; एक डर। उसने ज़ोर लगाया; उसने धक्का दिया; उसने देखा; उसके सामने रीजेंट्स पार्क था। सूरज की लंबी किरणें उसके पैरों पर झिलमिला रही थीं। पेड़ लहरा रहे थे, जैसे लहरा रहे हों। मानो दुनिया कह रही हो, हम स्वागत करते हैं; हम स्वीकार करते हैं; हम सृजन करते हैं। मानो दुनिया कह रही हो, सुंदरता। और मानो इसे (वैज्ञानिक रूप से) साबित करने के लिए, जहाँ भी उसने घरों को देखा, रेलिंग को देखा, बाड़ पर फैले हिरणों को देखा, सुंदरता तुरंत प्रकट हो उठी। हवा के झोंके में एक पत्ते को कांपते देखना एक अद्भुत आनंद था। आकाश में अबाबीलें गोता लगा रही थीं, इधर-उधर घूम रही थीं, अंदर-बाहर, गोल-गोल, फिर भी हमेशा पूर्ण नियंत्रण के साथ, मानो उन्हें किसी लचीले बंधन ने पकड़ रखा हो; और मक्खियाँ ऊपर-नीचे उड़ रही थीं; और सूरज कभी इस पत्ते पर, कभी उस पर, व्यंग्य करते हुए, उसे कोमल सुनहरे रंग से चमका रहा था, मानो शुद्ध स्वभाव से। और कभी-कभार घास के डंठलों पर किसी घंटी की मधुर झंकार (शायद किसी मोटर के हॉर्न की) सुनाई देती थी—यह सब, शांत और तर्कसंगत होते हुए भी, साधारण चीजों से बना हुआ, अब यही सत्य था; सुंदरता, यही अब सत्य था। सुंदरता हर जगह थी।
"अब समय आ गया है," रेजिया ने कहा।
समय शब्द ने अपना खोल फाड़ दिया; अपनी सारी दौलत उस पर उंडेल दी; और उसके होठों से सीपियों की तरह, किसी रस्सा से निकले छिलन की तरह, बिना उसके बनाए, कठोर, सफेद, अविनाशी शब्द गिरे, और समय के लिए एक स्तुतिगान में अपनी जगह बनाने के लिए उड़ गए; समय के लिए एक अमर स्तुतिगान। उसने गाया। इवांस ने पेड़ के पीछे से जवाब दिया। इवांस ने गाया, मृत लोग थेसली में थे, ऑर्किड के बीच। वहाँ वे युद्ध समाप्त होने तक प्रतीक्षा करते रहे, और अब मृत, अब स्वयं इवांस—
"भगवान के लिए, मत आओ!" सेप्टिमस चिल्लाया। क्योंकि वह मृतकों को नहीं देख सकता था।
लेकिन डालियाँ अलग हो गईं। एक भूरे रंग के वस्त्र पहने व्यक्ति सचमुच उनकी ओर आ रहा था। वह इवांस था! लेकिन उस पर न तो कीचड़ था, न कोई घाव; वह बिल्कुल भी नहीं बदला था। "मुझे पूरी दुनिया को बताना होगा," सेप्टिमस चिल्लाया, अपना हाथ उठाते हुए (जैसे ही भूरे रंग के वस्त्र पहने मृत व्यक्ति पास आया), अपना हाथ ऐसे उठाते हुए जैसे कोई विशालकाय व्यक्ति

युगों से रेगिस्तान में अकेले, माथे पर हाथ रखे, गालों पर निराशा की लकीरें लिए, मनुष्य के भाग्य पर विलाप करता रहा हो, और अब रेगिस्तान के किनारे पर प्रकाश देखता है जो फैलता है और लोहे के काले शरीर पर पड़ता है (और सेप्टिमस अपनी कुर्सी से आधा उठ खड़ा हुआ), और उसके पीछे लाखों लोग झुके हुए थे, वह विशाल शोक करने वाला, एक पल के लिए अपने चेहरे पर सब कुछ ग्रहण करता है—
"लेकिन मैं बहुत दुखी हूँ, सेप्टिमस," रेज़िया ने उसे बिठाने की कोशिश करते हुए कहा।
लाखों लोग विलाप कर रहे थे; सदियों से वे शोक मना रहे थे। वह मुड़ेगा, कुछ ही क्षणों में, बस कुछ ही क्षणों में, वह उन्हें इस राहत, इस आनंद, इस आश्चर्यजनक रहस्योद्घाटन के बारे में बताएगा—
"समय बताओ, सेप्टिमस," रेज़िया ने दोहराया। "क्या समय हुआ है?"
वह बात कर रहा था, वह चौंक रहा था, उस आदमी ने उसे जरूर देखा होगा। वह उनकी तरफ देख रहा था।
"मैं तुम्हें समय बताता हूँ," सेप्टिमस ने बहुत धीरे-धीरे, बहुत नींद में, रहस्यमयी मुस्कान के साथ कहा। जब वह धूसर सूट पहने मृत व्यक्ति को देखकर मुस्कुरा रहा था, तभी पौने बारह बज गए।
पीटर वॉल्श ने उनके पास से गुज़रते हुए सोचा, "और यही तो जवानी है! सुबह-सुबह इतना भयानक मंजर देखना—बेचारी लड़की बिलकुल हताश लग रही थी।" लेकिन आखिर हुआ क्या था? उसने सोचा, ओवरकोट पहने उस युवक ने उससे ऐसा क्या कहा था कि वह ऐसी लग रही थी; आखिर वे दोनों किस मुसीबत में फंस गए थे कि गर्मी की इस सुहावनी सुबह में इतने हताश दिख रहे थे? पाँच साल बाद इंग्लैंड लौटने की सबसे मज़ेदार बात यह थी कि कम से कम शुरुआती दिनों में तो चीज़ें ऐसी लगती थीं मानो पहले कभी देखी ही न हों; पेड़ के नीचे झगड़ते प्रेमी; पार्कों का घरेलू पारिवारिक जीवन। उसने लंदन को इतना मनमोहक पहले कभी नहीं देखा था—दूरियों की कोमलता; समृद्धि; हरियाली; भारत के बाद सभ्यता, उसने घास पर टहलते हुए सोचा।
प्रभावों के प्रति उसकी यह संवेदनशीलता निस्संदेह उसकी बर्बादी का कारण बनी। फिर भी, इस उम्र में भी, एक लड़के या लड़की की तरह, उसके मिजाज में उतार-चढ़ाव आते रहते थे; अच्छे दिन, बुरे दिन, बिना किसी कारण के, किसी सुंदर चेहरे को देखकर खुशी, तो किसी बदसूरत औरत को देखकर घोर उदासी। भारत

से लौटने के बाद, ज़ाहिर है, हर औरत से प्यार हो जाता था। उनमें एक ताजगी थी; यहाँ तक कि सबसे गरीब औरतें भी पाँच साल पहले की तुलना में कहीं बेहतर कपड़े पहनती थीं; और उसकी नज़र में फैशन इतना आकर्षक कभी नहीं था; लंबे काले लबादे; पतलापन; शालीनता; और फिर मेकअप का मनमोहक और सर्वव्यापी चलन। हर औरत, यहाँ तक कि सबसे संभ्रांत महिला भी, कांच के नीचे खिलते गुलाबों की तरह दिखती थी; चाकू से तराशे हुए होंठ; भारतीय स्याही से सजे घुंघराले बाल; हर जगह डिज़ाइन, कला; किसी न किसी तरह का बदलाव ज़रूर हुआ था। युवा लोग क्या सोचते थे? पीटर वॉल्श ने खुद से पूछा।
उन्हें शक था कि वे पाँच साल—1918 से 1923—किसी न किसी तरह बहुत महत्वपूर्ण थे। लोग अलग दिखते थे। अखबार अलग लगते थे। उदाहरण के लिए, एक आदमी एक प्रतिष्ठित साप्ताहिक अखबार में शौचालयों के बारे में खुलकर लिख रहा था। दस साल पहले ऐसा करना असंभव था—किसी प्रतिष्ठित साप्ताहिक अखबार में शौचालयों के बारे में खुलकर लिखना। और फिर ये सब, सार्वजनिक रूप से मेकअप करना। घर लौटते समय जहाज पर बहुत सारे लड़के-लड़कियाँ थे—उन्हें खास तौर पर बेट्टी और बर्टी याद थे—जो खुलकर मौज-मस्ती कर रहे थे; उनकी बूढ़ी माँ बुनाई करते हुए उन्हें देखती रहती थी, एकदम शांत। वो लड़की सबके सामने खड़ी होकर अपना मेकअप करती थी। और उनकी सगाई नहीं हुई थी; बस मजे कर रहे थे; किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँची थी। बेट्टी नाम याद नहीं आ रहा था—वह बहुत सख्त मिजाज की थी; लेकिन एक अच्छी इंसान थी। तीस साल की उम्र में वो एक बहुत अच्छी पत्नी बनती—वो तब शादी करती जब उसे ठीक लगता; किसी अमीर आदमी से शादी करो और मैनचेस्टर के पास एक बड़े घर में रहो।
आखिर ये किसने किया था? पीटर वॉल्श ने ब्रॉड वॉक में मुड़ते हुए खुद से पूछा—एक अमीर आदमी से शादी करके मैनचेस्टर के पास एक बड़े घर में रहने लगी? कोई वो जिसने हाल ही में उसे "नीले हाइड्रेंजिया" के बारे में एक लंबा, भावुक पत्र लिखा था। नीले हाइड्रेंजिया को देखकर ही उसे उसकी और पुराने दिनों की याद आई—सैली सेटन, बिल्कुल! ये सैली सेटन ही थी—दुनिया में आखिरी इंसान जिससे कोई उम्मीद कर सकता था कि वो एक अमीर आदमी से शादी करके मैनचेस्टर के पास एक बड़े घर में रहेगी, बेबाक, साहसी, रोमांटिक सैली! लेकिन उन सभी पुराने दोस्तों में से, क्लैरिसा के दोस्तों—व्हिटब्रेड, किंडरली, कनिंघम, किनलोच-जोन्स—सैली शायद सबसे अच्छी थी। वह हर हाल में सही तरीके से काम करने की कोशिश करती थी। क्लैरिसा और बाकी सब ह्यूग

व्हिटब्रेड के पीछे पड़े थे, तब भी सैली ने उनकी असलियत पहचान ली थी—वह प्रशंसनीय ह्यूग।
"व्हिटब्रेड्स?" उसे सुनाई दिया कि वह कह रही है। "व्हिटब्रेड्स कौन हैं? कोयले के व्यापारी। सम्मानित कारोबारी।"
पता नहीं क्यों, क्लैरिसा को ह्यू से नफरत थी। वह सिर्फ अपनी शान-शौकत के बारे में सोचता था। उसे ड्यूक होना चाहिए था। उसकी शादी राजपरिवार की राजकुमारियों में से किसी एक से ज़रूर होती। और बेशक, ह्यू के मन में ब्रिटिश अभिजात वर्ग के लिए असाधारण, स्वाभाविक और उदात्त सम्मान था, जैसा उसने आज तक किसी इंसान में नहीं देखा था। क्लैरिसा को भी यह मानना पड़ा। ओह, लेकिन वह कितना प्यारा और निस्वार्थ था, अपनी बूढ़ी माँ को खुश करने के लिए उसने शिकार करना छोड़ दिया था—अपनी चाचियों के जन्मदिन याद रखता था, और भी बहुत कुछ।
सैली, सच कहूँ तो, इन सब बातों को समझ गई थी। उसे सबसे अच्छी तरह याद था एक रविवार की सुबह बॉर्टन में महिलाओं के अधिकारों (उस पुराने ज़माने के विषय) पर हुई बहस, जब सैली अचानक आपा खो बैठी, भड़क उठी और ह्यूग से कहा कि वह ब्रिटिश मध्यमवर्गीय जीवन की सबसे घृणित चीज़ों का प्रतीक है। उसने ह्यूग से कहा कि वह उसे "पिकाडिली की उन बेचारी लड़कियों" की हालत के लिए ज़िम्मेदार मानती है—ह्यूग, एकदम सज्जन, बेचारा ह्यूग!—इतना भयभीत कोई आदमी कभी नहीं दिखा होगा! उसने बाद में कहा कि उसने जानबूझकर ऐसा किया (क्योंकि वे अक्सर सब्ज़ी के बगीचे में मिलते और अपने विचार साझा करते थे)। "उसने कुछ पढ़ा नहीं, कुछ सोचा नहीं, कुछ महसूस नहीं किया," वह उसे उसी ज़ोरदार आवाज़ में कहते हुए सुन सकता था, जो उसकी सोच से कहीं ज़्यादा दूर तक जाती थी। उसने कहा कि अस्तबल के लड़कों में ह्यूग से ज़्यादा जान है। उसने कहा कि वह पब्लिक स्कूल के बच्चों का एकदम सटीक नमूना है। इंग्लैंड के अलावा कोई और देश उसे पैदा नहीं कर सकता था। वह किसी कारण से सचमुच द्वेषपूर्ण थी; उसके प्रति कोई द्वेष रखती थी। कुछ हुआ था—उसे याद नहीं क्या—स्मोकिंग रूम में। उसने उसका अपमान किया था—उसे चूमा था? अविश्वसनीय! ज़ाहिर है, ह्यूग के खिलाफ़ कोई एक शब्द पर भी विश्वास नहीं करता था। कौन करता? स्मोकिंग रूम में सैली को चूमना! अगर कोई माननीय एडिथ या लेडी वायलेट होतीं, तो शायद; लेकिन उस फटेहाल सैली पर नहीं, जिसके पास एक पैसा भी नहीं था, और जिसके माता-पिता मोंटे कार्लो में जुआ खेलते थे।

क्योंकि जितने भी लोगों से वह मिला था, उनमें ह्यूग सबसे बड़ा घमंडी—सबसे चापलूस—नहीं, वह ठीक से झुकता नहीं था। वह इसके लिए बहुत ही अभिमानी था। एक बेहतरीन नौकर से उसकी तुलना करना स्वाभाविक था—जो सूटकेस लेकर पीछे चलता था; जिस पर टेलीग्राम भेजने का भरोसा किया जा सकता था—मेजबानों के लिए अपरिहार्य। और उसे अपना काम मिल गया था—उसने अपनी माननीय एवलिन से शादी कर ली थी; दरबार में कोई छोटा-मोटा पद पा लिया था, राजा के तहखानों की देखभाल करता था, शाही जूतों के बकल चमकाता था, घुटनों तक की पैंट और लेस वाले फ्रिल पहनकर घूमता था। जीवन कितना निर्मम है! दरबार में एक छोटी सी नौकरी!
उन्होंने माननीय एवलिन से शादी कर ली थी और वे यहीं आसपास रहते थे, ऐसा उन्हें लगा (पार्क के सामने बने आलीशान घरों को देखते हुए), क्योंकि उन्होंने एक बार वहाँ एक घर में दोपहर का भोजन किया था, जिसमें ह्यूग की बाकी चीज़ों की तरह कुछ ऐसा था जो किसी और घर में नहीं हो सकता था—शायद लिनेन की अलमारियाँ थीं। आपको जाकर उन्हें देखना पड़ता था—आपको वहाँ रखी हर चीज़ की तारीफ़ करने में बहुत समय बिताना पड़ता था—लिनेन की अलमारियाँ, तकिए के कवर, पुराने ओक के फर्नीचर, तस्वीरें, जिन्हें ह्यूग ने बहुत कम कीमत में खरीदा था। लेकिन श्रीमती ह्यूग कभी-कभी अपनी असलियत बता देती थीं। वह उन गुमनाम, चूहे जैसी छोटी महिलाओं में से एक थीं जो बड़े पुरुषों की प्रशंसा करती हैं। वह लगभग नगण्य थीं। फिर अचानक वह कुछ ऐसा कह देतीं जो बिल्कुल अप्रत्याशित होता—कुछ तीखा। शायद उनमें अभी भी शान-शौकत के अवशेष थे। कोयले की भाप उनके लिए थोड़ी तेज़ थी—उससे माहौल भारी हो जाता था। और इस तरह वे वहाँ अपने लिनेन की अलमारियों, अपने पुराने मालिकों और असली लेस से सजे तकिए के कवरों के साथ रहते थे, संभवतः पाँच या दस हज़ार प्रति वर्ष की दर से, जबकि वह, जो ह्यू से दो साल बड़ा था, नौकरी के लिए भीख मांगता था।
तिरेपन साल की उम्र में उन्हें आकर उनसे गुहार लगानी पड़ी कि उन्हें किसी सचिव के दफ्तर में नौकरी दिला दें, या किसी दफ्तर में बैठे किसी बड़े अधिकारी के इशारों पर चलने का कोई काम दिला दें, जिससे उन्हें सालाना पाँच सौ डॉलर की आमदनी हो सके; क्योंकि अगर उनकी शादी डेज़ी से हो जाती, तो पेंशन मिलने के बावजूद भी उनका गुजारा इससे कम में नहीं चल पाता। व्हिटब्रेड शायद यह काम कर सकते थे; या डैलोवे। उन्हें इस बात की परवाह

नहीं थी कि वह डैलोवे से क्या पूछते हैं। वह एक नेक इंसान थे; थोड़े सीमित, थोड़े मंदबुद्धि; हाँ; लेकिन एक नेक इंसान। जो भी काम हाथ में लेते, उसे उसी व्यावहारिक और समझदारी से करते; बिना किसी कल्पना या प्रतिभा के, बस अपने स्वभाव की अनूठी शालीनता के साथ। उन्हें एक देहाती सज्जन होना चाहिए था—राजनीति में उनका समय बर्बाद हो गया। वह खुले में, घोड़ों और कुत्तों के साथ सबसे ज़्यादा खुश रहता था—उदाहरण के लिए, जब क्लैरिसा का वह बड़ा सा रोएंदार कुत्ता एक जाल में फंस गया और उसका पंजा आधा फट गया, और क्लैरिसा बेहोश हो गई, तब डैलोवे ने सब कुछ संभाला; पट्टी बांधी, स्प्लिंट बनाए; क्लैरिसा से कहा कि बेवकूफ़ मत बनो। शायद क्लैरिसा को यही बात पसंद थी—यही तो उसे चाहिए था। "अब, मेरी प्यारी, बेवकूफ़ मत बनो। इसे पकड़ो—वह लाओ," वह हर समय कुत्ते से ऐसे बात करता रहता था जैसे वह कोई इंसान हो। लेकिन वो कविता के बारे में ये सब बातें कैसे सुन सकती थी? वो उसे शेक्सपियर के बारे में इतनी बातें करने कैसे दे सकती थी? रिचर्ड डैलोवे गंभीरता से खड़ा हो गया और बोला कि किसी भी भले आदमी को शेक्सपियर के सॉनेट नहीं पढ़ने चाहिए क्योंकि ये किसी के दरवाजे के छेद से झाँकने जैसा है (इसके अलावा, ये रिश्ता उसे मंज़ूर नहीं था)। किसी भी भले आदमी को अपनी पत्नी को अपनी मरी हुई पत्नी की बहन से मिलने नहीं देना चाहिए। अविश्वसनीय! एकमात्र उपाय यही था कि उसे मीठे बादामों से मारा जाए—ये सब खाने के समय हो रहा था। लेकिन क्लैरिसा ने सब कुछ सह लिया; उसे ये सब बहुत ईमानदार लगा; बहुत ही स्वतंत्र लगा; भगवान जाने उसने उसे अब तक मिले सबसे अनोखे दिमाग वाला इंसान ही क्यों न समझा हो!
यह सैली और उसके बीच के बंधनों में से एक था। एक बगीचा था जहाँ वे टहलने जाया करते थे, एक चारदीवारी वाला स्थान, गुलाब की झाड़ियों और विशाल फूलगोभी से भरा हुआ—उसे याद था कि सैली एक गुलाब तोड़कर चाँदनी में गोभी के पत्तों की सुंदरता पर रुक जाती थी (यह आश्चर्यजनक था कि उसे सब कुछ कितनी स्पष्टता से याद आ गया था, वे बातें जिनके बारे में उसने वर्षों से नहीं सोचा था), जबकि वह उससे विनती करती थी, थोड़ा हँसते हुए, कि वह क्लैरिसा को अपने साथ ले जाए, उसे ह्यूज़ और डैलोवेज़ और अन्य सभी "परिपूर्ण सज्जनों" से बचाए जो "उसकी आत्मा का गला घोंट देंगे" (उन दिनों वह ढेर सारी कविताएँ लिखती थी), उसे महज़ एक मेज़बान बनाकर रखेंगे, और उसकी दुनियादारी को बढ़ावा देंगे। लेकिन क्लैरिसा के साथ न्याय करना चाहिए। वह

किसी भी हालत में ह्यू से शादी नहीं करने वाली थी। उसे पता था कि वह क्या चाहती है। उसकी भावनाएँ सतह पर थीं। अंदर से, वह बहुत चतुर थी—उदाहरण के लिए, सैली से कहीं बेहतर चरित्र परखने वाली, और इन सबके साथ, वह पूरी तरह से स्त्रीत्व से भरपूर थी; उस असाधारण प्रतिभा के साथ, उस स्त्री की उस प्रतिभा के साथ, कि वह जहाँ भी होती, अपनी एक अलग दुनिया बना लेती थी। वह एक कमरे में आती; वह खड़ी हो जाती, जैसा कि उसने उसे अक्सर देखा था, एक दरवाजे पर, उसके चारों ओर बहुत सारे लोग होते थे। लेकिन क्लैरिसा ही याद रहती थी। ऐसा नहीं था कि वह आकर्षक थी; बिल्कुल भी सुंदर नहीं थी; उसमें कुछ भी मनमोहक नहीं था; वह कभी कोई खास चतुराई भरी बात नहीं कहती थी; फिर भी, वह वहाँ होती थी; वह वहाँ होती थी।
नहीं, नहीं, नहीं! अब उसे उससे प्यार नहीं था! उस सुबह उसे कैंची और रेशमी कपड़ों के बीच पार्टी के लिए तैयार होते हुए देखने के बाद, वह उसके ख्यालों से बाहर नहीं निकल पा रहा था; वह बार-बार उसके दिमाग में लौट रही थी, जैसे रेलगाड़ी के डिब्बे में कोई स्लीपर उससे टकरा रहा हो; बेशक, यह प्यार नहीं था; यह उसके बारे में सोचना, उसकी आलोचना करना, तीस साल बाद फिर से शुरू होना, उसे समझने की कोशिश करना था। उसके बारे में सबसे आम बात यही कही जा सकती थी कि वह दुनियादारी में डूबी हुई थी; रुतबे और समाज में तरक्की करने की उसे बहुत ज्यादा परवाह थी—जो एक हद तक सच भी था; उसने खुद भी यह बात उससे मानी थी। (अगर आप थोड़ी कोशिश करते तो आप उससे सच उगलवा सकते थे; वह ईमानदार थी।) वह कहती थी कि उसे आवारा, दकियानूसी, नाकाम लोग पसंद नहीं थे, शायद उसी की तरह; उसका मानना था कि लोगों को जेब में हाथ डाले आलस करने का कोई हक नहीं है; उन्हें कुछ करना चाहिए, कुछ बनना चाहिए; और ये बड़े-बड़े रईस, ये डचेस, ये बूढ़ी-सी काउंटेस जिनसे उसकी ड्राइंग रूम में मुलाकात हुई, भले ही वो उन्हें किसी भी मायने की चीज़ से बेहद दूर महसूस करती थी, फिर भी उसके लिए उनका कुछ वास्तविक महत्व था। लेडी बेक्सबोरो, उसने एक बार कहा था, हमेशा सीधी खड़ी रहती थीं (क्लैरिसा भी; वो कभी भी किसी भी मायने में आलसी नहीं थीं; वो तीर की तरह सीधी थीं, बल्कि थोड़ी सख्त थीं)। उसने कहा कि उनमें एक तरह का साहस था जिसका सम्मान उम्र बढ़ने के साथ-साथ बढ़ता गया। इन सबमें डैलोवे की झलक तो थी ही; जनहितैषी, ब्रिटिश साम्राज्य, टैरिफ सुधार, शासक वर्ग की भावना, जो उस पर हावी हो गई थी, जैसा कि अक्सर होता है। उससे दुगनी बुद्धि होने के कारण, उसे चीजों को उसकी नजरों से देखना पड़ता

था—विवाहित जीवन की एक त्रासदी। अपने खुद के विचारों के कारण, उसे हमेशा रिचर्ड के विचारों को उद्धृत करना होता था—जैसे कि सुबह के अखबार मॉर्निंग पोस्ट को पढ़कर कोई रिचर्ड के विचारों को ठीक-ठीक नहीं जान सकता! उदाहरण के लिए, ये सारी पार्टियाँ उसी के लिए होती थीं, या उसके बारे में उसकी सोच के अनुसार (रिचर्ड के साथ न्याय करने के लिए, यह कहना उचित होगा कि वह नॉरफ़ॉक में खेती करके अधिक खुश रहता)। उसने अपने ड्राइंग रूम को एक तरह का मिलन स्थल बना दिया था; उसमें यह हुनर था। उसने बार-बार देखा था कि वह किसी अनुभवहीन युवक को चुनती, उसे प्रेरित करती, उसे जगाती; उसे आगे बढ़ाती। बेशक, अनगिनत नीरस लोग उसके आसपास जमा होते थे। लेकिन कभी-कभी कुछ अनपेक्षित लोग भी आ जाते थे; कभी कोई कलाकार; कभी कोई लेखक; उस माहौल में बिल्कुल अलग-थलग लोग। और इन सबके पीछे लोगों से मिलने, कार्ड छोड़ने, उनके प्रति दयालु होने का सिलसिला था; फूलों के गुच्छे और छोटे-छोटे उपहार लेकर इधर-उधर भागना; फलां व्यक्ति फ्रांस जा रहा था—ज़रूर उसके पास एयर कुशन होगा; उसकी ऊर्जा का बहुत अधिक दोहन; उसके जैसी महिलाओं का वह अंतहीन आवागमन; लेकिन वह यह सब ईमानदारी से, एक स्वाभाविक प्रवृत्ति से करती थी। अजीब बात है कि वह उन सबसे कट्टर संशयवादियों में से एक थी जिनसे वह कभी मिला था, और शायद (यह एक सिद्धांत था जो वह उसके बारे में गढ़ता था, जो कुछ मायनों में इतनी स्पष्ट थी, दूसरों में इतनी रहस्यमय), शायद उसने खुद से कहा होगा, "चूंकि हम एक बर्बाद जाति हैं, एक डूबते जहाज से जंजीरों में जकड़े हुए हैं (बचपन में उसकी पसंदीदा किताबें हक्सले और टिंडल थीं, और उन्हें समुद्री उपमाएँ बहुत पसंद थीं), चूंकि यह सब एक बुरा मजाक है, तो चलो, कम से कम, अपना फर्ज निभाएं; अपने साथी कैदियों के कष्टों को कम करें (फिर से हक्सले); कालकोठरी को फूलों और एयर-कुशन से सजाएं; जितना हो सके शालीन रहें। वे बदमाश, देवता, अपनी मनमानी नहीं कर पाएंगे," - उसका मानना था कि देवता, जो मानव जीवन को चोट पहुँचाने, रोकने और बर्बाद करने का कोई मौका नहीं छोड़ते, अगर आप फिर भी एक सभ्य महिला की तरह व्यवहार करते हैं तो वे बहुत नाराज हो जाते हैं। यह दौर सिल्विया की मृत्यु के ठीक बाद आया - वह भयानक घटना। अपनी ही बहन को गिरते पेड़ से मरते देखना (यह सब जस्टिन पैरी की गलती थी—उसकी लापरवाही), वो भी जीवन के अंतिम पड़ाव पर, सबसे प्रतिभाशाली लड़की, क्लेरिसा हमेशा कहती थी, किसी को भी कड़वा बना देने के लिए काफी था। बाद में शायद उसका रवैया इतना सकारात्मक नहीं रहा; उसने सोचा

कि कोई भगवान नहीं है; किसी को दोष नहीं दिया जा सकता; और इसलिए उसने अच्छाई के लिए अच्छा करने के इस नास्तिक धर्म को विकसित किया।
और बेशक, वह जीवन का भरपूर आनंद लेती थी। आनंद लेना उसका स्वभाव था (हालाँकि भगवान ही जानता है, उसमें कुछ संकोच भी था; उसे अक्सर लगता था कि इतने वर्षों बाद भी वह क्लैरिसा की जो छवि बना पाता है, वह महज़ एक खाका मात्र है)। खैर, उसमें कोई कड़वाहट नहीं थी; नैतिक सद्गुणों का वह भाव भी नहीं था जो अच्छी महिलाओं में इतना अप्रिय लगता है। वह लगभग हर चीज़ का आनंद लेती थी। अगर आप उसके साथ हाइड पार्क में टहलते, तो वह कभी ट्यूलिप के फूलों का बिस्तर होता, कभी किसी बच्चे को प्रैम में बैठा देखते, कभी कोई बेतुका नाटक जो वह पल भर में रच लेती। (बहुत संभव है कि अगर उसे लगता कि वे प्रेमी दुखी हैं, तो वह उनसे बात करती।) उसमें हास्य की एक अद्भुत समझ थी, लेकिन उसे इसे बाहर लाने के लिए लोगों की ज़रूरत होती थी, हमेशा लोगों की, जिसका नतीजा यह होता था कि वह अपना समय लंच, डिनर, अपनी लगातार पार्टियों में बर्बाद कर देती थी, बेतुकी बातें करती थी, बिना सोचे-समझे बातें कहती थी, जिससे उसकी बुद्धि कुंद हो जाती थी और उसका विवेक कमज़ोर पड़ जाता था। वहाँ वह मेज के सिर पर बैठ जाती और डैलोवे के काम आ सकने वाले किसी बूढ़े व्यक्ति से बात करने में अथक परिश्रम करती—वे यूरोप के सबसे उबाऊ लोगों को जानते थे—या फिर एलिजाबेथ आ जाती और सब कुछ उसके लिए रास्ता छोड़ देता। पिछली बार जब वह आया था, तब वह हाई स्कूल में थी, अपनी बोलने की कला में असमर्थ, गोल आँखों वाली, पीले चेहरे वाली लड़की, जिसमें उसकी माँ का कोई अंश नहीं था, एक शांत, गंभीर प्राणी, जो सब कुछ स्वाभाविक मानती थी, अपनी माँ को उसे दुलारने देती थी, और फिर चार साल के बच्चे की तरह कहती थी, "क्या मैं अब जा सकती हूँ?" क्लेरिसा ने उस आनंद और गर्व के मिश्रण के साथ समझाया, जो डैलोवे खुद उसमें जगाता हुआ प्रतीत होता था, कि वह हॉकी खेलने जा रही है। और अब एलिजाबेथ "बाहर" थी, शायद; उसे एक बूढ़ा दकियानूसी समझती थी, अपनी माँ के दोस्तों पर हँसती थी। खैर, जो है सो है। पीटर वॉल्श ने रीजेंट्स पार्क से बाहर आते हुए, हाथ में अपनी टोपी पकड़े हुए सोचा, बूढ़ा होने का मुआवजा बस यही था; कि भावनाएं पहले की तरह ही प्रबल बनी रहती हैं, लेकिन अंततः व्यक्ति ने वह शक्ति प्राप्त कर ली है जो अस्तित्व में सर्वोच्च स्वाद जोड़ती है, अनुभव को अपने वश में करने की शक्ति, उसे धीरे- धीरे प्रकाश में घुमाने की शक्ति।

यह एक भयानक स्वीकारोक्ति थी (उसने अपनी टोपी फिर से पहन ली), लेकिन अब, तिरपन वर्ष की आयु में, किसी को लोगों की शायद ही ज़रूरत थी। जीवन ही, इसका हर पल, इसकी हर बूँद, यहीं, इस क्षण, अभी, सूरज की रोशनी में, रीजेंट्स पार्क में, पर्याप्त था। वास्तव में बहुत अधिक। अब जब किसी ने शक्ति, पूरा स्वाद, हर एक बूंद आनंद, हर एक रंगत का निचोड़ निकाल लिया था, तो पूरा जीवन भी कम पड़ जाता था; ये दोनों अब पहले से कहीं अधिक ठोस और कम व्यक्तिगत थे। यह असंभव था कि वह फिर कभी उतना कष्ट सहे जितना क्लैरिसा ने उसे दिया था। घंटों तक (भगवान करे कि ये बातें बिना किसी के सुने कही जा सकें!), घंटों और दिनों तक उसने डेज़ी के बारे में कभी नहीं सोचा।
क्या ऐसा हो सकता है कि उन दिनों के दुख, यातना और असाधारण जुनून को याद करके वह उससे प्यार करने लगा हो? यह बिल्कुल अलग बात थी—कहीं ज़्यादा सुखद बात—सच तो यह था कि अब वह उससे प्यार करती थी। और शायद यही कारण था कि जब जहाज़ सचमुच रवाना हुआ, तो उसे असाधारण राहत महसूस हुई, वह बस अकेला रहना चाहता था; उसे अपने केबिन में उसकी छोटी-छोटी चीज़ें—सिगार, नोट्स, सफ़र के लिए एक गलीचा—देखकर झुंझलाहट हुई। अगर हर कोई ईमानदार होता, तो यही कहता; पचास के बाद किसी को किसी से प्यार नहीं होता; कोई महिलाओं को बार-बार यह नहीं कहना चाहता कि वे सुंदर हैं; पीटर वॉल्श ने सोचा कि पचास के दशक के ज़्यादातर पुरुष अगर ईमानदार होते, तो यही कहते।
लेकिन फिर भावनाओं का ये चौंकाने वाला उभार—आज सुबह फूट-फूट कर रोना, ये सब क्या था? क्लैरिसा उसके बारे में क्या सोच रही होगी? शायद उसे मूर्ख समझ रही होगी, और ऐसा पहली बार नहीं हुआ था। पीटर वॉल्श ने अपनी जेब में रखे चाकू को हाथ की दूरी पर रखते हुए सोचा, "इसके पीछे ईर्ष्या थी—वह ईर्ष्या जो मानव जाति के हर दूसरे जुनून से कहीं अधिक प्रबल होती है।" डेज़ी ने अपने आखिरी पत्र में लिखा था कि वह मेजर ऑर्ड से मिल रही थी; वह जानता था कि उसने जानबूझकर ऐसा कहा था; उसे ईर्ष्या दिलाने के लिए कहा था; वह देख सकता था कि लिखते समय वह अपना माथा सिकोड़ रही थी, सोच रही थी कि वह क्या कहे जिससे उसे दुख पहुंचे; और फिर भी कोई फर्क नहीं पड़ा; वह गुस्से से आग बबूला था! इंग्लैंड आने और वकीलों से मिलने की ये सारी झंझट उससे शादी करने के लिए नहीं थी, बल्कि उसे किसी और से शादी करने से रोकने के लिए थी। यही बात उसे सता रही थी, यही बात उस पर हावी हो गई थी जब उसने क्लैरिसा को इतना शांत, इतना उदासीन, अपने कपड़े या जो भी था, उस पर इतना ध्यान

केंद्रित करते देखा; उसे एहसास हुआ कि वह उसे किस चीज़ से बचा सकती थी, उसने उसे किस हालत में पहुँचा दिया था—एक सिसकते-सिसकते बूढ़े गधे में। लेकिन औरतें, उसने अपनी जेब में रखी चाकू बंद करते हुए सोचा, जुनून क्या होता है, ये नहीं जानतीं। मर्दों के लिए इसका क्या मतलब होता है, ये नहीं समझतीं। क्लैरिसा बर्फ की तरह ठंडी थी। वह उसके बगल में सोफे पर बैठती, उसे अपना हाथ पकड़ने देती, उसे एक चुंबन देती—और अब वह चौराहे पर खड़ा था।
एक आवाज़ ने उसे बाधित किया; एक कमज़ोर, कांपती हुई आवाज़, एक ऐसी आवाज़ जो बिना किसी दिशा, जोश, शुरुआत या अंत के फूट रही थी, कमज़ोर और तीखी, और मानवीय अर्थ के अभाव में बह रही थी।
ई उम फा उम सो
foo swee too eem yes—
एक ऐसी आवाज़ जिसकी कोई उम्र या लिंग नहीं, धरती से फूटते एक प्राचीन झरने की आवाज़; जो रीजेंट्स पार्क ट्यूब स्टेशन के ठीक सामने एक ऊँची, कांपती हुई आकृति से निकलती है, एक फ़नल की तरह, एक जंग लगे पंप की तरह, एक हवा से झुलसे हुए, पत्तों से रहित पेड़ की तरह, जिसकी शाखाओं पर हवा ऊपर-नीचे बहती हुई गाती है।
ई उम फा उम सो
foo swee too eem yes
और शाश्वत हवा में चट्टानें, चरमराहट और कराहें सुनाई देती हैं।
सभी युगों में—जब पक्की सड़क घास से ढकी थी, जब वह दलदल थी, हाथीदांत और मैमथ के युग में, शांत सूर्योदय के युग में, घायल स्त्री—क्योंकि उसने स्कर्ट पहनी थी—दाहिना हाथ खुला और बायां हाथ बगल में थामे, प्रेम के गीत गाती रही—लाखों वर्षों से कायम प्रेम, वह गाती रही, वह प्रेम जो सर्वोपरि है, और लाखों वर्ष पहले, उसका प्रेमी, जो इन शताब्दियों में मर चुका था, मई के महीने में उसके साथ चला था, वह गुनगुनाती रही; लेकिन युगों के बीतने के साथ, गर्मियों के दिनों की तरह लंबे और ज्वलंत, उसे याद आया, केवल लाल एस्टर के साथ, वह चला गया था; मृत्यु के विशाल हंसिया ने उन विशाल पहाड़ियों को काट डाला था, और जब अंत में उसने अपना बूढ़ा और बेहद उम्रदराज सिर धरती पर रखा, जो अब बर्फ की एक मात्र राख बन चुकी थी, उसने देवताओं से प्रार्थना की कि वे उसके पास बैंगनी हीथर का एक गुच्छा रख दें, उसकी उस

ऊँची समाधि पर जहाँ अंतिम सूर्य की अंतिम किरणें स्पर्श करती हैं; क्योंकि तब ब्रह्मांड का तमाशा समाप्त हो जाएगा।
रीजेंट्स पार्क ट्यूब स्टेशन के सामने जब प्राचीन गीत गूंज उठा, तब भी धरती हरी-भरी और फूलों से भरी हुई प्रतीत हो रही थी; यद्यपि यह एक साधारण से छेद से निकल रहा था, जो धरती में बना था, कीचड़ से सना हुआ था, जड़ों के रेशों और उलझी हुई घासों से ढका हुआ था, फिर भी वह पुराना मधुर गीत, अनंत युगों की गांठदार जड़ों, कंकालों और खजानों से रिसता हुआ, फुटपाथ पर और मैरीलेबोन रोड के किनारे-किनारे छोटी धाराओं में बहता हुआ, यूस्टन की ओर जाता था, उर्वरित करता हुआ, एक नम दाग छोड़ जाता था।
अब भी याद है कि कैसे किसी प्राचीन मई के महीने में वह अपने प्रेमी के साथ चली थी, यह जंग लगा पंप, यह जर्जर बूढ़ी औरत जिसका एक हाथ तांबे के सिक्कों के लिए खुला था और दूसरा कमर पकड़े हुए, दस मिलियन वर्षों बाद भी वहीं होगी, यह याद करते हुए कि कैसे वह मई के महीने में चली थी, जहाँ अब समुद्र बहता है, किसके साथ, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था—वह एक आदमी था, हाँ, एक आदमी जिसने उससे प्यार किया था। लेकिन युगों के बीतने ने उस प्राचीन मई के दिन की स्पष्टता को धुंधला कर दिया था; चमकीले पंखुड़ी वाले फूल फीके और चांदी जैसे जम गए थे; और अब उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था, जब वह उससे विनती कर रही थी (जैसा कि अब वह स्पष्ट रूप से कर रही थी) "अपनी प्यारी आँखों से मेरी आँखों में ध्यान से देखो," उसे अब भूरी आँखें, काली मूंछें या धूप से झुलसा हुआ चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था, बल्कि केवल एक विशाल आकृति, एक परछाई जैसी आकृति दिखाई दे रही थी, जिस पर, वृद्धावस्था की चिड़िया जैसी ताजगी के साथ वह अब भी चहचहा रही थी, "मुझे अपना हाथ दो और मुझे इसे धीरे से दबाने दो" (पीटर वॉल्श अपनी टैक्सी में चढ़ते समय उस बेचारी को एक सिक्का देने से खुद को रोक नहीं पाए), "और अगर कोई देख भी ले, तो क्या फर्क पड़ता है?" उसने पूछा; और उसकी मुट्ठी उसकी कमर पर कस गई, और वह मुस्कुराई, अपना शिलिंग जेब में रख लिया, और सभी जिज्ञासु आँखें मानो गायब हो गईं, और गुजरती पीढ़ियाँ—फुटपाथ हलचल भरे मध्यम वर्ग के लोगों से भरा हुआ था—पत्तों की तरह गायब हो गईं, जिन्हें कुचल दिया गया, जिन्हें उस शाश्वत वसंत ने भिगो दिया, और मिट्टी में मिला दिया।
ई उम फा उम सो
foo swee too eem yes

"बेचारी बूढ़ी औरत," रेजिया वॉरेन स्मिथ ने कहा, जो सड़क पार करने का इंतजार कर रही थी।
ओह बेचारा बूढ़ा!
मान लीजिए कि वह एक बरसाती रात थी? मान लीजिए कि किसी के पिता, या कोई ऐसा व्यक्ति जो उसे अच्छे दिनों में जानता था, वहाँ से गुजर रहा होता और उसे नाले में खड़ा देख लेता? और वह रात को कहाँ सोती?
खुशी से, लगभग उल्लास से, ध्वनि की अजेय धारा झोपड़ी की चिमनी से निकलने वाले धुएं की तरह हवा में ऊपर उठती हुई, साफ-सुथरे बीच के पेड़ों से होकर गुज़रती हुई, सबसे ऊपरी पत्तियों के बीच नीले धुएं का एक गुच्छा बनाती हुई निकल पड़ी। "और अगर कोई देख भी ले, तो क्या फर्क पड़ता है?"
क्योंकि रेज़िया कई हफ़्तों से बहुत दुखी थी, इसलिए वह हर चीज़ को कोई न कोई अर्थ देने लगी थी; कभी-कभी तो उसे लगता था कि सड़क पर चलते हुए, अगर कोई अच्छा या दयालु व्यक्ति दिखे, तो उसे रोककर बस इतना कहना चाहिए, "मैं दुखी हूँ।" और तभी सड़क पर एक बूढ़ी औरत गा रही थी, "अगर कोई देख भी ले, तो क्या फ़र्क पड़ता है?" यह सुनकर उसे अचानक पूरा यकीन हो गया कि सब कुछ ठीक हो जाएगा। वे सर विलियम ब्रैडशॉ के पास जा रहे थे; उसे उनका नाम अच्छा लगा; उन्हें लगा कि वे सेप्टिमस को तुरंत ठीक कर देंगे। फिर वहाँ एक शराब बनाने वाले की गाड़ी थी, और भूरे घोड़ों की पूंछ में भूसे के सीधे बाल खड़े थे; वहाँ अख़बारों के पोस्टर लगे थे। दुखी होना एक बेवकूफ़ाना सपना था।
तो श्रीमान और श्रीमती सेप्टिमस वॉरेन स्मिथ सड़क पार कर गए, और क्या वहाँ ऐसा कुछ था जो उनकी ओर ध्यान आकर्षित कर सके, ऐसा कुछ जिससे राहगीर को संदेह हो कि यहाँ एक ऐसा युवक है जो अपने भीतर दुनिया का सबसे बड़ा संदेश लिए हुए है, और इतना ही नहीं, दुनिया का सबसे खुश और सबसे दुखी व्यक्ति भी है? शायद वे अन्य लोगों की तुलना में धीमी गति से चल रहे थे, और उस व्यक्ति की चाल में कुछ झिझक, कुछ लड़खड़ाना सा था, लेकिन एक क्लर्क के लिए, जो वर्षों से इस समय किसी कार्यदिवस पर वेस्ट एंड में नहीं आया है, आकाश की ओर, इधर-उधर देखता रहना इससे अधिक स्वाभाविक क्या हो सकता है, मानो पोर्टलैंड प्लेस एक ऐसा कमरा हो जिसमें वह परिवार के अनुपस्थित होने पर आया हो, झूमर हॉलैंड बैग में लटके हों, और देखभाल करने वाली महिला, सुनसान, अजीब दिखने वाली कुर्सियों पर धूल भरी रोशनी की लंबी किरणें आने देते हुए, लंबे पर्दों का एक कोना उठाकर, आगंतुकों को समझा रही हो कि यह कितनी अद्भुत

जगह है; कितना अद्भुत है, लेकिन साथ ही, कुर्सियों और मेजों को देखते हुए वह सोचता है, कितना अजीब भी है।
देखने में वह एक क्लर्क जैसा लग सकता था, लेकिन एक अच्छे दर्जे का; क्योंकि उसने भूरे रंग के जूते पहने थे; उसके हाथ सधे हुए थे; उसका चेहरा भी वैसा ही था—उसका नुकीला, बड़ी नाक वाला, बुद्धिमान और संवेदनशील चेहरा; लेकिन उसके होंठ उतने सधे हुए नहीं थे, क्योंकि वे ढीले थे; और उसकी आँखें (जैसा कि आमतौर पर होती हैं), बस आँखें ही थीं; भूरी, बड़ी; कुल मिलाकर वह एक सीमांत व्यक्ति था, न कुछ भी नहीं, शायद उसका अंत पर्ली में एक घर और एक मोटर कार के साथ हो, या वह जीवन भर पिछड़ी गलियों में किराए के अपार्टमेंट में रहता; उन आधे-अधूरे पढ़े-लिखे, स्व-शिक्षित लोगों में से एक, जिनकी शिक्षा सार्वजनिक पुस्तकालयों से उधार ली गई किताबों से, दिन भर के काम के बाद शाम को पढ़ी गई किताबों से, और पत्रों के माध्यम से परामर्श किए गए प्रसिद्ध लेखकों की सलाह से हुई थी।
अन्य अनुभवों की बात करें, वे एकांत अनुभव जो लोग अकेले अपने कमरों में, अपने दफ्तरों में, लंदन के खेतों और सड़कों पर घूमते हुए बिताते हैं, तो उन्होंने भी उन्हें जिया था; एक छोटे लड़के के रूप में ही उन्होंने अपनी माँ के कारण घर छोड़ दिया था; उनकी माँ ने झूठ बोला था; क्योंकि वे पचासवीं बार बिना हाथ धोए चाय पीने नीचे आए थे; क्योंकि उन्हें स्ट्राउड में एक कवि के रूप में कोई भविष्य नहीं दिख रहा था; और इसलिए, अपनी छोटी बहन को अपना विश्वासपात्र बनाकर, वे लंदन चले गए और अपने पीछे एक बेतुका नोट छोड़ गए, जैसा कि महान लोगों ने लिखा है, और दुनिया ने बाद में पढ़ा है जब उनके संघर्षों की कहानी प्रसिद्ध हो गई है।
लंदन ने स्मिथ नाम के लाखों नौजवानों को निगल लिया; उनके माता-पिता ने उन्हें अलग दिखाने के लिए सेप्टिमस जैसे अजीबोगरीब ईसाई नामों का इस्तेमाल किया, लेकिन लंदन ने उन्हें कुछ नहीं समझा। यूस्टन रोड के पास एक कमरे में रहते हुए, उन्हें ऐसे अनुभव हुए, जो दो साल में चेहरे को गुलाबी, मासूम अंडाकार से दुबला, सिकुड़ा हुआ और शत्रुतापूर्ण बना देते हैं। लेकिन इन सब के बारे में सबसे समझदार दोस्त क्या कह सकते थे सिवाय इसके कि एक माली सुबह कंज़र्वेटरी का दरवाजा खोलकर अपने पौधे पर एक नया फूल देखकर क्या कहता है:—यह खिल गया है; घमंड, महत्वाकांक्षा, आदर्शवाद, जुनून, अकेलापन, साहस, आलस्य, इन सभी आम बीजों से खिला है, जो सब मिलकर (यूस्टन रोड

के पास एक कमरे में) उसे शर्मीला और हकलाने वाला बना दिया, उसे खुद को सुधारने के लिए बेचैन कर दिया, और उसे मिस इसाबेल पोल से प्यार हो गया, जो वाटरलू रोड पर शेक्सपियर पर व्याख्यान दे रही थीं।
क्या वह कीट्स जैसा नहीं था? उसने पूछा; और सोचने लगी कि कैसे वह उसे एंटनी और क्लियोपेट्रा और बाकी रचनाओं का स्वाद चखा सकती थी; उसे किताबें उधार दे सकती थी; उसे चिट्ठियों के टुकड़े लिख सकती थी; और उसके भीतर ऐसी आग जला सकती थी जो जीवन में केवल एक बार जलती है, बिना गर्मी के, मिस पोल, एंटनी और क्लियोपेट्रा और वाटरलू रोड पर अनंत रूप से सूक्ष्म और सारहीन लाल-सुनहरी लौ की तरह टिमटिमाती हुई। वह उसे सुंदर समझता था, उसे बेदाग बुद्धिमान मानता था; उसके सपने देखता था, उसके लिए कविताएँ लिखता था, जिन्हें वह विषय को अनदेखा करते हुए लाल स्याही से सुधारती थी; उसने उसे एक गर्मी की शाम को एक चौक में हरे रंग की पोशाक पहने हुए देखा। "इसमें फूल खिल गए हैं," माली ने कहा होगा, अगर उसने दरवाजा खोला होता; अगर वह अंदर आया होता, यानी किसी रात लगभग इसी समय, और उसे लिखते हुए पाया होता; उसे अपनी लिखी हुई चीजों को फाड़ते हुए पाया होता; उन्हें सुबह तीन बजे एक उत्कृष्ट कृति को पूरा करते हुए और सड़कों पर टहलने के लिए बाहर भागते हुए, चर्चों का दौरा करते हुए, एक दिन उपवास करते हुए, दूसरे दिन शराब पीते हुए, शेक्सपियर, डार्विन, सभ्यता का इतिहास और बर्नार्ड शॉ को पढ़ते हुए पाया गया।
मिस्टर ब्रेवर को पता था कि कुछ गड़बड़ है; सिबलीज़ और एरोस्मिथ्स के मैनेजिंग क्लर्क, जो नीलामीकर्ता, मूल्यांकनकर्ता, भूमि और संपत्ति एजेंट थे; उन्हें लगा कि कुछ गड़बड़ है, और अपने युवा कर्मचारियों के प्रति पिता तुल्य स्नेह रखते हुए, और स्मिथ की क्षमताओं को बहुत महत्व देते हुए, और यह भविष्यवाणी करते हुए कि दस या पंद्रह वर्षों में, वह रोशनदान के नीचे भीतरी कमरे में चमड़े की कुर्सी पर बैठेंगे, जिसके चारों ओर दस्तावेजों के बक्से होंगे, "अगर वह स्वस्थ रहे," मिस्टर ब्रेवर ने कहा, और यही खतरा था— वह कमजोर दिख रहे थे; उन्होंने फुटबॉल खेलने की सलाह दी, उन्हें रात के खाने पर आमंत्रित किया और वेतन वृद्धि की सिफारिश करने पर विचार कर रहे थे, तभी कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने श्री ब्रेवर की कई योजनाओं को धराशायी कर दिया, उनके सबसे प्रतिभाशाली युवा साथियों को उनसे छीन लिया, और अंततः, यूरोपीय युद्ध के इतने ताक-झांक करने वाले और कपटी प्रभाव से, सेरेस की प्लास्टर की

मूर्ति टूट गई, गेरेनियम के क्यारियों में छेद हो गया, और मसवेल हिल स्थित श्री ब्रेवर के प्रतिष्ठान में रसोइए के हौसले पस्त हो गए।
सेप्टिमस स्वेच्छा से आगे आने वालों में से एक था। वह फ्रांस गया, एक ऐसे इंग्लैंड को बचाने के लिए जो लगभग पूरी तरह से शेक्सपियर के नाटकों और हरे रंग की पोशाक पहने मिस इसाबेल पोल के चौक में घूमने से ही बना था। वहाँ खाइयों में, मिस्टर ब्रेवर ने जब उसे फुटबॉल खेलने की सलाह दी थी, तब जो बदलाव चाहा था, वह तुरंत सामने आया; उसमें मर्दानगी विकसित हुई; उसे पदोन्नति मिली; उसने अपने अधिकारी, इवांस का ध्यान, बल्कि स्नेह भी प्राप्त कर लिया। यह दो कुत्तों के चूल्हे के पास गलीचे पर खेलने जैसा था; एक कागज के पेंच को कुरेद रहा था, गुर्रा रहा था, झपट्टा मार रहा था, कभी- कभी बूढ़े कुत्ते के कान पर चुटकी काट रहा था; दूसरा सुस्त पड़ा हुआ था, आग को देख रहा था, पंजा उठा रहा था, घूम रहा था और अच्छे स्वभाव से गुर्रा रहा था। उन्हें साथ रहना था, एक-दूसरे के साथ सब कुछ साझा करना था, एक-दूसरे से लड़ना था, एक-दूसरे से झगड़ना था। लेकिन जब इवांस (रेज़िया, जिसने उसे केवल एक बार देखा था, उसे "एक शांत व्यक्ति" कहती थी, एक मजबूत, लाल बालों वाला आदमी, जो महिलाओं की संगति में भावहीन रहता था), जब इवांस इटली में युद्धविराम से ठीक पहले मारा गया, तो सेप्टिमस ने कोई भावना न दिखाते हुए या यह स्वीकार किए बिना कि यह एक दोस्ती का अंत था, खुद को बहुत कम महसूस करने और बहुत ही तर्कसंगत होने पर बधाई दी। युद्ध ने उसे सिखाया था। यह उदात्त था। उसने पूरा अनुभव किया था - दोस्ती, यूरोपीय युद्ध, मृत्यु, पदोन्नति पाई थी, अभी तीस साल से कम उम्र का था और उसका जीवित रहना तय था। वह वहीं मौजूद था। आखिरी गोले उसे नहीं लगे। उसने उदासीनता से उन्हें फटते देखा। जब शांति आई, तो वह मिलान में था, एक सराय मालिक के घर में ठहरा हुआ था, जिसमें एक आंगन था, गमलों में फूल थे, खुली जगह में छोटी मेजें थीं, बेटियाँ टोपियाँ बना रही थीं, और एक शाम जब वह घबराहट से घिरा हुआ था - जिसे वह महसूस नहीं कर पा रहा था - उसकी सगाई छोटी बेटी लुक्रेशिया से हो गई। अब जब सब कुछ खत्म हो चुका था, युद्धविराम पर हस्ताक्षर हो चुके थे और मृतकों को दफना दिया गया था, तो उसे, खासकर शाम के समय, अचानक डर के झटके लगते थे। वह कुछ महसूस नहीं कर पा रहा था। जैसे ही उसने उस कमरे का दरवाजा खोला जहाँ इतालवी लड़कियाँ टोपियाँ बना रही थीं, वह उन्हें देख सकता था; उनकी आवाज़ सुन सकता था; वे तश्तरियों में रंगीन मोतियों के बीच तार रगड़

रही थीं; वे बकरम की आकृतियों को इधर-उधर घुमा रही थीं; मेज पंखों, झिलमिलाहटों, रेशम और रिबन से भरी हुई थी; कैंची मेज पर खटखटा रही थी; लेकिन कुछ उसे धोखा दे रहा था; वह कुछ महसूस नहीं कर पा रहा था। फिर भी, कैंची की खटखटाहट, लड़कियों की हँसी, टोपियों के बनने की आवाज़ ने उसे सहारा दिया; उसे सुरक्षा का आश्वासन मिला; उसे एक शरण मिली। लेकिन वह वहाँ पूरी रात नहीं बैठ सकता था। सुबह-सुबह नींद खुल जाती थी। बिस्तर गिर रहा था; वह गिर रहा था। काश, कैंची, लैंप की रोशनी और बकरम की आकृतियाँ! उसने लुक्रेशिया से शादी का प्रस्ताव रखा, जो दोनों में छोटी थी, हंसमुख, चंचल, और उन छोटी-छोटी कलाकार जैसी उंगलियों वाली थी जिन्हें वह ऊपर उठाकर कहती थी, "इनमें सब कुछ है।" रेशम, पंख, और न जाने क्या-क्या उनके लिए जीवंत थे। "सबसे ज़्यादा मायने टोपी रखती है," जब वे साथ बाहर निकलते, तो वह कहतीं। हर गुज़रती टोपी को वह गौर से देखतीं; और साथ ही उस महिला के लबादे, पोशाक और हाव-भाव को भी। कम या ज़्यादा सजने-संवरने को वह बुरी तरह से परखतीं, क्रूरता से नहीं, बल्कि हाथों के अधीर इशारों से, ठीक वैसे ही जैसे कोई चित्रकार अपने किसी स्पष्ट, नेक इरादे वाले, भद्दे से दिखने वाले धोखे को मिटाने की कोशिश करता है; और फिर, उदारता से, लेकिन हमेशा आलोचनात्मक ढंग से, वह उस दुकानदार लड़की का स्वागत करतीं जिसने अपने छोटे से कपड़े को शान से पहनाया हो, या फिर पूरी लगन और पेशेवर समझ के साथ, उस फ्रांसीसी महिला की प्रशंसा करतीं जो अपनी गाड़ी से चिंचिला के वस्त्र, मोतियों के हार पहनकर उतर रही हो।
"सुंदर!" वह धीरे से बुदबुदाती, सेप्टिमस को इशारा करते हुए ताकि वह देख सके। लेकिन सुंदरता तो कांच के पीछे छिपी थी। यहाँ तक कि स्वाद (रेज़िया को आइसक्रीम, चॉकलेट, मीठी चीज़ें पसंद थीं) भी उसे महसूस नहीं होता था। उसने अपना प्याला छोटी संगमरमर की मेज पर रख दिया। उसने बाहर लोगों को देखा; वे खुश लग रहे थे, सड़क के बीचोंबीच इकट्ठा होकर चिल्ला रहे थे, हंस रहे थे, छोटी-छोटी बातों पर झगड़ रहे थे। लेकिन वह स्वाद नहीं ले पा रहा था, वह महसूस नहीं कर पा रहा था। चाय की दुकान में मेजों और बातूनी वेटरों के बीच उसे भयानक डर सता रहा था—वह कुछ महसूस नहीं कर पा रहा था। वह तर्क कर सकता था; वह पढ़ सकता था, उदाहरण के लिए दांते की रचनाएँ, बड़ी आसानी से ("सेप्टिमस, अपनी किताब नीचे रख दो," रेज़िया ने धीरे से इन्फर्नो बंद करते

हुए कहा), वह अपना बिल जोड़ सकता था; उसका दिमाग बिल्कुल सही था; तो फिर यह दुनिया की ही गलती होगी—कि वह कुछ महसूस नहीं कर पा रहा था।
"अंग्रेज़ कितने शांत होते हैं," रेज़िया ने कहा। उसने कहा कि उसे यह अच्छा लगता है। वह इन अंग्रेज़ों का सम्मान करती थी और लंदन, अंग्रेज़ घोड़ों और दर्जी द्वारा सिले हुए सूटों को देखना चाहती थी। उसे अपनी एक चाची से, जिनकी शादी हो गई थी और जो सोहो में रहती थीं, वहाँ की दुकानों के बारे में सुनी बातें याद आ रही थीं।
न्यूहेवन से निकलते समय ट्रेन की खिड़की से इंग्लैंड को देखते हुए सेप्टिमस ने सोचा, "शायद यह संभव हो सकता है; शायद यह संभव हो कि दुनिया का ही कोई अर्थ न हो।"
दफ्तर में उन्हें काफी जिम्मेदारी वाले पद पर पदोन्नत किया गया। उन्हें उन पर गर्व था; उन्होंने कई पुरस्कार जीते थे। "आपने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है; अब यह हमारी जिम्मेदारी है—" श्री ब्रेवर ने कहना शुरू किया; लेकिन खुशी के मारे वे अपनी बात पूरी नहीं कर पाए। उन्होंने टॉटेनहैम कोर्ट रोड के पास एक शानदार आवास किराए पर लिया।
यहाँ उसने एक बार फिर शेक्सपियर को खोला। भाषा के नशे में चूर उस लड़के का खेल—एंटनी और क्लियोपेट्रा—पूरी तरह से मुरझा गया था। शेक्सपियर को मानवता से कितनी घृणा थी—कपड़े पहनना, बच्चे पैदा करना, मुँह और पेट की गंदगी! अब यह बात सेप्टिमस के सामने प्रकट हुई; शब्दों की सुंदरता में छिपा संदेश। एक पीढ़ी जो गुप्त संकेत अगली पीढ़ी को छिपाकर देती है, वह है घृणा, नफरत और निराशा। दांते में भी यही बात थी। एशिलस (अनुवादित) में भी यही बात थी। वहाँ रेज़िया मेज पर बैठी टोपियाँ सजा रही थी। वह श्रीमती फिल्मर की सहेलियों के लिए टोपियाँ सजाती थी; वह घंटों के हिसाब से टोपियाँ सजाती थी। वह पीली, रहस्यमयी, पानी में डूबी हुई लिली जैसी लग रही थी, उसने सोचा।
"अंग्रेज़ कितने गंभीर होते हैं," वह सेप्टिमस के चारों ओर अपनी बाहें डालते हुए और अपना गाल उसके गाल से सटाते हुए कहती थी।
शेक्सपियर को पुरुष और स्त्री के बीच का प्रेम घृणित लगता था। अंत तक उनके लिए संभोग एक घिनौना काम था। लेकिन रेज़िया ने कहा कि उसे बच्चे चाहिए। उनकी शादी को पाँच साल हो चुके थे।

वे साथ में टॉवर गए; विक्टोरिया और अल्बर्ट संग्रहालय गए; राजा द्वारा संसद का उद्घाटन देखने के लिए भीड़ में खड़े हुए। और वहाँ दुकानें थीं— टोपी की दुकानें, कपड़ों की दुकानें, खिड़कियों में चमड़े के थैले वाली दुकानें, जहाँ वह खड़ी होकर टकटकी लगाए देखती रहती थी। लेकिन उसे एक लड़का चाहिए था।
उसने कहा, "उसका बेटा सेप्टिमस जैसा होना चाहिए। लेकिन सेप्टिमस जैसा कोई नहीं हो सकता; इतना सौम्य; इतना गंभीर; इतना बुद्धिमान।" क्या वह शेक्सपियर भी नहीं पढ़ सकती? क्या शेक्सपियर एक कठिन लेखक थे? उसने पूछा। इस तरह की दुनिया में बच्चों को जन्म देना उचित नहीं है। न तो दुख को कायम रखना संभव है, न ही इन वासनापूर्ण जानवरों की नस्ल को बढ़ाना, जिनमें स्थायी भावनाएं नहीं होतीं, बल्कि केवल सनक और घमंड होता है, जो उन्हें कभी इधर तो कभी उधर भटकाता रहता है।
वह उसे काट-छाँट करते, आकार देते हुए देखता रहा, जैसे कोई चिड़िया को घास में फुदकते, उड़ते हुए देखता है, बिना उंगली हिलाए। सच तो यह है (भले ही वह इसे अनदेखा कर दे) कि मनुष्यों में न तो दया है, न विश्वास है, न परोपकार, सिवाय क्षणिक सुख बढ़ाने के। वे झुंड में शिकार करते हैं। उनके झुंड रेगिस्तान छानते हैं और चीखते हुए जंगल में गायब हो जाते हैं। वे गिरे हुओं को छोड़ देते हैं। उनके चेहरे भावहीन होते हैं। दफ्तर में ब्रेवर था, अपनी मोम लगी मूंछों, मूंगे की टाई-पिन, सफेद स्लिप और सुखद भावनाओं के साथ — अंदर से पूरी तरह ठंडा और चिपचिपा—युद्ध में उसके गेरेनियम के पौधे बर्बाद हो गए—उसके रसोइए का दिमाग खराब हो गया; या अमेलिया, जिसका नाम मुझे याद नहीं, ठीक पाँच बजे चाय के कप बाँटती हुई—एक घूरती, ताना मारती, अश्लील छोटी चुड़ैल; और टॉम्स और बर्टीज़ अपनी कड़क कमीज़ों में बुराई की मोटी बूँदें टपकाते हुए। उन्होंने उसे कभी अपनी नोटबुक में उनकी नग्न हरकतों की तस्वीरें बनाते हुए नहीं देखा। सड़क पर वैनें उसके पास से तेज़ी से गुज़रती थीं; तख्तियों पर क्रूरता के नारे लिखे थे; पुरुष बारूदी सुरंगों में फँसे थे; औरतें ज़िंदा जल रही थीं; और एक बार तो टोटेनहम कोर्ट रोड पर पागलों का एक समूह, जिन्हें जनता के मनोरंजन के लिए व्यायाम कराया जा रहा था या प्रदर्शन के लिए रखा गया था (और लोग ज़ोर से हँस रहे थे), उसके पास से धीरे-धीरे गुज़रा, सिर हिलाया और मुस्कुराया, हर कोई आधे-अधूरे मन

से माफ़ी माँगते हुए, फिर भी विजयी भाव से, अपनी दयनीय पीड़ा को प्रकट कर रहा था। और क्या वह पागल हो जाएगा?
चाय के समय रेज़िया ने उसे बताया कि श्रीमती फिल्मर की बेटी गर्भवती है। वह बुढ़ापे में निःसंतान नहीं रह सकती! वह बहुत अकेली और दुखी थी! शादी के बाद पहली बार वह रोई। दूर से उसे उसके सिसकने की आवाज़ सुनाई दी; उसने उसे साफ-साफ सुना, स्पष्ट रूप से महसूस किया; उसने उसकी तुलना पिस्टन की धड़कन से की। लेकिन उसे कुछ भी महसूस नहीं हुआ।
उसकी पत्नी रो रही थी, और उसे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था; बस हर बार जब वह इस गहन, इस मौन, इस निराशाजनक तरीके से सिसकती थी, तो वह गड्ढे में एक और कदम नीचे उतर जाता था।
अंततः, उसने एक नाटकीय हावभाव के साथ, जिसे उसने यंत्रवत और पूरी तरह से बनावटी जानते हुए भी अपनाया, अपना सिर अपने हाथों पर रख लिया। अब उसने आत्मसमर्पण कर दिया था; अब दूसरों को उसकी मदद करनी होगी। लोगों को बुलाना होगा। उसने हार मान ली।
उन्हें जगाना नामुमकिन था। रेज़िया ने उन्हें बिस्तर पर लिटा दिया। उसने डॉक्टर को बुलवाया—श्रीमती फिल्मर के डॉक्टर होम्स। डॉक्टर होम्स ने उनकी जाँच की। डॉक्टर होम्स ने कहा, कोई बात नहीं। ओह, कितनी राहत मिली! कितने दयालु इंसान हैं, कितने अच्छे इंसान हैं! रेज़िया ने सोचा। डॉक्टर होम्स ने बताया, जब उन्हें ऐसा महसूस होता था तो वे म्यूज़िक हॉल जाते थे। उन्होंने अपनी पत्नी के साथ एक दिन की छुट्टी ली और गोल्फ़ खेला। क्यों न सोने से पहले एक गिलास पानी में ब्रोमाइड की दो गोलियाँ घोल कर देखें? डॉक्टर होम्स ने दीवार पर हाथ मारते हुए कहा, ये पुराने ब्लूम्सबरी के घर अक्सर बहुत ही बढ़िया पैनलिंग से भरे होते हैं, जिसे मकान मालिक बेवकूफी से कागज़ से ढक देते हैं। अभी कुछ ही दिन पहले, बेडफोर्ड स्क्वायर में एक मरीज़, सर समबडी समथिंग से मिलने गया था—
इसलिए कोई बहाना नहीं था; चाहे कुछ भी हो, सिवाय उस पाप के जिसके लिए मानव स्वभाव ने उसे मृत्युदंड दिया था; उसे इसका कोई एहसास नहीं था। इवांस की हत्या पर उसे कोई परवाह नहीं थी; यह सबसे बुरा था; लेकिन बाकी सभी अपराध सुबह-सुबह बिस्तर की रेलिंग के ऊपर से सिर उठाकर, उंगलियां हिलाकर, ताना मारते हुए और उपहास उड़ाते हुए उस बेइज्जती को महसूस कर रहे थे; कि कैसे उसने अपनी पत्नी से बिना प्यार किए शादी की थी; उससे झूठ बोला था; उसे

बहकाया था; मिस इसाबेल पोल का अपमान किया था, और वह बुराइयों से इतना दागदार था कि औरतें उसे सड़क पर देखकर कांप उठती थीं। ऐसे नीच व्यक्ति पर मानव स्वभाव का फैसला मौत ही था।
डॉ. होम्स फिर आए। लंबे, चमकीले रंग के, आकर्षक, अपने बूटों को झटकते हुए, शीशे में देखते हुए, उन्होंने सिरदर्द, अनिद्रा, डर, सपने - सब कुछ नज़रअंदाज़ कर दिया - बस तंत्रिका संबंधी लक्षण, और कुछ नहीं, उन्होंने कहा। अगर डॉ. होम्स का वज़न ग्यारह स्टोन छह से आधा पाउंड भी कम होता, तो वे नाश्ते में अपनी पत्नी से दलिया की एक और थाली मांग लेते। (रेज़िया दलिया बनाना सीख लेंगी।) लेकिन, उन्होंने आगे कहा, स्वास्थ्य काफी हद तक हमारे अपने नियंत्रण में है। खुद को बाहरी रुचियों में लगाओ; कोई शौक अपनाओ। उन्होंने शेक्सपियर का नाटक - एंटनी और क्लियोपेट्रा - खोला; शेक्सपियर को एक तरफ रख दिया। कैसा शौक, डॉ. होम्स ने कहा, क्योंकि क्या उनका खुद का उत्तम स्वास्थ्य (और वे लंदन के किसी भी आदमी की तरह कड़ी मेहनत करते थे) इस बात पर निर्भर नहीं था कि वे हमेशा अपने मरीजों से ध्यान हटाकर पुराने फर्नीचर पर ध्यान दे सकते थे? और श्रीमती वॉरेन स्मिथ ने कितनी सुंदर कंघी पहनी हुई थी, अगर वे ऐसा कह सकते थे!
जब वह मूर्ख फिर आया, तो सेप्टिमस ने उससे मिलने से इनकार कर दिया। क्या सचमुच? डॉ. होम्स ने मुस्कुराते हुए कहा। वास्तव में, उसे उस प्यारी सी महिला, श्रीमती स्मिथ को धक्का देना पड़ा, तभी वह उनके पति के शयनकक्ष में जा सका।
“तो आप उदास हैं,” उन्होंने मरीज़ के पास बैठते हुए सहमति से कहा। उन्होंने सचमुच अपनी पत्नी से आत्महत्या करने की बात कही थी, बड़ी ही भली महिला, विदेशी, है ना? क्या इससे उनके मन में अंग्रेज़ पतियों के बारे में कोई अजीब धारणा नहीं बन गई? क्या किसी का अपनी पत्नी के प्रति कोई कर्तव्य नहीं होता? बिस्तर पर पड़े रहने के बजाय कुछ करना बेहतर नहीं होगा? क्योंकि उन्हें चालीस साल का अनुभव था; और सेप्टिमस डॉ. होम्स की बात पर भरोसा कर सकता था—उनमें कोई समस्या नहीं थी। और अगली बार जब डॉ. होम्स आएंगे, तो उन्हें उम्मीद थी कि स्मिथ बिस्तर से उठ चुके होंगे और अपनी उस प्यारी पत्नी को अपने बारे में चिंतित नहीं कर रहे होंगे।
संक्षेप में कहें तो, उस पर मानवीय स्वभाव हावी था—खून से लाल नाक वाला वह घिनौना दरिंदा। होम्स उस पर नज़र रखे हुए था। डॉ. होम्स लगभग हर रोज़

आते थे। सेप्टिमस ने एक पोस्टकार्ड के पीछे लिखा, "एक बार ठोकर खा जाओ, तो मानवीय स्वभाव तुम पर हावी हो जाता है। होम्स तुम पर नज़र रखे हुए है।" उनके पास होम्स को बिना बताए भागने के अलावा कोई चारा नहीं था; इटली—कहीं भी, कहीं भी, डॉ. होम्स से दूर।
लेकिन रेज़िया उसे समझ नहीं पाई। डॉ. होम्स बहुत ही दयालु व्यक्ति थे। उन्हें सेप्टिमस में बहुत दिलचस्पी थी। उन्होंने कहा कि वे सिर्फ उनकी मदद करना चाहते थे। उनके चार छोटे बच्चे थे और उन्होंने उसे चाय पर बुलाया था, रेज़िया ने सेप्टिमस को बताया।
तो वह अकेला पड़ गया था। पूरी दुनिया चिल्ला रही थी: खुद को मार डालो, खुद को मार डालो, हमारे लिए। लेकिन वह उनके लिए खुद को क्यों मारता? खाना स्वादिष्ट था; धूप तेज़ थी; और खुद को मारना, भला कोई कैसे कर सकता है, मेज के चाकू से, बेरहमी से, खून की बाढ़ के साथ, या फिर किसी नली को चूसकर? वह बहुत कमज़ोर था; वह मुश्किल से अपना हाथ उठा पा रहा था। इसके अलावा, अब जब वह बिलकुल अकेला था, दोषी ठहराया गया था, त्यागा गया था, जैसे मरने वाले अकेले होते हैं, तो इसमें एक विलासिता थी, एकांत जो उदात्तता से भरा था; एक ऐसी आज़ादी जिसे आसक्त कभी नहीं जान सकते। होम्स जीत गया था, बेशक; लाल नथुनों वाला वह दरिंदा जीत गया था। लेकिन होम्स भी दुनिया के किनारे भटकते इस आखिरी अवशेष को, इस बहिष्कृत को, जो आबादी वाले इलाकों को देखता था, जो डूबे हुए नाविक की तरह दुनिया के किनारे पर पड़ा था, छू नहीं सका।
ठीक उसी क्षण (जब रेज़िया खरीदारी करने गई थी) एक बड़ा रहस्योद्घाटन हुआ। पर्दे के पीछे से एक आवाज़ आई। इवांस बोल रहा था। मृत आत्माएँ उसके साथ थीं।
"इवांस, इवांस!" वह चिल्लाया।
श्री स्मिथ ज़ोर-ज़ोर से खुद से बातें कर रहे थे, तभी रसोई में नौकरानी एग्नेस ने श्रीमती फिल्मर को पुकारा। "इवांस, इवांस," उन्होंने ट्रे लाते हुए कहा था। वह चौंक गई, सचमुच। वह झट से सीढ़ियों से नीचे भाग गई।
और रेजिया अपने फूलों के साथ अंदर आई, कमरे के उस पार चली गई, और गुलाबों को एक फूलदान में रख दिया, जिस पर सूरज की रोशनी सीधे पड़ी, और वह हंसते हुए, कमरे में उछलने लगा।
रेज़िया ने बताया कि उसे ये गुलाब सड़क पर एक गरीब आदमी से खरीदने पड़े थे। लेकिन गुलाबों को सजाते हुए उसने कहा कि वे लगभग मुरझा चुके थे।

तो बाहर एक आदमी खड़ा था; संभवतः इवांस; और जिन गुलाबों के बारे में रेज़िया ने कहा था कि वे आधे मुरझाए हुए हैं, उन्हें उसने ग्रीस के खेतों से तोड़ा था। "संचार ही स्वास्थ्य है; संचार ही खुशी है, संचार—" वह बुदबुदाया।
"सेप्टिमस, तुम क्या कह रहे हो?" रेज़िया ने डर से कांपते हुए पूछा, क्योंकि वह खुद से ही बात कर रहा था।
उसने एग्नेस को डॉक्टर होम्स के पास भेजा। उसने कहा कि उसका पति पागल था। वह उसे मुश्किल से ही जानता था।
"अरे जाहिल! अरे जाहिल!" सेप्टिमस चिल्लाया, जब उसने देखा कि मानवीय स्वभाव, यानी डॉ. होम्स, कमरे में प्रवेश कर रहे हैं।
“अब ये सब क्या चल रहा है?” डॉ. होम्स ने बेहद सौम्य लहजे में कहा। “अपनी पत्नी को डराने के लिए बकवास कर रहे हो?” लेकिन वो उसे कुछ ऐसा देंगे जिससे उसे नींद आ जाए। और अगर वो अमीर लोग हैं, तो डॉ. होम्स ने कमरे में चारों ओर व्यंग्य भरी नज़र से देखते हुए कहा, “बेशक उन्हें हार्ले स्ट्रीट जाने दो; अगर उन्हें मुझ पर भरोसा नहीं है, तो डॉ. होम्स ने थोड़े सख्त लहजे में कहा।
ठीक बारह बज रहे थे; बिग बेन की बारह की घंटी; जिसकी आवाज़ लंदन के उत्तरी भाग में गूंज रही थी; दूसरी घड़ियों की आवाज़ों के साथ घुलमिल गई, बादलों और धुएं के गुबार में एक पतले, अलौकिक तरीके से मिल गई, और अंत में सीगल पक्षियों के बीच गुम हो गई—बारह बजते ही क्लैरिसा डैलोवे ने अपनी हरी पोशाक बिस्तर पर रखी और वॉरेन स्मिथ दंपति हार्ले स्ट्रीट से नीचे उतरे। बारह बजने का समय उनकी मुलाकात का समय था। शायद, रेज़िया ने सोचा, सामने खड़ी ग्रे रंग की मोटर कार सर विलियम ब्रैडशॉ का घर था। भारी-भरकम वृत्त हवा में घुल गए।
सचमुच यह सर विलियम ब्रैडशॉ की मोटर कार थी; नीची, शक्तिशाली, भूरे रंग की, जिसके पैनल पर सादे अक्षरों में नाम के पहले अक्षर आपस में गुंथे हुए थे, मानो राजसी ठाठ-बाठ बेमेल लग रहे हों, क्योंकि यह व्यक्ति एक रहस्यमयी सहायक, विज्ञान का पुजारी था; और, चूंकि मोटर कार भूरे रंग की थी, इसलिए उसकी सादगी और सौम्यता से मेल खाने के लिए, उसमें भूरे रंग के फर और चांदी जैसे भूरे रंग के कालीन रखे गए थे, ताकि प्रतीक्षा करते समय महारानी को गर्माहट मिलती रहे। अक्सर सर विलियम साठ मील या उससे अधिक दूर ग्रामीण

इलाकों में जाकर उन धनी और पीड़ित लोगों से मिलते थे, जो सर विलियम द्वारा अपनी सलाह के लिए ली जाने वाली भारी फीस का भुगतान कर सकते थे। महारानी एक घंटे या उससे अधिक समय तक घुटनों तक कालीन ओढ़े, पीछे झुककर, कभी रोगी के बारे में, कभी, उचित रूप से, सोने की उस दीवार के बारे में सोचती रहीं, जो उनके प्रतीक्षा करते समय पल-पल बढ़ती जा रही थी; उनके और तमाम उतार-चढ़ावों व चिंताओं के बीच सोने की एक दीवार खड़ी होती जा रही थी (उन्होंने इन्हें बहादुरी से सहा था; उन्होंने भी संघर्ष किया था), यहाँ तक कि उन्हें ऐसा महसूस होने लगा जैसे वे एक शांत सागर में फंसी हुई हैं, जहाँ केवल सुगंधित हवाएँ चलती हैं; सम्मानित, प्रशंसित, ईर्ष्या का पात्र, हालाँकि उन्हें अपने मोटेपन का अफसोस था; हर गुरुवार रात को पेशेवर लोगों के लिए बड़ी डिनर पार्टियाँ; कभी-कभार खुलने वाला बाज़ार; राजघराने का स्वागत; अफसोस, अपने पति के साथ बहुत कम समय, जिनका काम बढ़ता ही जा रहा था; ईटन में अच्छा कर रहा एक बेटा; वह एक बेटी भी चाहती थीं; हालाँकि, उनकी रुचियाँ भरपूर थीं; बाल कल्याण; मिर्गी के रोगी की देखभाल, और फोटोग्राफी, इसलिए यदि कोई चर्च भवन होता, या कोई जीर्ण-शीर्ण अवस्था में होता, तो वह कब्रिस्तान के रखवाले को रिश्वत देकर चाबी ले लेती और तस्वीरें खींचतीं, जो पेशेवर फोटोग्राफरों के काम से लगभग अलग नहीं होती थीं, जबकि वह इंतजार कर रही होती थीं।
सर विलियम स्वयं भी अब युवा नहीं रहे थे। उन्होंने बहुत मेहनत की थी; उन्होंने अपनी योग्यता के बल पर यह पद हासिल किया था (वे एक दुकानदार के पुत्र थे); उन्हें अपने पेशे से प्रेम था; समारोहों में वे एक प्रभावशाली व्यक्तित्व थे और उनकी वाणी भी सुस्पष्ट थी—इन सभी बातों ने, जब उन्हें नाइट की उपाधि मिली, तब तक उनके चेहरे पर एक भारीपन और थकावट ला दी थी (मरीजों की निरंतर भीड़, उनके पेशे की जिम्मेदारियाँ और विशेषाधिकार इतने भारी थे)। यह थकावट, उनके सफेद बालों के साथ मिलकर, उनके व्यक्तित्व की असाधारण गरिमा को और बढ़ा देती थी और उन्हें (तंत्रिका संबंधी मामलों के उपचार में अत्यंत महत्वपूर्ण) न केवल बिजली की तरह तेज कौशल और लगभग अचूक निदान के लिए, बल्कि सहानुभूति, सूझबूझ और मानवीय भावनाओं को समझने के लिए भी ख्याति दिलाती थी। कमरे में आते ही (उन्हें वॉरेन स्मिथ कहा जाता था) वे समझ गए थे; जैसे ही उन्होंने उस व्यक्ति को देखा, उन्हें यकीन हो गया कि यह एक अत्यंत गंभीर मामला है। यह पूर्णतः मानसिक टूटन का मामला था—शारीरिक

और तंत्रिका तंत्र का पूर्णतः टूटना, जिसमें हर लक्षण उन्नत अवस्था में था, यह उन्होंने दो-तीन मिनट में ही पता लगा लिया (गुलाबी कार्ड पर प्रश्नों के उत्तर धीरे से लिखते हुए)।
डॉ. होम्स कितने समय से उनका इलाज कर रहे थे?
छह सप्ताह।
थोड़ी सी ब्रोमाइड लिख दी? कहा कि कोई समस्या नहीं है? अरे हाँ (ये सामान्य चिकित्सक! सर विलियम ने सोचा। उनकी गलतियों को सुधारने में उनका आधा समय लग जाता था। कुछ गलतियाँ तो ठीक ही नहीं हो सकती थीं)।
"आपने युद्ध में उत्कृष्ट सेवा दी?"
मरीज ने प्रश्नवाचक स्वर में "युद्ध" शब्द दोहराया।
वह प्रतीकात्मक शब्दों को अर्थ दे रहा था। यह एक गंभीर लक्षण था, जिसे कार्ड पर नोट किया जाना चाहिए।
"युद्ध?" मरीज़ ने पूछा। यूरोपीय युद्ध—बारूद से भरे स्कूली बच्चों का वो छोटा-मोटा खेल? क्या उसने उसमें कोई उत्कृष्ट सेवा दी थी? वो तो बिल्कुल भूल गया था। युद्ध में तो वो नाकाम रहा था।
"हां, उन्होंने अत्यंत उत्कृष्ट सेवा की," रेजिया ने डॉक्टर को आश्वस्त करते हुए कहा; "उन्हें पदोन्नति मिली थी।"
"और आपके दफ्तर में सब आपके बारे में बहुत अच्छी राय रखते हैं?" सर विलियम ने श्री ब्रेवर के बेहद उदार शब्दों वाले पत्र पर नज़र डालते हुए धीरे से कहा। "तो आपको चिंता करने की कोई बात नहीं है, कोई आर्थिक परेशानी नहीं, कुछ भी नहीं?"
उसने एक जघन्य अपराध किया था और मानवीय स्वभाव के कारण उसे मृत्युदंड दिया गया था।
"मैंने—मैंने," उसने कहना शुरू किया, "एक अपराध किया है—"
"उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है," रेज़िया ने डॉक्टर को आश्वस्त किया। सर विलियम ने कहा, अगर श्री स्मिथ थोड़ा इंतज़ार करें, तो वे बगल वाले कमरे में श्रीमती स्मिथ से बात करेंगे। सर विलियम ने कहा, उनके पति बहुत गंभीर रूप से बीमार हैं। क्या उन्होंने आत्महत्या करने की धमकी दी थी?
ओह, उसने किया! वह रो पड़ी। लेकिन उसका ऐसा कोई इरादा नहीं था, उसने कहा। बिलकुल नहीं। सर विलियम ने कहा, यह तो बस आराम की बात थी; आराम, आराम, आराम;

बिस्तर पर लंबा आराम। गाँव में एक प्यारा सा घर था जहाँ उसके पति की अच्छी तरह देखभाल की जाएगी। उससे दूर? उसने पूछा। दुर्भाग्य से, हाँ; जिन लोगों की हम सबसे ज़्यादा परवाह करते हैं, वे बीमार होने पर हमारे लिए अच्छे नहीं होते। लेकिन वह पागल तो नहीं था, था क्या? सर विलियम ने कहा कि वह कभी "पागलपन" की बात नहीं करते; वह इसे अनुपात की समझ न होना कहते थे। लेकिन उसके पति को डॉक्टर पसंद नहीं थे। वह वहाँ जाने से मना कर देते। सर विलियम ने संक्षेप में और विनम्रता से उसे स्थिति समझाई। उसने आत्महत्या करने की धमकी दी थी। कोई दूसरा विकल्प नहीं था। यह कानून का मामला था। वह गाँव के एक सुंदर घर में बिस्तर पर आराम करेगा। नर्सें बहुत अच्छी थीं। सर विलियम सप्ताह में एक बार उससे मिलने जाते। अगर श्रीमती वॉरेन स्मिथ को पूरा यकीन हो जाता कि उनके पास पूछने के लिए और कोई सवाल नहीं हैं—वह अपने मरीज़ों को कभी जल्दी नहीं करते थे—तो वे उनके पति के पास लौट जाएँगी। अब उसे सर विलियम से और कुछ नहीं मांगना था।
तो वे मानव जाति के सबसे महान व्यक्ति के पास लौट आए; वह अपराधी जिसने अपने न्यायाधीशों का सामना किया; वह पीड़ित जिसे ऊंचाइयों पर छोड़ दिया गया था; वह भगोड़ा; वह डूबा हुआ नाविक; अमर कविता का कवि; वह भगवान जो जीवन से मृत्यु की ओर चला गया था; सेप्टिमस वॉरेन स्मिथ के पास, जो रोशनदान के नीचे आरामकुर्सी में बैठा लेडी ब्रैडशॉ की दरबारी पोशाक में एक तस्वीर को घूर रहा था और सुंदरता के बारे में संदेश बुदबुदा रहा था।
"हमारी थोड़ी बातचीत हो चुकी है," सर विलियम ने कहा।
"वह कहता है कि तुम बहुत, बहुत बीमार हो," रेजिया रोते हुए बोली।
सर विलियम ने कहा, "हम आपके लिए एक वृद्धाश्रम में जाने की व्यवस्था कर रहे हैं।"
"होम्स के घरों में से एक?" सेप्टिमस ने ताना मारा।
उस व्यक्ति ने अरुचिकर प्रभाव डाला। सर विलियम, जिनके पिता एक व्यापारी थे, में शिष्टाचार और पहनावे के प्रति स्वाभाविक सम्मान था, जो कि मैलापन को बिल्कुल भी पसंद नहीं था; और इससे भी अधिक, सर विलियम, जिन्हें पढ़ने का कभी समय नहीं मिला था, के मन में उन सुसंस्कृत लोगों के प्रति गहरी नाराजगी थी जो उनके कमरे में आकर यह जताते थे कि डॉक्टर, जिनका पेशा सभी उच्च क्षमताओं पर निरंतर दबाव डालता है, शिक्षित व्यक्ति नहीं होते।

उन्होंने कहा, "मेरे घरों में से एक, श्री वॉरेन स्मिथ, जहाँ हम आपको आराम करना सिखाएंगे।"
और बस एक और बात थी।
उन्हें पूरा यकीन था कि जब श्री वॉरेन स्मिथ स्वस्थ थे, तो वे अपनी पत्नी को डराने वाले दुनिया के आखिरी व्यक्ति थे। लेकिन उन्होंने आत्महत्या करने की बात कही थी।
सर विलियम ने कहा, "हम सभी के जीवन में अवसाद के क्षण आते हैं।"
एक बार गिर पड़े तो, सेप्टिमस ने मन ही मन दोहराया, फिर इंसानी फितरत तुम पर हावी हो जाती है। होम्स और ब्रैडशॉ तुम्हारे पीछे पड़ जाते हैं। वे रेगिस्तान छान मारते हैं। वे चीखते-चिल्लाते जंगल में भाग जाते हैं।
यातना और अत्याचार किए जाते हैं। इंसानी फितरत बेरहम होती है।
"क्या कभी-कभी उसे आवेग आ जाते थे?" सर विलियम ने गुलाबी कार्ड पर पेंसिल चलाते हुए पूछा।
सेप्टिमस ने कहा, यह उसका निजी मामला था।
"कोई भी केवल अपने लिए नहीं जीता," सर विलियम ने दरबारी पोशाक में अपनी पत्नी की तस्वीर पर नजर डालते हुए कहा।
“और आपका भविष्य उज्ज्वल है,” सर विलियम ने कहा। मेज पर श्री ब्रेवर का पत्र रखा था। “बेहद उज्ज्वल भविष्य।”
लेकिन अगर उसने कबूल कर लिया? अगर उसने जानकारी दे दी? तो क्या उसके यातना देने वाले उसे छोड़ देंगे?
"मैं—मैं—" वह हकलाते हुए बोला।
लेकिन उसका अपराध क्या था? उसे याद नहीं था।
"जी?" सर विलियम ने उन्हें प्रोत्साहित किया। (लेकिन काफी देर हो चुकी थी।)
प्रेम, वृक्ष, इसमें कोई अपराध नहीं है—उनका संदेश क्या था?
उन्हें याद नहीं आ रहा था।
"मैं—मैं—" सेप्टिमस हकलाया।
"अपने बारे में जितना हो सके कम सोचने की कोशिश करो," सर विलियम ने विनम्रता से कहा। सचमुच, वे इस लायक नहीं थे।

क्या वे उनसे कुछ और पूछना चाहते थे? सर विलियम सारी व्यवस्था कर देंगे (उन्होंने रेजिया से धीरे से कहा) और वह उसे उसी शाम पांच और छह बजे के बीच बता देंगे।
"सब कुछ मुझ पर छोड़ दो," उसने कहा और उन्हें जाने दिया।
रेज़िया ने अपने जीवन में कभी इतना कष्ट नहीं सहा था! उसने मदद मांगी और उसे अकेला छोड़ दिया गया! वह उन्हें धोखा दे गया था! सर विलियम ब्रैडशॉ एक अच्छा आदमी नहीं था।
जब वे सड़क पर निकले तो सेप्टिमस ने कहा, "सिर्फ उस मोटर कार के रखरखाव में ही उसे काफी खर्च करना पड़ता होगा।"
वह उसकी बांह से लिपट गई। उन्हें अकेला छोड़ दिया गया था।
लेकिन उसे और क्या चाहिए था?
वह अपने मरीजों को पौने घंटे का समय देते थे; और इस जटिल विज्ञान में, जिसका संबंध उन चीजों से है जिनके बारे में हम वास्तव में कुछ नहीं जानते — तंत्रिका तंत्र, मानव मस्तिष्क—यदि कोई चिकित्सक अपना संतुलन खो देता है, तो वह चिकित्सक के रूप में असफल हो जाता है। स्वास्थ्य हमारे लिए आवश्यक है; और स्वास्थ्य संतुलन पर निर्भर करता है; इसलिए जब कोई व्यक्ति आपके कमरे में आकर कहता है कि वह ईसा मसीह है (एक आम भ्रम), और उसके पास कोई संदेश है, जैसा कि अक्सर होता है, और वह आत्महत्या की धमकी देता है, जैसा कि वे अक्सर करते हैं, तो आप संतुलन का सहारा लें; बिस्तर पर आराम करने का आदेश दें; एकांत में आराम करने का आदेश दें; मौन और विश्राम; मित्रों के बिना, पुस्तकों के बिना, संदेशों के बिना विश्राम; छह महीने का विश्राम; जब तक कि सात स्टोन छह वजन वाला व्यक्ति बारह स्टोन वजन के साथ बाहर न आ जाए। अनुपात, दिव्य अनुपात, सर विलियम की देवी, सर विलियम द्वारा अस्पतालों में घूम-घूमकर, सैल्मन मछली पकड़कर, और लेडी ब्रैडशॉ से हार्ले स्ट्रीट में एक पुत्र को जन्म देकर प्राप्त की गई थी, जो स्वयं सैल्मन मछली पकड़ती थीं और ऐसी तस्वीरें लेती थीं जिन्हें पेशेवर फोटोग्राफरों के काम से अलग करना मुश्किल था। अनुपात की पूजा करते हुए, सर विलियम ने न केवल स्वयं को समृद्ध किया बल्कि इंग्लैंड को भी समृद्ध बनाया, उसके पागलों को अलग-थलग कर दिया, बच्चे पैदा करने पर रोक लगा दी, निराशा को दंडित किया, अयोग्य लोगों के लिए अपने विचारों का प्रचार करना तब तक असंभव बना दिया जब तक कि वे भी उनके अनुपात की भावना को साझा नहीं कर लेते - उनके अनुपात की भावना,

यदि वे पुरुष थे, लेडी ब्रैडशॉ की यदि वे महिलाएं थीं (वह कढ़ाई करती थीं, बुनाई करती थीं, सात में से चार रातें अपने बेटे के साथ घर पर बिताती थीं), ताकि न केवल उनके सहकर्मी उनका सम्मान करते थे, उनके अधीनस्थ उनसे डरते थे, बल्कि उनके रोगियों के मित्र और रिश्तेदार उनके प्रति गहरी कृतज्ञता महसूस करते थे क्योंकि उन्होंने इन भविष्यवक्ता मसीहों और मसीहाओं, जिन्होंने दुनिया के अंत या ईश्वर के आगमन की भविष्यवाणी की थी, को बिस्तर पर दूध पीने पर जोर दिया था, जैसा कि सर विलियम ने आदेश दिया था; सर विलियम को इस तरह के मामलों का तीस वर्षों का अनुभव है, और उनकी अचूक सहज बुद्धि के अनुसार, यह भावना पागलपन है; वास्तव में, उनका अनुपात का बोध ही पागलपन है।
लेकिन अनुपात की एक बहन है, जो कम मुस्कुराती है, अधिक दुर्जेय है, एक देवी जो आज भी भारत की तपती और रेतीली हवाओं में, अफ्रीका के कीचड़ और दलदल में, लंदन के आसपास के इलाकों में, जहाँ कहीं भी जलवायु या शैतान मनुष्यों को उसके अपने सच्चे विश्वास से भटकाने के लिए प्रलोभित करता है, मंदिरों को ध्वस्त करने, मूर्तियों को तोड़ने और उनके स्थान पर अपना कठोर चेहरा स्थापित करने में लगी हुई है। धर्म परिवर्तन उसका नाम है और वह कमजोरों की इच्छाओं पर दावत करती है, प्रभावित करना, थोपना पसंद करती है, जनता के चेहरों पर अपनी छाप देखकर पूजती है। हाइड पार्क कॉर्नर पर एक टब पर खड़ी होकर वह उपदेश देती है; खुद को सफेद वस्त्रों में लपेटकर कारखानों और संसदों में भाईचारे के प्रेम के वेश में प्रायश्चित करती हुई चलती है; मदद की पेशकश करती है, लेकिन सत्ता की लालसा रखती है; असंतुष्टों या विरोधियों को अपने रास्ते से बेरहमी से हटा देती है; उन लोगों को अपना आशीर्वाद देती है जो ऊपर की ओर देखते हुए विनम्रतापूर्वक उसकी आँखों से अपने स्वयं के प्रकाश को ग्रहण करते हैं। यह महिला भी (रेज़िया वॉरेन स्मिथ ने यह अनुमान लगाया था) सर विलियम के दिल में बसी हुई थी, हालांकि, जैसा कि वह अक्सर रहती हैं, किसी विश्वसनीय वेश में, किसी प्रतिष्ठित नाम के पीछे, प्रेम, कर्तव्य या आत्म-बलिदान के पीछे छिपी हुई थी। वह कैसे काम करते—धन जुटाने, सुधारों का प्रचार करने, संस्थाओं की स्थापना करने के लिए कैसे परिश्रम करते! लेकिन परिवर्तन, हे नज़ाकत की देवी, ईंट से ज़्यादा खून को पसंद करती है और मानवीय इच्छाशक्ति पर बड़ी सूक्ष्मता से दावत करती है। उदाहरण के लिए, लेडी ब्रैडशॉ। पंद्रह साल पहले वह डूब गई थीं। ऐसा कुछ भी नहीं था

जिसे आप स्पष्ट रूप से बता सकें; कोई दृश्य नहीं था, कोई अचानक घटना नहीं; बस धीरे-धीरे, जलमग्न होकर, उनकी इच्छाशक्ति उनके भीतर समा गई। उनकी मुस्कान मधुर थी, उनका समर्पण तीव्र था; हार्ले स्ट्रीट में आठ-नौ व्यंजनों का रात्रिभोज, पेशेवर वर्ग के दस-पंद्रह मेहमानों के लिए, सहज और सभ्य था। जैसे-जैसे शाम ढलती गई, एक हल्की सी उदासी, या शायद बेचैनी, एक घबराहट भरी हरकत, लड़खड़ाना, ठोकर खाना और भ्रम ने संकेत दिया, जिस पर विश्वास करना वास्तव में दर्दनाक था—कि बेचारी महिला झूठ बोल रही थी। बहुत समय पहले, एक समय था जब वह निडर होकर सैल्मन मछली पकड़ती थी: अब, अपने पति की प्रभुत्व और सत्ता की लालसा को पूरा करने के लिए, जो उसकी आँखों में इतनी चिकनी चमक लिए हुए थी, वह सिकुड़ती, निचोड़ती, काटती, छाँटती, पीछे हटती, झाँकती रहती थी; इसलिए, यह जाने बिना कि शाम किस वजह से अप्रिय थी, और सिर पर इस दबाव का कारण क्या था (जिसे पेशेवर बातचीत या एक महान चिकित्सक की थकान के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसका जीवन, लेडी ब्रैडशॉ के अनुसार, "उसका अपना नहीं बल्कि उसके रोगियों का है"), वह अप्रिय थी: इसलिए, जब घड़ी में दस बजे, तो मेहमानों ने हार्ले स्ट्रीट की हवा में भी आनंद से साँस ली; हालाँकि, यह राहत उसके रोगियों को नहीं मिली।
उस धूसर कमरे में, दीवार पर लगी तस्वीरों और कीमती फर्नीचर के बीच, कांच की रोशनदान के नीचे, उन्हें अपने गुनाहों का एहसास हुआ; आरामकुर्सियों में सिमटकर बैठे वे उन्हें अपने फायदे के लिए एक अजीबोगरीब करतब करते हुए देख रहे थे। वे अपनी बाहों को तेजी से बाहर निकालते और फिर कमर तक लाते, यह साबित करने के लिए (अगर मरीज जिद्दी हो तो) कि सर विलियम अपने कर्मों के स्वामी हैं, जबकि मरीज ऐसा नहीं था। वहाँ कुछ लोग कमजोर पड़कर टूट गए; सिसकियाँ भरते हुए, हार मान ली; वहीं कुछ अन्य, न जाने किस बेकाबू पागलपन से प्रेरित होकर, सर विलियम को उनके सामने ही घिनौना पाखंडी कहने लगे; और भी ज्यादा अधार्मिकता से जीवन पर ही सवाल उठाने लगे। जीने का क्या फायदा? उन्होंने पूछा। सर विलियम ने जवाब दिया कि जीवन अच्छा है। बेशक लेडी ब्रैडशॉ शुतुरमुर्ग के पंखों से सजी पोशाक मेंटलपीस पर टंगी हुई है, और उनकी आमदनी बारह हजार सालाना है। लेकिन, उन्होंने विरोध किया, जीवन ने हमें ऐसी कोई कृपा नहीं दी है। वह मान गए। उनमें समझदारी की कमी थी। और शायद, आखिरकार, कोई भगवान है ही नहीं? उन्होंने कंधे उचका दिए। संक्षेप में, जीना या न जीना तो हमारा अपना मामला है? लेकिन वे गलत थे। सर विलियम का

सरे में एक मित्र था, जहाँ वे पढ़ाते थे, जिसे सर विलियम ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि यह एक कठिन कला है—संतुलन की समझ। इसके अलावा, पारिवारिक स्नेह, सम्मान, साहस और एक शानदार करियर भी था। इन सभी के लिए सर विलियम एक दृढ़ समर्थक थे। यदि ये उन्हें विफल कर देते, तो उन्हें पुलिस और समाज की भलाई का समर्थन करना था, जिसके बारे में उन्होंने बहुत शांत भाव से कहा कि सरे में वे इस बात का ध्यान रखेंगे कि अच्छे वंश की कमी से पैदा हुई ये असामाजिक प्रवृत्तियाँ नियंत्रण में रहें। और फिर वह अपने छिपने के स्थान से निकली और अपने सिंहासन पर विराजमान हुई, वह देवी जिसकी लालसा विरोध को कुचलने की है, दूसरों के पवित्र स्थानों में अपनी छवि को अमिट रूप से अंकित करने की है। नग्न, असहाय, थके हुए, मित्रहीन लोगों पर सर विलियम की इच्छाशक्ति का प्रभाव पड़ा। वह झपटे; वह निगल गए। उन्होंने लोगों को चुप करा दिया। दृढ़ निश्चय और मानवता के इसी संयोजन ने सर विलियम को उनके पीड़ितों के परिजनों के बीच इतना प्रिय बना दिया था।
लेकिन रेजिया वॉरेन स्मिथ हार्ले स्ट्रीट पर चलते हुए रो पड़ीं और कहा कि उन्हें वह आदमी पसंद नहीं था।
हार्ले स्ट्रीट की घड़ियाँ जून के दिन को टुकड़ों में बाँटती, विभाजित करती और उपविभाजित करती रहीं, समर्पण की सलाह देती रहीं, अधिकार का समर्थन करती रहीं और सामूहिक रूप से अनुपात की भावना के सर्वोच्च लाभों को इंगित करती रहीं, यहाँ तक कि समय का ढेर इतना कम हो गया कि ऑक्सफ़ोर्ड स्ट्रीट की एक दुकान के ऊपर लटकी एक व्यावसायिक घड़ी ने सौहार्दपूर्ण और सौहार्दपूर्ण ढंग से, मानो श्री रिग्बी और लोन्डेस को यह सूचना निःशुल्क देने में प्रसन्नता हो, यह घोषणा की कि डेढ़ बज चुके हैं।
ऊपर देखते हुए ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके नामों का प्रत्येक अक्षर एक घंटे का प्रतीक था; अवचेतन रूप से रिग्बी और लोन्डेस के प्रति कृतज्ञता का भाव था कि उन्होंने ग्रीनविच द्वारा मान्यता प्राप्त एक समय दिया; और यह कृतज्ञता (जैसा कि ह्यू व्हिटब्रेड दुकान की खिड़की के सामने समय बिताते हुए सोच रहे थे), स्वाभाविक रूप से बाद में रिग्बी और लोन्डेस से मोज़े या जूते खरीदने के रूप में प्रकट हुई। तो वे सोचते रहे। यह उनकी आदत थी। वे गहराई में नहीं जाते थे। वे सतही बातों पर ध्यान देते थे; मृत भाषाएँ, जीवित भाषाएँ, कॉन्स्टेंटिनोपल, पेरिस, रोम का जीवन; घुड़सवारी, निशानेबाजी, टेनिस, ये सब कभी हुआ करता था। कुछ द्वेषपूर्ण लोग दावा करते

रूप से दयालु थे—उन्हें ठीक से याद नहीं कि किस मौके पर। लेकिन वह असाधारण रूप से दयालु थे। खैर, एक इंसान और दूसरे इंसान में ज़्यादा फ़र्क़ नहीं होता। उन्होंने कभी भी लोगों को टुकड़ों में बाँटने का कोई मतलब नहीं समझा, जैसा कि क्लैरिसा डैलोवे करती थीं—उन्हें टुकड़ों में बाँटकर फिर से जोड़ना; कम से कम तब तो बिल्कुल नहीं जब कोई 62 साल का हो। उन्होंने ह्यूग के कार्नेशन्स को अपनी तीखी, गंभीर मुस्कान के साथ लिया। उन्होंने कहा, कोई और नहीं आ रहा है। उन्होंने उन्हें झूठे बहाने से वहाँ बुलाया था, ताकि वे उनकी किसी मुश्किल से निकलने में मदद करें।
"लेकिन पहले हमें खाना खाने दीजिए," उसने कहा।
और इस तरह एप्रन और सफेद टोपी पहने नौकरानियों का एक खामोश और मनमोहक आना-जाना शुरू हो गया। ये नौकरानियां मजबूरी में नहीं, बल्कि मेफेयर की मेजबानों द्वारा अपनाए जाने वाले एक रहस्य या भव्य छल में माहिर थीं, जो दोपहर साढ़े एक बजे से दो बजे के बीच होता था, जब हाथ के इशारे से आना-जाना थम जाता था, और उसकी जगह सबसे पहले भोजन के बारे में एक गहरा भ्रम पैदा होता था—कि इसके लिए भुगतान नहीं किया जाता; और फिर मेज अपने आप कांच और चांदी के बर्तनों, छोटी चटाइयों, लाल फलों से भरी तश्तरियों से सज जाती थी; भूरी क्रीम की परतें टर्बोट मछली को ढक लेती थीं; कैसरोल में कटे हुए मुर्गे तैरते थे; रंगीन, अप्राकृतिक, आग जलती थी; और शराब और कॉफी (जिसके लिए भुगतान नहीं किया जाता था) के साथ चिंतनशील आंखों के सामने आनंदमय दृश्य उभरते थे; कोमल चिंतनशील आंखें; वे आंखें जिन्हें जीवन संगीतमय, रहस्यमय प्रतीत होता था; अब ह्यूग व्हिटब्रेड की आंखें लाल कार्नेशन्स की सुंदरता को निहारने के लिए चमक उठीं, जिन्हें लेडी ब्रूटन (जिनकी चाल हमेशा कोणीय होती थी) ने अपनी थाली के बगल में रखा था। यह देखकर ह्यूग व्हिटब्रेड, पूरे ब्रह्मांड के साथ शांति का अनुभव करते हुए और साथ ही अपनी स्थिति के प्रति पूर्ण रूप से आश्वस्त होकर, अपना कांटा टिकाते हुए बोला,
"क्या ये आपके लेस के साथ आकर्षक नहीं लगेंगे?"
मिस ब्रश को यह घनिष्ठता बेहद नापसंद थी। वह उसे एक घटिया किस्म का आदमी समझती थीं। उन्होंने लेडी ब्रूटन को हंसा दिया।
लेडी ब्रूटन ने कार्नेशन्स उठाए, उन्हें उसी अकड़ के साथ पकड़े हुए थीं, जैसे जनरल ने उनके पीछे वाली तस्वीर में स्क्रॉल पकड़ा हुआ था; वह टकटकी

लगाए, जैसे किसी स्तब्ध हों। आखिर वह कौन थीं, जनरल की परपोती? या पर-परपोती? रिचर्ड डैलोवे ने खुद से पूछा। सर रोडरिक, सर माइल्स, सर टैलबोट— बस यही। यह बात अद्भुत थी कि उस परिवार में महिलाओं में समानता किस तरह बनी रहती थी। उन्हें खुद ड्रैगून सेना की जनरल होना चाहिए था। और रिचर्ड खुशी- खुशी उनके अधीन सेवा करते; उनके मन में उनके लिए बहुत सम्मान था; उनके मन में अच्छी तरह से स्थापित, प्रतिष्ठित बुजुर्ग महिलाओं के बारे में रोमांटिक विचार थे, और वह अपने हंसमुख स्वभाव से अपने कुछ उत्साही परिचितों को उनके साथ दोपहर के भोजन पर लाना चाहते थे; मानो उनके जैसी मिलनसार, चाय पीने की शौकीन महिलाएं पैदा हो सकती हों! वह उनके देश को जानते थे। वह उनके लोगों को जानते थे। वहाँ एक बेल थी, जिस पर अभी भी फूल लगे हुए थे, जिसके नीचे या तो लवलेस या हेरिक बैठी थीं—उन्होंने कभी खुद की लिखी कोई कविता नहीं पढ़ी थी, लेकिन कहानी यही थी। लेडी ब्रूटन ने सोचा, बेहतर होगा कि उनके सामने वह सवाल रखने के लिए इंतजार किया जाए जो उन्हें परेशान कर रहा था (जनता से अपील करने के बारे में; यदि हाँ, तो किन शर्तों पर इत्यादि), बेहतर होगा कि वे अपनी कॉफी पी लें; और इसलिए उन्होंने कार्नेशन्स को अपनी प्लेट के बगल में रख दिया।
"क्लेरिसा कैसी है?" उसने अचानक पूछा।
क्लेरिसा हमेशा कहती थी कि लेडी ब्रूटन उसे पसंद नहीं करती थीं। वास्तव में, लेडी ब्रूटन की यह प्रतिष्ठा थी कि उन्हें लोगों से ज़्यादा राजनीति में रुचि थी; वे पुरुषों की तरह बात करती थीं; और अस्सी के दशक की किसी कुख्यात साज़िश में उनका हाथ था, जिसका ज़िक्र अब संस्मरणों में होने लगा था। निश्चित रूप से उनके ड्राइंग रूम में एक कोना था, उस कोने में एक मेज़ थी, और उस मेज़ पर जनरल सर टैलबोट मूर (अब दिवंगत) की एक तस्वीर थी, जिन्होंने (अस्सी के दशक की एक शाम) लेडी ब्रूटन की उपस्थिति में, उनकी जानकारी या शायद सलाह से, एक टेलीग्राम लिखा था जिसमें ब्रिटिश सेना को एक ऐतिहासिक अवसर पर आगे बढ़ने का आदेश दिया गया था। (उन्होंने कलम संभाल कर रखी और यह कहानी सुनाई।) इस प्रकार, जब वे अपने सहज अंदाज़ में पूछती थीं, "क्लेरिसा कैसी है?", तो पतियों को अपनी पत्नियों को समझाने में मुश्किल होती थी और वास्तव में, चाहे वे कितने भी समर्पित क्यों न हों, वे स्वयं भी मन ही मन संदेह करते थे कि उन्हें उन महिलाओं में रुचि है जो अक्सर अपने पतियों के रास्ते में बाधा बनती थीं, उन्हें विदेश में पद स्वीकार करने से

रोकती थीं, और जिन्हें सत्र के बीच में इन्फ्लूएंजा से उबरने के लिए समुद्र तट पर ले जाना पड़ता था। फिर भी, उनका यह सवाल, "क्लेरिसा कैसी है?", महिलाओं के बीच हमेशा से एक शुभचिंतक, एक लगभग मौन साथी का संकेत माना जाता था, जिसके शब्द (जीवनकाल में शायद आधा दर्जन) किसी स्त्री मित्रता की पहचान दर्शाते थे जो पुरुषों की महफ़िलों के नीचे छिपी होती थी और लेडी ब्रूटन और श्रीमती डैलोवे को, जो शायद ही कभी मिलती थीं और जब मिलती थीं तो उदासीन और यहां तक कि शत्रुतापूर्ण प्रतीत होती थीं, एक अनूठे बंधन में बांधती थी।
"आज सुबह पार्क में मेरी मुलाकात क्लैरिसा से हुई," ह्यूग व्हिटब्रेड ने कैसरोल में हाथ डालते हुए कहा, वह खुद को यह छोटा सा सम्मान देना चाहता था, क्योंकि वह लंदन आया था और आते ही सबसे मिल लिया था; लेकिन लालची, मिली ब्रश ने सोचा, वह अब तक के सबसे लालची आदमियों में से एक था, जो पुरुषों को अडिग ईमानदारी से देखती थी, और हमेशा के लिए समर्पित रहने में सक्षम थी, खासकर अपनी ही जाति की महिलाओं के प्रति, जो खुरदरी, नुकीली, कोणीय और स्त्री आकर्षण से पूरी तरह रहित थीं।
"क्या आपको पता है कि शहर में कौन आया है?" लेडी ब्रूटन ने अचानक सोचते हुए कहा। "हमारा पुराना दोस्त, पीटर वॉल्श।"
वे सब मुस्कुराए। पीटर वॉल्श! और मिली ब्रश ने सोचा कि मिस्टर डैलोवे सचमुच खुश थे; और मिस्टर व्हिटब्रेड केवल अपनी मुर्गी के बारे में सोच रहे थे।
पीटर वॉल्श! लेडी ब्रूटन, ह्यू व्हिटब्रेड और रिचर्ड डैलोवे, तीनों को एक ही बात याद थी—पीटर को कितना गहरा प्यार हुआ था; उसे ठुकरा दिया गया था; वह भारत गया था; वहाँ उसे बहुत नुकसान हुआ था; उसने सब कुछ गड़बड़ कर दिया था; और रिचर्ड डैलोवे भी उस प्यारे बूढ़े आदमी को बहुत पसंद करते थे। मिली ब्रश ने यह देखा; उसकी भूरी आँखों में एक गहराई देखी; उसे हिचकिचाते हुए देखा; सोचते हुए देखा; जिसने उसे उत्सुक कर दिया, जैसा कि मिस्टर डैलोवे हमेशा उसे उत्सुक करते थे, क्योंकि वह सोच रही थी कि आखिर पीटर वॉल्श के बारे में वह क्या सोच रहे होंगे?
पीटर वॉल्श क्लैरिसा से प्यार करता था; वह दोपहर के भोजन के बाद सीधे वापस जाकर क्लैरिसा को ढूंढेगा; वह उसे साफ-साफ शब्दों में बताएगा कि वह उससे प्यार करता है। हाँ, वह यही कहेगा।

मिली ब्रश को कभी इन खामोशियों से लगभग प्यार हो गया था; और मिस्टर डैलोवे हमेशा इतने भरोसेमंद थे; इतने सज्जन भी। अब, चालीस वर्ष की उम्र में, लेडी ब्रूटन को बस सिर हिलाना होता था, या अपना सिर थोड़ा सा घुमाना होता था, और मिली ब्रश इशारा समझ जाती थी, चाहे वह एक विरक्त आत्मा, एक पवित्र आत्मा के इन विचारों में कितनी भी गहराई से डूबी हुई क्यों न हो, जिसे जीवन धोखा नहीं दे सकता था, क्योंकि जीवन ने उसे जरा भी मूल्यवान कोई वस्तु नहीं दी थी; न एक बाल, न मुस्कान, न होंठ, न गाल, न नाक; कुछ भी नहीं; लेडी ब्रूटन को बस सिर हिलाना होता था, और पर्किन्स को कॉफी जल्दी बनाने का निर्देश मिल जाता था।
"हाँ; पीटर वॉल्श वापस आ गया है," लेडी ब्रूटन ने कहा। यह बात उन सभी को कुछ हद तक अच्छी लगी। वह टूटा-फूटा, असफल होकर उनके सुरक्षित किनारों पर लौट आया था। लेकिन उनकी मदद करना असंभव था; उनके चरित्र में कोई खामी थी। ह्यूग व्हिटब्रेड ने कहा कि फलां-फलां से उसका नाम ज़रूर लिया जा सकता है। सरकारी दफ्तरों के प्रमुखों को "मेरे पुराने दोस्त, पीटर वॉल्श" वगैरह के बारे में लिखे जाने वाले पत्रों के बारे में सोचकर वह उदास हो गया। लेकिन इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा—उसके चरित्र के कारण कुछ भी स्थायी नहीं। "किसी औरत से झगड़ा है," लेडी ब्रूटन ने कहा। उन सभी ने अनुमान लगा लिया था कि यही असली वजह है।
"हालांकि," लेडी ब्रूटन ने विषय को समाप्त करने की उत्सुकता से कहा, "हम पूरी कहानी पीटर से ही सुनेंगे।"
(कॉफी आने में बहुत देर लगी।)
"पता?" ह्यू व्हिटब्रेड ने धीमी आवाज़ में कहा; और लेडी ब्रूटन के चारों ओर दिन-रात बहने वाली सेवा की नीरस लहर में तुरंत एक हलचल मच गई, जो उन्हें एक महीन कपड़े में लपेटे रखती थी, जो झटकों को कम करता था, व्यवधानों को शांत करता था, और ब्रूक स्ट्रीट स्थित घर के चारों ओर एक महीन जाल की तरह फैला हुआ था जहाँ चीजें जमा होती थीं और जिन्हें तीस वर्षों से लेडी ब्रूटन के साथ रहे सफ़ेद बालों वाले पर्किन्स, जिन्होंने अब पता लिख लिया था, तुरंत और सटीक रूप से चुन लेते थे; उन्होंने इसे मिस्टर व्हिटब्रेड को सौंप दिया, जिन्होंने अपना पर्स निकाला, अपनी भौहें उठाईं, और उसे अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेजों के बीच रखते हुए कहा कि वह एवलिन से उन्हें दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करने के लिए कहेंगे।

(वे मिस्टर व्हिटब्रेड के काम खत्म होने तक कॉफी लाने का इंतजार कर रहे थे।)
लेडी ब्रूटन को लगा कि ह्यू बहुत सुस्त है। उन्होंने गौर किया कि वह मोटा होता जा रहा है। रिचर्ड हमेशा चुस्त-दुरुस्त रहता था। वह अधीर हो रही थीं; उनका पूरा मन दृढ़ता से, निर्विवाद रूप से, प्रभुत्वपूर्वक इस सारी अनावश्यक तुच्छ बातों (पीटर वॉल्श और उसके मामलों) को दरकिनार करते हुए उस विषय पर ध्यान केंद्रित कर रहा था जो उनका ध्यान आकर्षित कर रहा था, और केवल उनका ध्यान ही नहीं, बल्कि उनकी आत्मा का वह सार, उनका वह अनिवार्य हिस्सा जिसके बिना मिलिसेंट ब्रूटन, मिलिसेंट ब्रूटन नहीं होतीं; वह परियोजना जिसमें सम्मानित माता-पिता से जन्मे दोनों लिंगों के युवाओं को कनाडा में बसाना और उन्हें वहाँ सफल होने का अच्छा अवसर प्रदान करना था। उन्होंने अतिशयोक्ति की। शायद उन्होंने अपना संतुलन खो दिया था। दूसरों के लिए प्रवास कोई स्पष्ट समाधान या उत्कृष्ट विचार नहीं था। यह उनके लिए (ह्यू, रिचर्ड या समर्पित मिस ब्रश के लिए भी) उस दबे हुए अहंकार का मुक्तिदाता नहीं था, जो एक मजबूत, सुगठित, उच्च वंश वाली, प्रत्यक्ष आवेगों, स्पष्ट भावनाओं और कम आत्मनिरीक्षण क्षमता वाली (विस्तृत और सरल — काश हर कोई विस्तृत और सरल होता? उसने पूछा) महिला के भीतर युवावस्था बीत जाने के बाद उत्पन्न होता है और किसी न किसी लक्ष्य पर विलीन हो जाता है—यह प्रवास हो सकता है, यह मुक्ति हो सकती है; लेकिन जो भी हो, यह लक्ष्य जिसके चारों ओर उसकी आत्मा का सार प्रतिदिन सुलगता है, अनिवार्य रूप से इंद्रधनुषी, चमकदार, आधा दर्पण, आधा कीमती पत्थर बन जाता है; कभी लोगों के उपहास से बचने के लिए सावधानी से छिपाया जाता है; कभी गर्व से प्रदर्शित किया जाता है। संक्षेप में, प्रवास काफी हद तक लेडी ब्रूटन बन गया था। लेकिन उन्हें लिखना ही था। और टाइम्स को एक पत्र लिखने में उन्हें दक्षिण अफ्रीका के अभियान को आयोजित करने से भी अधिक खर्च आता था (जो उन्होंने युद्ध के दौरान किया था), ऐसा वे अक्सर मिस ब्रश से कहा करती थीं। सुबह भर की जद्दोजहद के बाद, जब वे पत्र लिखना शुरू करतीं, फिर आंसू बहातीं और फिर से शुरू करतीं, तो उन्हें अपने नारीत्व की निरर्थकता का ऐसा अहसास होता था जैसा पहले कभी नहीं हुआ था, और वे कृतज्ञतापूर्वक ह्यू व्हिटब्रेड के बारे में सोचतीं, जिनके पास टाइम्स को पत्र लिखने की कला का ऐसा ज्ञान था जिस पर किसी को संदेह नहीं था।

एक ऐसी शख्सियत जो खुद से इतनी अलग थी, भाषा पर इतनी पकड़ रखती थी; चीजों को वैसे ही प्रस्तुत करने में सक्षम थी जैसे संपादक करते हैं; उसके अंदर ऐसे जुनून थे जिन्हें केवल लालच नहीं कहा जा सकता था। लेडी ब्रूटन अक्सर पुरुषों के बारे में फैसला टाल देती थीं, क्योंकि वे, और कोई भी महिला नहीं, ब्रह्मांड के नियमों के साथ एक रहस्यमय सामंजस्य में खड़े होते थे; वह बातों को कहना जानती थीं; जानती थीं कि क्या कहा जा रहा है; इसलिए अगर रिचर्ड उन्हें सलाह देते और ह्यूग उनके लिए लिखते, तो उन्हें पूरा यकीन होता था कि वह किसी न किसी तरह सही हैं। इसलिए उन्होंने ह्यूग को अपना सूफ़ले खाने दिया; बेचारी एवलिन के बारे में पूछा; उनके सिगरेट पीने तक इंतजार किया, और फिर कहा,
"मिली, क्या तुम कागजात लाओगी?"
मिस ब्रश बाहर गईं, वापस आईं; मेज पर कागज़ रखे; और ह्यू ने अपना फाउंटेन पेन निकाला; उनका चांदी का फाउंटेन पेन, जिसने बीस साल सेवा की थी, उन्होंने ढक्कन खोलते हुए कहा। यह अभी भी एकदम सही हालत में था; उन्होंने इसे बनाने वालों को दिखाया था; उन्होंने कहा था कि इसके कभी खराब होने का कोई कारण नहीं है; जो किसी तरह ह्यू की काबिलियत और उनके पेन द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं की तारीफ थी (जैसा कि रिचर्ड डैलोवे को लगा) क्योंकि ह्यू ने हाशिये में गोल घेरे बनाकर बड़े अक्षर सावधानीपूर्वक लिखने शुरू किए, और इस तरह लेडी ब्रूटन की उलझी हुई बातों को अद्भुत ढंग से सरल बना दिया, ऐसी व्याकरण में ढाल दिया जिसका टाइम्स के संपादक, लेडी ब्रूटन, इस अद्भुत बदलाव को देखकर सम्मान करतीं। ह्यू धीमे थे। ह्यू दृढ़ निश्चयी थे। रिचर्ड ने कहा कि जोखिम उठाना जरूरी है। ह्यूग ने लोगों की भावनाओं का सम्मान करते हुए कुछ संशोधन प्रस्तावित किए, जिन पर रिचर्ड के हंसने पर उन्होंने तीखे लहजे में कहा, "विचार करना होगा," और फिर पढ़ा, "इसलिए, हमारा मानना है कि समय आ गया है... हमारी लगातार बढ़ती आबादी की अतिरिक्त युवावस्था... मृतकों के प्रति हमारा कर्तव्य..." जिसे रिचर्ड ने पूरी तरह से बेतुका और बकवास समझा, लेकिन इसमें कोई बुराई नहीं थी। ह्यूग ने उच्च कुलीन वर्ग के नाम वर्णमाला क्रम में लिखते हुए, अपनी जैकेट से सिगार की राख झाड़ते हुए, बीच-बीच में अब तक हुई प्रगति का सारांश प्रस्तुत किया, और अंत में उन्होंने एक पत्र का मसौदा पढ़ा, जिसे लेडी ब्रूटन ने पूरी तरह से उत्कृष्ट कृति माना। क्या उनका अपना अर्थ भी कुछ ऐसा ही था?

ह्यू इस बात की गारंटी नहीं दे सकता था कि संपादक इसे प्रकाशित करेगा; लेकिन वह दोपहर के भोजन पर किसी से मिलने वाला था।
इस पर लेडी ब्रूटन, जो शायद ही कभी शालीनता से पेश आती थीं, ने ह्यूग के सारे कार्नेशन फूल अपनी पोशाक के आगे वाले हिस्से में ठूंस लिए और हाथ फैलाकर उन्हें "मेरे प्रधानमंत्री!" कहकर पुकारा। उन दोनों के बिना वह क्या करतीं, यह उन्हें खुद भी नहीं पता था। वे उठ खड़े हुए। और रिचर्ड डैलोवे हमेशा की तरह जनरल के चित्र को देखने के लिए टहलते हुए चले गए, क्योंकि उनका इरादा था कि जब भी उन्हें फुर्सत का समय मिलेगा, वे लेडी ब्रूटन के परिवार का इतिहास लिखेंगे।
और मिलिसेंट ब्रूटन को अपने परिवार पर बहुत गर्व था। लेकिन वे इंतज़ार कर सकते थे, वे इंतज़ार कर सकते थे, उन्होंने तस्वीर को देखते हुए कहा; उनका मतलब था कि उनका परिवार, जिसमें सैन्य अधिकारी, प्रशासक, एडमिरल शामिल थे, कर्मठ लोग थे, जिन्होंने अपना कर्तव्य निभाया था; और रिचर्ड का पहला कर्तव्य अपने देश के प्रति था, लेकिन यह एक सुंदर चेहरा था, उन्होंने कहा; और रिचर्ड के लिए एल्डमिकस्टन में सभी कागजात तैयार थे, जब भी समय आएगा; उनका मतलब लेबर सरकार से था। "आह, भारत से खबर!" वह चिल्लाईं।
और फिर, जब वे हॉल में खड़े होकर मैलाकाइट की मेज पर रखे कटोरे से पीले दस्ताने निकाल रहे थे और ह्यूग अनावश्यक शिष्टाचार के साथ मिस ब्रश को कोई फेंका हुआ टिकट या कोई और तारीफ दे रहा था, जिसे वह दिल से नापसंद करती थी और शर्म से लाल हो जाती थी, तभी रिचर्ड ने अपने हाथ में टोपी लिए लेडी ब्रूटन की ओर मुड़कर कहा,
"क्या हम आज रात अपनी पार्टी में मिलेंगे?" यह सुनकर लेडी ब्रूटन ने फिर से वही शालीनता अपना ली जिसे चिट्ठी-पत्री ने चूर-चूर कर दिया था। वह आ भी सकती थी और नहीं भी। क्लैरिसा में गजब की ऊर्जा थी। पार्टियाँ लेडी ब्रूटन को डराती थीं। लेकिन आखिर वह बूढ़ी भी हो रही थीं। उन्होंने अपने दरवाजे पर खड़े होकर यही इशारा किया; सुंदर, एकदम सीधी खड़ी; जबकि उनका पेट उनके पीछे फैला हुआ था, और मिस ब्रश कागजों से भरे हाथों के साथ पृष्ठभूमि में गायब हो गईं।
और लेडी ब्रूटन भारी-भरकम, शान से अपने कमरे में गईं, और सोफे पर एक हाथ फैलाकर लेट गईं। उन्होंने आह भरी, खर्राटे लिए, ऐसा नहीं था कि वह सो रही थीं, बस उन्हें ऊंघ आ रही थी और भारीपन महसूस हो रहा था, ऊंघ और भारीपन,

जैसे जून की इस गर्म दोपहर में धूप में खिले तिपतिया घास के खेत में मधुमक्खियां मंडरा रही हों और पीली तितलियां। वह हमेशा डेवोनशायर के उन खेतों में लौट जाती थीं, जहां वह अपने टट्टू पैटी पर सवार होकर अपने भाइयों मॉर्टिमर और टॉम के साथ छोटी-छोटी नदियां पार करती थीं। और वहां कुत्ते थे; वहां चूहे थे; वहां उनके माता-पिता पेड़ों के नीचे लॉन में चाय के बर्तन लिए बैठे थे, और डहलिया, हॉलीहॉक और पैम्पास घास के क्यारियां थीं; और वे छोटे बदमाश, हमेशा कोई न कोई शरारत करते रहते थे! झाड़ियों के बीच से चुपके से वापस आते थे ताकि कोई उन्हें देख न सके, किसी शरारत के बाद बिल्कुल बेहाल। उनकी फ्रॉक के बारे में बूढ़ी नर्स क्या कहती थी!
अरे, उसे याद आया—ब्रुक स्ट्रीट में बुधवार का दिन था। रिचर्ड डैलोवे और ह्यू व्हिटब्रेड जैसे वे भले लोग उस गर्म दिन में उन गलियों से गुज़रे थे जिनकी गड़गड़ाहट सोफे पर लेटी उस तक पहुँच रही थी। सत्ता, रुतबा और आमदनी सब उसी के हाथ में थे। वह अपने समय की अग्रणी रही थी। उसके अच्छे दोस्त थे; उसने अपने ज़माने के सबसे काबिल लोगों को जाना था। लंदन की गुनगुनाहट उसके कानों में गूंज रही थी, और सोफे की पीठ पर रखा उसका हाथ किसी काल्पनिक छड़ी पर टिका हुआ था, जैसी उसके दादाजी पकड़ते होंगे। उस छड़ी को पकड़े हुए, मानो वह ऊंघती और भारी सी, कनाडा की ओर मार्च कर रही बटालियनों और लंदन के उस इलाके, उस छोटे से कालीन जैसे टुकड़े, मेफेयर में घूम रहे उन भले लोगों को आदेश दे रही हो।
और वे उससे दूर होते चले गए, मानो एक पतले धागे से उससे जुड़े हुए थे (क्योंकि उन्होंने उसके साथ दोपहर का भोजन किया था), जो लंदन में चलते-चलते खिंचता और पतला होता चला गया; मानो दोपहर के भोजन के बाद दोस्त किसी के शरीर से एक पतले धागे से जुड़े हों, जो (जब वह वहाँ ऊंघ रही थी) घंटियों की आवाज़ से धुंधला हो गया, मानो घंटे बज रहे हों या प्रार्थना के लिए बज रहे हों, जैसे मकड़ी का एक धागा बारिश की बूंदों से भीग जाता है और बोझिल होकर नीचे लटक जाता है। इस तरह वह सो गई।
और रिचर्ड डैलोवे और ह्यू व्हिटब्रेड कॉन्डिट स्ट्रीट के कोने पर ठीक उसी क्षण झिझक गए जब सोफे पर लेटी मिलिसेंट ब्रूटन ने धागा तोड़ दिया और खर्राटे लेने लगीं। सड़क के कोने पर विपरीत हवाएँ ज़ोर से टकरा रही थीं। उन्होंने एक दुकान की खिड़की में झाँका; वे न तो कुछ खरीदना चाहते थे और न ही बात करना चाहते थे, बल्कि विदा होना चाहते थे। सड़क के कोने पर विपरीत

हवाओं के टकराने के साथ, शरीर की लय में एक तरह की ढिलाई के साथ, दो ताकतें एक भंवर में मिल रही थीं, सुबह और दोपहर, वे ठहर गए। एक अखबार का पोस्टर हवा में उठा, पहले पतंग की तरह शान से, फिर रुका, नीचे आया, फड़फड़ाया; और एक महिला का घूंघट लटका हुआ था। पीले शामियाने काँप रहे थे। सुबह के यातायात की गति धीमी हो गई, और अकेली गाड़ियाँ आधी खाली सड़कों पर लापरवाही से खड़खड़ाती हुई चल रही थीं। नॉरफ़ॉक में, जिसके बारे में रिचर्ड डैलोवे आधा सोच रहे थे, एक नरम गर्म हवा पंखुड़ियों को पीछे की ओर उड़ा ले गई; पानी को मथ दिया; फूलों वाली घास को हिला दिया। घास काटने वाले मजदूर, जो सुबह की मेहनत की थकान मिटाने के लिए झाड़ियों के नीचे डेरा डाले सो रहे थे, उन्होंने हरी घास के पर्दों को हटाया; आसमान को देखने के लिए कांपते हुए अजवाइन के गोलों को हिलाया; नीला, स्थिर, धधकते ग्रीष्म ऋतु का आकाश। रिचर्ड को पता था कि वह चांदी के दो हैंडल वाले जैकोबियन मग को देख रहा है, और ह्यू व्हिटब्रेड एक स्पेनिश हार की प्रशंसा बड़े ही घमंडी अंदाज़ में कर रहा है, जिसकी कीमत वह एवलिन से पूछना चाहता था, शायद उसे पसंद आ जाए — फिर भी रिचर्ड सुस्त था; न सोच पा रहा था, न हिल पा रहा था। जीवन ने उसके सामने यह बिखराव ला दिया था; दुकानों की खिड़कियाँ रंग-बिरंगे सामान से भरी थीं, और एक खिड़की पुरानी सुस्ती और कठोरता से भरी हुई थी, मानो अंदर झाँक रही हो। एवलिन व्हिटब्रेड को यह स्पेनिश हार पसंद आ सकता है—शायद।
उसे जम्हाई लेनी ही थी। ह्यू दुकान के अंदर जा रहा था।
"बिल्कुल सही!" रिचर्ड ने पीछे-पीछे चलते हुए कहा।
भगवान ही जानता है कि वह ह्यूग के साथ हार खरीदने नहीं जाना चाहता था।
लेकिन शरीर में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। सुबह और दोपहर का मिलन होता है।
गहरी बाढ़ में एक कमजोर नाव की तरह, लेडी ब्रूटन के परदादा, उनके संस्मरण और उत्तरी अमेरिका में उनके अभियान सब बह गए और डूब गए। और मिलिसेंट ब्रूटन भी। वह भी डूब गईं। रिचर्ड को इस बात की ज़रा भी परवाह नहीं थी कि इमिग्रेशन पत्रिका का क्या होगा; उस पत्र की भी नहीं, चाहे संपादक उसे प्रकाशित करे या न करे। हार ह्यूग की खूबसूरत उंगलियों के बीच लटका हुआ था। अगर उसे गहने खरीदने ही हैं, तो वह किसी लड़की को दे दे—किसी भी लड़की को, गली की किसी भी लड़की को। क्योंकि इस जीवन की निरर्थकता ने रिचर्ड को बहुत बुरी तरह झकझोर दिया था—एवलिन के लिए हार खरीदना। अगर उसका बेटा

होता तो वह कहता, काम करो, काम करो। लेकिन उसके पास उसकी एलिजाबेथ थी; वह अपनी एलिजाबेथ से बहुत प्यार करता था।
"मैं श्री डुबोनेट से मिलना चाहूँगा," ह्यू ने अपने संक्षिप्त और व्यावहारिक लहजे में कहा। ऐसा प्रतीत हुआ कि इस डुबोनेट को श्रीमती व्हिटब्रेड की गर्दन का नाप पता था, या उससे भी अजीब बात यह थी कि उन्हें स्पेनिश गहनों के बारे में उनकी राय और उस तरह के उनके संग्रह की जानकारी थी (जो ह्यू को याद नहीं थी)। रिचर्ड डैलोवे को यह सब बहुत अजीब लगा। क्योंकि उन्होंने क्लैरिसा को कभी कोई उपहार नहीं दिया था, सिवाय दो-तीन साल पहले दिए गए एक कंगन के, जो उन्हें पसंद नहीं आया था। क्लैरिसा ने उसे कभी नहीं पहना। यह याद करके उन्हें बहुत दुख होता था कि क्लैरिसा ने उसे कभी नहीं पहना। और जैसे मकड़ी का एक धागा इधर-उधर भटकने के बाद किसी पत्ते के सिरे पर चिपक जाता है, वैसे ही रिचर्ड का मन, अपनी सुस्ती से उबरते हुए, अब अपनी पत्नी क्लैरिसा पर केंद्रित हो गया, जिसे पीटर वॉल्श ने बहुत प्यार किया था; और रिचर्ड को दोपहर के भोजन के समय अचानक क्लैरिसा की छवि दिखाई दी; खुद की और क्लैरिसा की; उनके साथ बिताए जीवन की; और उन्होंने पुराने गहनों की ट्रे अपनी ओर खींची, और पहले यह ब्रोच फिर वह अंगूठी उठाते हुए पूछा, "यह कितने का है?" उसने पूछा, लेकिन उसे अपने ही स्वाद पर शक था। वह ड्राइंग रूम का दरवाजा खोलकर अंदर आना चाहता था और क्लेरिसा के लिए कुछ तोहफा देना चाहता था। लेकिन क्या? पर ह्यू फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। वह हद से ज्यादा घमंडी था। सच में, यहाँ पैंतीस साल काम करने के बाद वह एक ऐसे लड़के से परेशान होने वाला नहीं था जिसे अपने काम की जानकारी न हो। क्योंकि ऐसा लग रहा था कि डुबोनेट बाहर गए हुए हैं, और ह्यू तब तक कुछ नहीं खरीदेगा जब तक मिस्टर डुबोनेट अंदर आने का फैसला नहीं करते; यह सुनकर युवक शर्म से लाल हो गया और उसने अपना सही ढंग से झुककर अभिवादन किया। सब कुछ बिल्कुल सही था। और फिर भी रिचर्ड जान बचाने के लिए भी यह नहीं कह सकता था! ये लोग इस घिनौनी बदतमीजी को क्यों बर्दाश्त कर रहे थे, यह उसकी समझ से परे था। ह्यू एक असहनीय मूर्ख बनता जा रहा था। रिचर्ड डैलोवे उसकी संगति में एक घंटे से ज्यादा नहीं रह सकता था। और, विदाई के तौर पर अपनी बॉलर हैट झटकते हुए, रिचर्ड कॉन्डिट स्ट्रीट के कोने पर मुड़ा, क्लेरिसा के साथ अपने उस मकड़ी के जाले जैसे रिश्ते को आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक, हाँ, बहुत उत्सुक; वह सीधे वेस्टमिंस्टर में उसके पास जाएगा।

लेकिन वह कुछ लेकर आना चाहता था। फूल? हाँ, फूल, क्योंकि उसे सोने के प्रति अपने लगाव पर भरोसा नहीं था; ढेर सारे फूल, गुलाब, ऑर्किड, उस पल का जश्न मनाने के लिए, जो किसी भी तरह से देखा जाए, एक खास अवसर था; दोपहर के भोजन पर पीटर वॉल्श के बारे में बात करते समय उसके मन में जो भावना थी; और उन्होंने कभी इसके बारे में बात नहीं की; सालों से उन्होंने इसके बारे में बात नहीं की थी; जो, उसने अपने लाल और सफेद गुलाबों को एक साथ पकड़ते हुए (टिशू पेपर में लिपटा एक बड़ा गुच्छा), सोचा, दुनिया की सबसे बड़ी गलती है। एक समय आता है जब इसे कहा नहीं जा सकता; कहने में शर्म आती है, उसने सोचा, अपने छह पेंस के सिक्के जेब में रखते हुए, अपने शरीर से सटाए हुए उस बड़े गुच्छे को लेकर वेस्टमिंस्टर की ओर चल पड़ा, ताकि सीधे-सीधे (चाहे वह उसके बारे में कुछ भी सोचे) अपने फूल आगे बढ़ाते हुए कह सके, "मैं तुमसे प्यार करता हूँ।" क्यों नहीं? सचमुच, युद्ध के बारे में सोचते हुए, और हजारों बेचारे लोग, जिनके सामने पूरी जिंदगी पड़ी थी, एक साथ ढेर हो गए थे, पहले से ही आधे भुला दिए गए थे; यह एक चमत्कार था। वह लंदन पार कर रहा था, क्लैरिसा से अपने प्यार का इज़हार करने के लिए। लेकिन ऐसा कोई कभी कहता नहीं, उसने सोचा। कुछ आलस की वजह से; कुछ शर्म की वजह से। और क्लैरिसा—उसके बारे में सोचना मुश्किल था; सिवाय अचानक, जैसे दोपहर के भोजन के समय, जब वह उसे साफ़- साफ़ देख लेता था; उनके पूरे जीवन भर। वह चौराहे पर रुका; और दोहराया— स्वभाव से सरल और अविवेकी होने के कारण, क्योंकि उसने पैदल यात्रा की थी और शिकार किया था; दृढ़ और संकल्पी होने के कारण, क्योंकि उसने दलितों का पक्ष लिया था और हाउस ऑफ कॉमन्स में अपनी अंतरात्मा की आवाज़ सुनी थी; अपनी सरलता में कायम रहते हुए भी, वह कुछ हद तक चुप और कठोर हो गया था—उसने दोहराया कि क्लैरिसा से शादी करना एक चमत्कार था; एक चमत्कार—उसका जीवन ही एक चमत्कार था, उसने सोचा; सड़क पार करने में हिचकिचाते हुए। लेकिन पांच-छह साल के छोटे बच्चों को अकेले पिकाडिली पार करते देखकर उसका खून खौल उठा। पुलिस को तुरंत यातायात रोक देना चाहिए था। उसे लंदन पुलिस के बारे में कोई भ्रम नहीं था। दरअसल, वह उनके कुप्रथाओं के सबूत इकट्ठा कर रहा था; और उन फल-सब्जी विक्रेताओं को, जिन्हें सड़कों पर अपनी ठेलागाड़ी लगाने की अनुमति नहीं थी; और वेश्याओं को, हे भगवान, गलती उनमें नहीं थी, न ही नौजवानों में, बल्कि हमारी घृणित सामाजिक व्यवस्था में थी, इत्यादि; इन सभी बातों पर वह विचार कर रहा था, और उसे विचार करते हुए देखा जा सकता था,

गुजरते हुए याद कर सकते थे), उसका सफेद टीला, उसकी उमड़ती हुई मातृत्वमयी भावना; लेकिन उन्हें होर्सा के वंशज द्वारा शासित होना अच्छा लगता था; उन्हें निरंतरता पसंद थी; और अतीत की परंपराओं को आगे बढ़ाने का एहसास। यह एक महान युग था जिसमें उन्होंने जीवन बिताया। वास्तव में, उनका अपना जीवन एक चमत्कार था; इसमें उन्हें कोई संदेह नहीं होना चाहिए; वह यहाँ, जीवन के सर्वांगीण दौर में, वेस्टमिंस्टर में अपने घर जा रहे थे क्लैरिसा को यह बताने के लिए कि वह उससे प्यार करते हैं। उन्होंने सोचा, यही तो खुशी है। डीन के आंगन में प्रवेश करते हुए उन्होंने कहा, "यही तो है।" बिग बेन बजना शुरू हो गया था, पहले चेतावनी की मधुर ध्वनि; फिर घंटे की अटल ध्वनि। अपने दरवाजे के पास पहुँचते हुए उन्होंने सोचा, "दोपहर के भोजन की पार्टियाँ तो पूरी दोपहर बर्बाद कर देती हैं।"
बिग बेन की आवाज़ क्लेरिसा के ड्राइंग रूम में गूंज रही थी, जहाँ वह अपनी लेखन मेज पर बैठी हुई थी, बेहद परेशान; चिंतित; नाराज़। यह बिल्कुल सच था कि उसने एली हेंडरसन को अपनी पार्टी में नहीं बुलाया था; लेकिन उसने जानबूझकर ऐसा किया था। अब श्रीमती मार्शम ने लिखा, "उन्होंने एली हेंडरसन से कहा था कि वह क्लेरिसा को बुलाएँगी—एली तो आना ही चाहती थी।"
लेकिन वो लंदन की सारी नीरस महिलाओं को अपनी पार्टियों में क्यों बुलाएगी? मिसेज़ मार्शम को दखल क्यों देना चाहिए? और एलिज़ाबेथ इस पूरे समय डोरिस किल्मन के साथ बंद कमरे में बैठी थी। इससे ज़्यादा घिनौनी बात वो सोच भी नहीं सकती थी। इस समय उस औरत के साथ प्रार्थना। और घंटी की आवाज़ कमरे में उदासी की लहर की तरह गूंज उठी; वो लहर धीरे-धीरे कम हुई और फिर से गूंजने लगी, तभी उसने विचलित करने वाली आवाज़ में दरवाज़े पर कुछ खड़खड़ाहट, कुछ खरोंचने की आवाज़ सुनी। इस समय कौन? तीन, हे भगवान! तीन बज गए! क्योंकि ज़बरदस्त सीधेपन और गरिमा के साथ घड़ी में तीन बज गए; और उसने कुछ नहीं सुना; बस दरवाज़े का हैंडल घूमा और रिचर्ड अंदर आ गया! क्या आश्चर्य! रिचर्ड फूल लिए अंदर आया। कॉन्स्टेंटिनोपल में वो उसे धोखा दे चुकी थी; और लेडी ब्रूटन, जिनकी लंच पार्टियाँ असाधारण रूप से मनोरंजक मानी जाती थीं, ने उसे नहीं बुलाया था। वो फूल लिए हुए था—गुलाब, लाल और सफेद गुलाब। (लेकिन वो खुद को ये कहने के लिए तैयार नहीं कर पाया कि वो उससे प्यार करता है; सीधे शब्दों में नहीं।)

लेकिन कितने प्यारे हैं! उसने उसके फूल लेते हुए कहा। वह समझ गई थी; बिना कुछ बोले ही समझ गई थी; उसकी क्लैरिसा। उसने फूलों को शेल्फ पर रखे गुलदस्तों में सजा दिया। कितने प्यारे लग रहे हैं! उसने कहा। और क्या यह मज़ेदार था? उसने पूछा। क्या लेडी ब्रूटन ने उसके बारे में पूछा था? पीटर वॉल्श वापस आ गया था। मिसेज़ मार्शम ने चिट्ठी लिखी थी। क्या उसे एली हेंडरसन से पूछना चाहिए? वह महिला किल्मन ऊपर थी।
"लेकिन चलिए पांच मिनट के लिए बैठ जाते हैं," रिचर्ड ने कहा।
सब कुछ एकदम खाली-खाली लग रहा था। सारी कुर्सियाँ दीवार से लगी हुई थीं। वे क्या कर रही थीं? अरे, ये तो पार्टी के लिए थीं; नहीं, वो भूली नहीं थी, पार्टी के लिए। पीटर वॉल्श वापस आ गया था। हाँ, उसने उसे पा लिया था। और वो तलाक लेने वाला था; और वो बाहर किसी औरत से प्यार करता था। और वो ज़रा भी नहीं बदला था। वहीं वो अपनी ड्रेस ठीक कर रही थी…।
"बोरटन के बारे में सोच रही हूँ," उसने कहा।
"ह्यू लंच पर था," रिचर्ड ने कहा। वो भी उससे मिली थी! खैर, वो तो बिलकुल असहनीय होता जा रहा था। एवलिन के लिए हार खरीद रहा था; पहले से भी ज्यादा मोटा हो गया था; बिलकुल बदतमीज़।
"और मेरे मन में यह ख्याल आया, 'काश मैं तुमसे शादी कर लेती'," उसने पीटर को वहाँ अपनी छोटी सी टाई पहने बैठे हुए, उस चाकू के साथ, उसे खोलते और बंद करते हुए देखते हुए कहा। "बिल्कुल वैसे ही जैसे वह हमेशा रहता था, तुम्हें पता है।"
रिचर्ड ने कहा, दोपहर के भोजन पर वे उसके बारे में बात कर रहे थे। (लेकिन वह उसे यह नहीं बता सका कि वह उससे प्यार करता है। उसने उसका हाथ थाम लिया। उसने सोचा, यही खुशी है।) वे मिलिसेंट ब्रूटन के लिए टाइम्स को एक पत्र लिख रहे थे। ह्यूग बस इतना ही करने लायक था।
"और हमारी प्यारी मिस किलमन?" उसने पूछा। क्लैरिसा को गुलाब बेहद खूबसूरत लगे; पहले गुच्छों में बंधे हुए थे; अब अपने आप अलग होने लगे थे। "दोपहर का खाना खत्म होते ही किलमन आ गया," उसने कहा। "एलिजाबेथ का चेहरा शर्म से लाल हो गया। वे दोनों अंदर घुस गए। मुझे लगता है कि वे प्रार्थना कर रहे थे।"
हे प्रभु! उसे यह पसंद नहीं आया; लेकिन यदि आप उन्हें जाने दें तो ये बातें टल जाती हैं।

"एक रेनकोट में छाता लिए हुए," क्लेरिसा ने कहा।
उसने "मैं तुमसे प्यार करता हूँ" नहीं कहा था; लेकिन उसने उसका हाथ थाम लिया था। उसने सोचा, यही खुशी है, यही।
"लेकिन मैं लंदन की उन सभी नीरस महिलाओं को अपनी पार्टियों में क्यों बुलाऊं?" क्लैरिसा ने कहा। और अगर श्रीमती मार्शम पार्टी देती थीं, तो क्या वह अपने मेहमानों को आमंत्रित करती थीं?
"बेचारी एली हेंडरसन," रिचर्ड ने कहा—उसे लगा कि यह बहुत अजीब बात है कि क्लैरिसा अपनी पार्टियों को लेकर कितनी चिंतित रहती थी।
लेकिन रिचर्ड को कमरे के स्वरूप का कोई अंदाजा नहीं था। खैर—वह क्या कहने वाला था?
अगर वह इन पार्टियों को लेकर चिंतित होती तो वह उसे ये पार्टियां आयोजित करने ही नहीं देता। क्या वह चाहती थी कि उसने पीटर से शादी कर ली होती? लेकिन उसे जाना ही होगा।
उसने उठते हुए कहा, "मुझे जाना होगा।" लेकिन वह एक पल के लिए ऐसे खड़ा रहा जैसे कुछ कहने वाला हो; और वह सोचने लगी कि क्या? क्यों? गुलाब तो वहीं थे।
"कोई समिति?" उसने दरवाजा खोलते ही पूछा।
उन्होंने कहा, "आर्मेनियाई"; या शायद "अल्बानियाई" थे।
और लोगों में एक गरिमा होती है; एक एकांत होता है; पति-पत्नी के बीच भी एक खाई होती है; और उस खाई का सम्मान करना चाहिए, क्लैरिसा ने उसे दरवाजा खोलते हुए देखते हुए सोचा; क्योंकि कोई भी इसे स्वयं नहीं छोड़ेगा, या अपने पति की इच्छा के विरुद्ध उससे नहीं लेगा, बिना अपनी स्वतंत्रता, अपने आत्मसम्मान को खोए—जो आखिरकार अनमोल है।
वह एक तकिया और एक रजाई लेकर लौटा।
"दोपहर के भोजन के बाद एक घंटे का पूरा आराम," उन्होंने कहा। और वे चले गए।
बिल्कुल उन्हीं की तरह! वे हमेशा यही कहते रहते, "दोपहर के भोजन के बाद एक घंटे का पूरा आराम," क्योंकि एक बार डॉक्टर ने ऐसा करने का आदेश दिया था। डॉक्टरों की बात को अक्षरशः मानना उनकी आदत थी; उनकी प्यारी, दिव्य सरलता का एक हिस्सा, जो किसी और में उतनी नहीं थी; इसी वजह से वे जाकर वह काम करते थे जबकि वह और पीटर झगड़ते हुए अपना समय बर्बाद करते थे। वे पहले

ही हाउस ऑफ कॉमन्स की ओर आधे रास्ते पर थे, अपने अर्मेनियाई और अल्बानियाई लोगों के पास, उन्हें सोफे पर बिठाकर, अपने गुलाबों को देखते हुए। और लोग कहते, "क्लेरिसा डैलोवे बिगड़ी हुई है।" उन्हें अर्मेनियाई लोगों से कहीं ज़्यादा अपने गुलाबों की परवाह थी। अस्तित्व से मिटा दिए गए, अपंग, ठंड से ठिठुरे, क्रूरता और अन्याय के शिकार (उन्होंने रिचर्ड को बार-बार ऐसा कहते सुना था) - नहीं, उन्हें अल्बानियाई लोगों के लिए कुछ भी महसूस नहीं होता था, या शायद अर्मेनियाई लोगों के लिए? लेकिन उन्हें अपने गुलाबों से प्यार था (क्या इससे अर्मेनियाई लोगों को कोई मदद नहीं मिली?) - वे एकमात्र फूल थे जिन्हें वे कटते हुए देख सकती थीं। लेकिन रिचर्ड पहले ही हाउस ऑफ कॉमन्स पहुँच चुके थे; अपनी समिति में, उसने उसकी सारी मुश्किलें सुलझा ली थीं। लेकिन नहीं; अफसोस, यह सच नहीं था। उसे एली हेंडरसन से पूछने में कोई आपत्ति नहीं थी। वह ज़रूर ऐसा करेगी, जैसा वह चाहता था। चूंकि वह तकिए लाया था, वह लेट जाएगी...। लेकिन—लेकिन—अचानक, बिना किसी कारण के, वह इतनी दुखी क्यों महसूस कर रही थी? जैसे कोई व्यक्ति घास में मोती या हीरे का एक दाना गिरा देता है और लंबी पत्तियों को बहुत सावधानी से इधर-उधर हटाता है, व्यर्थ ही इधर-उधर खोजता है, और अंत में उसे जड़ों में पाता है, वैसे ही वह एक के बाद एक विचारों से गुज़र रही थी; नहीं, यह सैली सेटन की वह बात नहीं थी कि रिचर्ड कभी कैबिनेट में नहीं होगा क्योंकि उसका दिमाग घटिया है (उसे याद आया); नहीं, उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था; न ही इसका एलिजाबेथ और डोरिस किल्मन से कोई लेना-देना था; वे तथ्य थे। यह एक भावना थी, कोई अप्रिय भावना, शायद दिन में पहले; पीटर ने कुछ कहा था, साथ ही अपने बेडरूम में, टोपी उतारते समय, उसकी अपनी कुछ उदासी भी थी; और रिचर्ड की कही बात ने तो बात को और बिगाड़ दिया था, पर उसने कहा क्या था? उसके गुलाब थे। उसकी पार्टियाँ! बस यही बात थी! उसकी पार्टियाँ! दोनों ने उसकी पार्टियों के लिए उसकी बहुत ही अनुचित आलोचना की, उस पर बेवजह हँसे। बस यही बात थी! बस यही बात थी!
अब वो अपना बचाव कैसे करती? अब जब उसे पता चल गया था कि मामला क्या है, तो वो पूरी तरह खुश थी। उन्हें लगा, या कम से कम पीटर को तो यही लगा, कि उसे दूसरों पर रौब जमाना पसंद था; मशहूर लोगों को अपने आसपास रखना अच्छा लगता था; बड़े नाम वाले लोग; सीधे शब्दों में कहें तो वो घमंडी थी। खैर, पीटर ऐसा सोच सकता था। रिचर्ड को तो बस ये बेवकूफी लगती थी कि वो रोमांच पसंद करती

है जबकि उसे पता था कि ये उसके दिल के लिए बुरा है। उसे लगता था ये बचकाना है। और दोनों ही बिलकुल गलत थे। उसे तो बस ज़िंदगी पसंद थी।
"मैं यही तो करती हूँ," उसने ज़ोर से बोलते हुए कहा, "जीवन के लिए।" क्योंकि वह सोफे पर लेटी हुई थी, एकांत में, बेफिक्र, इसलिए जिस चीज़ को वह इतना स्पष्ट महसूस कर रही थी, उसकी उपस्थिति भौतिक रूप से प्रकट हो उठी; सड़क से आती आवाज़ों के आवरण के साथ, धूप में, गर्म साँसों के साथ, फुसफुसाहट के साथ, पर्दों को हिलाते हुए। लेकिन मान लीजिए पीटर उससे कहता, "हाँ, हाँ, लेकिन तुम्हारी पार्टियाँ—तुम्हारी पार्टियों का क्या मतलब है?" तो वह बस इतना ही कह सकती थी (और किसी से भी यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि वह समझ पाएगी): वे एक भेंट हैं; जो बेहद अस्पष्ट लगता था। लेकिन पीटर कौन होता यह समझने वाला कि जीवन हमेशा आसान है?—पीटर हमेशा प्यार में, हमेशा गलत औरत के प्यार में? तुम्हारा प्यार क्या है? वह उससे कह सकती थी। और वह उसका जवाब जानती थी; कि यह दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है और कोई भी औरत इसे समझ नहीं सकती। बिल्कुल सही। लेकिन क्या कोई पुरुष भी समझ सकता था कि उसका क्या मतलब है? जीवन के बारे में? वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि पीटर या रिचर्ड बिना किसी कारण के पार्टी देने की जहमत उठाएँगे।
लेकिन गहराई में जाने के लिए, लोगों की कही बातों (और इन निर्णयों, ये कितने सतही, कितने अधूरे हैं!) के पीछे, अब उसके अपने मन में, जीवन नाम की इस चीज़ का उसके लिए क्या अर्थ था? ओह, यह बहुत अजीब था। साउथ केंसिंग्टन में फलां-फलां; बेज़वॉटर में कोई और; और कोई और, मान लीजिए, मेफेयर में। और उसे लगातार उनके अस्तित्व का एहसास होता रहता था; और उसे लगता था कि यह कितना व्यर्थ है; और उसे कितना अफ़सोस होता था; और उसे लगता था कि काश उन्हें एक साथ लाया जा सकता; तो उसने ऐसा किया। और यह एक भेंट थी; मिलाने के लिए, सृजन करने के लिए; लेकिन किसके लिए?
शायद, यह भेंट मात्र भेंट थी। खैर, यह उसका हुनर था। उसके पास और कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं था; वह सोच नहीं सकती थी, लिख नहीं सकती थी, यहाँ तक कि पियानो भी नहीं बजा सकती थी। वह अर्मेनियाई और तुर्कों को लेकर भ्रमित रहती थी; उसे सफलता से प्यार था; असुविधा से नफरत थी; उसे सबकी पसंद आना चाहिए था; वह बेतुकी बातें करती थी: और आज भी, अगर उससे भूमध्य रेखा के बारे में पूछा जाए, तो उसे पता नहीं होगा। फिर भी, एक दिन के बाद दूसरा दिन आता रहे; बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार; सुबह उठना; आकाश देखना; पार्क में

टहलना; ह्यूग व्हिटब्रेड से मिलना; फिर अचानक पीटर आ जाए; फिर ये गुलाब; बस इतना ही काफी था। उसके बाद, मृत्यु कितनी अविश्वसनीय थी!—कि इसका अंत होना ही था; और पूरी दुनिया में कोई नहीं जान पाएगा कि उसने इन सब से कितना प्यार किया था; कैसे, हर पल...
दरवाजा खुला। एलिजाबेथ जानती थी कि उसकी माँ आराम कर रही है। वह बहुत चुपचाप अंदर आई। वह एकदम स्थिर खड़ी रही। क्या ऐसा था कि कोई मंगोल जहाज नॉरफ़ॉक के तट पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था (जैसा कि श्रीमती हिलबेरी ने कहा था), और शायद सौ साल पहले डैलोवे परिवार की महिलाओं के साथ घुलमिल गया था? क्योंकि डैलोवे परिवार के लोग आम तौर पर गोरे बालों और नीली आँखों वाले होते थे; इसके विपरीत, एलिजाबेथ सांवली थी; उसके गोरे चेहरे पर चीनी जैसी आँखें थीं; एक रहस्यमयी पूर्वी व्यक्तित्व; वह सौम्य, विचारशील और शांत थी। बचपन में उसमें हास्यबोध की अद्भुत क्षमता थी; लेकिन अब सत्रह साल की उम्र में, क्लैरिसा को बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था, वह इतनी गंभीर क्यों हो गई थी; जैसे कोई जलकुंभी, चमकदार हरे रंग में लिपटी हुई, बस रंगी हुई कलियों वाली, एक ऐसी जलकुंभी जिसे सूरज की रोशनी न मिली हो।
वह एकदम स्थिर खड़ी रही और अपनी माँ को देखती रही; लेकिन दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था, और दरवाजे के बाहर मिस किल्मन थीं, जैसा कि क्लैरिसा जानती थी; मिस किल्मन अपने रेनकोट में थीं, और वे जो कुछ भी कह रहे थे, उसे सुन रही थीं।
हाँ, मिस किल्मन सीढ़ियों पर खड़ी थीं और उन्होंने रेनकोट पहना हुआ था; लेकिन इसके पीछे उनके कुछ कारण थे। पहला, यह सस्ता था; दूसरा, उनकी उम्र चालीस से ज़्यादा थी; और आख़िरकार, वह दूसरों को खुश करने के लिए कपड़े नहीं पहनती थीं। इसके अलावा, वह गरीब थीं; बेहद गरीब। वरना वह डैलोवे जैसे लोगों से, यानी उन अमीर लोगों से, जो दयालु होने का दिखावा करते थे, काम नहीं करतीं। श्री डैलोवे, उनकी ईमानदारी को सही ठहराने के लिए, दयालु थे। लेकिन श्रीमती डैलोवे नहीं थीं। वह तो बस एहसान जताती थीं। वह सबसे निचले तबके से आती थीं—अमीर, बस थोड़ी-बहुत संस्कृति से ग्रसित। उनके पास हर जगह महंगी चीज़ें थीं; तस्वीरें, कालीन, ढेर सारे नौकर। वह समझती थीं कि डैलोवे उनके लिए जो कुछ भी करते हैं, उस पर उनका पूरा अधिकार है।
उसके साथ धोखा हुआ था। जी हाँ, यह शब्द कोई अतिशयोक्ति नहीं है, क्योंकि हर लड़की को किसी न किसी तरह की खुशी पाने का हक तो होता ही है। और वह कभी

खुश नहीं रही, अपनी अनाड़ीपन और गरीबी के कारण। फिर, जब उसे मिस डॉल्बी के स्कूल में मौका मिल सकता था, तभी युद्ध शुरू हो गया; और वह कभी झूठ नहीं बोल पाई थी। मिस डॉल्बी को लगा कि वह उन लोगों के साथ ज्यादा खुश रहेगी जो जर्मनों के बारे में उसके विचार साझा करते हैं। उसे जाना ही पड़ा। यह सच था कि परिवार जर्मन मूल का था; अठारहवीं सदी में नाम की स्पेलिंग कीहलमैन थी; लेकिन उसका भाई मारा गया था। उसे इसलिए निकाल दिया गया क्योंकि वह यह दिखावा नहीं कर सकती थी कि सभी जर्मन बुरे थे—जबकि उसके जर्मन दोस्त थे, जबकि उसके जीवन के सारे खुशहाल दिन जर्मनी में ही बीते थे! और वैसे भी, वह इतिहास पढ़ सकती थी। उसे जो भी मिला, उसी से काम चलाना पड़ा। मिस्टर डैलोवे की मुलाकात उससे फ्रेंड्स के लिए काम करते हुए हुई। उन्होंने उसे (और यह वाकई उनकी उदारता थी) अपनी बेटी को इतिहास पढ़ाने की अनुमति दी। उसने कुछ समय के लिए एक्सटेंशन लेक्चर भी दिए, और इसी तरह के अन्य काम भी किए। फिर प्रभु उसके पास आए (और यहाँ वह हमेशा अपना सिर झुका लेती थी)। उसे दो साल और तीन महीने पहले ज्ञान प्राप्त हुआ था। अब वह क्लैरिसा डैलोवे जैसी महिलाओं से ईर्ष्या नहीं करती थी; बल्कि उन पर दया करती थी।
नरम कालीन पर खड़ी होकर, मफ पहने एक छोटी बच्ची की पुरानी नक्काशी को देखते हुए, वह दिल ही दिल में उन पर तरस भी खा रही थी और उनसे नफरत भी कर रही थी। इतनी विलासिता के बीच, बेहतर हालात की क्या उम्मीद थी? सोफे पर लेटने के बजाय—"मेरी माँ आराम कर रही हैं," एलिजाबेथ ने कहा था—उसे किसी कारखाने में होना चाहिए था; काउंटर के पीछे; श्रीमती डैलोवे और बाकी सभी संभ्रांत महिलाओं की तरह!
दो साल तीन महीने पहले, मिस किल्मन गुस्से और पीड़ा से भरी हुई एक चर्च में गई थीं। उन्होंने रेवरेंड एडवर्ड व्हिटेकर का उपदेश सुना था; लड़कों को गाते देखा था; गंभीर रोशनी को नीचे उतरते देखा था, और चाहे वह संगीत हो या आवाज़ें (शाम को अकेले में उन्हें वायलिन में सुकून मिलता था; लेकिन वह आवाज़ असहनीय थी; उन्हें संगीत की समझ नहीं थी), उनके भीतर उबलती और उमड़ती हुई तीव्र भावनाएँ वहाँ बैठकर शांत हो गई थीं, और वह खूब रोईं, और केंसिंग्टन में मिस्टर व्हिटेकर के निजी घर उनसे मिलने गईं। उन्होंने कहा, यह ईश्वर का हाथ था। प्रभु ने उन्हें रास्ता दिखाया था। इसलिए अब, जब भी उनके भीतर तीव्र और पीड़ादायक भावनाएँ उबलतीं, श्रीमती डैलोवे के प्रति यह घृणा, दुनिया के प्रति यह द्वेष, तो वह ईश्वर के बारे में सोचतीं।

वह मिस्टर व्हिटेकर के बारे में सोचतीं। क्रोध के बाद शांति छा जाती। एक मीठी सी महक उसकी नसों में दौड़ गई, उसके होंठ खुल गए, और अपने रेनकोट में सीढ़ियों पर खड़ी होकर, उसने श्रीमती डैलोवे को स्थिर और भयावह शांति से देखा, जो अपनी बेटी के साथ बाहर आई थीं।
एलिज़ाबेथ ने कहा कि वह अपने दस्ताने भूल गई थी। दरअसल, मिस किल्मन और उसकी माँ एक-दूसरे से नफ़रत करती थीं। वह उन्हें साथ नहीं देख सकती थी। वह अपने दस्ताने ढूंढने के लिए ऊपर भागी।
लेकिन मिस किल्मन श्रीमती डैलोवे से नफरत नहीं करती थीं। अपनी बड़ी- बड़ी आंवले जैसी आँखों से क्लेरिसा को देखते हुए, उसके छोटे से गुलाबी चेहरे, उसके कोमल शरीर, उसकी ताजगी और फैशन को निहारते हुए, मिस किल्मन ने सोचा, मूर्ख! नासमझ! तू जिसने न सुख-दुख जाना है; जिसने अपना जीवन व्यर्थ ही बर्बाद कर दिया है! और उसके भीतर उसे हराने, उसका असली चेहरा बेनकाब करने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। अगर वह उसे गिरा देती तो उसे राहत मिलती। लेकिन यह शरीर नहीं था; यह आत्मा और उसका उपहास था जिसे वह वश में करना चाहती थी; उसे अपनी शक्ति का एहसास कराना चाहती थी। काश वह उसे रुला पाती; उसे बर्बाद कर पाती; उसे अपमानित कर पाती; उसे घुटनों पर लाकर रुला पाती, कि तुम सही हो! लेकिन यह ईश्वर की इच्छा थी, मिस किल्मन की नहीं। यह एक धार्मिक विजय होनी थी। इसलिए उसने घूरकर देखा; उसने गुस्से से घूरा।
क्लैरिसा को गहरा सदमा लगा। यह औरत एक ईसाई है! इस औरत ने उसकी बेटी को उससे छीन लिया! क्या वह अदृश्य शक्तियों से संपर्क में है! भारी, बदसूरत, साधारण, दया और करुणा से रहित, क्या वह जीवन का अर्थ जानती है!
"क्या आप एलिजाबेथ को दुकान ले जा रहे हैं?" श्रीमती डैलोवे ने कहा।
मिस किल्मन ने कहा कि वह थीं। वे दोनों वहीं खड़ी रहीं। मिस किल्मन अपनी सहमति जताने वाली नहीं थीं। उन्होंने हमेशा अपनी मेहनत से ही अपना जीवन यापन किया था। आधुनिक इतिहास का उनका ज्ञान अत्यंत गहन था। अपनी मामूली आमदनी में से वह अपने विश्वास के कार्यों के लिए काफी पैसा बचाती थीं; जबकि यह महिला कुछ नहीं करती थी, किसी बात पर विश्वास नहीं करती थी; अपनी बेटी का पालन-पोषण करती थी—लेकिन यहाँ एलिजाबेथ खड़ी थी, थोड़ी हाँफती हुई, वह खूबसूरत लड़की।
तो वे स्टोर जा रहे थे। यह अजीब था, जैसे ही मिस किल्मन वहाँ खड़ी रहीं (और वह खड़ी रहीं, किसी प्रागैतिहासिक राक्षस की शक्ति और मौन के साथ, जो

आदिम युद्ध के लिए कवच पहने हो), कैसे पल-पल उनका व्यक्तित्व कम होता गया, कैसे घृणा (जो विचारों के लिए थी, लोगों के लिए नहीं) चकनाचूर हो गई, कैसे उन्होंने अपनी दुर्भावना, अपना रुतबा खो दिया, पल-पल वह केवल मिस किल्मन बनकर रह गईं, एक रेनकोट पहने हुए, जिनकी मदद करना क्लैरिसा को भगवान ही जानता है।
उस राक्षस के छोटे होते देख क्लैरिसा हंस पड़ी। अलविदा कहते हुए वह हंस पड़ी।
मिस किल्मन और एलिजाबेथ एक साथ नीचे की ओर चली गईं।
अचानक आवेग में, तीव्र पीड़ा से भरी हुई, क्योंकि यह महिला उसकी बेटी को उससे छीन रही थी, क्लैरिसा रेलिंग पर झुक गई और चिल्लाई, "पार्टी याद रखना! आज रात हमारी पार्टी याद रखना!"
लेकिन एलिजाबेथ पहले ही सामने का दरवाजा खोल चुकी थी; एक वैन गुजर रही थी; उसने कोई जवाब नहीं दिया।
प्रेम और धर्म! क्लैरिसा ने ड्राइंग रूम में लौटते हुए सोचा, उसका पूरा शरीर कांप रहा था। ये कितने घृणित हैं, कितने घृणित! अब जब मिस किल्मन का शव उसके सामने नहीं था, तो ये विचार उसे व्याकुल कर रहा था। दुनिया की सबसे क्रूर चीजें, उसने सोचा, उन्हें भद्दा, कामुक, दबंग, पाखंडी, छुपकर बातें सुनने वाला, ईर्ष्यालु, बेहद क्रूर और बेईमान, रेनकोट पहने, सीढ़ियों पर देखकर; प्रेम और धर्म। क्या उसने कभी खुद किसी को धर्म परिवर्तन कराने की कोशिश की थी? क्या वह नहीं चाहती थी कि हर कोई बस जैसा है वैसा ही रहे? और उसने खिड़की से बाहर सामने वाली बूढ़ी औरत को सीढ़ियों पर चढ़ते देखा। अगर वह चढ़ना चाहती है तो चढ़ने दो; उसे रुकने दो; फिर उसे, जैसा कि क्लैरिसा ने उसे अक्सर देखा था, अपने बेडरूम में जाने दो, पर्दे हटाने दो और फिर से पृष्ठभूमि में गायब हो जाने दो। किसी तरह उस बूढ़ी औरत का खिड़की से बाहर देखना, इस बात से बिल्कुल अनजान कि उसे देखा जा रहा है, सम्मान का पात्र था। उसमें कुछ गंभीरता थी—पर प्रेम और धर्म उसे नष्ट कर देंगे, चाहे वह कुछ भी हो, आत्मा की निजता को। घृणित किल्मन उसे नष्ट कर देगा। फिर भी, यह एक ऐसा दृश्य था जिसे देखकर उसका मन रोने को कर रहा था।
प्यार भी टूट गया। जो कुछ अच्छा था, जो कुछ सच्चा था, सब खत्म हो गया। पीटर वॉल्श को ही ले लीजिए। वो एक आकर्षक, चतुर और हर चीज़ के जानकार व्यक्ति थे। अगर आप पोप या एडिसन के बारे में जानना चाहते, या बस यूं ही

बकवास करना चाहते, कि लोग कैसे होते हैं, बातों का क्या मतलब होता है, तो पीटर को सबसे बेहतर पता होता था। पीटर ने ही उसकी मदद की थी; पीटर ने ही उसे किताबें उधार दी थीं। लेकिन जिन महिलाओं से वो प्यार करता था, उन्हें देखिए—बेशर्म, तुच्छ, साधारण। पीटर के प्यार के बारे में सोचिए—इतने सालों बाद वो उससे मिलने आया, और उसने किस बारे में बात की? खुद के बारे में। भयानक जुनून! उसने सोचा। घटिया जुनून! उसने सोचा, किलमन और उसकी एलिजाबेथ को आर्मी एंड नेवी स्टोर्स जाते हुए याद करते हुए।
बिग बेन में आधे घंटे की घंटी बजी।
यह कितना असाधारण था, विचित्र, हाँ, मार्मिक भी, उस बुढ़िया को खिड़की से दूर जाते देखना (वे कई वर्षों से पड़ोसी थीं) मानो वह उस आवाज़, उस तार से बंधी हुई हो। विशाल होते हुए भी, उसका उससे कुछ संबंध था। नीचे, नीचे, साधारण चीज़ों के बीच वह उंगली आकर रुकी, जिससे वह क्षण गंभीर हो गया। क्लैरिसा ने कल्पना की कि उस आवाज़ ने उसे हिलने, जाने के लिए विवश किया था — लेकिन कहाँ? क्लैरिसा ने उसका पीछा करने की कोशिश की जब वह मुड़ी और गायब हो गई, और वह अब भी उसकी सफेद टोपी को बेडरूम के पीछे हिलते हुए देख सकती थी। वह अब भी कमरे के दूसरे छोर पर घूम रही थी। धर्म, प्रार्थना और रेनकोट क्यों? क्लैरिसा ने सोचा, यही तो चमत्कार है, यही तो रहस्य है; वह बुढ़िया, उसका मतलब था, जिसे वह दराजों की अलमारी से ड्रेसिंग टेबल तक जाते हुए देख सकती थी। वह अब भी उसे देख सकती थी। और वह परम रहस्य जिसे किलमन ने सुलझा लिया हो, या पीटर ने सुलझा लिया हो, लेकिन क्लैरिसा को उन दोनों में से किसी के भी सुलझने की कोई उम्मीद नहीं थी, वह बस इतना था: यहाँ एक कमरा था; वहाँ दूसरा। क्या धर्म ने इसे सुलझाया, या प्रेम ने?
प्रेम—पर यहाँ दूसरी घड़ी, वो घड़ी जो हमेशा बिग बेन के दो मिनट बाद बजती थी, अपनी गोद में ढेर सारी चीज़ें लिए लड़खड़ाती हुई आई, जिन्हें उसने ऐसे नीचे गिरा दिया मानो बिग बेन को अपने महामहिम के नियमों से कोई आपत्ति न हो, इतने गंभीर, इतने न्यायपूर्ण, लेकिन उसे इन सबके अलावा और भी कई छोटी- छोटी बातें याद रखनी होंगी—श्रीमती मार्शम, एली हेंडरसन, आइसक्रीम के गिलास—ये सारी छोटी-छोटी बातें उस गंभीर बजने की आवाज़ के साथ उमड़ती, लहरों की तरह आती और नाचती हुई आ गईं, जो समुद्र पर सोने की छड़ की तरह सपाट पड़ी थी। श्रीमती मार्शम, एली हेंडरसन, आइसक्रीम के गिलास। उसे अब तुरंत फोन करना होगा।

बड़बड़ाती हुई, परेशान करने वाली, देर से आती घड़ी बिग बेन के पीछे-पीछे बजती हुई, अपनी गोद में छोटी-छोटी चीज़ों को समेटे हुए। गाड़ियों के हमले, वैन की क्रूरता, अनगिनत नुकीले आदमियों की उत्सुकता भरी चाल, इतराती औरतों, दफ्तरों और अस्पतालों के गुंबदों और मीनारों से कुचली-पीटी, टूटी- फूटी, इस गोद में भरी हुई छोटी-छोटी चीज़ों के आखिरी अवशेष, एक थकी हुई लहर के छींटे की तरह, मिस किल्मन के शरीर पर टूटते हुए प्रतीत हुए, जो सड़क पर एक पल के लिए रुकी हुई थीं और बुदबुदा रही थीं, "यह शरीर है।"
उसे अपने शरीर पर काबू पाना था। क्लैरिसा डैलोवे ने उसका अपमान किया था। उसे इसकी उम्मीद थी। लेकिन वह जीत नहीं पाई थी; वह अपने शरीर पर विजय नहीं पा सकी थी। बदसूरत, भद्दी, क्लैरिसा डैलोवे ने उसके ऐसे होने पर उसका मज़ाक उड़ाया था; और उसकी कामुक इच्छाओं को फिर से जगा दिया था, क्योंकि क्लैरिसा के बगल में खड़े होने पर उसे अपनी शक्ल ठीक नहीं लगती थी। न ही वह उसकी तरह बात कर सकती थी। लेकिन उसके जैसा दिखने की इच्छा क्यों? क्यों? वह श्रीमती डैलोवे से दिल से नफरत करती थी। वह गंभीर नहीं थी। वह अच्छी नहीं थी। उसका जीवन घमंड और धोखे का जाल था। फिर भी डोरिस किल्मन हार गई थी। वास्तव में, जब क्लैरिसा डैलोवे ने उसका मज़ाक उड़ाया था, तो वह लगभग रो पड़ी थी। "यह शरीर है, यह शरीर है," वह बुदबुदाई (ज़ोर से बोलना उसकी आदत थी) विक्टोरिया स्ट्रीट पर चलते हुए इस उथल-पुथल भरे और दर्दनाक एहसास को दबाने की कोशिश कर रही थी। उसने भगवान से प्रार्थना की। वह बदसूरत होने से बच नहीं सकती थी; वह सुंदर कपड़े खरीदने का खर्च नहीं उठा सकती थी। क्लेरिसा डैलोवे हँसी थी—लेकिन खंभे तक पहुँचने से पहले वह अपना ध्यान किसी और चीज़ पर केंद्रित रखेगी। कम से कम उसे एलिज़ाबेथ तो मिल ही गई थी। लेकिन वह किसी और चीज़ के बारे में सोचेगी; वह रूस के बारे में सोचेगी; जब तक कि वह खंभे तक न पहुँच जाए।
कितना अच्छा होगा, उसने कहा, गाँव में, जैसा कि मिस्टर व्हिटेकर ने उसे बताया था, उस दुनिया के प्रति तीव्र द्वेष से जूझते हुए जिसने उसका तिरस्कार किया, उस पर ताना मारा, उसे त्याग दिया, जिसकी शुरुआत इस अपमान से हुई—उसके अवांछनीय शरीर का कष्ट जिसे लोग देखना भी सहन नहीं कर सकते थे। चाहे वह अपने बाल कैसे भी संवार ले, उसका माथा अंडे की तरह गंजा और सफेद ही रहता था। कोई भी कपड़े उस पर जंचते नहीं थे। वह कुछ भी खरीद सकती थी। और एक स्त्री के लिए, ज़ाहिर है, इसका मतलब था विपरीत लिंग से कभी न मिलना। वह

कभी किसी के साथ पहली प्राथमिकता नहीं बन सकती थी। हाल ही में कभी-कभी उसे ऐसा लगता था कि एलिज़ाबेथ को छोड़कर, उसका भोजन ही उसके जीने का एकमात्र सहारा था; उसका आराम; उसका दोपहर का भोजन, उसकी चाय; रात में उसकी गर्म पानी की बोतल। लेकिन लड़ना पड़ता है; जीतना पड़ता है; ईश्वर में विश्वास रखना पड़ता है। मिस्टर व्हिटेकर ने कहा था कि वह वहाँ किसी उद्देश्य से है। लेकिन कोई भी उस पीड़ा को नहीं जानता! उन्होंने क्रूस की ओर इशारा करते हुए कहा, कि ईश्वर जानता है। लेकिन उसे क्यों कष्ट सहना पड़े जब क्लेरिसा डैलोवे जैसी अन्य महिलाएं बच निकलीं? श्री व्हिटेकर ने कहा, ज्ञान कष्टों के माध्यम से ही प्राप्त होता है।
वह खंभे के पास से गुज़र चुकी थी और एलिज़ाबेथ आर्मी एंड नेवी स्टोर्स के ठंडे भूरे तंबाकू विभाग में मुड़ गई थी। वह मन ही मन बुदबुदा रही थी कि मिस्टर व्हिटेकर ने ज्ञान के बारे में क्या कहा था कि यह पीड़ा और शारीरिक कष्टों से आता है। "शारीरिक कष्ट," उसने बुदबुदाया।
वह किस विभाग में जाना चाहती थी? एलिजाबेथ ने उसे बीच में ही रोक दिया। "पेटीकोट," उसने अचानक कहा और सीधे लिफ्ट की ओर चल पड़ी।
वे ऊपर चढ़ गए। एलिज़ाबेथ उसे इधर-उधर ले जा रही थी; मानो वह एक बड़ी बच्ची हो, एक भारी-भरकम युद्धपोत हो, और वह अपने ख्यालों में खोई हुई सी पेटीकोटों में डूबी हुई थी। वहाँ भूरे रंग की, शालीन, धारीदार, चंचल, ठोस और हल्की पेटीकोटें थीं; और वह अपने ख्यालों में खोई हुई सी, बड़े ही गंभीर भावों से चुनाव कर रही थी, और नौकरानी उसे पागल समझ रही थी।
पार्सल खोलते समय एलिजाबेथ को आश्चर्य हुआ कि मिस किल्मन क्या सोच रही होंगी। मिस किल्मन ने उठते हुए और खुद को संभालते हुए कहा, "उन्हें चाय पीनी चाहिए। उन्होंने चाय पी ली।"
एलिज़ाबेथ को हैरानी हो रही थी कि क्या मिस किल्मन को भूख भी लग सकती है। उनका खाने का तरीका ही ऐसा था; बड़े चाव से खाना, फिर बार-बार बगल वाली मेज पर रखी मीठी केक की थाली को देखना; फिर जब एक महिला और बच्चा बैठ गए और बच्चे ने केक उठा लिया, तो क्या मिस किल्मन को सच में बुरा लगा होगा? हाँ, मिस किल्मन को बुरा लगा। उन्हें वह केक चाहिए था—गुलाबी वाला। खाने का आनंद ही लगभग एकमात्र सच्चा आनंद बचा था, और उसमें भी निराश होना!
जब लोग खुश होते हैं, तो उनके पास एक तरह का संयम होता है, जिसका वे सहारा ले सकते हैं, उसने एलिज़ाबेथ से कहा था, जबकि वह बिना टायर के पहिये की तरह

थी (उसे ऐसे उपमाएँ बहुत पसंद थीं), हर कंकड़ से उसे झटका लगता था, ऐसा वह मंगलवार की सुबह पाठ समाप्त होने के बाद, किताबों से भरे अपने थैले, जिसे वह अपना "थैला" कहती थी, के साथ चूल्हे के पास खड़ी होकर कहती थी। और वह युद्ध के बारे में भी बात करती थी। आखिर, ऐसे लोग भी थे जो अंग्रेजों को हमेशा सही नहीं मानते थे। किताबें थीं। बैठकें थीं। दूसरे दृष्टिकोण भी थे। क्या एलिज़ाबेथ उसके साथ फलां-फलां (एक बेहद अजीब दिखने वाले बूढ़े आदमी) की बातें सुनने चलना चाहेगी? फिर मिस किल्मन उसे केंसिंग्टन के एक चर्च में ले गईं और उन्होंने एक पादरी के साथ चाय पी। उन्होंने अपनी किताबें उधार दी थीं। मिस किल्मन ने कहा, "कानून, चिकित्सा, राजनीति, सभी पेशे तुम्हारी पीढ़ी की महिलाओं के लिए खुले हैं।" लेकिन खुद उसका करियर पूरी तरह बर्बाद हो गया था और क्या यह उसकी गलती थी? हे भगवान, एलिज़ाबेथ ने कहा, नहीं।
और उसकी माँ आकर कहती कि बोरटन से फूलों की टोकरी आई है और क्या मिस किलमन को कुछ फूल चाहिए? मिस किलमन के प्रति वह हमेशा बहुत ही विनम्र रहती थी, लेकिन मिस किलमन सारे फूलों को एक गुच्छे में मसल देती थीं, और कोई बातचीत नहीं करती थीं, और जिन चीजों में मिस किलमन को दिलचस्पी होती थी, वे उनकी माँ को बोर कर देती थीं, और मिस किलमन और उनकी माँ का साथ बिल्कुल भी अच्छा नहीं होता था; और मिस किलमन घमंडी और बहुत ही साधारण दिखती थीं। लेकिन मिस किलमन बहुत ही होशियार थीं। एलिजाबेथ ने कभी गरीबों के बारे में नहीं सोचा था। उनके पास सब कुछ था—उसकी माँ को हर दिन बिस्तर पर नाश्ता मिलता था; लूसी उसे ऊपर ले जाती थी; और उसे बूढ़ी औरतें पसंद थीं क्योंकि वे डचेस थीं, और किसी लॉर्ड की वंशज थीं। लेकिन मिस किलमन ने कहा (उन मंगलवार की सुबहों में से एक सुबह जब पाठ समाप्त हो गया था), "मेरे दादाजी केंसिंग्टन में तेल और रंग की दुकान चलाते थे।" मिस किलमन की बातें सुनकर बहुत छोटा महसूस होता था।
मिस किल्मन ने चाय का एक और प्याला लिया। एलिज़ाबेथ, अपने पूर्वी अंदाज़ और रहस्यमयी स्वभाव के साथ, एकदम सीधी बैठी थी; नहीं, उसे और कुछ नहीं चाहिए था। वह अपने दस्ताने ढूंढ रही थी—अपने सफ़ेद दस्ताने। वे मेज़ के नीचे थे। आह, पर उसे जाना नहीं चाहिए! मिस किल्मन उसे जाने नहीं दे सकती थीं! यह युवती, जो इतनी सुंदर थी, यह लड़की, जिससे वह सचमुच प्यार करती थीं! उसका बड़ा हाथ मेज़ पर खुलता और बंद होता रहा।

लेकिन शायद यह थोड़ा नीरस था, एलिजाबेथ को लगा। और सच में वह जाना चाहती थी।
लेकिन मिस किल्मन ने कहा, "मैंने अभी तक अपना काम पूरी तरह खत्म नहीं किया है।"
तो फिर, एलिजाबेथ इंतजार करेगी। लेकिन यहाँ काफी उमस थी।
"क्या तुम आज रात पार्टी में जा रही हो?" मिस किल्मन ने पूछा। एलिज़ाबेथ को लगा कि वह जा रही होगी; उसकी माँ चाहती थी कि वह जाए। मिस किल्मन ने चॉकलेट एक्लेयर के आखिरी दो इंच को छूते हुए कहा, "उसे पार्टियों में इतना मग्न नहीं होना चाहिए।"
एलिज़ाबेथ ने कहा कि उन्हें पार्टियाँ ज़्यादा पसंद नहीं थीं। मिस किल्मन ने अपना मुँह खोला, अपनी ठुड्डी को थोड़ा आगे बढ़ाया और चॉकलेट एक्लेयर के आखिरी टुकड़े को निगल लिया, फिर अपनी उंगलियाँ पोंछीं और कप में बची चाय को चारों ओर घुमा दिया।
उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह टूटकर बिखर जाएगी। पीड़ा असहनीय थी। अगर वह उसे पकड़ पाती, उसे गले लगा पाती, उसे पूरी तरह से और हमेशा के लिए अपना बना पाती और फिर मर जाती; बस यही उसकी इच्छा थी। लेकिन यहाँ बैठे रहना, कुछ भी कहने को न सूझना; एलिज़ाबेथ को अपने विरुद्ध होते देखना; यहाँ तक कि उसके द्वारा भी घृणास्पद महसूस करना—यह असहनीय था; वह इसे सहन नहीं कर पा रही थी। उसकी मोटी उंगलियाँ अंदर की ओर मुड़ गईं।
"मैं कभी पार्टियों में नहीं जाती," मिस किल्मन ने एलिज़ाबेथ को जाने से रोकने के लिए कहा। "लोग मुझे पार्टियों में नहीं बुलाते"—और वह जानती थी कि यही अहंकार उसकी बर्बादी का कारण था; मिस्टर व्हिटेकर ने उसे चेतावनी दी थी; लेकिन वह कुछ नहीं कर सकती थी। उसने बहुत कष्ट झेला था। "वे मुझे क्यों बुलाएँगे?" उसने कहा। "मैं साधारण हूँ, मैं दुखी हूँ।" वह जानती थी कि यह मूर्खतापूर्ण था। लेकिन ये सब वे लोग थे जो आते-जाते रहते थे— पार्सल लिए हुए लोग जो उसे तुच्छ समझते थे, और इसी वजह से उसने ये कहा। फिर भी, वह डोरिस किल्मन थी। उसके पास डिग्री थी। वह एक ऐसी महिला थी जिसने दुनिया में अपनी जगह बनाई थी। आधुनिक इतिहास का उसका ज्ञान सराहनीय से कहीं अधिक था।

"मुझे खुद पर दया नहीं आती," उसने कहा। "मुझे दया आती है"—उसका मतलब "तुम्हारी माँ" कहना था, लेकिन नहीं, वह एलिज़ाबेथ से ऐसा नहीं कह सकती थी। "मुझे दूसरों पर दया आती है," उसने कहा।
किसी अज्ञात उद्देश्य से द्वार पर लाए गए किसी मूक प्राणी की तरह, जो वहां से भाग जाने की इच्छा से तड़प रहा हो, एलिजाबेथ डैलोवे चुपचाप बैठी रही। क्या मिस किल्मन कुछ और कहने वाली थीं?
"मुझे पूरी तरह से मत भूलना," डोरिस किल्मन ने कांपती हुई आवाज़ में कहा। तुरंत ही वह मूक प्राणी डर के मारे मैदान के दूसरे छोर की ओर सरपट भागा। वह विशाल हाथ खुलता और बंद होता था।
एलिज़ाबेथ ने अपना सिर घुमाया। वेट्रेस आई। एलिज़ाबेथ ने कहा, "भुगतान काउंटर पर करना होगा," और वह चली गई, मानो मिस किल्मन को महसूस हो रहा हो कि वह अपने शरीर की आंतों को खींच रही हो, कमरे को पार करते हुए उन्हें फैला रही हो, और फिर, एक आखिरी मोड़ के साथ, बहुत विनम्रता से अपना सिर झुकाकर, वह चली गई।
वह चली गई थी। मिस किल्मन संगमरमर की मेज पर एक्लेयर्स के बीच बैठी थीं, दुख के झटकों से एक बार, दो बार, तीन बार त्रस्त। वह चली गई थी। श्रीमती डैलोवे विजयी हो गई थीं। एलिजाबेथ चली गई थी। सुंदरता चली गई थी, जवानी चली गई थी।
तो वह बैठ गई। वह उठी, लड़खड़ाती हुई छोटी-छोटी मेजों के बीच चली गई, थोड़ा-थोड़ा इधर-उधर डगमगाती रही, और कोई उसके पेटीकोट के साथ उसके पीछे आया, और वह रास्ता भटक गई, और भारत ले जाने के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए बक्सों से घिर गई; फिर प्रसव के सामान और शिशु वस्त्रों के बीच जा पहुँची; दुनिया की सभी वस्तुओं के बीच, नाशवान और स्थायी, हैम, दवाइयाँ, फूल, स्टेशनरी, अलग-अलग गंध वाली, कभी मीठी, कभी खट्टी, वह लड़खड़ाती रही; उसने खुद को इस तरह लड़खड़ाते हुए, टोपी टेढ़ी किए हुए, चेहरा लाल किए हुए, एक दर्पण में पूरी लंबाई में देखा; और अंत में सड़क पर आ गई। वेस्टमिंस्टर कैथेड्रल का टावर उसके सामने खड़ा था, मानो ईश्वर का निवास स्थान हो। भीड़-भाड़ के बीच भी ईश्वर का निवास था। वह दृढ़ता से अपना पार्सल लेकर दूसरे पवित्र स्थान, एबे की ओर चल पड़ी, जहाँ उसने अपने हाथों को अपने चेहरे के सामने तंबू की तरह फैलाकर उन लोगों के पास बैठ गई जिन्हें आश्रय लेने के लिए मजबूर किया गया था; विभिन्न प्रकार के उपासक, अब सामाजिक

पद और लगभग लिंग भेद से मुक्त हो चुके थे, क्योंकि उन्होंने अपने हाथों को अपने चेहरे के सामने उठाया था; लेकिन जैसे ही उन्होंने अपने हाथ हटाए, वे तुरंत श्रद्धावान, मध्यम वर्ग के अंग्रेज पुरुष और महिलाएं बन गए, जिनमें से कुछ मोम की मूर्तियां देखने के इच्छुक थे।
लेकिन मिस किल्मन ने अपना तम्बू अपने चेहरे के सामने रखा हुआ था। अब वह अकेली थीं; अब फिर से मिल गईं। नए श्रद्धालु सड़क से आकर टहलने वालों की जगह लेने लगे, और फिर भी, जैसे ही लोग अज्ञात योद्धा की समाधि के चारों ओर देखते और आगे बढ़ते रहे, उन्होंने अपनी उंगलियों से अपनी आँखें ढक लीं और इस दोहरे अंधकार में, क्योंकि मठ में प्रकाश निराकार था, व्यर्थता, इच्छाओं, वस्तुओं से ऊपर उठने की कोशिश की, खुद को घृणा और प्रेम दोनों से मुक्त करने की कोशिश की। उनके हाथ फड़फड़ा रहे थे। वह संघर्ष करती हुई प्रतीत हो रही थीं। फिर भी दूसरों के लिए ईश्वर सुलभ थे और उन तक पहुँचने का मार्ग सुगम था। कोषागार के सेवानिवृत्त श्री फ्लेचर, प्रसिद्ध के.सी. की विधवा श्रीमती गोरहम, सादगी से उनके पास पहुँचे, और अपनी प्रार्थना करने के बाद, पीछे झुक गए, संगीत का आनंद लिया (ऑर्गन मधुरता से बज रहा था), और पंक्ति के अंत में मिस किल्मन को प्रार्थना करते हुए देखा, और अभी भी अपने पाताल लोक की दहलीज पर होने के कारण, उनके बारे में सहानुभूतिपूर्वक सोचा, जैसे कि वह उसी क्षेत्र में भटकती हुई एक आत्मा हों; एक आत्मा जो निराकार पदार्थ से बनी हो; एक स्त्री नहीं, एक आत्मा।
लेकिन मिस्टर फ्लेचर को जाना ही था। उन्हें उसके पास से गुज़रना था, और स्वयं एकदम साफ-सुथरे होने के कारण, उस बेचारी महिला की अव्यवस्था देखकर उन्हें थोड़ी बेचैनी हुई; उसके बाल बिखरे हुए थे; उसका पार्सल ज़मीन पर पड़ा था। उसने तुरंत उन्हें जाने नहीं दिया। लेकिन, जब वह अपने चारों ओर, सफेद संगमरमर, धूसर खिड़कियों के शीशों और संचित खजानों (क्योंकि उन्हें एबे पर बहुत गर्व था) को निहार रहे थे, तो वहाँ बैठी हुई उसकी विशालता, मजबूती और शक्ति, जो समय-समय पर अपने घुटने हिला रही थी (उसके ईश्वर तक पहुँचने का रास्ता कितना कठिन था—उसकी इच्छाएँ कितनी कठोर थीं), ने उन्हें प्रभावित किया, जैसा कि श्रीमती डैलोवे (वह उस दोपहर उसके बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रही थीं), रेवरेंड एडवर्ड व्हिटेकर और एलिजाबेथ को भी प्रभावित किया था।

एलिज़ाबेथ विक्टोरिया स्ट्रीट में एक बस का इंतज़ार कर रही थी। बाहर निकलना कितना अच्छा लग रहा था। उसने सोचा कि शायद उसे अभी घर जाने की ज़रूरत नहीं है। खुली हवा में रहना कितना सुखद था। इसलिए वह बस में चढ़ गई। और अभी से, जब वह वहाँ अपने सलीके से सिले हुए कपड़ों में खड़ी थी, तब से ही... लोग उसकी तुलना चिनार के पेड़ों, सुबह की पहली किरण, जलकुंभी, हिरण के बच्चे, बहते पानी और बगीचे की लिली से करने लगे थे; और इससे उसका जीवन बोझिल हो गया था, क्योंकि वह गाँव में अकेले रहकर अपनी मर्ज़ी से काम करना ज़्यादा पसंद करती थी, लेकिन लोग उसकी तुलना लिली से करते थे, उसे पार्टियों में जाना पड़ता था, और लंदन अपने पिता और कुत्तों के साथ गाँव में अकेले रहने की तुलना में बहुत नीरस लगता था।
बसें आतीं, ठहरतीं और चल पड़तीं—चमकीले काफिले, लाल और पीले रंग की पॉलिश से जगमगाते हुए। लेकिन उसे किसमें चढ़ना चाहिए? उसकी कोई प्राथमिकता नहीं थी। ज़ाहिर है, वह ज़बरदस्ती नहीं करती। वह शांत रहना पसंद करती थी। उसे अभिव्यक्ति की ज़रूरत थी, लेकिन उसकी आँखें सुंदर थीं, चीनी, पूर्वी, और जैसा कि उसकी माँ कहती थी, उसके कंधे इतने सुडौल थे और वह इतनी सीधी खड़ी रहती थी कि उसे देखना हमेशा आकर्षक लगता था; और हाल ही में, खासकर शाम के समय, जब वह किसी चीज़ में रुचि लेती थी, क्योंकि वह कभी उत्तेजित नहीं दिखती थी, तो वह लगभग सुंदर, बहुत ही गरिमामय, बहुत ही शांत दिखती थी। वह क्या सोच रही होगी? हर आदमी उससे प्यार कर बैठता था, और वह सचमुच बहुत ऊब चुकी थी। क्योंकि यह शुरुआत थी। उसकी माँ देख सकती थी— तारीफ़ें मिलने लगी थीं। क्लैरिसा को कभी-कभी चिंता होती थी कि वह अपने कपड़ों जैसी चीज़ों की ज़्यादा परवाह नहीं करती, लेकिन शायद उन सभी पिल्लों और गिनी पिग्स के साथ बीमारी होने का खतरा था, और इससे उसमें एक अलग ही आकर्षण आ गया था। और अब मिस किल्मन के साथ उसकी एक अजीब दोस्ती हो गई थी। क्लैरिसा ने सुबह करीब तीन बजे, नींद न आने के कारण बैरन मार्बोट को पढ़ते हुए सोचा, "अच्छा, इससे साबित होता है कि उसके पास भी दिल है।" अचानक एलिज़ाबेथ आगे बढ़ी और बड़ी कुशलता से सबके सामने बस में चढ़ गई। वह सबसे ऊपर वाली सीट पर बैठ गई। वह उतावला जीव—एक समुद्री डाकू—तेजी से आगे बढ़ा, उछल पड़ा; उसे खुद को संभालने के लिए रेलिंग पकड़नी पड़ी, क्योंकि वह एक समुद्री डाकू ही था, लापरवाह, बेईमान, बेरहमी से हमला करता हुआ, खतरनाक तरीके से इधर-उधर भागता हुआ, बेखौफ होकर किसी यात्री को छीन

लेता था, या किसी यात्री को नजरअंदाज कर देता था, मछली की तरह बीच में घुसकर घमंड से व्हाइटहॉल की ओर दौड़ पड़ता था। और क्या एलिज़ाबेथ ने बेचारी मिस किल्मन के बारे में एक बार भी सोचा, जो उससे बिना ईर्ष्या के प्यार करती थी, जिसके लिए वह खुले में एक हिरणी की तरह, जंगल में एक चाँद की तरह थी? वह आज़ाद होकर बहुत खुश थी। ताज़ी हवा बहुत सुखद थी। सेना और नौसेना के गोदाम में बहुत घुटन थी। और अब व्हाइटहॉल की ओर दौड़ना किसी सवारी की तरह था; और बस की हर हलचल पर भूरे रंग के कोट में लिपटा वह सुंदर शरीर एक सवार की तरह, किसी जहाज के अग्रभाग की तरह सहजता से प्रतिक्रिया करता था, क्योंकि हवा उसे थोड़ा अस्त-व्यस्त कर देती थी; गर्मी से उसके गाल सफेद रंग से रंगे लकड़ी जैसे पीले पड़ गए थे; और उसकी सुंदर आँखें, जिनसे कोई आँखें नहीं मिल पा रही थीं, आगे की ओर निहारती रहीं, खाली, चमकदार, मूर्ति की अविश्वसनीय मासूमियत से भरी हुई।
मिस किल्मन हमेशा अपनी तकलीफों के बारे में ही बात करती रहती थीं, जिसकी वजह से वह इतनी चिड़चिड़ी थीं। और क्या वह सही थीं? अगर समितियों में शामिल होना और हर दिन घंटों समय देना (वह लंदन में उनसे शायद ही कभी मिलती थीं) गरीबों की मदद करने का ज़रिया था, तो उनके पिता ने यह किया था, भगवान जाने—अगर मिस किल्मन का ईसाई होने का मतलब यही था; लेकिन यह कहना बहुत मुश्किल था। ओह, वह थोड़ा और आगे जाना चाहती थीं। स्ट्रैंड तक जाने के लिए एक और पैसा चाहिए था? लीजिए, एक और पैसा। वह स्ट्रैंड चली जाएंगी।
उन्हें बीमार लोग अच्छे लगते थे। मिस किल्मन ने कहा, "तुम्हारी पीढ़ी की महिलाओं के लिए हर पेशा खुला है। इसलिए वह डॉक्टर बन सकती हैं। वह किसान बन सकती हैं। जानवर अक्सर बीमार पड़ते हैं। उनके पास हज़ार एकड़ ज़मीन हो सकती है और उनके अधीन काम करने वाले लोग हो सकते हैं। वह उनके घरों में जाकर उनसे मिलेंगी। यह समरसेट हाउस था। कोई बहुत अच्छा किसान बन सकता है— और हैरानी की बात यह है कि मिस किल्मन का इसमें हिस्सा होने के बावजूद, यह लगभग पूरी तरह से समरसेट हाउस की वजह से ही था। वह विशाल धूसर इमारत इतनी भव्य, इतनी गंभीर दिखती थी। और उन्हें लोगों को काम करते देखना अच्छा लगता था। उन्हें स्ट्रैंड नदी के किनारे बने वे गिरजाघर अच्छे लगते थे, जो धूसर कागज़ की आकृतियों जैसे दिखते थे। चांसरी लेन पर उतरते हुए उन्होंने सोचा, यह जगह वेस्टमिंस्टर से बिल्कुल अलग है। यह बहुत गंभीर है; यह बहुत व्यस्त है। संक्षेप में, वह कोई पेशा अपनाना चाहती थीं। वह डॉक्टर बनेंगी, किसान

बनेंगी, और ज़रूरत पड़ने पर संसद में भी जाएंगी, और यह सब स्ट्रैंड की वजह से ही होगा।"
उन लोगों के पैर अपने-अपने कामों में व्यस्त थे, हाथ पत्थर से पत्थर जोड़ रहे थे, और उनके दिमाग हमेशा तुच्छ बातों में नहीं उलझे रहते थे (महिलाओं की तुलना चिनार के पेड़ों से करना—जो बेशक रोमांचक था, लेकिन बहुत ही मूर्खतापूर्ण था), बल्कि जहाजों, व्यापार, कानून, प्रशासन के विचारों में डूबे रहते थे। और यह सब इतना भव्य (वह मंदिर में थी), इतना जीवंत (वहाँ नदी थी), इतना पवित्र (वहाँ चर्च था) था कि उसने अपनी माँ की परवाह किए बिना किसान या डॉक्टर बनने का पक्का इरादा कर लिया था। लेकिन वह बेशक थोड़ी आलसी थी।
और इस बारे में चुप रहना ही बेहतर था। यह बहुत ही मूर्खतापूर्ण लग रहा था। यह कुछ ऐसा था जो कभी-कभी हो जाता था, जब कोई अकेला होता था—ऐसी इमारतें जिन पर वास्तुकारों के नाम नहीं लिखे होते थे, शहर से लौटती भीड़ जो केंसिंग्टन के अकेले पादरियों से भी ज़्यादा प्रभावशाली होती थी, मिस किल्मन द्वारा उधार दी गई किसी भी किताब से भी ज़्यादा, मन की रेतीली सतह पर सुप्त, अनाड़ी और शर्मीली भावनाओं को जगा देती थी, जैसे कोई बच्चा अचानक अपनी बाहें फैलाता है; बस इतना ही, शायद, एक आह, बाहों का फैलाव, एक आवेग, एक रहस्योद्घाटन, जिसका प्रभाव हमेशा के लिए रहता है, और फिर वह वापस रेतीली सतह पर चला जाता है। उसे घर जाना है। उसे रात के खाने के लिए तैयार होना है। लेकिन समय क्या हुआ था?—घड़ी कहाँ थी?
उसने फ्लीट स्ट्रीट की ओर देखा। वह दबे पांव सेंट पॉल की ओर थोड़ी दूर चली, मानो कोई रात में मोमबत्ती की रोशनी में किसी अनजान घर में दबे पांव घुस रहा हो, इस डर से कि कहीं घर का मालिक अचानक अपने बेडरूम का दरवाजा खोलकर उससे उसका काम न पूछ ले। न ही वह अजीब गलियों या लुभावनी संकरी सड़कों में भटकने की हिम्मत कर रही थी, ठीक वैसे ही जैसे किसी अनजान घर में खुले दरवाजों में नहीं, जो शायद बेडरूम के दरवाजे हों, बैठक के दरवाजे हों या सीधे भंडारघर की ओर जाते हों। क्योंकि कोई भी डैलोवेज़ रोज़ स्ट्रैंड से नहीं गुज़रता था; वह एक नई राह दिखाने वाली, एक अजनबी, साहसी और भरोसेमंद थी।
कई मायनों में, उसकी माँ को लगता था कि वह बेहद अपरिपक्व थी, बिल्कुल एक बच्ची की तरह, गुड़ियों और पुरानी चप्पलों से लगाव रखती थी; एक आदर्श शिशु;

और यह बात मनमोहक थी। लेकिन फिर, ज़ाहिर है, डैलोवे परिवार में सार्वजनिक सेवा की परंपरा थी। मठाध्यक्षाएँ, प्रधानाचार्याएँ, प्रधानाध्यापिकाएँ, गणमान्य व्यक्ति, महिलाओं के इस गणराज्य में—बिना प्रतिभाशाली हुए भी, वे सभी ऐसी ही थीं। वह सेंट पॉल की दिशा में थोड़ा और आगे बढ़ी। उसे इस शोरगुल में सौहार्द, भाईचारा, मातृत्व और बंधुत्व अच्छा लगा। यह उसे अच्छा लगा। शोर बहुत ज़बरदस्त था; और अचानक (बेरोजगारों द्वारा) तुरही बजने लगीं, शोरगुल में गूंजने लगीं; सैन्य संगीत; मानो लोग मार्च कर रहे हों; फिर भी अगर वे मर रहे होते—अगर किसी महिला ने अपनी अंतिम साँस ली होती और जो कोई भी देख रहा होता, उस कमरे की खिड़की खोलकर जहाँ उसने अभी-अभी सर्वोच्च गरिमा का वह कार्य किया था, फ्लीट स्ट्रीट पर नीचे देखता, तो वह शोरगुल, वह सैन्य संगीत उसके पास विजयपूर्वक पहुँचता, सांत्वना देता, उदासीन रहता।
यह सचेत नहीं था। इसमें किसी भाग्य या नियति का कोई आभास नहीं था, और इसी कारण मरने वालों के चेहरों पर चेतना की अंतिम कंपकंपी देखने के लिए स्तब्ध लोगों को भी यह सांत्वना देता था। लोगों की विस्मृति घाव दे सकती है, उनकी कृतघ्नता उन्हें नष्ट कर सकती है, लेकिन यह आवाज, जो निरंतर, वर्ष दर वर्ष बहती रहती है, जो कुछ भी हो, उसे अपने साथ ले जाती है; यह प्रतिज्ञा; यह रथ; यह जीवन; यह जुलूस, उन सबको अपने आलिंगन में ले लेता है और आगे ले जाता है, जैसे हिमनद की उबड़-खाबड़ धारा में बर्फ हड्डी के टुकड़े, नीली पंखुड़ी, कुछ बलूत के पेड़ों को थामे हुए आगे लुढ़का देती है।
लेकिन जितना उसने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा देर हो चुकी थी। उसकी माँ को उसका इस तरह अकेले घूमना पसंद नहीं आता। वह वापस स्ट्रैंड की ओर मुड़ गई।
तेज़ हवा के झोंके ने (गर्मी के बावजूद, काफी तेज़ हवा चल रही थी) सूरज और समुद्र तट पर एक पतली काली चादर सी बिछा दी। चेहरे धुंधले पड़ गए; बसों की चमक अचानक गायब हो गई। हालाँकि बादल पर्वतीय सफेद रंग के थे, जिन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो कुल्हाड़ी से उनके कठोर टुकड़े काटे जा रहे हों, और उनके किनारों पर चौड़ी सुनहरी ढलानें, स्वर्गिक आनंद उद्यानों के लॉन हों, और वे ऊपर दुनिया के देवताओं के सम्मेलन के लिए एकत्रित बस्तियों की तरह दिख रहे थे, फिर भी उनमें निरंतर हलचल थी। संकेत बदले जा रहे थे, मानो किसी पूर्व-निर्धारित योजना को पूरा करने के लिए, कभी कोई शिखर छोटा हो

जाता, कभी पिरामिड के आकार का एक पूरा ब्लॉक जो अपनी जगह पर स्थिर था, बीच में आ जाता या गंभीरता से जुलूस को नए लंगरगाह की ओर ले जाता। हालाँकि वे अपनी जगहों पर स्थिर, पूर्ण एकमत से विश्राम करते प्रतीत होते, बर्फ-सफेद या सुनहरी चमक वाली सतह से अधिक ताज़ा, मुक्त और संवेदनशील सतह कुछ भी नहीं हो सकती थी; गंभीर सभा को बदलना, जाना, भंग करना तुरंत संभव था; और उस गंभीर स्थिरता, संचित मजबूती और दृढ़ता के बावजूद, कभी वे धरती पर प्रकाश बिखेरते थे, कभी अंधकार।
एलिजाबेथ डैलोवे ने शांत और कुशल तरीके से वेस्टमिंस्टर की बस में सवार हुईं।
आना-जाना, इशारा करना, संकेत देना, प्रकाश और छाया जो कभी दीवार को धूसर, कभी केलों को चमकीला पीला, कभी समुद्र तट को धूसर, कभी बसों को चमकीला पीला बना देती थी, ऐसा लग रहा था मानो सेप्टिमस वॉरेन स्मिथ बैठक में सोफे पर लेटे हुए, गुलाबों और वॉलपेपर पर पानी के सुनहरे रंग की चमक को किसी जीवित प्राणी की अद्भुत संवेदनशीलता के साथ चमकते और फीके पड़ते हुए देख रहे हों। बाहर पेड़ अपने पत्तों को हवा की गहराई में जाल की तरह घसीट रहे थे; कमरे में पानी की आवाज़ थी और लहरों के बीच से पक्षियों के गाने की आवाज़ आ रही थी। हर शक्ति अपना खजाना उनके सिर पर उंडेल रही थी, और उनका हाथ सोफे के पीछे ऐसे पड़ा था जैसे नहाते समय लहरों पर तैरता हुआ पड़ा होता था, जबकि दूर किनारे पर उन्हें कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। अब और डर नहीं, शरीर में हृदय कहता है; अब और डर नहीं।
वह डरा नहीं था। हर पल प्रकृति किसी हँसी भरे संकेत से, जैसे दीवार के चारों ओर फैले उस सुनहरे धब्बे से—वहाँ, वहाँ, वहाँ—अपना दृढ़ संकल्प दिखाती थी, अपने पंख लहराकर, अपनी लटें झटककर, अपने लबादे को इधर-उधर फेंककर, खूबसूरती से, हमेशा खूबसूरती से, और पास खड़े होकर अपने खोखले हाथों से शेक्सपियर के शब्दों, अपने अर्थ को व्यक्त करती थी।
मेज पर बैठी रेज़िया, हाथों में टोपी घुमाते हुए, उसे देख रही थी; उसे मुस्कुराते हुए देखा। वह उस समय खुश था। लेकिन वह उसे मुस्कुराते हुए नहीं देख सकती थी। यह शादी नहीं थी; किसी का पति होना ऐसा अजीब दिखना नहीं था, हमेशा चौंकना, हंसना, घंटों चुपचाप बैठे रहना, या उसे पकड़कर लिखने के लिए कहना। मेज की दराज उन लेखों से भरी थी; युद्ध के बारे में; शेक्सपियर के बारे में; महान खोजों के बारे में; मृत्यु का रहस्य। हाल ही में वह बिना

किसी कारण के अचानक उत्तेजित हो जाता था (और डॉ. होम्स और सर विलियम ब्रैडशॉ दोनों ने कहा था कि उत्तेजना उसके लिए सबसे बुरी चीज थी), और हाथ हिलाकर चिल्लाता था कि वह सच जानता है! वह सब कुछ जानता है! वह आदमी, उसका दोस्त जो मारा गया था, इवांस, आया था, उसने कहा। वह पर्दे के पीछे गा रहा था। उसने ठीक वैसे ही लिख लिया जैसे उसने कहा था। कुछ बातें बहुत सुंदर थीं; कुछ बिल्कुल बकवास। और वह हमेशा बीच में रुक जाता था, अपना विचार बदलता रहता था; कुछ जोड़ना चाहता था; कुछ नया सुनता था; हाथ उठाकर सुनता रहता था।
लेकिन उसे कुछ सुनाई नहीं दिया।
और एक बार उन्होंने कमरे की सफाई करने वाली लड़की को इन्हीं अखबारों में से एक को पढ़ते हुए हँसी के दौरे पड़ते हुए पाया। यह बहुत ही दुखद था। क्योंकि इससे सेप्टिमस मानवीय क्रूरता के बारे में चिल्ला उठा—कि कैसे लोग एक-दूसरे को टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। उसने कहा, गिरे हुए लोगों को वे टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। "होम्स हम पर हमला करने वाला है," वह कहता और होम्स के बारे में कहानियां गढ़ता; होम्स दलिया खाते हुए; होम्स शेक्सपियर पढ़ते हुए—खुद को हँसी या गुस्से से दहाड़ने पर मजबूर कर देता, क्योंकि डॉ. होम्स उसे किसी भयानक चीज़ का प्रतीक लगते थे। "मानव स्वभाव," वह उन्हें कहता था। फिर वे दृश्य थे। वह कहता था कि वह डूब गया है और एक चट्टान पर लेटा है, जिसके ऊपर सीगल चीख रहे हैं। वह सोफे के किनारे से नीचे समुद्र में देखता। या वह संगीत सुन रहा होता। वास्तव में वह केवल एक बैरल ऑर्गन या सड़क पर किसी आदमी के रोने की आवाज़ होती। लेकिन "सुंदर!" वह रोता रहता था, और उसके गालों पर आंसू बहते रहते थे, जो उसके लिए सबसे भयानक बात थी, सेप्टिमस जैसे बहादुर और योद्धा को रोते देखना। वह लेटा रहता, और अचानक चिल्लाता कि वह नीचे गिर रहा है, आग की लपटों में! दरअसल, वह आग की लपटें ढूंढने लगती, क्योंकि दृश्य इतना सजीव था। लेकिन वहां कुछ नहीं था। वे कमरे में अकेले थे। वह उसे बताती कि यह एक सपना है, और इस तरह वह आखिरकार शांत हो जाता, लेकिन कभी-कभी वह खुद भी डर जाती थी। सिलाई करते हुए उसने आह भरी।
उसकी आह कोमल और मनमोहक थी, मानो शाम को जंगल के बाहर हवा बह रही हो। अब उसने कैंची नीचे रख दी; अब वह मेज से कुछ उठाने के लिए मुड़ी। हल्की सी हलचल, हल्की सी सरसराहट, हल्की सी थपथपाहट से मेज पर कुछ बन रहा था, जहाँ वह

सिलाई कर रही थी। पलकों के बीच से वह उसकी धुंधली आकृति देख सकता था; उसका छोटा सा काला शरीर; उसका चेहरा और हाथ; मेज पर उसकी हरकतें, जैसे वह रील उठा रही हो या अपना रेशम ढूंढ रही हो (वह चीजें अक्सर खो देती थी)। वह श्रीमती फिल्मर की विवाहित बेटी के लिए टोपी बना रही थी, जिसका नाम—वह उसका नाम भूल गया था।
"श्रीमती फिल्मर की विवाहित बेटी का नाम क्या है?" उसने पूछा।
"श्रीमती पीटर्स," रेज़िया ने कहा। उसने उसे अपने सामने पकड़ते हुए कहा कि उसे डर है कि यह बहुत छोटा है। श्रीमती पीटर्स एक बड़ी महिला थीं; लेकिन रेज़िया उन्हें पसंद नहीं करती थी। यह सिर्फ इसलिए था क्योंकि श्रीमती फिल्मर उनके प्रति बहुत दयालु थीं। "उन्होंने मुझे आज सुबह अंगूर दिए," उसने कहा—रेज़िया कुछ ऐसा करना चाहती थी जिससे पता चले कि वे उनके प्रति आभारी हैं। वह पिछली शाम कमरे में आई और श्रीमती पीटर्स को, जो सोच रही थीं कि वे बाहर गए हैं, ग्रामोफोन बजाते हुए पाया।
"क्या यह सच था?" उसने पूछा। क्या वह ग्रामोफोन बजा रही थी? हाँ; उसने उस समय उसे इसके बारे में बताया था; उसने श्रीमती पीटर्स को ग्रामोफोन बजाते हुए पाया था।
उसने बड़ी सावधानी से अपनी आँखें खोलनी शुरू कीं, यह देखने के लिए कि क्या सचमुच वहाँ ग्रामोफोन था। लेकिन असली चीज़ें—असली चीज़ें बहुत रोमांचक थीं। उसे सावधान रहना था। वह पागल नहीं होना चाहता था। पहले उसने नीचे की शेल्फ पर रखे फैशन के अखबारों को देखा, फिर धीरे-धीरे हरे तुरही वाले ग्रामोफोन को। इससे ज़्यादा सटीक कुछ नहीं हो सकता था। और इसलिए, हिम्मत जुटाकर उसने साइडबोर्ड को देखा; केले की प्लेट को; महारानी विक्टोरिया और राजकुमार की नक्काशी को; गुलाब के फूलों के जार वाले मेंटलपीस को। इनमें से कोई भी चीज़ हिली नहीं। सब स्थिर थे; सब वास्तविक थे।
"वह एक ऐसी महिला है जिसकी जुबान बहुत कड़वी है," रेजिया ने कहा।
"मिस्टर पीटर्स क्या करते हैं?" सेप्टिमस ने पूछा।
"आह," रेज़िया ने याद करने की कोशिश करते हुए कहा। उसे लगा था कि श्रीमती फिल्मर ने कहा था कि वह किसी कंपनी के काम से यात्रा पर गए हैं। "अभी वह हल में हैं," उसने कहा।

"[[[-[[[!" [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[, [[[[[[, [[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[? [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[? [[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[, [[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

"[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[," [[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[! [[[[[, [[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[! [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

“[[,” [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[! [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[!

[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[(([[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[)

उसके वर्क-बॉक्स में क्या था? उसमें रिबन, मोती, लटकन और कृत्रिम फूल थे। उसने उन्हें मेज पर बिखेर दिया। वह अजीब-अजीब रंगों को मिलाकर कुछ बनाने लगा—क्योंकि भले ही उसके पास उंगलियां नहीं थीं, वह एक पार्सल भी नहीं बांध सकता था, लेकिन उसकी नज़र कमाल की थी, और अक्सर वह सही होता था, कभी- कभी बेशक बेतुका, लेकिन कभी-कभी आश्चर्यजनक रूप से सही।
"उसे एक खूबसूरत टोपी मिलेगी!" वह बुदबुदाया, इधर-उधर की चीजें उठाते हुए, रेज़िया उसके बगल में घुटनों के बल बैठी, उसके कंधे के ऊपर से देख रही थी। अब डिज़ाइन तैयार हो चुका था; उसे बस इसे सिलना था। लेकिन उसे बहुत, बहुत सावधानी बरतनी होगी, उसने कहा, इसे ठीक वैसे ही रखना है जैसे उसने बनाया था।
तो वह सिलाई करने लगी। जब वह सिलाई करती, तो उसे ऐसा लगता जैसे चूल्हे पर रखी केतली से आवाज़ आ रही हो; बुदबुदाती, गुनगुनाती, हमेशा व्यस्त, उसकी छोटी-छोटी नुकीली उंगलियां चुभती और दबाती रहतीं; उसकी सुई एकदम सीधी चलती रहती। सूरज चाहे झालरों पर, वॉलपेपर पर आता-जाता रहे, लेकिन वह इंतज़ार करेगा, उसने सोचा, अपने पैर फैलाकर, सोफे के कोने पर रखे अपने गोल मोज़े को देखते हुए; वह इस गर्म जगह में, इस शांत हवा के झोंके में इंतज़ार करेगा, जो कभी-कभी शाम को जंगल के किनारे पर मिलता है, जब ज़मीन के ढलान या पेड़ों की किसी बनावट (सबसे पहले तो वैज्ञानिक होना चाहिए) की वजह से गर्मी बनी रहती है, और हवा गालों को ऐसे छूती है जैसे किसी पक्षी का पंख।
"ये रही," रेज़िया ने श्रीमती पीटर्स की टोपी को अपनी उंगलियों पर घुमाते हुए कहा। "अभी के लिए इतना काफी है। बाद में..." उसका वाक्य धीरे- धीरे टपकता रहा, मानो कोई नल संतुष्ट होकर बह रहा हो।
यह अद्भुत था। उन्होंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था जिससे उन्हें इतना गर्व महसूस हुआ हो। श्रीमती पीटर्स की टोपी इतनी वास्तविक, इतनी ठोस थी।
"बस इसे देखो," उसने कहा।
हाँ, उस टोपी को देखकर वह हमेशा खुश हो जाती थी। तब वह अपने असली रूप में था, तब वह हँसा था। वे दोनों अकेले थे। वह टोपी उसे हमेशा अच्छी लगती थी।
उसने उससे इसे पहनकर देखने को कहा।
"मैं कितनी अजीब दिख रही हूँ!" वह चिल्लाई और शीशे की ओर दौड़कर पहले इधर, फिर उधर देखने लगी। फिर उसने शीशा झट से हटा लिया, क्योंकि दरवाजे पर

दस्तक हुई थी। क्या यह सर विलियम ब्रैडशॉ हो सकते हैं? क्या उन्होंने पहले ही संदेश भेज दिया था?
नहीं! वह तो शाम का अखबार लेकर आई छोटी बच्ची ही थी।
जो हमेशा होता था, वही हुआ—जो उनकी ज़िंदगी की हर रात होता था। छोटी बच्ची दरवाज़े पर अंगूठा चूस रही थी; रेज़िया घुटनों के बल बैठ गई; रेज़िया प्यार से बातें कर रही थी और चूम रही थी; रेज़िया ने मेज़ की दराज़ से मिठाई का थैला निकाला। क्योंकि ऐसा हमेशा होता था। पहले एक बात, फिर दूसरी। इस तरह उसने इसे आगे बढ़ाया, पहले एक बात, फिर दूसरी। नाचते-कूदते, कमरे में गोल-गोल घूमते रहे। उसने अख़बार उठाया। सरे में सब कुछ खत्म हो गया था, उसने पढ़ा। लू चल रही थी। रेज़िया ने दोहराया: सरे में सब कुछ खत्म हो गया था। लू चल रही थी, और इसे श्रीमती फिल्मर के पोते के साथ खेले जा रहे खेल का हिस्सा बना लिया, दोनों हंसते-हंसते, एक साथ बातें करते हुए, अपने खेल पर। वह बहुत थका हुआ था। वह बहुत खुश था। वह सोना चाहता था। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। लेकिन जैसे ही उसे कुछ दिखाई नहीं दिया, खेल की आवाज़ें धीमी और अजीब होती गईं और लोगों की चीखों जैसी लगने लगीं जो खोज रहे थे लेकिन पा नहीं पा रहे थे, और दूर होते जा रहे थे। वे उसे खो चुके थे!
वह दहशत से उठ बैठा। उसने क्या देखा? साइडबोर्ड पर केले की प्लेट रखी थी। वहाँ कोई नहीं था (रेज़िया बच्चे को उसकी माँ के पास ले गई थी। सोने का समय हो गया था)। बस, यही था: हमेशा के लिए अकेला रहना। मिलान में जब वह कमरे में आया और उन्हें कैंची से बकरम के आकार काटते देखा, तो यही नियति उसके सामने खड़ी हो गई थी; हमेशा के लिए अकेला रहना।
वह साइडबोर्ड और केलों के साथ अकेला था। वह अकेला, इस उजाड़ पहाड़ी पर असहाय पड़ा था—लेकिन किसी पहाड़ी की चोटी पर नहीं; किसी चट्टान पर नहीं; श्रीमती फिलमर के बैठक कक्ष के सोफे पर। मृतकों के दर्शन, चेहरे, आवाज़ें कहाँ थीं? उसके सामने काले सरकंडों और नीली अबाबीलों से ढका एक पर्दा था। जहाँ उसने कभी पहाड़ देखे थे, जहाँ उसने चेहरे देखे थे, जहाँ उसने सुंदरता देखी थी, वहाँ अब एक पर्दा था।
"इवांस!" वह चिल्लाया। कोई जवाब नहीं आया। एक चूहे की चीं-चीं की आवाज़ आई, या पर्दे की सरसराहट। ये सब मृतकों की आवाज़ें थीं। पर्दा, कोयले की बाल्टी, और साइडबोर्ड उसके सामने ही रह गए। उसे पर्दे, कोयले की बाल्टी और

साइडबोर्ड का सामना करना पड़ा... लेकिन रेज़िया बड़बड़ाती हुई कमरे में घुस आई।
कोई चिट्ठी आई थी। सबकी योजनाएँ बदल गईं। श्रीमती फिलमर आखिरकार ब्राइटन नहीं जा पाएंगी। श्रीमती विलियम्स को बताने का समय नहीं था, और रेज़िया को यह बात बहुत परेशान कर रही थी, तभी उसकी नज़र टोपी पर पड़ी और उसने सोचा... शायद... वह... थोड़ा बहुत कमा ले...। उसकी आवाज़ संतुष्टि भरी मधुरता में घुल गई।
"अरे यार!" वो चिल्लाई (उनका गाली देना एक मज़ाक था), सुई टूट गई थी। टोपी, बच्चा, ब्राइटन, सुई। उसने फिर से सब ठीक किया; पहले एक चीज़, फिर दूसरी, उसने सिलाई करते-करते सब ठीक किया।
वह जानना चाहती थी कि गुलाब को हटाने से टोपी की सुंदरता बढ़ी है या नहीं। वह सोफे के कोने पर बैठ गई।
अब वे पूरी तरह खुश थे, उसने अचानक टोपी नीचे रखते हुए कहा। क्योंकि अब वह उससे कुछ भी कह सकती थी। उसके मन में जो भी आता, वह कह सकती थी। लगभग यही पहली बात थी जो उसने उसके बारे में महसूस की थी, उस रात कैफे में जब वह अपने अंग्रेज़ दोस्तों के साथ आया था। वह थोड़ा शर्माते हुए अंदर आया था, चारों ओर देख रहा था, और टोपी टांगते समय गिर गई थी। यह उसे याद था। वह जानती थी कि वह अंग्रेज़ है, हालांकि उन लंबे-चौड़े अंग्रेज़ों में से नहीं जिनकी उसकी बहन प्रशंसा करती थी, क्योंकि वह हमेशा पतला था; लेकिन उसका रंग बहुत सुंदर और ताज़ा था; और उसकी बड़ी नाक, उसकी चमकीली आँखें, उसका थोड़ा झुककर बैठने का तरीका उसे एक युवा बाज़ की याद दिलाता था, जैसा कि उसने उसे अक्सर बताया था, उस पहली शाम जब उसने उसे देखा था, जब वे डोमिनोज़ खेल रहे थे, और वह अंदर आया था—एक युवा बाज़ की; लेकिन उसके साथ वह हमेशा बहुत कोमल रहता था। उसने उसे कभी उग्र या नशे में नहीं देखा था, बस कभी-कभी इस भयानक युद्ध से पीड़ित होते हुए देखा था, लेकिन फिर भी, जब वह अंदर आती, तो वह सब कुछ भूल जाता था। दुनिया की कोई भी बात, उसके काम में कोई भी छोटी-मोटी परेशानी, कोई भी बात जो उसे कहने का मन करता, वह उसे बता देती और वह तुरंत समझ जाता। उसका अपना परिवार भी पहले जैसा नहीं था। उससे उम्र में बड़ा और इतना समझदार होने के कारण—वह कितना गंभीर था, चाहता था कि वह अंग्रेजी में बच्चों की कहानी पढ़ने से पहले ही शेक्सपियर पढ़ ले!—इतना अधिक अनुभवी होने के कारण, वह उसकी मदद कर सकता था। और वह भी उसकी मदद कर सकती थी।

लेकिन अब ये टोपी। और फिर (देर हो रही थी) सर विलियम ब्रैडशॉ।
उसने अपने हाथों को अपने सिर पर रखा, यह जानने के लिए इंतज़ार कर रही थी कि उसे टोपी पसंद आई या नहीं। जब वह वहाँ बैठी, नीचे देखती हुई, इंतज़ार कर रही थी, तो वह उसके मन को महसूस कर सकता था, जैसे कोई पक्षी एक डाल से दूसरी डाल पर गिरता है और हमेशा सही जगह पर ठहरता है; वह उसके मन का अनुसरण कर सकता था, क्योंकि वह वहाँ उन सहज और आरामदेह मुद्राओं में बैठी थी जो उसे स्वाभाविक रूप से आती थीं, और अगर वह कुछ कहता, तो वह तुरंत मुस्कुरा उठती, जैसे कोई पक्षी अपने सभी पंजों को मजबूती से डाल पर टिकाकर बैठता है। लेकिन उसे ब्रैडशॉ की कही बात याद आई, "जिन लोगों से हमें सबसे ज़्यादा लगाव होता है, वे बीमार होने पर हमारे लिए अच्छे नहीं होते।" ब्रैडशॉ ने कहा, उसे आराम करना सिखाया जाना चाहिए। ब्रैडशॉ ने कहा, उन्हें अलग कर दिया जाना चाहिए।
"ज़रूरी," "ज़रूरी," क्यों "ज़रूरी"? ब्रैडशॉ का उस पर क्या अधिकार था? "ब्रैडशॉ को मुझसे 'ज़रूरी' कहने का क्या हक है?" उसने पूछा।
"क्योंकि तुमने आत्महत्या करने की बात कही थी," रेज़िया ने कहा। (सौभाग्य से, अब वह सेप्टिमस से कुछ भी कह सकती थी।)
तो वो उनके काबू में था! होम्स और ब्रैडशॉ उस पर नज़र रखे हुए थे! लाल नाक वाला वो दरिंदा हर गुप्त जगह पर ताक-झांक कर रहा था! "ज़रूर!" वो कह सकता था! उसके कागज़ात कहाँ थे? उसने जो लिखा था, वो कहाँ था?
वह उसके कागज़ात लेकर आई, जो उसने लिखे थे, जो उसने उसके लिए लिखे थे। उसने उन्हें सोफे पर बिखेर दिया। दोनों ने मिलकर उन्हें देखा। रेखाचित्र, डिज़ाइन, छोटे-छोटे पुरुष और महिलाएं जिनके हाथों में छड़ियां थीं, और पीठ पर पंख थे—क्या वे पंख थे?—शिलिंग और सिक्सपेंस के चारों ओर खींचे गए वृत्त—सूर्य और तारे; टेढ़ी-मेढ़ी चट्टानें जिन पर पर्वतारोही रस्सियों से बंधे हुए चढ़ रहे थे, बिल्कुल चाकू और कांटे की तरह; समुद्र के चित्र जिनमें शायद लहरों से छोटे-छोटे चेहरे हंस रहे थे: दुनिया का नक्शा। इन्हें जला दो! वह चिल्लाया। अब उसकी रचनाएँ; कैसे मृत लोग रोडोडेंड्रोन की झाड़ियों के पीछे गाते हैं; समय के लिए स्तुतिगान; शेक्सपियर के साथ बातचीत; इवांस, इवांस, इवांस—मृतकों के संदेश; पेड़ मत काटो; प्रधानमंत्री को बताओ। सार्वभौमिक प्रेम: दुनिया का अर्थ। इन्हें जला दो! वह चिल्लाया।

लेकिन रेज़िया ने उन्हें छू लिया। उसने सोचा, उनमें से कुछ बहुत सुंदर थे। वह उन्हें रेशम के एक टुकड़े से बांध देगी (क्योंकि उसके पास कोई लिफाफा नहीं था)।
उसने कहा, अगर वे उसे ले भी जाते हैं, तो वह उसके साथ जाएगी। उसने कहा कि वे उनकी इच्छा के विरुद्ध उन्हें अलग नहीं कर सकते।
किनारों को सीधा करते हुए, उसने कागज़ों को समेटा और लगभग बिना देखे ही पार्सल बांध दिया। उसके बगल में बैठी, उसे लगा मानो उसके सारे फूल उसके चारों ओर लिपटे हों। वह एक फूलों का वृक्ष थी; और उसकी शाखाओं से एक विधि निर्माता का चेहरा झाँक रहा था, जो एक ऐसे पवित्र स्थान पर पहुँच गई थी जहाँ उसे किसी का भय नहीं था; न होम्स का; न ब्रैडशॉ का; एक चमत्कार, एक विजय, अंतिम और सबसे महान। लड़खड़ाते हुए उसने उसे होम्स और ब्रैडशॉ से लदी उस भयानक सीढ़ी पर चढ़ते देखा, जो ऐसे पुरुष थे जिनका वजन कभी भी ग्यारह स्टोन छह से कम नहीं होता था, जो अपनी पत्नियों को दरबार भेजते थे, जो दस हजार सालाना कमाते थे और अनुपात की बात करते थे; जिनके फैसले अलग-अलग होते थे (होम्स एक बात कहता था, ब्रैडशॉ दूसरी), फिर भी वे न्यायाधीश थे; जो दृष्टि और साइडबोर्ड को मिला देते थे; कुछ भी स्पष्ट नहीं देखते थे, फिर भी फैसला सुनाते थे, फिर भी सजा देते थे। "जरूरी है" उन्होंने कहा। उन पर उसने विजय प्राप्त की।
"लो!" उसने कहा। कागज़ बंधे हुए थे। किसी को उन तक नहीं पहुंचना चाहिए। वह उन्हें संभाल कर रख देगी।
और उसने कहा, कोई भी चीज़ उन्हें अलग नहीं कर सकती। वह उसके बगल में बैठ गई और उसे उस बाज़ या कौवे के नाम से पुकारा जो दुष्ट और फसलों का बड़ा विनाशक होने के कारण बिल्कुल उसी की तरह था। उसने कहा, कोई भी उन्हें अलग नहीं कर सकता।
फिर वह अपना सामान पैक करने के लिए बेडरूम में जाने के लिए उठी, लेकिन नीचे से आवाजें सुनकर और यह सोचकर कि शायद डॉ. होम्स ने बुलाया होगा, वह उन्हें ऊपर आने से रोकने के लिए नीचे दौड़ गई।
सेप्टिमस सीढ़ियों पर उसे होम्स से बात करते हुए सुन सकता था।
"मेरी प्रिय महिला, मैं एक मित्र के रूप में आया हूँ," होम्स कह रहा था।
"नहीं। मैं तुम्हें अपने पति से मिलने नहीं दूंगी," उसने कहा।

वह उसे एक छोटी मुर्गी की तरह देख सकता था, जिसने अपने पंख फैलाकर उसका रास्ता रोक रखा था। लेकिन होम्स ने हार नहीं मानी।
"मेरी प्रिय महिला, मुझे अनुमति दीजिए..." होम्स ने उसे एक तरफ रखते हुए कहा (होम्स एक मजबूत कद-काठी का आदमी था)।
होम्स ऊपर आ रहे थे। होम्स दरवाजा तोड़कर अंदर आ जाएँगे। होम्स कहेंगे, "परेशान हो, है ना?" होम्स उन्हें पकड़ लेंगे। लेकिन नहीं; होम्स नहीं; ब्रैडशॉ नहीं। लड़खड़ाते हुए, एक पैर से दूसरे पैर पर कूदते हुए, वह श्रीमती फिलमर के साफ-सुथरे ब्रेड नाइफ के बारे में सोचने लगे, जिसके हैंडल पर "ब्रेड" खुदा हुआ था। आह, लेकिन इसे खराब नहीं करना चाहिए। गैस वाली आग? लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। होम्स आ रहे थे। वह रेज़र ला सकते थे, लेकिन रेज़िया, जो हमेशा ऐसा ही करती थी, ने उन्हें पैक कर दिया था। अब बस खिड़की ही बची थी, ब्लूम्सबरी लॉजिंग हाउस की बड़ी खिड़की, खिड़की खोलकर खुद को बाहर फेंकने का थकाऊ, परेशानी भरा और कुछ हद तक नाटकीय काम। त्रासदी का उनका विचार यही था, उनका या रेज़िया का नहीं (क्योंकि वह उनके साथ थी)। होम्स और ब्रैडशॉ को इस तरह की चीजें पसंद हैं। (वह चौखट पर बैठ गए।) लेकिन वह आखिरी पल तक इंतजार करेंगे। वह मरना नहीं चाहते थे। जीवन अच्छा था। धूप तेज थी। आखिर इंसान ही तो थे—वे क्या चाहते थे? सामने वाली सीढ़ियों से नीचे आते हुए एक बूढ़ा आदमी रुक गया और उसे घूरने लगा। होम्स दरवाजे पर खड़ा था। "मैं तुम्हें दे दूंगा!" वह चिल्लाया और श्रीमती फिलमर के कमरे की रेलिंग पर ज़ोर से, बेतहाशा कूद पड़ा।
"कायर!" डॉ. होम्स चिल्लाते हुए दरवाज़ा खोलकर अंदर घुस आए। रेज़िया खिड़की की ओर भागी, उसने देखा; वह समझ गई। डॉ. होम्स और श्रीमती फिल्मर आपस में भिड़ गए। श्रीमती फिल्मर ने अपना एप्रन फड़फड़ाया और रेज़िया को बेडरूम में आँखें छुपने के लिए मजबूर किया। चारों ओर सीढ़ियों पर भागदौड़ मच गई। डॉ. होम्स अंदर आए—उनका चेहरा पीला पड़ गया था, वे काँप रहे थे, उनके हाथ में एक गिलास था। उन्होंने कहा, "उसे हिम्मत दिखानी चाहिए और कुछ पीना चाहिए (क्या? कुछ मीठा), क्योंकि उसके पति की बुरी तरह से क्षत-विक्षत हालत है, उसे होश नहीं आएगा, उसे उससे नहीं मिलना चाहिए, उसे जितना हो सके बचाना चाहिए, बेचारी युवती को तो जाँच से गुज़रना ही होगा। भला कौन इसकी भविष्यवाणी कर सकता था? अचानक आया आवेग, इसमें किसी की कोई गलती नहीं थी

(उन्होंने श्रीमती फिल्मर से कहा)। और उसने ऐसा क्यों किया, यह डॉ. होम्स की समझ से परे था।"
मीठी शराब पीते हुए उसे ऐसा लगा जैसे वह लंबी खिड़कियाँ खोल रही हो और किसी बगीचे में कदम रख रही हो। लेकिन कहाँ? घड़ी बज रही थी—एक, दो, तीन: यह आवाज़ कितनी सुरीली थी; इस सारी धमक और फुसफुसाहट के मुकाबले; मानो सेप्टिमस खुद हो। उसे नींद आ रही थी। लेकिन घड़ी बजती रही, चार, पाँच, छह और श्रीमती फिल्मर अपना एप्रन लहरा रही थीं (वे लाश को यहाँ नहीं लाएँगे, है ना?) मानो उस बगीचे का हिस्सा हों; या कोई झंडा। उसने एक बार वेनिस में अपनी चाची के साथ रहते हुए एक झंडे को मस्तूल से धीरे-धीरे लहराते हुए देखा था। युद्ध में मारे गए सैनिकों को इसी तरह सलामी दी जाती थी, और सेप्टिमस युद्ध से गुज़रा था। उसकी ज़्यादातर यादें सुखद थीं।
उसने अपनी टोपी पहनी और मक्के के खेतों से होते हुए दौड़ पड़ी—यह कहाँ हो सकता था?—किसी पहाड़ी की ओर, समुद्र के पास कहीं, क्योंकि वहाँ जहाज, सीगल, तितलियाँ थीं; वे एक चट्टान पर बैठी थीं। लंदन में भी, वे वहीं बैठी थीं, और आधे सपने में, बेडरूम के दरवाजे से उसके पास आईं, बारिश हो रही थी, फुसफुसाहटें, सूखे मक्के के बीच हलचल, समुद्र का स्पर्श, जैसा कि उसे लगा, जैसे वह उन्हें अपने धनुषाकार खोल में समा रहा हो और किनारे पर लेटी हुई उससे गुनगुना रहा हो, जैसे वह बिखरी हुई हो, जैसे किसी मकबरे पर उड़ते हुए फूल।
“वह मर गया है,” उसने मुस्कुराते हुए उस बूढ़ी औरत को देखा जो दरवाजे पर अपनी नीली आँखों से उसे घूर रही थी। (वे उसे अंदर तो नहीं लाएँगे, है ना?) लेकिन श्रीमती फिल्मर ने इस बात को अनसुना कर दिया। अरे नहीं, अरे नहीं! वे उसे अभी ले जा रहे थे। क्या उन्हें यह नहीं बताया जाना चाहिए? श्रीमती फिल्मर ने सोचा, विवाहित लोगों को साथ रहना चाहिए। लेकिन उन्हें डॉक्टर की बात माननी ही होगी।
डॉ. होम्स ने उसकी नब्ज़ जाँचते हुए कहा, "उसे सोने दो।" उसने खिड़की के सामने उसके शरीर की विशाल आकृति को अंधेरे में खड़े देखा। तो ये थे डॉ. होम्स।
पीटर वॉल्श ने सोचा, सभ्यता की एक जीत। एम्बुलेंस की हल्की, ऊँची घंटी बजते ही यह सभ्यता की एक जीत साबित हुई। एम्बुलेंस तेज़ी से, सफ़ाई से अस्पताल की ओर बढ़ी, और उसने तुरंत, मानवीय तरीके से किसी बेचारे को उठाया;

कोई सिर में चोट खाकर, बीमारी से त्रस्त, शायद एक-दो मिनट पहले ही किसी चौराहे पर गिर गया हो, जैसा कि किसी के साथ भी हो सकता है। यही सभ्यता थी। पूरब से लौटते समय लंदन की कार्यकुशलता, संगठन और सामुदायिक भावना ने उसे झकझोर दिया। हर गाड़ी या ठेला अपने आप एम्बुलेंस को रास्ता देने के लिए एक तरफ हट गया। शायद यह भयावह था; या शायद यह मार्मिक था, जिस तरह से उन्होंने एम्बुलेंस के प्रति सम्मान दिखाया, जिसमें एक पीड़ित बैठा था - व्यस्त लोग घर की ओर जल्दी में थे, फिर भी जैसे ही वह गुजरी, उन्हें अपनी किसी पत्नी की याद आ गई; या शायद यह कि कितनी आसानी से वे भी वहाँ हो सकते थे, एक डॉक्टर और नर्स के साथ लेटे हुए...। आह, लेकिन सोचना भयावह, भावुक हो गया, जैसे ही मन में डॉक्टरों और लाशों की छवि उभरने लगी; दृश्य प्रभाव से उपजे सुख की एक हल्की सी चमक, एक प्रकार की वासना भी, ने चेतावनी दी कि अब इस तरह की चीज़ों से दूर रहना चाहिए—कला के लिए घातक, मित्रता के लिए घातक। सच है। और फिर भी, पीटर वॉल्श ने सोचा, जैसे ही एम्बुलेंस कोने से मुड़ी, हालांकि उसकी तेज़ घंटी अगली गली में और उससे भी आगे टॉटेनहैम कोर्ट रोड पार करते हुए लगातार बजती रही, यह एकांत का विशेषाधिकार है; एकांत में व्यक्ति अपनी मर्ज़ी से कुछ भी कर सकता है। अगर कोई न देखे तो रो भी सकता है। एंग्लो- इंडियन समाज में यही उसकी कमजोरी थी—यह संवेदनशीलता—सही समय पर न रोना, न ही हंसना। मेरे अंदर भी यह है, उसने खंभे के पास खड़े होकर सोचा, जो अब आंसुओं में डूब सकता था। क्यों, भगवान ही जाने। शायद किसी प्रकार की सुंदरता, और दिन का बोझ, जो क्लेरिसा की उस यात्रा से शुरू होकर, अपनी गर्मी, अपनी तीव्रता और एक के बाद एक भावनाओं की टपकती हुई बूंदों से उसे थका चुका था, जो उस तहखाने में उतर रही थीं जहाँ वे खड़े थे, गहरा, अंधेरा, और कोई कभी नहीं जान पाएगा। कुछ हद तक इसी कारण, इसकी पूर्ण और अटूट गोपनीयता के चलते, उसे जीवन एक अनजान बगीचे जैसा लगा, जो मोड़ों और कोनों से भरा था, आश्चर्यजनक, हाँ; सचमुच, ये पल साँस रोक देने वाले थे; ब्रिटिश संग्रहालय के सामने खंभे के पास से गुज़रते हुए, एक ऐसा क्षण आया, जिसमें सब कुछ एक साथ जुड़ गया; यह एम्बुलेंस; और जीवन और मृत्यु। ऐसा लगा जैसे भावनाओं के उस उफान ने उसे किसी बहुत ऊँची छत पर खींच लिया हो और उसका बाकी शरीर, सफेद सीपियों से बिखरे समुद्र तट की तरह, बिल्कुल खाली हो गया हो। एंग्लो-इंडियन समाज में यही उसकी कमजोरी साबित हुई थी - उसकी यह संवेदनशीलता।

एक बार क्लैरिसा उसके साथ कहीं बस की छत पर जा रही थी। ऊपरी तौर पर तो क्लैरिसा बहुत जल्दी भावुक हो जाती थी, कभी उदास, कभी खुश। उन दिनों में वो हमेशा कांपती रहती थी, और उसकी संगत भी बहुत अच्छी थी। बस की छत से वो अजीबोगरीब दृश्य, नाम और लोगों को देखती रहती थी, क्योंकि वे लंदन घूमने जाते थे और कैलेडोनियन बाज़ार से खजाने से भरे थैले लाते थे। उन दिनों क्लैरिसा का एक सिद्धांत था - उनके पास ढेरों सिद्धांत थे, हमेशा सिद्धांत, जैसे युवाओं के होते हैं। ये सिद्धांत उनकी असंतुष्टि की भावना को समझाने के लिए थे; लोगों को न जानना; खुद न पहचाना जाना। भला वे एक-दूसरे को कैसे जान सकते थे? रोज़ मिलते थे; फिर छह महीने या सालों तक नहीं मिलते थे। वे दोनों इस बात से सहमत थे कि लोगों को कितना कम जानना असंतोषजनक था। लेकिन उसने कहा, शाफ़्ट्सबरी एवेन्यू की ओर जाती बस में बैठे हुए, उसे ऐसा लग रहा था जैसे वो हर जगह है; "यहाँ, यहाँ, यहाँ" नहीं; और उसने सीट के पीछे थपथपाया; बल्कि हर जगह। शाफ़्ट्सबरी एवेन्यू की ओर जाते हुए उसने हाथ हिलाया। वो हर पल मौजूद थी। इसलिए, उसे या किसी और को जानने के लिए, उन लोगों को खोजना ज़रूरी था जिन्होंने उन्हें पूरा किया; यहाँ तक कि उन जगहों को भी। जिन लोगों से उसने कभी बात नहीं की थी, उनसे भी उसका एक अजीब सा जुड़ाव था, सड़क पर कोई औरत, काउंटर के पीछे कोई आदमी—यहाँ तक कि पेड़ या खलिहान भी। यह एक पारलौकिक सिद्धांत में परिणत हुआ, जिसने मृत्यु के प्रति उसके भय के साथ, उसे यह विश्वास करने की अनुमति दी, या यूँ कहें कि वह विश्वास करती थी (अपने सभी संशय के बावजूद), कि चूंकि हमारे प्रकट होने वाले हिस्से, यानी हमारा जो हिस्सा दिखाई देता है, वह हमारे दूसरे, अदृश्य हिस्से, जो व्यापक रूप से फैला हुआ है, की तुलना में बहुत क्षणिक होता है, इसलिए अदृश्य हिस्सा जीवित रह सकता है, किसी न किसी तरह इस या उस व्यक्ति से जुड़ा हुआ पाया जा सकता है, या मृत्यु के बाद कुछ स्थानों पर भटकता भी रह सकता है... शायद—शायद।
लगभग तीस वर्षों की उस लंबी दोस्ती पर पीछे मुड़कर देखने पर उनका सिद्धांत कुछ हद तक सही साबित हुआ। उनकी मुलाक़ातें संक्षिप्त, टूटी-फूटी और अक्सर दर्दनाक होती थीं, खासकर उनकी अनुपस्थिति और बीच में आने वाली रुकावटों के कारण (उदाहरण के लिए, आज सुबह, एलिज़ाबेथ एक लंबे पैरों वाले बछड़े की तरह, सुंदर, मूक, ठीक उसी समय आ गई जब वह क्लैरिसा से बात करना शुरू कर रहे थे), लेकिन उनके जीवन पर उनका प्रभाव अतुलनीय था। इसमें एक

रहस्य था। आपको एक तीखा, तीव्र, असहज अनुभव मिलता था—वास्तविक मुलाक़ात; अक्सर बेहद दर्दनाक; फिर भी अनुपस्थिति में, सबसे अप्रत्याशित स्थानों पर, यह खिल उठता, खुल जाता, अपनी सुगंध बिखेरता, आपको छूने, चखने, अपने आस-पास देखने, उसका पूरा एहसास और समझ देता, वर्षों तक गुम रहने के बाद। इस तरह वह उनके पास आई थीं; जहाज पर; हिमालय में; सबसे अजीब चीजों से प्रेरित होकर (सैली सेटन, उदार, उत्साही हंस! ने नीले हाइड्रेंजिया को देखकर उनके बारे में ऐसा ही सोचा था)। उन्होंने उन्हें किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक प्रभावित किया था जिसे वह जानते थे। और हमेशा इसी तरह, उनकी इच्छा के बिना, शांत, शालीन, आलोचनात्मक रूप से उनके सामने आती थीं; या फिर मनमोहक, रोमांटिक, किसी खेत या अंग्रेजी फसल की याद दिलाने वाला। वह उसे अक्सर लंदन में नहीं, बल्कि ग्रामीण इलाकों में देखता था। बॉर्टन में एक के बाद एक दृश्य...।
वह अपने होटल पहुँच गया था। उसने हॉल पार किया, जहाँ लाल रंग की कुर्सियों और सोफ़ों का ढेर लगा था, और नुकीले पत्तों वाले मुरझाए हुए पौधे थे। उसने हुक से अपनी चाबी निकाली। युवती ने उसे कुछ पत्र दिए। वह ऊपर चला गया—वह उसे अक्सर बोर्टन में, गर्मियों के अंत में देखता था, जब वह वहाँ एक सप्ताह या यहाँ तक कि दो सप्ताह के लिए रुकता था, जैसा कि उन दिनों लोग करते थे। पहले वह किसी पहाड़ी की चोटी पर खड़ी होती, अपने बालों पर हाथ रखे, उसका लबादा हवा में लहराता, वह इशारा करती, रोती हुई उनकी ओर देखती— उसे नीचे सेवरन नदी दिखाई देती थी। या किसी जंगल में, केतली में पानी उबाल रही होती—उंगलियों से वह कुछ नहीं कर पाती; धुआँ उनके चेहरों पर उड़ता; उसका छोटा सा गुलाबी चेहरा दिखाई देता; एक झोपड़ी में बैठी एक बूढ़ी औरत से पानी माँगती, जो उन्हें जाते हुए देखने के लिए दरवाजे पर आती थी। वे हमेशा पैदल चलते थे; बाकी लोग गाड़ी चलाते थे। उसे गाड़ी चलाना ऊब जाता था, उस कुत्ते को छोड़कर उसे सभी जानवर नापसंद थे। वे सड़कों पर मीलों पैदल चलते थे। वह रास्ता देखने के लिए रुक जाती, उसे वापस देश के उस पार ले जाती; और वे हर समय बहस करते, कविता पर चर्चा करते, लोगों पर चर्चा करते, राजनीति पर चर्चा करते (वह उस समय कट्टरपंथी थीं); उन्हें किसी बात का एहसास नहीं होता था, सिवाय तब जब वह रुकतीं, किसी दृश्य या पेड़ को देखकर चिल्लातीं और उन्हें भी अपने साथ देखने के लिए मजबूर करतीं; और फिर यही सिलसिला चलता रहता, खेतों से गुज़रते हुए, वह अपनी चाची के लिए एक फूल लेकर आगे चलती

रहतीं, अपनी कोमलता के बावजूद कभी थकती नहीं; और शाम ढलते ही बॉर्टन पहुँच जातीं। फिर, रात के खाने के बाद, बूढ़े ब्रेटकोफ़ पियानो खोलते और बिना आवाज़ के गाते, और वे आरामकुर्सियों में धँस जाते, हँसने की कोशिश न करते, लेकिन हमेशा फूट-फूटकर हँसते, हँसते—बिना किसी बात के हँसते। ब्रेटकोफ़ को देखना नहीं था। और फिर सुबह, घर के सामने एक वैगटेल की तरह इधर-उधर मंडराती...
ओह, ये तो उसका पत्र था! ये नीला लिफाफा; ये उसी की लिखावट थी। और उसे इसे पढ़ना ही होगा। ये एक और ऐसी मुलाकात थी, जो निश्चित रूप से कष्टदायक होगी! उसका पत्र पढ़ने के लिए तो जैसे कोई जन्नत ही चाहिए थी। "उसे देखकर कितना अच्छा लगा। उसे ये बात उसे जरूर बतानी चाहिए।" बस इतना ही।
लेकिन इससे उसे बुरा लगा। उसे गुस्सा आया। उसने चाहा कि काश उसने यह न लिखा होता। उसके विचारों में अचानक यह बात कौंध गई, मानो किसी ने उसकी पसलियों में धक्का मार दिया हो। आखिर वह उसे चैन से क्यों नहीं रहने देती? आखिर उसने डैलोवे से शादी की थी और इतने सालों तक उसके साथ सुख-शांति से रही थी।
ये होटल सुकून देने वाली जगहें नहीं हैं। बिलकुल भी नहीं। अनगिनत लोगों ने उन खूंटियों पर अपनी टोपियाँ टांगी थीं। यहाँ तक कि मक्खियाँ भी, अगर आप सोचें तो, दूसरों की नाक पर बैठी थीं। जहाँ तक उस स्वच्छता की बात है जो उसके सामने आई, वह स्वच्छता नहीं, बल्कि खालीपन, शीतलता थी; एक ऐसी चीज़ जो होनी ही थी। कोई रूखी-सूखी महिला सुबह-सुबह चक्कर लगाती, सूंघती, ताकती, और नीली नाक वाली नौकरानियों से सफाई करवाती, मानो अगला मेहमान मांस का एक टुकड़ा हो जिसे एकदम साफ थाली में परोसा जाना हो। सोने के लिए एक बिस्तर; बैठने के लिए एक आरामकुर्सी; दांत साफ करने और दाढ़ी बनाने के लिए एक गिलास, एक शीशा। किताबें, चिट्ठियाँ, ड्रेसिंग गाउन, घोड़े के बालों की बेजान सतह पर बेमेल बदतमीज़ी की तरह फिसल रहे थे। और यह क्लैरिसा की चिट्ठी थी जिसने उसे यह सब दिखाया। "तुम्हें देखकर स्वर्ग जैसा लगा। उसने ऐसा ही कहा होगा!" उसने कागज़ मोड़ा; उसे दूर धकेल दिया; कोई भी चीज उसे इसे दोबारा पढ़ने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती!
छह बजे तक वह पत्र उस तक पहुँचाने के लिए, उसे उसके जाते ही तुरंत बैठकर लिखना पड़ा होगा; उस पर डाक टिकट लगाना पड़ा होगा; किसी को डाकघर भेजना पड़ा होगा। जैसा कि लोग कहते हैं, यह बिल्कुल उसके स्वभाव के अनुरूप था। वह

उसके आने से परेशान थी। उसने बहुत कुछ महसूस किया था; एक पल के लिए, जब उसने उसका हाथ चूमा, तो उसे पछतावा हुआ, यहाँ तक कि उससे ईर्ष्या भी हुई, शायद उसे कुछ याद आया (क्योंकि उसने देखा कि वह ऐसा ही लग रहा था) जो उसने कहा था — कि अगर वह उससे शादी कर ले तो वे दुनिया बदल देंगे; जबकि, बात यह थी; यह अधेड़ उम्र थी; यह साधारणता थी; फिर उसने अपनी अदम्य ऊर्जा से इन सब बातों को भुला दिया, क्योंकि उसके भीतर जीवन का एक ऐसा धागा था जिसकी दृढ़ता, सहनशीलता, बाधाओं को पार करने की शक्ति और उसे विजयी बनाने की क्षमता उसने पहले कभी नहीं देखी थी। हाँ; लेकिन उसके कमरे से जाते ही एक प्रतिक्रिया होगी। उसे उसके लिए बहुत दुख होगा; वह सोचती रहती कि उसे खुश करने के लिए वह क्या-क्या कर सकती है (हमेशा एक ही चीज़ के अलावा), और वह उसे आँखों में आँसू लिए अपनी लेखन-मेज पर जाते और वह एक पंक्ति लिखते हुए देखता जो उसे संदेश में मिलती... "तुम्हें देखकर स्वर्ग जैसा लगा!" और उसका यही अर्थ था। पीटर वाल्श ने अब अपने बूट के फीते खोल दिए थे।
लेकिन उनकी शादी सफल नहीं होती। आखिरकार, दूसरी बात तो कहीं अधिक स्वाभाविक रूप से हुई।
यह अजीब था; यह सच था; बहुत से लोग ऐसा महसूस करते थे। पीटर वॉल्श, जिसने सम्मानजनक ढंग से काम किया था, अपने सभी पदों को बखूबी निभाया था, लोग उसे पसंद करते थे, लेकिन उसे थोड़ा सनकी और घमंडी समझा जाता था—यह अजीब था कि उसके चेहरे पर, खासकर अब जब उसके बाल सफेद हो गए थे, एक संतुष्ट भाव था; एक ऐसा भाव जिसमें संयम झलकता था। यही बात उसे उन महिलाओं के लिए आकर्षक बनाती थी जो उसके इस अनूठे मर्दानापन को पसंद करती थीं। उसमें कुछ अनोखा था, या कुछ ऐसा जो उसके पीछे छिपा था। हो सकता है कि वह किताबी कीड़ा हो— बिना मेज पर रखी किताब उठाए कभी किसी से मिलने नहीं आता था (वह अभी पढ़ रहा था, उसके जूतों के फीते ज़मीन पर घिसट रहे थे); या फिर वह एक सज्जन व्यक्ति था, जो उसके पाइप से राख झाड़ने के तरीके और महिलाओं के प्रति उसके व्यवहार में झलकता था। क्योंकि यह बहुत आकर्षक और हास्यास्पद था कि कैसे कोई भोली- भाली लड़की उसे आसानी से अपने वश में कर लेती थी। लेकिन अपने जोखिम पर। कहने का तात्पर्य यह है कि, भले ही वह बेहद सहज और अपने हंसमुख स्वभाव और अच्छे व्यवहार से लोगों को आकर्षित करता हो, लेकिन एक सीमा तक ही यह सहजता स्वीकार्य थी। अगर वह कुछ कहती—नहीं, नहीं; वह सब समझ जाता। वह इसे बर्दाश्त नहीं करता—नहीं, नहीं। फिर वह पुरुषों के साथ किसी चुटकुले पर

जोर-जोर से हंस सकता था, झूम सकता था और पेट पकड़कर हंस सकता था। भारत में खाना पकाने का उसे सबसे अच्छा पारखी माना जाता था। वह एक मर्द था। लेकिन वह उस तरह का मर्द नहीं था जिसका सम्मान करना पड़े—जो एक राहत की बात थी; उदाहरण के लिए, मेजर सिमंस जैसा नहीं; डेज़ी सोचती थी, अपने दो छोटे बच्चों के बावजूद, जब वह उन दोनों की तुलना करती थी, तो वह बिल्कुल भी वैसा नहीं था।
उसने अपने जूते उतारे। उसने अपनी जेबें खाली कीं। उसकी जेब में रखे चाकू के साथ बरामदे में खड़ी डेज़ी की एक तस्वीर निकली; डेज़ी पूरी तरह सफेद कपड़ों में, उसकी गोद में एक फॉक्स-टेरियर कुत्ता था; बेहद आकर्षक, बेहद सांवली; उसने उसे अब तक जितने भी रूप में देखा था, यह सबसे खूबसूरत तस्वीर थी। आखिरकार, यह तस्वीर इतनी स्वाभाविक रूप से आई थी; क्लैरिसा से कहीं अधिक स्वाभाविक। कोई झंझट नहीं। कोई परेशानी नहीं। कोई नखरे या बेचैनी नहीं। सब कुछ सहज था। और बरामदे में खड़ी सांवली, मनमोहक लड़की ने कहा (वह उसे सुन सकता था)। बेशक, बेशक वह उसे सब कुछ देगी! वह चिल्लाई (उसमें विवेक का कोई बोध नहीं था) वह सब कुछ जो वह चाहता है! वह चिल्लाई, चाहे कोई भी देख रहा हो, उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ी। और वह सिर्फ चौबीस साल की थी। और उसके दो बच्चे थे। वाह, वाह!
खैर, इस उम्र में उन्होंने खुद को वाकई एक बड़ी मुसीबत में डाल लिया था। और यह बात उन्हें रात में अचानक ज़बरदस्ती समझ में आ गई। मान लीजिए कि उनकी शादी हो जाती? उनके लिए तो सब ठीक होता, लेकिन उनका क्या? श्रीमती बर्गेस, एक अच्छी और बातूनी महिला, जिन पर उन्होंने अपना भरोसा जताया था, सोचती थीं कि वकीलों से मिलने के बहाने इंग्लैंड में उनकी यह अनुपस्थिति शायद डेज़ी को अपने फैसले पर पुनर्विचार करने, इसके मायने समझने में मदद करे। श्रीमती बर्गेस ने कहा कि यह उनकी सामाजिक स्थिति का सवाल था; सामाजिक बाधा; अपने बच्चों को छोड़ना। एक दिन वह विधवा हो जाएंगी, जिनका अतीत भुला दिया गया होगा, उपनगरों में भटकती रहेंगी, या शायद बेपरवाह (आप जानती हैं, उन्होंने कहा, ऐसी औरतें मेकअप करने के बाद कैसी हो जाती हैं)। लेकिन पीटर वॉल्श ने इन सब बातों को सिरे से खारिज कर दिया। उनका अभी मरने का इरादा नहीं था। खैर, उन्हें अपने लिए तो समझौता करना ही होगा; वह खुद ही फैसला कर ले, उसने सोचा, मोजे पहने कमरे में इधर-उधर घूमते हुए, अपनी कमीज को ठीक करते हुए, क्योंकि हो सकता है वह क्लैरिसा की पार्टी में जाए, या किसी हॉल में जाए,

या आराम से बैठकर ऑक्सफोर्ड में अपने किसी परिचित की कोई दिलचस्प किताब पढ़े। और अगर वह रिटायर हो भी गया, तो यही करेगा—किताबें लिखेगा। वह ऑक्सफोर्ड जाएगा और बोडलियन संग्रहालय में छानबीन करेगा। सांवली, बेहद खूबसूरत लड़की व्यर्थ ही छत के आखिरी छोर तक दौड़ी; व्यर्थ ही हाथ हिलाया; व्यर्थ ही चिल्लाई कि लोगों की बातों से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। वहीं वह था, वह आदमी जिसे वह दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार करती थी, एक आदर्श सज्जन, आकर्षक, प्रतिष्ठित (और उसकी उम्र उसके लिए जरा भी मायने नहीं रखती थी), ब्लूम्सबरी के एक होटल के कमरे में इधर-उधर घूम रहा था, शेव कर रहा था, नहा रहा था, और डिब्बे उठाते और रेजर रखते हुए बोडलियन संग्रहालय में छानबीन करता रहा, और उन एक-दो छोटी-छोटी बातों के बारे में सच्चाई जानने की कोशिश करता रहा जिनमें उसकी दिलचस्पी थी। और वह जिससे भी बात करता, उससे बातचीत करता रहता, और इस तरह दोपहर के भोजन के निश्चित समय को धीरे-धीरे नजरअंदाज करने लगता, अपनी मुलाकातों में नहीं पहुँच पाता, और जब डेज़ी उससे, जैसा कि वह अक्सर करती, एक चुंबन या एक दृश्य के लिए पूछती, तो वह उसकी इच्छा पूरी नहीं कर पाता (हालाँकि वह वास्तव में उससे बहुत प्यार करता था) - संक्षेप में, जैसा कि श्रीमती बर्गेस ने कहा, शायद बेहतर होता कि वह उसे भूल जाए, या उसे केवल अगस्त 1922 में जैसा वह था, वैसा ही याद रखे, जैसे शाम के समय चौराहे पर खड़ी एक आकृति, जो जैसे-जैसे गाड़ी घूमती हुई दूर जाती जाती है, वैसे-वैसे और दूर होती जाती है, उसे पिछली सीट पर सुरक्षित रूप से बांधे हुए, हालाँकि उसकी बाहें फैली हुई हैं, और जैसे ही वह आकृति को छोटा और गायब होते हुए देखती है, वह चिल्लाती है कि वह दुनिया में कुछ भी करेगी, कुछ भी, कुछ भी, कुछ भी...।
उसे कभी पता नहीं चलता था कि लोग क्या सोचते हैं। उसके लिए ध्यान केंद्रित करना दिन-ब-दिन मुश्किल होता जा रहा था। वह लीन हो जाता था; अपनी ही चिंताओं में मग्न हो जाता था; कभी चिड़चिड़ा, कभी खुशमिजाज; महिलाओं पर निर्भर, अन्यमनस्क, मूडी, और (दाढ़ी बनाते हुए उसे ऐसा ही लगा) यह समझने में असमर्थ होता जा रहा था कि क्लैरिसा उनके लिए कोई कमरा क्यों नहीं ढूंढ सकती और डेज़ी के साथ अच्छा व्यवहार क्यों नहीं कर सकती; उसका परिचय क्यों नहीं करा सकती। और फिर वह बस—बस क्या कर सकता था? बस मंडराता और घूमता रहता (वह इस समय वास्तव में कई चाबियों और कागजों को व्यवस्थित करने में व्यस्त था), झपट्टा मारता और स्वाद लेता, अकेला रहता, संक्षेप में, अपने आप

में पर्याप्त; और फिर भी, बेशक कोई भी दूसरों पर इतना निर्भर नहीं था (उसने अपनी जैकेट के बटन बंद किए); यही उसकी बर्बादी का कारण था। वह धूम्रपान कक्षों से दूर नहीं रह पाता था, उसे कर्नल पसंद थे, गोल्फ पसंद था, ब्रिज पसंद था, और सबसे बढ़कर महिलाओं की संगति, उनकी संगति की कोमलता, उनकी वफादारी, उनका साहस और प्रेम में उनकी महानता, जिसमें कुछ कमियाँ होने के बावजूद भी वह उसे (और लिफाफों के ऊपर छपा हुआ वह सांवला, मनमोहक चेहरा) अत्यंत प्रशंसनीय, मानव जीवन के शिखर पर खिलने वाला एक शानदार फूल प्रतीत होता था। फिर भी वह उस स्तर तक नहीं पहुँच पाता था, क्योंकि वह हमेशा चीजों को घुमा-फिराकर देखता था (क्लेरिसा ने उसके अंदर कुछ स्थायी रूप से खोखला कर दिया था), और मौन भक्ति से बहुत जल्दी ऊब जाता था और प्रेम में विविधता चाहता था, हालाँकि अगर डेज़ी किसी और से प्रेम करती तो वह क्रोधित हो जाता, क्रोधित! क्योंकि वह स्वभाव से ही ईर्ष्यालु था, अनियंत्रित रूप से ईर्ष्यालु। वह पीड़ा सहता था! लेकिन उसका चाकू कहाँ था; उसकी घड़ी; उसकी मुहरें, उसका नोटों का डिब्बा, और क्लेरिसा का वह पत्र जिसे वह दोबारा नहीं पढ़ना चाहता था लेकिन जिसके बारे में सोचना उसे अच्छा लगता था, और डेज़ी की तस्वीर? और अब रात के खाने का समय हो गया है।
वे खाना खा रहे थे।
फूलदानों के चारों ओर छोटी-छोटी मेजों पर बैठीं, सजी-धजी या बिना सजी- धजी, अपने शॉल और थैले बगल में रखे हुए, बनावटी संयम का भाव लिए, क्योंकि वे रात के खाने में इतने सारे पकवानों की आदी नहीं थीं, और आत्मविश्वास से भरी हुई, क्योंकि वे बिल चुकाने में सक्षम थीं, और तनाव में, क्योंकि वे सारा दिन लंदन में खरीदारी और दर्शनीय स्थलों की सैर कर रही थीं; और उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा, क्योंकि सींग के फ्रेम वाले चश्मे पहने उस सजे-धजे सज्जन के अंदर आते ही उन्होंने चारों ओर और ऊपर देखा, और उनका अच्छा स्वभाव, क्योंकि वे कोई भी छोटी-मोटी सेवा करने में प्रसन्न होतीं, जैसे कि समय-सारणी देना या उपयोगी जानकारी देना, और उनके भीतर धड़कती हुई, दबी हुई इच्छा, किसी भी तरह संबंध स्थापित करने की, चाहे वह केवल एक ही जन्मस्थान (उदाहरण के लिए लिवरपूल) हो या एक ही नाम के मित्र हों; उनकी चोरी-छिपे निगाहें, अजीब सी चुप्पी, और अचानक पारिवारिक हंसी-मजाक और एकांत में सिमट जाना; वे वहीं बैठकर रात का खाना खा रही थीं जब श्री वाल्श अंदर आए और पर्दे के पास एक छोटी सी मेज पर बैठ गए।

ऐसा नहीं था कि उन्होंने कुछ कहा हो, क्योंकि अकेले होने के कारण वे केवल वेटर से ही बात कर सकते थे; बल्कि मेनू को देखने का उनका तरीका, किसी खास वाइन की ओर तर्जनी उंगली से इशारा करना, मेज पर सटकर बैठना, और भोजन को गंभीरता से खाना, न कि लालच से, ने उनका सम्मान जीता; जो भोजन के अधिकांश समय तक अनकहा रहा, और मॉरिस परिवार की मेज पर तब भड़क उठा जब भोजन के अंत में श्री वाल्श को "बार्टलेट नाशपाती" कहते सुना गया। उन्होंने इतनी संयमित लेकिन दृढ़ता से, एक अनुशासक की तरह, न्याय पर आधारित अपने अधिकारों के भीतर बोलते हुए ऐसा क्यों किया, यह न तो युवा चार्ल्स मॉरिस, न बूढ़े चार्ल्स, न मिस एलेन और न ही श्रीमती मॉरिस को पता था। लेकिन जब उन्होंने अपनी मेज पर अकेले बैठे हुए "बार्टलेट नाशपाती" कहा, तो उन्हें लगा कि वे किसी वैध मांग में उनके समर्थन की उम्मीद कर रहे हैं; वह एक ऐसे उद्देश्य के समर्थक थे जो तुरंत उनका अपना बन गया, जिससे उनकी निगाहें सहानुभूति से उनकी निगाहों से मिलीं, और जब वे सभी एक साथ धूम्रपान कक्ष में पहुंचे, तो उनके बीच थोड़ी बातचीत अपरिहार्य हो गई।
यह कोई बहुत गंभीर बात नहीं थी—बस इतना ही कि लंदन में बहुत भीड़ है; तीस सालों में कितना बदलाव आ चुका है; श्री मॉरिस को लिवरपूल ज़्यादा पसंद है; श्रीमती मॉरिस वेस्टमिंस्टर पुष्प प्रदर्शनी में गई थीं, और उन सभी ने वेल्स के राजकुमार को देखा था। फिर भी, पीटर वॉल्श ने सोचा, दुनिया में कोई भी परिवार मॉरिस परिवार की बराबरी नहीं कर सकता; बिल्कुल भी नहीं; और उनके आपसी संबंध एकदम सही हैं, और उन्हें उच्च वर्ग की कोई परवाह नहीं है, और वे जो चाहें करते हैं, एलेन पारिवारिक व्यवसाय के लिए प्रशिक्षण ले रही है, और लड़के को लीड्स में छात्रवृत्ति मिल गई है, और बुढ़िया (जो लगभग उसकी ही उम्र की है) के घर पर तीन और बच्चे हैं; और उनके पास दो कारें हैं, लेकिन श्री मॉरिस अभी भी रविवार को जूते ठीक करते हैं: यह शानदार है, बिल्कुल शानदार है, पीटर वॉल्श ने सोचा, अपने हाथ में शराब का गिलास लिए, लाल रंग की रोएँदार कुर्सियों और ऐशट्रे के बीच थोड़ा आगे-पीछे झूलते हुए, खुद पर बहुत गर्व महसूस कर रहा था, क्योंकि मॉरिस परिवार उसे पसंद करता था। हाँ, उन्हें वह आदमी पसंद आया जिसने कहा, "बार्टलेट नाशपाती।" उसे लगा कि वे उसे पसंद करते हैं।
वह क्लैरिसा की पार्टी में जाएगा। (मॉरिस परिवार वहाँ से चला गया था; लेकिन वे फिर मिलेंगे।) वह क्लैरिसा की पार्टी में इसलिए जाएगा क्योंकि

वह रिचर्ड से पूछना चाहता था कि वे रूढ़िवादी लोग भारत में क्या कर रहे हैं। और वहाँ क्या-क्या हो रहा है? और संगीत...। ओह हाँ, और बस गपशप भी। क्योंकि यही हमारी आत्मा का सच है, उसने सोचा, हमारा स्व, जो मछली की तरह गहरे समुद्रों में निवास करता है और अंधकार में भटकता है, विशाल समुद्री शैवालों के तनों के बीच से अपना रास्ता बनाता है, सूर्य की टिमटिमाती रोशनी से जगमगाते स्थानों से होकर गुजरता है और अंधकार, ठंड, गहराई और रहस्य में डूबता चला जाता है; अचानक वह सतह पर आ जाती है और हवा से झुर्रीदार लहरों पर खेलती है; यानी, उसे खुद को संवारने, खरोंचने, प्रज्वलित करने और गपशप करने की तीव्र आवश्यकता होती है। रिचर्ड डैलोवे को पता होगा कि सरकार भारत के बारे में क्या करने वाली थी?
चूंकि वह रात बहुत गर्म थी और अखबार बेचने वाले बड़े-बड़े लाल अक्षरों में लू चलने की घोषणा वाले पोस्टर लेकर घूम रहे थे, इसलिए होटल की सीढ़ियों पर बेंत की कुर्सियाँ रखी गईं और वहाँ कुछ सज्जन लोग घूँट भरते, सिगरेट पीते हुए, एकांत में बैठे थे। पीटर वॉल्श भी वहीं बैठे थे। ऐसा लग सकता है कि लंदन का वह दिन अभी शुरू ही हुआ था। जैसे कोई स्त्री अपनी प्रिंटेड ड्रेस और सफेद एप्रन उतारकर नीले रंग और मोतियों से सजी हो, वैसे ही दिन बदल गया, पुरानी चीजें उतार दीं, पर्दा उठा लिया, शाम में बदल गया, और उसी उत्साह भरी आह के साथ जो एक स्त्री पेटीकोट को ज़मीन पर गिराते हुए भरती है, उसने भी धूल, गर्मी और रंग को त्याग दिया; यातायात कम हो गया; वैनों के भारी शोर के बाद मोटर कारें, झनझनाती, दौड़ती हुई, चलने लगीं; और चौकों की घनी हरियाली के बीच कहीं-कहीं एक तीव्र प्रकाश चमक रहा था। जैसे-जैसे शाम होटल, फ्लैट और दुकानों के ब्लॉक की गढ़ी हुई, नुकीली, ऊँची दीवारों और ऊँचाइयों के ऊपर फीकी पड़ती गई, मानो कह रही हो, मैं त्याग देती हूँ; मैं लुप्त हो जाती हूँ, वह कहने लगी थी, मैं गायब हो जाती हूँ, लेकिन लंदन ने इसे स्वीकार नहीं किया और अपनी संगीनों को आकाश में धावा बोल दिया, उसे जकड़ लिया, उसे अपने ही उत्सव में भागीदार बनने के लिए विवश कर दिया। श्री विलेट के ग्रीष्मकाल की महान क्रांति पीटर वॉल्श की इंग्लैंड की पिछली यात्रा के बाद से घटी थी। लंबी शाम उनके लिए नई थी। बल्कि, यह उत्साहवर्धक थी। क्योंकि जैसे ही युवा लोग अपने डिस्पैच-बॉक्स लेकर जा रहे थे, वे आज़ाद होकर बेहद खुश थे, साथ ही इस प्रसिद्ध फुटपाथ पर कदम रखने पर गर्व भी महसूस कर रहे थे, एक तरह की खुशी, सस्ती, दिखावटी, अगर आप चाहें

नहीं होती, यानी अपनी मर्जी से काम करने की आज़ादी, लोगों की बातों की परवाह न करने की आज़ादी, और बिना किसी बड़ी उम्मीद के आने-जाने की आज़ादी (उन्होंने अपना अखबार मेज पर रखा और चले गए)। हालांकि (उन्होंने अपनी टोपी और कोट ढूंढा) यह बात उन पर पूरी तरह लागू नहीं होती थी, आज रात तो बिलकुल नहीं, क्योंकि इस उम्र में वे एक पार्टी में जा रहे थे, इस उम्मीद के साथ कि उन्हें एक यादगार अनुभव मिलने वाला है। लेकिन क्या?
किसी भी तरह की सुंदरता। आँखों को भाने वाली भद्दी सुंदरता नहीं। यह सिर्फ़ बेडफोर्ड प्लेस से रसेल स्क्वायर की ओर जाने वाली सीधी-सादी सुंदरता नहीं थी। यह निश्चित रूप से सीधापन और खालीपन था; एक गलियारे की समरूपता; लेकिन इसमें रोशन खिड़कियाँ, एक पियानो, एक ग्रामोफोन की आवाज़ भी थी; आनंद का एक छिपा हुआ एहसास, जो कभी-कभी उभर आता था जब बिना पर्दे वाली खुली खिड़की से मेजों पर बैठे समूह, युवा लोग धीरे-धीरे चक्कर लगाते हुए, पुरुषों और महिलाओं के बीच बातचीत, नौकरानियाँ यूँ ही बाहर देखती हुई (काम खत्म होने पर उनकी एक अजीब सी टिप्पणी), ऊपरी किनारों पर सूखती हुई मोज़े, एक तोता, कुछ पौधे दिखाई देते थे। मनमोहक, रहस्यमय, असीम समृद्धि से भरा, यह जीवन। और उस बड़े चौक में जहाँ टैक्सियाँ तेज़ी से दौड़ती और मुड़ती थीं, वहाँ कुछ जोड़े टहलते हुए, एक-दूसरे को गले लगाते हुए, एक पेड़ की छाँव में सिमटे हुए थे; वह दृश्य मार्मिक था; इतनी खामोशी, इतना तल्लीनता भरा माहौल कि कोई दबे पांव, संकोच से, मानो किसी पवित्र समारोह में हो, जिसे बाधित करना अधार्मिक होता। यह दिलचस्प था। और फिर अचानक चकाचौंध और रोशनी का दौर शुरू हो गया।
उसका हल्का ओवरकोट हवा से खुल गया, वह अवर्णनीय विलक्षणता के साथ आगे बढ़ा, थोड़ा आगे झुका, लड़खड़ाया, उसके हाथ उसकी पीठ के पीछे थे और उसकी आँखें अभी भी थोड़ी बाज जैसी थीं; वह लंदन से होते हुए वेस्टमिंस्टर की ओर लड़खड़ाता हुआ चला, अवलोकन करता हुआ।
क्या सब लोग बाहर खाना खाने जा रहे थे? यहाँ एक नौकर दरवाज़े खोल रहा था ताकि बकल वाले जूतों में तीन बैंगनी शुतुरमुर्ग के पंख लगाए एक ऊँची चाल वाली बुढ़िया बाहर जा सके। दरवाज़े उन महिलाओं के लिए खोले जा रहे थे जो ममी की तरह चमकीले फूलों वाले शॉल में लिपटी थीं, और उन महिलाओं के लिए भी जिनके सिर ढके हुए नहीं थे। और प्लास्टर के खंभों वाले सभ्य घरों में छोटे- छोटे बगीचों से होकर, बालों में कंघी लगाए (बच्चों को देखने के बाद),

महिलाएं आ रही थीं; पुरुष अपने कोट हवा में लहराते हुए उनका इंतज़ार कर रहे थे, और मोटर चालू हो गई। सब लोग बाहर जा रहे थे। इन दरवाज़ों के खुलने, उतरने और चलने के साथ, ऐसा लग रहा था मानो पूरा लंदन किनारे पर बंधी छोटी नावों में सवार होकर पानी पर उछल रहा हो, मानो पूरा शहर कार्निवल में तैर रहा हो। और व्हाइटहॉल पर, चांदी की तरह चमकती हुई इमारत पर, मकड़ियों के चलने का एहसास हो रहा था, और आर्क लैंप के आसपास मच्छरों का भिनभिनाना हो रहा था; इतनी गर्मी थी कि लोग खड़े-खड़े बातें कर रहे थे। और यहाँ वेस्टमिंस्टर में एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश, संभवतः, अपने घर के दरवाजे पर सफेद कपड़ों में चार-चार की पंक्ति में बैठे थे। संभवतः एक एंग्लो- इंडियन।
और यहाँ झगड़ालू औरतों का जमावड़ा, शराबी औरतें; यहाँ बस एक पुलिसवाला और विशाल घर, ऊँचे घर, गुंबददार घर, गिरजाघर, संसद भवन, और नदी पर चलते स्टीमर की धीमी, खोखली, धुंधली सी आवाज़। लेकिन यह उसकी गली थी, क्लैरिसा की; टैक्सी कोने से ऐसे तेज़ी से आ रही थीं जैसे पुल के खंभों के चारों ओर पानी बहता है, मानो सब एक साथ खिंचे चले आ रहे हों, उसे ऐसा लग रहा था क्योंकि उनमें लोग क्लैरिसा की पार्टी में जा रहे थे।
दृश्य छापों की ठंडी धारा अब उसका साथ छोड़ रही थी, मानो आँख एक ऐसा प्याला हो जो छलक गया हो और शेष तरल उसके चीनी मिट्टी के बर्तनों की दीवारों से बिना दर्ज किए बह गया हो। अब मस्तिष्क को जागना होगा। अब शरीर को सिकुड़ना होगा, घर में प्रवेश करना होगा, उस रोशन घर में, जहाँ दरवाजा खुला था, जहाँ गाड़ियाँ खड़ी थीं, और चमकती हुई स्त्रियाँ उतर रही थीं: आत्मा को सहन करने के लिए साहस दिखाना होगा। उसने अपनी जेब में रखे चाकू का बड़ा ब्लेड खोला।
लूसी पूरी तेज़ी से नीचे भागी, वह अभी-अभी ड्राइंग रूम में एक कवर को ठीक करने, एक कुर्सी को सीधा करने और एक पल रुककर यह सोचने के लिए गई थी कि जो भी अंदर आएगा, वह सोचेगा कि यह कितना साफ, कितना चमकदार और कितनी खूबसूरती से सजाया गया है, जब वे सुंदर चांदी के बर्तन, पीतल के चूल्हे, नए कुर्सी कवर और पीले रंग के पर्दे देखेंगे: उसने हर चीज़ का जायज़ा लिया; उसे कई आवाज़ों का शोर सुनाई दिया; लोग पहले ही खाना खाकर ऊपर आ रहे थे; उसे जल्दी जाना होगा!

एग्नेस ने कहा, प्रधानमंत्री आ रहे हैं; उसने खाने के कमरे में लोगों को ऐसा कहते सुना था, और वह गिलासों की ट्रे लेकर अंदर आई। क्या इससे कोई फर्क पड़ता है, ज़रा भी फर्क पड़ता है, एक प्रधानमंत्री कम या ज़्यादा? रात के इस समय श्रीमती वॉकर के लिए कोई फर्क नहीं पड़ रहा था, क्योंकि चारों ओर प्लेटें, बर्तन, छलनी, फ्राइंग पैन, चिकन, आइसक्रीम फ्रीजर, ब्रेड के छिलके, नींबू, सूप के बर्तन और हलवे के कटोरे बिखरे पड़े थे, जो चाहे कितनी भी सफाई से धोए गए हों, सब कुछ उनके ऊपर, रसोई की मेज पर, कुर्सियों पर पड़ा था, जबकि आग धधक रही थी, बिजली की बत्तियाँ चमक रही थीं, और अभी भी खाना परोसना बाकी था। उन्हें बस इतना महसूस हो रहा था कि एक प्रधानमंत्री कम या ज़्यादा से श्रीमती वॉकर को कोई फर्क नहीं पड़ता।
लूसी ने कहा, "महिलाएँ पहले ही ऊपर जा रही थीं; वे एक-एक करके ऊपर जा रही थीं, श्रीमती डैलोवे सबसे आखिर में जाती थीं और लगभग हमेशा रसोई में कोई न कोई संदेश भेजती थीं, 'श्रीमती वॉकर को मेरा प्यार,' एक रात उन्होंने यही संदेश भेजा था। अगली सुबह वे खाने की जाँच करतीं—सूप, सैल्मन; श्रीमती वॉकर जानती थीं कि सैल्मन हमेशा की तरह अधपका था, क्योंकि वह हमेशा पुडिंग को लेकर घबरा जाती थीं और उसे जेनी पर छोड़ देती थीं; और ऐसा ही होता था, सैल्मन हमेशा अधपका ही रहता था। लेकिन लूसी ने कहा, "सुनहरे बालों और चाँदी के गहने पहने किसी महिला ने मुख्य व्यंजन के बारे में कहा था, क्या वह सचमुच घर पर बना था?" लेकिन श्रीमती वॉकर को सैल्मन ही परेशान कर रहा था, क्योंकि वह प्लेटों को गोल-गोल घुमा रही थीं, और ढक्कन खींच-खींच रही थीं; तभी खाने के कमरे से ज़ोरदार हँसी की आवाज़ आई; एक आवाज़ सुनाई दी; फिर हँसी की एक और गूँज—महिलाओं के जाने के बाद सज्जन लोग मजे कर रहे थे। "टोके!" लूसी दौड़ते हुए अंदर आई। "श्री डैलोवे ने सम्राट के तहखानों से टोके मंगवाया था, शाही टोके।"
यह रसोई से होकर गुज़रा। लूसी ने कंधे पर से बताया कि मिस एलिज़ाबेथ कितनी प्यारी लग रही थीं; वह उनसे नज़रें नहीं हटा पा रही थीं; गुलाबी पोशाक में, श्री डैलोवे द्वारा दिए गए हार में। जेनी को मिस एलिज़ाबेथ के कुत्ते, फॉक्स-टेरियर को याद रखना चाहिए, जिसने काटने के बाद उसे बंद करके रखना पड़ा था और शायद एलिज़ाबेथ को लगा कि उसे किसी चीज़ की ज़रूरत है। जेनी को कुत्ते को याद रखना चाहिए। लेकिन इतने सारे लोगों के बीच जेनी ऊपर

नहीं जा रही थी। दरवाज़े पर पहले से ही मोटर की आवाज़ आ रही थी! घंटी बजी— और सज्जन अभी भी भोजन कक्ष में टोके पी रहे थे!
वहाँ, वे ऊपर जा रही थीं; वे सबसे पहले आईं, और अब वे और भी तेज़ी से आने लगीं, इसलिए श्रीमती पार्किंसन (पार्टियों के लिए रखी गई) हॉल का दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ देतीं, और हॉल इंतज़ार कर रहे सज्जनों से भर जाता (वे अपने बालों को संवारते हुए इंतज़ार कर रहे थे) जबकि महिलाएँ गलियारे के किनारे वाले कमरे में अपने लबादे उतार रही थीं; जहाँ श्रीमती बार्नेट उनकी मदद कर रही थीं, बूढ़ी एलेन बार्नेट, जो चालीस वर्षों से परिवार के साथ थीं, और हर गर्मियों में महिलाओं की मदद करने आती थीं, और अपनी माताओं को बचपन की याद रखती थीं, और बहुत ही विनम्र होते हुए भी हाथ मिलाती थीं; "मैडम" बहुत सम्मानपूर्वक कहती थीं, फिर भी उनका हास्यबोध युवा महिलाओं को देखता था, और बड़ी चतुराई से लेडी लवजॉय की मदद करती थीं, जिन्हें अपने लबादे को ठीक करने में कुछ परेशानी हो रही थी। और लेडी लवजॉय और मिस एलिस को यह महसूस हो रहा था कि श्रीमती बार्नेट को जानने के कारण उन्हें ब्रश और कंघी के मामले में कुछ विशेष सुविधा मिली हुई है—"तीस साल हो गए, मैडम," श्रीमती बार्नेट ने उन्हें बताया। लेडी लवजॉय ने कहा, पुराने ज़माने में जब युवतियाँ बॉर्टन में रहती थीं, तब वे रूज नहीं लगाती थीं। और मिस ऐलिस को भी रूज की ज़रूरत नहीं थी, श्रीमती बार्नेट ने स्नेह से उनकी ओर देखते हुए कहा। श्रीमती बार्नेट अक्सर क्लोकरूम में बैठकर फर के कपड़ों को थपथपाती, स्पैनिश शॉल को समेटती, ड्रेसिंग टेबल को साफ करती रहतीं और फर और कढ़ाई के बावजूद उन्हें अच्छी तरह पता होता था कि कौन सी महिलाएँ सभ्य हैं और कौन नहीं। लेडी लवजॉय सीढ़ियाँ चढ़ते हुए बोलीं, प्यारी बूढ़ी औरत, क्लेरिसा की पुरानी नर्स।
फिर लेडी लवजॉय एकदम सख्त हो गईं। उन्होंने मिस्टर विल्किंस (पार्टियों के लिए नियुक्त) से कहा, "लेडी और मिस लवजॉय।" उनका व्यवहार प्रशंसनीय था, वे झुकते और सीधे होते रहे, फिर झुकते और सीधे होते रहे और पूरी निष्पक्षता से घोषणा की, "लेडी और मिस लवजॉय... सर जॉन और लेडी नीडहम... मिस वेल्ड... मिस्टर वॉल्श।" उनका व्यवहार प्रशंसनीय था; उनका पारिवारिक जीवन निर्दोष ही रहा होगा, सिवाय इसके कि यह असंभव सा लगता था कि हरे होंठों और मुंडे हुए गालों वाला कोई व्यक्ति बच्चों के झंझट में पड़ सकता है।

"आपको देखकर कितनी खुशी हुई!" क्लैरिसा ने कहा। उसने यह बात हर किसी से कही। आपको देखकर कितनी खुशी हुई! वह अपने सबसे बुरे रूप में थी—अति भावुक, बनावटी। यहाँ आना एक बड़ी गलती थी। पीटर वॉल्श ने सोचा, उसे घर पर रहकर अपनी किताब पढ़नी चाहिए थी; किसी संगीत हॉल में जाना चाहिए था; उसे घर पर ही रहना चाहिए था, क्योंकि वह यहाँ किसी को नहीं जानता था।
ओह, ये तो नाकामयाबी ही होने वाली थी; पूरी तरह नाकामयाबी। क्लैरिसा को ये बात अंदर तक महसूस हो रही थी, जब बेचारे लॉर्ड लेक्सहैम बकिंघम पैलेस की गार्डन पार्टी में सर्दी लगने से बीमार अपनी पत्नी के लिए माफ़ी मांग रहे थे। उसे अपनी आँखों के कोने से पीटर नज़र आ रहा था, जो उस कोने में उसकी आलोचना कर रहा था। आख़िर वो ये सब क्यों करती है? ऊँचाइयों की तलाश में आग में क्यों भीगती है? कहीं ये आग उसे भस्म न कर दे! राख में बदल जाए! कुछ भी हो, अपनी मशाल लहराकर उसे ज़मीन पर फेंक देना, एली हेंडरसन की तरह धीरे- धीरे खत्म हो जाने से बेहतर है! ये अजीब था कि पीटर सिर्फ़ आकर कोने में खड़े होकर उसे ऐसी हालत में डाल देता था। वो उसे खुद को दिखाता था; अतिशयोक्ति करता था। ये बेवकूफ़ी थी। लेकिन फिर वो सिर्फ़ आलोचना करने क्यों आता है? हमेशा लेना ही क्यों, कभी देना क्यों नहीं? अपने छोटे से नज़रिए को ज़ाहिर करने का जोखिम क्यों नहीं? वो इधर-उधर भटक रहा था, और उसे उससे बात करनी ही थी। लेकिन उसे मौका नहीं मिलेगा। ज़िंदगी यही थी—अपमान, त्याग। लॉर्ड लेक्सहैम का कहना था कि उनकी पत्नी गार्डन पार्टी में फर के कपड़े नहीं पहनेंगी क्योंकि "मेरी प्यारी, तुम सब महिलाएं एक जैसी हो"— लेडी लेक्सहैम तो कम से कम पचहत्तर साल की थीं! उस बूढ़े जोड़े का एक-दूसरे को प्यार से दुलारना बड़ा प्यारा था। उन्हें बूढ़े लॉर्ड लेक्सहैम पसंद थे। उन्हें लगता था कि उनकी पार्टी मायने रखती है, और यह जानकर उन्हें बहुत बुरा लग रहा था कि सब कुछ गड़बड़ हो रहा है, सब कुछ बेकार हो रहा है। कुछ भी, कोई भी धमाका, कोई भी भयानक घटना, लोगों के इधर-उधर भटकने, एली हेंडरसन की तरह एक कोने में झुंड बनाकर खड़े रहने, यहाँ तक कि सीधे खड़े रहने की भी परवाह न करने से बेहतर थी।
धीरे से स्वर्ग के पक्षियों से सजा पीला पर्दा हवा में लहराया और ऐसा लगा जैसे कमरे में पंखों की उड़ान हुई हो, एकदम बाहर निकली हो और फिर वापस अंदर चली गई हो। (क्योंकि खिड़कियाँ खुली थीं।) क्या हवा का झोंका आ रहा था, एली हेंडरसन ने सोचा? उसे ठंड लग रही थी। लेकिन कल छींक आने से क्या

फर्क पड़ता है; उसे नंगे कंधों वाली लड़कियों की याद आ रही थी, जिन्हें एक बूढ़े पिता, जो बीमार थे और बॉर्टन के पूर्व पादरी थे, ने दूसरों के बारे में सोचना सिखाया था, लेकिन अब वे मर चुके थे; और उसकी ठंड कभी उसके सीने तक नहीं पहुँचती थी, कभी नहीं। उसे उन लड़कियों की याद आ रही थी, नंगे कंधों वाली युवा लड़कियों की, क्योंकि वह खुद हमेशा से दुबली-पतली रही थी, अपने पतले बालों और दुबले-पतले चेहरे के साथ; हालांकि अब, पचास की उम्र पार कर चुकी, उसके व्यक्तित्व में एक हल्की सी चमक दिखाई देने लगी थी, कुछ ऐसा जो वर्षों के आत्म-त्याग से शुद्ध होकर विशिष्टता में तब्दील हो गया था, लेकिन उसकी कष्टदायक शालीनता, तीन सौ पाउंड की आमदनी से उपजे उसके भय और उसकी निहत्थी स्थिति (वह एक पैसा भी नहीं कमा सकती थी) के कारण हमेशा के लिए धुंधला पड़ जाता था। इसने उसे डरपोक बना दिया था, और साल दर साल वह उन सजे-धजे लोगों से मिलने के लिए और भी अयोग्य होती जा रही थी जो हर रात इस तरह का काम करते थे, बस अपनी नौकरानियों से कहते थे "मैं ऐसा-ऐसा पहनूंगी", जबकि एली हेंडरसन घबराकर बाहर भागी और सस्ते गुलाबी फूल, आधा दर्जन, खरीद लाई और फिर अपनी पुरानी काली पोशाक पर एक शॉल डाल ली। क्योंकि क्लैरिसा की पार्टी का निमंत्रण उसे आखिरी समय पर मिला था। वह इससे पूरी तरह खुश नहीं थी। उसे ऐसा लग रहा था कि क्लैरिसा ने इस साल उसे बुलाने का इरादा नहीं किया था।
उसे ऐसा क्यों करना चाहिए था? असल में कोई वजह नहीं थी, सिवाय इसके कि वे हमेशा से एक-दूसरे को जानती थीं। दरअसल, वे चचेरी बहनें थीं। लेकिन क्लैरिसा की लोकप्रियता के कारण स्वाभाविक रूप से उनके बीच दूरियां आ गई थीं। उसके लिए किसी पार्टी में जाना एक खास मौका था। सुंदर कपड़े देखना ही उसके लिए एक सुखद अनुभव था। क्या वह एलिज़ाबेथ नहीं थी, जो अब बड़ी हो गई थी, जिसके बाल फैशनेबल तरीके से बने थे, और जिसने गुलाबी पोशाक पहनी थी? फिर भी वह सत्रह साल से ज़्यादा की नहीं हो सकती थी। वह बहुत ही खूबसूरत थी। लेकिन जब लड़कियाँ पहली बार फैशन की दुनिया में आईं, तो वे पहले की तरह सफेद कपड़े नहीं पहनती थीं। (उसे एडिथ को बताने के लिए सब कुछ याद रखना होगा।) लड़कियाँ एकदम फिट, सीधी फ्रॉक पहनती थीं, जिनकी स्कर्ट टखनों से काफी ऊपर होती थी। यह शोभा नहीं देता था, उसने सोचा।
अपनी कमजोर दृष्टि के कारण, एली हेंडरसन थोड़ा आगे की ओर झुक गई, और उसे इस बात का उतना बुरा नहीं लगा कि उससे बात करने के लिए कोई नहीं था (वह वहाँ

किसी को जानती भी नहीं थी), क्योंकि उसे लगा कि वे सभी देखने लायक दिलचस्प लोग थे; संभवतः राजनेता; रिचर्ड डैलोवे के दोस्त; लेकिन रिचर्ड को खुद यह महसूस हुआ कि वह बेचारी को पूरी शाम वहाँ अकेले खड़े नहीं रहने दे सकता। "अच्छा, एली, दुनिया तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव कर रही है?" उसने अपने सौम्य अंदाज में कहा, और एली हेंडरसन घबरा गई, उसका चेहरा लाल हो गया और उसे लगा कि उसका आकर उससे बात करना असाधारण रूप से अच्छा था, उसने कहा कि कई लोग वास्तव में ठंड से ज्यादा गर्मी महसूस कर रहे हैं।
"हां, वे करते हैं," रिचर्ड डैलोवे ने कहा। "हां।"
लेकिन इसके अलावा और क्या कहा जा सकता था?
"हेलो, रिचर्ड," किसी ने उसकी कोहनी पकड़ते हुए कहा, और हे भगवान! वहाँ तो वही पुराने पीटर थे, वही पुराने पीटर वॉल्श! उन्हें देखकर वह बहुत खुश हुए — बेहद खुश! वह बिल्कुल भी नहीं बदले थे। और फिर वे दोनों साथ-साथ कमरे के उस पार चले गए, एक-दूसरे को हल्के से थपथपाते हुए, मानो वे बहुत दिनों से मिले ही न हों। एली हेंडरसन ने उन्हें जाते हुए देखा और सोचा, उसे यकीन था कि वह उस आदमी का चेहरा जानती है। एक लंबा आदमी, अधेड़ उम्र का, खूबसूरत आँखों वाला, सांवला, चश्मा पहने हुए, और जॉन बरोज़ जैसा दिखता था। एडिथ तो उसे ज़रूर पहचानती होगी।
स्वर्ग के पक्षियों की उड़ान वाला पर्दा फिर से खुल गया। और क्लैरिसा ने देखा—उसने देखा कि राल्फ लियोन उसे वापस धकेलकर फिर से बोलने लगा। तो आखिरकार यह नाकामयाबी नहीं थी! अब सब ठीक होने वाला था—उसकी पार्टी। यह शुरू हो चुकी थी। यह चल पड़ी थी। लेकिन अभी भी अनिश्चितता बनी हुई थी। उसे फिलहाल वहीं खड़े रहना होगा। लोग मानो भीड़ में आ रहे थे।
कर्नल और श्रीमती गैरोड… श्री ह्यू व्हिटब्रेड… श्री बाउली… श्रीमती हिलबेरी… लेडी मैरी मैडॉक्स… श्री क्विन… विल्किन ने स्वर में कहा। उसने प्रत्येक से छह या सात शब्द कहे, और वे आगे बढ़े, कमरों में चले गए; अब कुछ था, कुछ नहीं था, क्योंकि राल्फ लियोन ने पर्दा हटा दिया था।
फिर भी, अपने लिए यह बहुत अधिक प्रयास था। उसे इसमें आनंद नहीं आ रहा था। यह ऐसा था मानो वह बस कोई आम इंसान हो, वहाँ खड़ी हो; कोई भी ऐसा कर सकता है; फिर भी, जिस आम इंसान की वह थोड़ी प्रशंसा करती थी, उसे यह महसूस होता था कि उसने किसी न किसी तरह यह सब संभव कर दिखाया है, कि यह एक पड़ाव है, एक ऐसा मुकाम है जहाँ वह खुद को पहुँच चुकी है, क्योंकि अजीब बात यह थी कि वह पूरी

तरह से भूल चुकी थी कि वह कैसी दिखती है, लेकिन उसे ऐसा लगता था जैसे वह अपनी सीढ़ियों के शीर्ष पर ठोंकी गई एक कील हो। हर बार जब वह कोई पार्टी देती थी, तो उसे यह एहसास होता था कि वह कुछ और है, और हर पार्टी किसी न किसी तरह से अवास्तविक होती थी; किसी न किसी तरह से कहीं अधिक वास्तविक। उसे लगता था कि यह आंशिक रूप से उनके कपड़ों की वजह से था, आंशिक रूप से उनके सामान्य जीवन से बाहर निकाले जाने की वजह से, आंशिक रूप से पृष्ठभूमि की वजह से, ऐसी बातें कहना संभव था जो आप अन्यथा नहीं कह सकते, ऐसी बातें जिनके लिए प्रयास की आवश्यकता होती है; कहीं अधिक गहराई तक जाना संभव था। लेकिन उसके लिए नहीं; अभी तो बिल्कुल नहीं।
"आपको देखकर कितनी खुशी हुई!" उसने कहा। प्यारे सर हैरी! वह तो सबको जानते ही होंगे।
और इसमें सबसे अजीब बात यह थी कि जैसे-जैसे वे एक के बाद एक सीढ़ियों से ऊपर आती गईं, श्रीमती माउंट और सेलिया, हर्बर्ट ऐंस्टी, श्रीमती डेकर्स— और हां, लेडी ब्रूटन भी!
"आपका आना कितना अच्छा लगा!" उसने कहा, और उसने यह बात दिल से कही थी—यह अजीब था कि वहाँ खड़े होकर ऐसा लग रहा था जैसे वे लगातार बोलते जा रहे हों, कुछ काफी बूढ़े थे, कुछ...
कौन सा नाम? लेडी रॉसेटर? लेकिन आखिर लेडी रॉसेटर कौन थीं?
"क्लेरिसा!" वो आवाज़! ये तो सैली सेटन थी! सैली सेटन! इतने सालों बाद! वो धुंध से बाहर निकली। क्योंकि जब क्लेरिसा ने गर्म पानी का कैन पकड़ा था, तब सैली सेटन ऐसी नहीं दिखती थी, ये सोचकर ही डर लगता था कि वो इस छत के नीचे, इस छत के नीचे है! ऐसी नहीं!
सब एक दूसरे के ऊपर आ गए, शर्मिंदा हुए, हँसे, शब्द मुंह से निकल गए—लंदन से गुज़रते हुए; क्लारा हेडन से सुना; आपसे मिलने का कितना अच्छा मौका मिला! तो मैंने बिना निमंत्रण के ही खुद को बीच में धकेल दिया…।
कोई बड़ी सहजता से गर्म पानी का डिब्बा नीचे रख सकता था। उसकी चमक फीकी पड़ गई थी। फिर भी उसे दोबारा देखना असाधारण था, पहले से अधिक उम्रदराज, खुश, लेकिन पहले से कम आकर्षक। उन्होंने ड्राइंग रूम के दरवाजे पर एक-दूसरे को चूमा, पहले इस गाल पर फिर उस पर, और क्लैरिसा ने सैली का हाथ थामे हुए मुड़कर देखा तो उसके कमरे भरे हुए थे, उसे आवाजों का शोर सुनाई दिया,

मोमबत्तियाँ, हवा में लहराते पर्दे और रिचर्ड द्वारा दिए गए गुलाब दिखाई दिए।
"मेरे पांच विशालकाय बेटे हैं," सैली ने कहा।
उसमें एक सरल अहंकार था, हमेशा सर्वप्रथम सोचे जाने की सबसे खुली इच्छा थी, और क्लैरिसा को उसका यह स्वभाव बहुत प्रिय था। "मुझे विश्वास नहीं हो रहा!" अतीत की यादों में खोई हुई वह खुशी से झूम उठी।
लेकिन अफसोस, विल्किंस; विल्किंस उसे चाहता था; विल्किंस एक आदेशात्मक अधिकारपूर्ण स्वर में ऐसे पुकार रहा था मानो पूरी मंडली को फटकार लगानी हो और मेज़बान को तुच्छता से बाहर निकालना हो, एक नाम:
"प्रधानमंत्री," पीटर वाल्श ने कहा।
प्रधानमंत्री? क्या सच में? एली हेंडरसन ने हैरानी से सोचा। एडिथ को बताने के लिए यह कितनी अजीब बात है!
उन पर कोई हंस नहीं सकता था। वे इतने साधारण दिखते थे। मानो उन्हें किसी काउंटर के पीछे खड़ा करके बिस्कुट खरीदे जा रहे हों—बेचारे, सोने की लेस से सजे हुए। और सच कहें तो, जब वे अपने चक्कर लगा रहे थे, पहले क्लैरिसा के साथ, फिर रिचर्ड के साथ, तो उन्होंने इसे बखूबी निभाया। उन्होंने खुद को कोई खास दिखाने की कोशिश की। यह देखना मनोरंजक था। किसी ने उनकी तरफ नहीं देखा। वे बस बातें करते रहे, फिर भी यह बिल्कुल स्पष्ट था कि वे सभी जानते थे, अपनी रग-रग में महसूस कर रहे थे, इस महान शख्सियत के गुजरने को; उस प्रतीक को जिसके लिए वे सभी खड़े थे, अंग्रेजी समाज को। बूढ़ी महिला ब्रूटन, जो खुद भी बहुत सुंदर और लेस वाली पोशाक में बेहद मजबूत दिख रही थीं, पास आईं, और वे एक छोटे से कमरे में चले गए, जिस पर तुरंत नजर रखी जाने लगी, पहरा लगाया जाने लगा, और हर किसी के बीच एक तरह की हलचल और सरसराहट फैल गई, खुलेआम: प्रधानमंत्री!
हे भगवान, हे भगवान, अंग्रेजों का घमंड! कोने में खड़े पीटर वॉल्श ने सोचा। उन्हें सोने की फीती वाले कपड़े पहनना और सम्मान दिखाना कितना पसंद है! देखो! अरे वाह, यह तो ह्यू व्हिटब्रेड ही होगा, जो महान, थोड़े मोटे और थोड़े गोरे हो चुके, प्रशंसनीय ह्यू के परिसर में घूम रहा होगा!
पीटर सोचता था कि वह हमेशा ड्यूटी पर ही लगता था, एक विशेषाधिकार प्राप्त, लेकिन रहस्यमयी व्यक्ति, जो ऐसे राज़ छिपाए रखता था जिनकी रक्षा के लिए वह अपनी जान भी दे सकता था, भले ही वह दरबारी नौकर द्वारा फैलाई गई

कोई छोटी-मोटी बात ही क्यों न हो, जो कल सभी अखबारों में छप जाएगी। यही उसके खिलौने थे, उसके छोटे-छोटे खिलौने, जिनसे खेलते-खेलते वह बूढ़ा हो गया था, बुढ़ापे की दहलीज पर पहुँच गया था, और इस तरह के अंग्रेज़ पब्लिक स्कूल के शिक्षक को जानने वाले सभी लोगों का सम्मान और स्नेह प्राप्त करता था। स्वाभाविक रूप से लोग ह्यूग के बारे में ऐसी बातें गढ़ लेते थे; यही उसकी शैली थी; उन प्रशंसनीय पत्रों की शैली जिन्हें पीटर ने समुद्र पार हजारों मील दूर टाइम्स में पढ़ा था, और ईश्वर का धन्यवाद किया था कि वह उस हानिकारक दुनिया से बाहर निकल आया, भले ही सिर्फ बंदरों की बकबक और कुलियों द्वारा अपनी पत्नियों को पीटने की बातें सुनने के लिए ही सही। एक विश्वविद्यालय का सांवली त्वचा वाला युवक विनम्रतापूर्वक उसके पास खड़ा था। वह उसे संरक्षण देगा, दीक्षा देगा, और आगे बढ़ने का तरीका सिखाएगा। क्योंकि उन्हें दूसरों की भलाई करने से बढ़कर कुछ भी पसंद नहीं था, बुज़ुर्ग महिलाओं के दिलों को उनकी उम्र, उनके दुख में भी याद किए जाने की खुशी से भर देना, जो खुद को पूरी तरह भुला हुआ समझती थीं। फिर भी, प्यारे ह्यू गाड़ी चलाते हुए आए और एक घंटा बीते दिनों की बातें करने में बिताया, छोटी-छोटी बातों को याद किया, घर के बने केक की तारीफ की, हालाँकि ह्यू किसी भी दिन किसी डचेस के साथ केक खा सकते थे, और उन्हें देखकर लगता था कि वे इस सुखद काम में काफी समय बिताते भी थे। सर्वज्ञ, सर्वदयालु ईश्वर शायद क्षमा कर देते। पीटर वॉल्श को कोई दया नहीं थी। दुष्ट तो होते ही हैं, और ईश्वर जानता है कि ट्रेन में किसी लड़की का सिर फोड़ने के जुर्म में फांसी पर लटकाए गए बदमाश भी ह्यू व्हिटब्रेड और उनकी दयालुता से कहीं कम नुकसान करते हैं। अब उन्हें देखिए, प्रधानमंत्री और लेडी ब्रूटन के निकलते ही, वे अपने पंजों पर खड़े होकर, आगे की ओर नाचते हुए, झुककर अभिवादन कर रहे थे, मानो पूरी दुनिया को यह जता रहे हों कि उन्हें लेडी ब्रूटन से कुछ निजी बात कहने का सौभाग्य प्राप्त है। वह रुक गईं। उन्होंने अपना सुंदर बूढ़ा सिर हिलाया। वह शायद किसी तरह की चापलूसी के लिए उसे धन्यवाद दे रही थी। उसके पास चापलूसों का एक समूह था, सरकारी दफ्तरों में छोटे-मोटे अधिकारी जो उसकी तरफ से छोटे-मोटे काम करवाते रहते थे, जिसके बदले में वह उन्हें दोपहर का भोजन कराती थी। लेकिन वह अठारहवीं सदी की सोच रखती थी। वह ठीक थी।
और अब क्लैरिसा अपने प्रधानमंत्री को कमरे से नीचे ले जा रही थी, अपने भूरे बालों की शान के साथ इतराती, चमकती हुई। उसने कान की बालियाँ और

चाँदी-हरे रंग की जलपरी की पोशाक पहनी हुई थी। लहरों पर लोटते हुए और अपने बालों की चोटी बनाते हुए, मानो उसमें अभी भी वह हुनर हो; जीने का; अस्तित्व का; हर पल को उसी क्षण में समेट लेने का; मुड़ी, किसी दूसरी औरत की पोशाक में अपना दुपट्टा फँसाया, उसे खोला, हँसी, यह सब उसने बड़ी सहजता और उस प्राणी के अंदाज़ में किया जो अपने वातावरण में तैर रहा हो। लेकिन उम्र ने उसे छू लिया था; ठीक वैसे ही जैसे कोई जलपरी किसी साफ़ शाम को लहरों पर डूबते सूरज को अपने शीशे में देखती है। उसके चेहरे पर कोमलता की एक झलक थी; उसकी सख्ती, उसका संकोच, उसकी रूखापन सब अब नरम पड़ गए थे, और जब उसने उस मोटे सुनहरे फीते वाले आदमी को अलविदा कहा, जो अपनी पूरी कोशिश कर रहा था, और उसे शुभकामनाएँ, महत्वपूर्ण दिखने की, तो उसके चेहरे पर एक अवर्णनीय गरिमा थी; एक उत्कृष्ट आत्मीयता थी; मानो वह पूरी दुनिया का भला चाहती हो, और अब, अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर आकर, उसे विदा लेनी ही पड़ रही हो। उसने उसे ऐसा सोचने पर मजबूर कर दिया। (पर वह उससे प्रेम नहीं करता था।) क्लैरिसा को सचमुच लगा कि प्रधानमंत्री का आना अच्छा ही हुआ। उनके साथ कमरे में चलते हुए, सैली और पीटर वहाँ थे, रिचर्ड बहुत खुश था, और शायद उन सभी लोगों में ईर्ष्या की भावना भी थी। उस पल के नशे में चूर होकर, उसके दिल की नसें इतनी फूल गईं कि मानो कांपने लगीं, जैसे पूरी तरह से भीग गई हों; हाँ, लेकिन आखिरकार ये तो वही था जो दूसरे लोग महसूस करते थे; क्योंकि हालाँकि उसे ये सब अच्छा लगता था और ये झनझनाहट और चुभन महसूस होती थी, फिर भी ये दिखावे, ये जीतें (जैसे प्यारे पीटर का उसे इतना प्रतिभाशाली समझना), खोखली थीं; दूर से महसूस होती थीं, दिल से नहीं; और शायद वो बूढ़ी हो रही थी, लेकिन अब ये उसे पहले की तरह संतुष्ट नहीं करती थीं; और अचानक, जैसे ही उसने प्रधानमंत्री को सीढ़ियों से नीचे जाते देखा, सर जोशुआ की उस तस्वीर का सुनहरा किनारा, जिसमें एक छोटी लड़की मफ पहने हुए थी, ने किलमन की याद दिला दी; उसका दुश्मन किलमन। ये संतोषजनक था; ये वास्तविक था। आह, वह उससे कितनी नफ़रत करती थी—तेज-तर्रार, पाखंडी, भ्रष्ट; इतनी शक्ति के साथ; एलिज़ाबेथ को बहकाने वाली; वह औरत जो चोरी करने और अपवित्र करने के लिए चुपके से आई थी (रिचर्ड कहता, यह सब बकवास है!)। वह उससे नफ़रत भी करती थी और प्यार भी। उसे दुश्मन चाहिए थे, दोस्त नहीं—श्रीमती ड्यूरेंट और क्लारा नहीं, सर विलियम और लेडी ब्रैडशॉ नहीं, मिस ट्रूलॉक और एलेनोर गिब्सन नहीं

(जिन्हें उसने ऊपर आते देखा था)। अगर उन्हें उसे चाहिए तो उन्हें उसे ढूंढना होगा। वह पार्टी के लिए ही थी!
वहां उनका पुराना दोस्त सर हैरी भी था।
"प्रिय श्री हैरी!" उसने कहा, उस भले-बुरे बूढ़े व्यक्ति के पास जाते हुए, जिसने सेंट जॉन्स वुड के किसी भी दो शिक्षाविदों की तुलना में कहीं अधिक खराब तस्वीरें बनाई थीं (वे हमेशा सूर्यास्त के समय तालाबों में खड़े होकर नमी सोखते हुए मवेशियों की होती थीं, या, जैसा कि उसके पास हावभाव की एक विशेष सीमा थी, एक अगला पैर उठाकर और सींगों को उछालकर "अजनबी के आगमन" का संकेत देती थीं - उसकी सभी गतिविधियाँ, बाहर खाना खाना, दौड़ना, सूर्यास्त के समय तालाबों में खड़े होकर नमी सोखते मवेशियों पर आधारित थीं)।
"तुम किस बात पर हंस रहे हो?" उसने उससे पूछा। क्योंकि विली टिटकॉम्ब, सर हैरी और हर्बर्ट ऐंस्टी सभी हंस रहे थे। लेकिन नहीं। सर हैरी क्लैरिसा डैलोवे को (हालांकि वह उसे बहुत पसंद करते थे; उसके प्रकार की वह उसे एकदम सही मानते थे, और उसकी तस्वीर बनाने की धमकी भी देते थे) संगीत हॉल के मंच की अपनी कहानियां नहीं सुना सकते थे। उन्होंने उसकी पार्टी को लेकर उसका मजाक उड़ाया। उन्हें अपनी ब्रांडी की याद आ रही थी। उन्होंने कहा कि ये मंडली उनके स्तर से ऊपर है। लेकिन वह उसे पसंद करते थे; उसका सम्मान करते थे, उसकी उस अड़ियल, जटिल उच्च-वर्गीय नज़ाकत के बावजूद, जिसके कारण क्लैरिसा डैलोवे को अपनी गोद में बैठने के लिए कहना असंभव था। और तभी वह भटकती हुई मृगतृष्णा, वह व्याकुल प्रकाशस्तंभ, बूढ़ी श्रीमती हिलबेरी उठीं, अपने हाथों को उनकी हंसी की चमक की ओर फैलाते हुए (ड्यूक और लेडी के बारे में), जिसे सुनकर कमरे के उस पार से उन्हें ऐसा लगा जैसे उन्हें उस बात पर तसल्ली मिल गई हो जो कभी-कभी उन्हें परेशान करती थी अगर वह सुबह जल्दी उठ जातीं और अपनी नौकरानी को चाय के लिए बुलाना पसंद नहीं करतीं; यह निश्चित है कि हमारी मृत्यु अवश्य होगी।
"वे हमें अपनी कहानियां नहीं सुनाएंगे," क्लेरिसा ने कहा।
"प्यारी क्लैरिसा!" श्रीमती हिलबेरी ने कहा। उन्होंने कहा कि आज रात वह बिल्कुल अपनी माँ जैसी लग रही थी, जब उन्होंने पहली बार उसे एक बगीचे में धूसर टोपी पहने घूमते देखा था।

और सचमुच क्लैरिसा की आँखों में आँसू भर आए। उसकी माँ, बगीचे में टहल रही है! लेकिन अफसोस, उसे जाना ही होगा।
वहाँ प्रोफ़ेसर ब्रियरली थे, जो मिल्टन पर व्याख्यान दे रहे थे, और छोटे जिम हटन से बातें कर रहे थे (जो इस तरह की पार्टी के लिए भी टाई और वेस्टकोट दोनों पहनने या अपने बालों को ठीक से संवारने में असमर्थ था), और इतनी दूरी से भी वे झगड़ रहे थे, यह वह देख सकती थी। प्रोफ़ेसर ब्रियरली एक बड़े ही विचित्र व्यक्ति थे। उनके पास इतनी सारी डिग्रियाँ, सम्मान और व्याख्यान पद थे, और लेखकों के बीच उन्हें तुरंत ही एक ऐसा वातावरण दिखाई देने लगा जो उनके विचित्र स्वभाव के अनुकूल नहीं था; उनकी असाधारण विद्वत्ता और संकोच; उनका शांत स्वभाव जिसमें सौहार्द की कमी थी; उनकी मासूमियत और घमंड का मिश्रण; अगर किसी महिला के बिखरे बाल या किसी युवक के जूते उन्हें सचेत कर देते, तो वे कांप उठते; एक ऐसे गुप्त संसार का, जो निस्संदेह बहुत विश्वसनीय था, विद्रोहियों का, उत्साही युवाओं का, भावी प्रतिभाओं का, और सिर को थोड़ा सा हिलाकर, एक हल्की सी आह भरकर—हम्फ!—संयम के महत्व का संकेत देते; मिल्टन की सराहना करने के लिए शास्त्रीय साहित्य में थोड़ी सी पढ़ाई के महत्व का। क्लैरिसा देख सकती थी कि प्रोफेसर ब्रियरली और छोटे जिम हटन (जिसने लाल मोज़े पहने थे, क्योंकि उसके काले मोज़े कपड़े धोने के लिए लॉन्ड्री में थे) के बीच मिल्टन के बारे में बातचीत में तालमेल नहीं बैठ रहा था। क्लैरिसा ने बीच में ही दखल दिया।
उसने कहा कि उसे बाख बहुत पसंद है। हटन को भी। यही उन दोनों के बीच का बंधन था, और हटन (जो एक बहुत ही खराब कवि था) हमेशा मानता था कि कला में रुचि रखने वाली महान महिलाओं में श्रीमती डैलोवे सबसे श्रेष्ठ थीं। उनकी सख्ती अजीब थी। संगीत के मामले में तो वे बिल्कुल उदासीन थीं। वे थोड़ी रूढ़िवादी थीं। लेकिन देखने में कितनी आकर्षक थीं! अगर उनके प्रोफेसर न होते तो उन्होंने अपना घर बहुत ही सुंदर बना रखा था। क्लैरिसा का मन करता था कि उसे उठाकर पीछे वाले कमरे में पियानो पर बिठा दे। क्योंकि वह बहुत ही मधुर पियानो बजाते थे।
"लेकिन शोर!" उसने कहा। "शोर!"
"एक सफल पार्टी की निशानी।" शालीनता से सिर हिलाते हुए, प्रोफेसर धीरे से बाहर निकल गए।

"वह मिल्टन के बारे में पूरी दुनिया की हर बात जानता है," क्लेरिसा ने कहा।
"क्या वह सचमुच ऐसा करता है?" हटन ने कहा, जो पूरे हैम्पस्टेड में प्रोफेसर की नकल करता था; मिल्टन पर प्रोफेसर की; संयम पर प्रोफेसर की; और धीरे से कदम बढ़ाते हुए प्रोफेसर की।
लेकिन उन्हें उस दंपत्ति, लॉर्ड गेयटन और नैन्सी ब्लो से बात करनी ही होगी, क्लेरिसा ने कहा।
ऐसा नहीं था कि उन्होंने पार्टी के शोर में कोई खास इज़ाफ़ा किया हो। पीले पर्दों के पास अगल-बगल खड़े होकर वे (स्पष्ट रूप से) बात नहीं कर रहे थे। वे जल्द ही कहीं और साथ जाने वाले थे; और किसी भी परिस्थिति में उनके पास ज़्यादा बोलने को नहीं होता था। वे देख रहे थे; बस इतना ही। इतना ही काफी था। वे इतने साफ-सुथरे, इतने सलीके से दिख रहे थे, वह पाउडर और मेकअप से खुबानी रंग की चमक लिए हुए, लेकिन वह पक्षी जैसी पैनी नज़रों से खुद को रगड़-रगड़ कर साफ कर रहा था, ताकि कोई गेंद उसे पार न कर सके या कोई स्ट्रोक उसे चौंका न सके। वह सटीक रूप से, एक ही जगह पर प्रहार करता, उछलता। उसकी लगाम के अंत में टट्टुओं के मुंह कांप रहे थे। उसके पास अपने सम्मान, पैतृक स्मारक, घर के चर्च में लटके झंडे थे। उसके कर्तव्य थे; उसके किराएदार; एक माँ और बहनें; वह सारा दिन लॉर्ड्स में था, और वे इसी बारे में बात कर रहे थे—क्रिकेट, चचेरे भाई-बहन, फिल्में—तभी श्रीमती डैलोवे आईं। लॉर्ड गेयटन उन्हें बेहद पसंद करते थे। मिस ब्लो भी। उनके तौर-तरीके इतने आकर्षक थे।
"यह तो किसी देवदूत जैसा है—आपका आना अत्यंत सुखद है!" उसने कहा। उसे रईस लोग बहुत पसंद थे; उसे युवावस्था बहुत प्यारी थी, और पेरिस के सबसे बड़े कलाकारों द्वारा अत्यधिक खर्चे से सजे नैंसी वहाँ ऐसे खड़ी थी मानो उसके शरीर से अपने आप ही एक हरी झालर निकल आई हो।
"मेरा इरादा डांस करने का था," क्लेरिसा ने कहा।
क्योंकि युवा बोल नहीं सकते थे। और उन्हें बोलना भी क्यों चाहिए? चिल्लाना, गले लगाना, झूला झूलना, सुबह जल्दी उठना; टट्टुओं को चीनी खिलाना; प्यारे कुत्तों की थूथनों को चूमना और सहलाना; और फिर जोश से लथपथ होकर डुबकी लगाना और तैरना। लेकिन अंग्रेजी भाषा के विशाल संसाधन, भावनाओं को व्यक्त करने की वह शक्ति जो यह प्रदान करती है (उनकी उम्र में,

वह और पीटर पूरी शाम बहस करते रहते), उनके लिए नहीं थी। वे युवावस्था में ही स्थिर हो जाते। वे जागीर के लोगों के लिए बेहद अच्छे होते, लेकिन अकेले में शायद थोड़े नीरस होते।
"कितनी अफ़सोस की बात है!" उसने कहा। "मुझे नृत्य देखने की उम्मीद थी।" उनका आना वाकई बहुत अच्छा लगा! लेकिन नाच-गाने की तो बात ही क्या थी! कमरे खचाखच भरे हुए थे।
वहाँ शॉल ओढ़े बूढ़ी आंटी हेलेना खड़ी थीं। अफसोस, उन्हें लॉर्ड गेयटन और नैन्सी ब्लो को छोड़कर जाना पड़ा। वहाँ उनकी चाची, बूढ़ी मिस पैरी भी थीं।
मिस हेलेना पैरी मरी नहीं थीं: मिस पैरी जीवित थीं। उनकी उम्र अस्सी वर्ष से अधिक थी। वह छड़ी के सहारे धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ती थीं। उन्हें एक कुर्सी पर बिठाया गया था (रिचर्ड ने इसका ध्यान रखा था)। सत्तर के दशक में बर्मा को जानने वाले लोगों को हमेशा उनके पास लाया जाता था। पीटर कहाँ चला गया? वे कितने अच्छे दोस्त हुआ करते थे। क्योंकि भारत या यहाँ तक कि सीलोन का नाम सुनते ही उनकी आँखें (जिनमें से केवल एक कांच की थी) धीरे- धीरे गहरी हो जाती थीं, नीली हो जाती थीं, और उन्हें मनुष्य नहीं दिखाई देते थे—उनके मन में वायसराय, जनरलों, विद्रोहों के बारे में कोई कोमल यादें नहीं थीं, कोई गर्व भरी भ्रांतियाँ नहीं थीं—उन्हें ऑर्किड दिखाई देते थे, और पहाड़ी दर्रे, और खुद को साठ के दशक में कुलियों की पीठ पर लादकर सुनसान चोटियों पर ले जाते हुए; या ऑर्किड उखाड़ने के लिए उतरते हुए (आश्चर्यजनक फूल, जो उन्होंने पहले कभी नहीं देखे थे) जिन्हें वह जलरंग में चित्रित करती थीं; एक अदम्य अंग्रेज महिला, जो युद्ध से विचलित और परेशान थी, जिसने उसके दरवाजे पर ही बम गिरा दिया था, ऑर्किड पर अपने गहन चिंतन और साठ के दशक में भारत में अपनी यात्रा के दौरान खुद के व्यक्तित्व के बारे में सोचती थी - लेकिन यहाँ पीटर था।
"आओ और चाची हेलेना से बर्मा के बारे में बात करो," क्लेरिसा ने कहा।
और फिर भी उसने पूरी शाम उससे एक शब्द भी नहीं कहा था!
"हम बाद में बात करेंगे," क्लेरिसा ने कहा और उसे सफेद शॉल ओढ़े, छड़ी लिए हुए चाची हेलेना के पास ले गई।
"पीटर वाल्श," क्लेरिसा ने कहा।
इसका कोई मतलब नहीं था।

क्लैरिसा ने उससे कहा था। यह थका देने वाला था; शोरगुल भरा था; लेकिन क्लैरिसा ने उससे कहा था। इसलिए वह आई थी। यह अफ़सोस की बात थी कि रिचर्ड और क्लैरिसा लंदन में रहते थे। क्लैरिसा की सेहत के लिए ही सही, गाँव में रहना बेहतर होता। लेकिन क्लैरिसा को हमेशा से समाज में रहना पसंद था।
"वह बर्मा में रहा है," क्लेरिसा ने कहा।
आह। वह चार्ल्स डार्विन द्वारा बर्मा के ऑर्किड पर लिखी अपनी छोटी सी किताब के बारे में कही गई बात को याद करने से खुद को रोक नहीं सकी। (क्लेरिसा को लेडी ब्रूटन से बात करनी होगी।)
इसमें कोई शक नहीं कि बर्मा के ऑर्किड पर लिखी उनकी किताब अब भुला दी गई थी, लेकिन 1870 से पहले इसके तीन संस्करण प्रकाशित हो चुके थे, उन्होंने पीटर को बताया। उन्हें अब पीटर की याद आ गई थी। वह बॉर्टन में थे (और पीटर वॉल्श को याद था कि उस रात जब क्लैरिसा ने उन्हें नाव में घूमने के लिए बुलाया था, तो वह ड्राइंग रूम में बिना कुछ कहे उन्हें छोड़कर चले गए थे)। "रिचर्ड को अपनी लंच पार्टी में बहुत मजा आया," क्लेरिसा ने लेडी ब्रूटन से कहा।
"रिचर्ड ने मेरी बहुत मदद की," लेडी ब्रूटन ने जवाब दिया। "उन्होंने मुझे पत्र लिखने में मदद की। और आप कैसे हैं?"
"ओह, बिलकुल ठीक!" क्लैरिसा ने कहा। (लेडी ब्रूटन को राजनेताओं की पत्नियों की बीमारी बिल्कुल पसंद नहीं थी।)
“और ये रहे पीटर वॉल्श!” लेडी ब्रूटन ने कहा (क्योंकि उन्हें क्लैरिसा से बात करने के लिए कभी कुछ सूझता ही नहीं था; हालाँकि वह उसे पसंद करती थीं। क्लैरिसा में कई अच्छे गुण थे; लेकिन उनमें और क्लैरिसा में कोई समानता नहीं थी। बेहतर होता अगर रिचर्ड ने किसी कम आकर्षक महिला से शादी की होती, जो उनके काम में उनकी ज़्यादा मदद करती। उन्होंने कैबिनेट में जाने का मौका खो दिया था)। “ये रहे पीटर वॉल्श!” उन्होंने उस मिलनसार पापी, उस बहुत ही काबिल आदमी से हाथ मिलाते हुए कहा, जिसे नाम कमाना चाहिए था लेकिन नहीं कमा पाया (हमेशा महिलाओं के साथ मुश्किलों में फंसा रहता था), और, ज़ाहिर है, बूढ़ी मिस पैरी से भी। कमाल की बूढ़ी औरत!
मिस पैरी की कुर्सी के पास खड़ी लेडी ब्रूटन, एक रहस्यमयी ग्रेनेडियर की तरह, काले वस्त्र में लिपटी हुई, पीटर वॉल्श को दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित कर रही थीं; उनका व्यवहार सौहार्दपूर्ण था; लेकिन उन्होंने कोई

औपचारिक बातचीत नहीं की, उन्हें भारत के पेड़-पौधों या जीव-जंतुओं के बारे में कुछ भी याद नहीं था। बेशक, वह वहाँ जा चुकी थीं; तीन वायसराय के साथ रह चुकी थीं; उन्हें कुछ भारतीय नागरिक असाधारण रूप से अच्छे लोग लगे थे; लेकिन भारत की हालत कितनी दयनीय थी! प्रधानमंत्री अभी-अभी उन्हें बता रहे थे (बुजुर्ग मिस पैरी अपनी शॉल में सिमटी हुई थीं, उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं थी कि प्रधानमंत्री क्या कह रहे थे), और लेडी ब्रूटन पीटर वॉल्श की राय जानना चाहती थीं, क्योंकि वह अभी-अभी केंद्र से लौटे थे, और वह सर सैम्पसन को उनसे मिलवाएंगी, क्योंकि वास्तव में यह बात उन्हें रात को सोने नहीं देती थी, एक सैनिक की बेटी होने के नाते यह उनकी मूर्खता थी, या कहें तो उनकी दुष्टता थी। वह अब एक बूढ़ी महिला थीं, ज्यादा कुछ करने की क्षमता नहीं रखती थीं। लेकिन उसका घर, उसके नौकर, उसकी अच्छी दोस्त मिली ब्रश—क्या उसे याद था?—सब वहाँ मौजूद थे, बस यही इंतज़ार कर रहे थे कि अगर वे किसी काम आ सकें, तो उनका इस्तेमाल किया जाए। क्योंकि उसने कभी इंग्लैंड की बात नहीं की, लेकिन इंसानों का यह द्वीप, यह प्यारी-प्यारी ज़मीन, उसके खून में थी (शेक्सपियर पढ़े बिना), और अगर कोई औरत हेलमेट पहनकर तीर चला सकती थी, सेना का नेतृत्व करके हमला कर सकती थी, अदम्य न्याय से बर्बर गिरोहों पर राज कर सकती थी और किसी गिरजाघर में ढाल के नीचे नाक कटी हुई लेट सकती थी, या किसी प्राचीन पहाड़ी पर हरी घास का टीला बना सकती थी, तो वह मिलिसेंट ब्रूटन थी। अपने स्त्रीत्व और तर्क शक्ति की कुछ कमी के कारण (उसके लिए टाइम्स को पत्र लिखना असंभव था), उसके मन में साम्राज्य का विचार हमेशा रहता था, और उस कवचधारी देवी के साथ अपने जुड़ाव से उसने अपना दृढ़ निश्चय और मजबूत स्वभाव प्राप्त कर लिया था, जिससे मृत्यु के बाद भी उसे धरती से विदा होते हुए या उन क्षेत्रों में विचरण करते हुए देखना असंभव था, जहाँ किसी आध्यात्मिक रूप में यूनियन जैक का फहराना बंद हो गया था। मृतकों के बीच भी अंग्रेज न होना—नहीं, नहीं! असंभव!
लेकिन क्या यह लेडी ब्रूटन थीं (जिन्हें वह जानती थीं)? क्या यह बूढ़े हो चुके पीटर वॉल्श थे? लेडी रॉसेटर (जो पहले सैली सेटन थीं) ने खुद से पूछा। यह निश्चित रूप से बूढ़ी मिस पैरी थीं—वही बूढ़ी चाची जो बॉर्टन में रहने पर बहुत चिड़चिड़ी हो जाती थीं। वह कभी नहीं भूल सकती थीं कि कैसे वह नग्न अवस्था में गलियारे में दौड़ रही थीं और मिस पैरी ने उन्हें बुलवाया था! और क्लैरिसा! ओह क्लैरिसा! सैली ने उनका हाथ पकड़ लिया।

क्लेरिसा उनके बगल में रुक गई।
"लेकिन मैं नहीं रुक सकती," उसने कहा। "मैं बाद में आऊंगी। रुको," उसने पीटर और सैली की ओर देखते हुए कहा। उसका मतलब था कि उन्हें तब तक इंतजार करना होगा जब तक ये सभी लोग चले न जाएं।
"मैं वापस आऊंगी," उसने अपने पुराने दोस्तों, सैली और पीटर की ओर देखते हुए कहा, जो हाथ मिला रहे थे, और सैली, निस्संदेह अतीत को याद करके हंस रही थी।
लेकिन उसकी आवाज़ में पहले जैसी मोहक मिठास नहीं थी; उसकी आँखें अब वैसी नहीं चमकती थीं जैसी सिगार पीते समय, जब वह बिना कपड़ों के अपना स्पंज बैग लेने गलियारे से भागती थी। एलेन एटकिंस ने पूछा, अगर सज्जन उससे मिल लेते तो क्या होता? लेकिन सबने उसे माफ़ कर दिया। रात को भूख लगने पर उसने भंडारघर से एक मुर्गी चुरा ली; वह अपने शयनकक्ष में सिगार पीती थी; उसने एक अनमोल किताब नाव में छोड़ दी। लेकिन सब उसे प्यार करते थे (शायद पापा को छोड़कर)। यह उसकी गर्मजोशी थी; उसकी जीवंतता—वह चित्रकारी करती थी, वह लिखती थी। गाँव की बूढ़ी औरतें आज तक "लाल चोगे वाली आपकी उस दोस्त के बारे में पूछना नहीं भूलतीं जो इतनी चमकदार दिखती थी।" उसने ह्यूग व्हिटब्रेड पर (और वहाँ उसका पुराना दोस्त ह्यूग पुर्तगाली राजदूत से बात कर रहा था) आरोप लगाया कि उसने धूम्रपान कक्ष में उसे चूमा, क्योंकि उसने कहा था कि महिलाओं को वोट देने का अधिकार होना चाहिए। उसने कहा, घटिया मर्दों को वोट देने का अधिकार होता है। और क्लैरिसा को याद था कि उसे पारिवारिक प्रार्थनाओं में उसकी निंदा न करने के लिए मनाना पड़ता था—जो वह अपनी हिम्मत, अपनी बेपरवाही, हर चीज़ का केंद्र बनने और तमाशा खड़ा करने के अपने नाटकीय प्रेम के साथ आसानी से कर लेती थी, और क्लैरिसा सोचती थी कि इसका अंत किसी भयानक त्रासदी में होना तय था; उसकी मृत्यु; उसकी शहादत; लेकिन इसके बजाय उसने अप्रत्याशित रूप से एक गंजे आदमी से शादी कर ली, जिसके बड़े से बटनहोल थे और कहा जाता था कि वह मैनचेस्टर में कपास मिलों का मालिक था। और उसके पाँच बेटे हुए!
वह और पीटर एक साथ बैठ गए थे। वे बातें कर रहे थे: यह सब इतना जाना-पहचाना लग रहा था—कि वे बातें कर रहे हों। वे अतीत पर चर्चा करेंगे। उन दोनों के साथ (रिचर्ड से भी ज़्यादा) वह अपना अतीत साझा करती थी; बगीचा; पेड़; बूढ़े जोसेफ ब्रेटकॉफ का बिना आवाज़ के ब्रह्म्स का गायन; ड्राइंग रूम का

वॉलपेपर; चटाइयों की महक। सैली का एक हिस्सा हमेशा रहेगा; पीटर का हमेशा रहेगा। लेकिन उसे उन्हें छोड़ना होगा। ब्रैडशॉ परिवार था, जिसे वह नापसंद करती थी। उसे लेडी ब्रैडशॉ के पास जाना होगा (धूसर और चांदी के रंग के वस्त्र पहने, अपने तालाब के किनारे पर बैठे समुद्री शेर की तरह संतुलन बनाए हुए, निमंत्रणों के लिए भौंकती हुई, डचेस, एक सफल पुरुष की पत्नी का आदर्श), उसे लेडी ब्रैडशॉ के पास जाकर कहना होगा…
लेकिन लेडी ब्रैडशॉ ने उनसे पहले ही यह अनुमान लगा लिया था।
"हम बेहद देर से आए हैं, प्रिय श्रीमती डैलोवे, हम अंदर आने की हिम्मत ही नहीं कर पाए," उसने कहा।
और सर विलियम, जो अपने सफ़ेद बालों और नीली आँखों के साथ बेहद प्रतिष्ठित दिख रहे थे, ने हाँ कह दी; वे प्रलोभन का विरोध नहीं कर पाए थे। वे शायद रिचर्ड से उस विधेयक के बारे में बात कर रहे थे, जिसे वे हाउस ऑफ कॉमन्स से पारित करवाना चाहते थे। रिचर्ड से बात करते हुए उन्हें देखकर वह क्यों सिहर उठी? वे वैसे ही दिख रहे थे जैसे वे थे, एक महान चिकित्सक। अपने पेशे में सर्वोपरि, बेहद शक्तिशाली, कुछ थके हुए से। ज़रा सोचिए उनके सामने कैसे-कैसे मामले आते थे—अत्यंत दुख में डूबे लोग; पागलपन की कगार पर खड़े लोग; पति-पत्नी। उन्हें बेहद मुश्किल मामलों का फैसला करना पड़ता था। फिर भी—उसे लगा कि कोई भी सर विलियम को किसी को दुखी नहीं देखना चाहेगा। नहीं; वह आदमी तो बिल्कुल नहीं।
"ईटन में आपका बेटा कैसा है?" उसने लेडी ब्रैडशॉ से पूछा।
लेडी ब्रैडशॉ ने कहा कि गलसुआ होने की वजह से वह ग्यारहवीं कक्षा में दाखिला लेने से चूक गया था। उनके पिता को उससे भी ज़्यादा बुरा लगा होगा, उन्होंने सोचा, "क्योंकि," उन्होंने कहा, "वह खुद भी एक बहुत ही अच्छे लड़के थे।"
क्लेरिसा ने रिचर्ड से बात कर रहे सर विलियम को देखा। वह लड़के जैसे बिल्कुल नहीं दिखते थे—कम से कम लड़के जैसे तो बिल्कुल नहीं। एक बार वह किसी के साथ उनसे सलाह लेने गई थी। उनकी सलाह बिल्कुल सही थी; बेहद समझदार। लेकिन हे भगवान—सड़क पर वापस आना कितना सुकून भरा था! उसे याद आया, प्रतीक्षाकक्ष में कोई बेचारी सिसक रही थी। लेकिन उसे नहीं पता था कि सर विलियम के बारे में क्या बात थी; उन्हें ठीक-ठीक क्या नापसंद था। केवल रिचर्ड ही उससे सहमत था, "मुझे उनका स्वाद पसंद नहीं था, उनकी गंध पसंद

नहीं थी।" लेकिन वह असाधारण रूप से बुद्धिमान था। वे इस विधेयक के बारे में बात कर रहे थे। सर विलियम धीमी आवाज़ में किसी मामले का ज़िक्र कर रहे थे। इसका संबंध उनके द्वारा शेल शॉक के विलंबित प्रभावों के बारे में कही जा रही बातों से था। विधेयक में इसके लिए कोई प्रावधान ज़रूर होना चाहिए। अपनी आवाज़ को धीमा करते हुए, श्रीमती डैलोवे को एक आम नारीत्व की आड़ में खींचते हुए, पतियों के उत्कृष्ट गुणों और उनकी अत्यधिक काम करने की दुखद प्रवृत्ति पर आम गर्व के साथ, लेडी ब्रैडशॉ (बेचारी - उसे नापसंद करना तो नामुमकिन नहीं था) ने धीरे से कहा, "जैसे ही हम चलने वाले थे, मेरे पति का फोन आया, एक बहुत ही दुखद खबर। एक युवक (सर विलियम श्री डैलोवे को यही बता रहे हैं) ने आत्महत्या कर ली है। वह सेना में था।" ओह! क्लैरिसा ने सोचा, मेरे बीचोंबीच, मौत आ गई!
वह आगे बढ़ीं, उस छोटे से कमरे में जहाँ प्रधानमंत्री लेडी ब्रूटन के साथ गए थे। शायद वहाँ कोई हो। पर वहाँ कोई नहीं था। कुर्सियों पर अभी भी प्रधानमंत्री और लेडी ब्रूटन के बैठने के निशान थे, उन्होंने विनम्रता से मुड़कर देखा, प्रधानमंत्री पूरी तरह से अधिकारपूर्ण ढंग से बैठे थे। वे भारत के बारे में बात कर रहे थे। वहाँ कोई नहीं था। पार्टी की शान-शौकत धराशायी हो गई, अकेले इतने सजे-धजे कपड़ों में आना कितना अजीब था। ब्रैडशॉ परिवार को उसकी पार्टी में मौत की बात करने का क्या हक था? एक युवक ने आत्महत्या कर ली थी। और ब्रैडशॉ परिवार उसकी पार्टी में मौत की बात कर रहा था। उसने आत्महत्या की थी—पर कैसे? हमेशा की तरह, जब उसे अचानक किसी दुर्घटना के बारे में बताया जाता था, तो सबसे पहले उसका शरीर ही इस बात को महसूस करता था; उसकी पोशाक में आग लग जाती थी, उसका शरीर जल उठता था। उसने खिड़की से छलांग लगा दी थी। ज़मीन पर बिजली सी चमक उठी; उसके शरीर में जंग लगे नुकीले कांटे इधर-उधर धंसते हुए, चोट पहुँचाते हुए घुस गए। वह धड़ाम-धड़-धड़ की आवाज़ के साथ वहीं पड़ा रहा, उसके दिमाग में एक ज़ोरदार धमाका हुआ, और फिर वह अंधेरे में दम घुटने लगा। उसने ऐसा ही देखा था। पर उसने ऐसा क्यों किया था? और ब्रैडशॉ परिवार उसकी पार्टी में मौत की बात कर रहा था!
उसने एक बार सर्पेन्टाइन नदी में एक शिलिंग फेंकी थी, बस इतना ही। लेकिन उसने उसे फेंक दिया था। वे जीते रहे (उसे वापस जाना ही था; कमरे अभी भी भरे हुए थे; लोग आते ही जा रहे थे)। वे (पूरे दिन वह बोर्टन, पीटर और सैली के

बारे में सोच रही थी), बूढ़े हो जाएँगे। एक चीज़ थी जो मायने रखती थी; एक चीज़, गपशप से घिरी हुई, विकृत, उसके अपने जीवन में धुंधली, हर दिन भ्रष्टाचार, झूठ और गपशप में बिखरती हुई। उसने इसे सहेज कर रखा था। मृत्यु एक चुनौती थी। मृत्यु संवाद करने का एक प्रयास था; लोग उस केंद्र तक पहुँचने की असंभवता को महसूस कर रहे थे जो रहस्यमय तरीके से उनसे दूर भाग रहा था; निकटता दूर हो गई; आनंद फीका पड़ गया, व्यक्ति अकेला रह गया। मृत्यु में एक आलिंगन था।
लेकिन जिस युवक ने आत्महत्या की थी—क्या उसने अपना खजाना अपने साथ लेकर छलांग लगाई थी? "अगर अब मरना ही है, तो अब मरना ही सबसे सुखद होगा," उसने एक बार सफेद वस्त्र पहने नीचे आते हुए खुद से कहा था।
या फिर कवि और विचारक थे। मान लीजिए कि उसमें वह जुनून होता, और वह सर विलियम ब्रैडशॉ के पास गया होता, जो एक महान चिकित्सक थे, फिर भी उसके लिए रहस्यमय रूप से दुष्ट थे, कामुकता या वासना से रहित, महिलाओं के प्रति अत्यंत विनम्र, लेकिन किसी अवर्णनीय अत्याचार में सक्षम—आपकी आत्मा को झकझोर देने वाला, बस यही—अगर यह युवक उनके पास गया होता, और सर विलियम ने उसे अपनी शक्ति से इस तरह प्रभावित किया होता, तो क्या वह तब यह नहीं कहता (वास्तव में वह अब इसे महसूस कर रही थी), जीवन असहनीय हो गया है; ऐसे लोग जीवन को असहनीय बना देते हैं?
फिर (उसे आज सुबह ही इसका एहसास हुआ था) एक भयानक भय उभरा; एक अथाह लाचारी, माता-पिता द्वारा जीवन को अपने हाथों में सौंप देना, इस जीवन को अंत तक जीना, शांति से जीना; उसके हृदय की गहराइयों में एक भयानक डर था। आज भी, अगर रिचर्ड वहाँ अखबार न पढ़ रहा होता, जिससे वह चिड़िया की तरह दुबक कर धीरे-धीरे होश में आ पाती, उस असीम आनंद को उमड़ते हुए, एक-एक चीज़ को रगड़ते हुए, वह मर ही जाती। लेकिन उस युवक ने आत्महत्या कर ली थी।
किसी न किसी तरह यह उसकी विपत्ति थी—उसकी बदनामी। यह उसकी सज़ा थी कि वह इस घोर अंधकार में कभी एक पुरुष को, कभी एक स्त्री को डूबते और गायब होते देखे, और खुद अपनी शाम की पोशाक में यहाँ खड़ी रहने के लिए विवश हो। उसने षड्यंत्र रचा था; उसने चोरी की थी। वह कभी पूरी तरह से प्रशंसनीय नहीं थी। वह सफलता चाहती थी। लेडी बेक्सबोरो और बाकी सब। और एक बार वह बॉर्टन के टैरेस पर चली थी।

यह सब रिचर्ड की वजह से था; वह इतनी खुश कभी नहीं हुई थी। कुछ भी धीमा नहीं हो सकता था; कुछ भी बहुत लंबा नहीं चल सकता था। कुर्सियाँ समेटते हुए, एक किताब को शेल्फ पर रखते हुए, उसने सोचा कि जवानी की खुशियों को पीछे छोड़ते हुए, जीवन की प्रक्रिया में खो जाने का जो आनंद उसे मिला, उसकी बराबरी कोई और खुशी नहीं कर सकती। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय, वह बॉर्टन में जब सब बातें कर रहे होते थे, तब आसमान को देखने चली जाती थी; या खाने के समय लोगों के कंधों के बीच से उसे देखती थी; लंदन में जब उसे नींद नहीं आती थी, तब भी उसे आसमान दिखाई देता था। वह खिड़की के पास चली गई।
यह विचार कितना भी मूर्खतापूर्ण क्यों न हो, इस आकाश में, वेस्टमिंस्टर के ऊपर के इस आकाश में, उसका अपना कुछ अंश था। उसने पर्दे हटाए; उसने देखा। ओह, कितना आश्चर्य!—सामने वाले कमरे में बैठी बुढ़िया सीधे उसकी ओर देख रही थी! वह सोने जा रही थी। और आकाश। उसने सोचा था कि यह एक गंभीर आकाश होगा, एक धुंधला आकाश होगा, जो सुंदरता में अपना चेहरा छुपाए हुए होगा। लेकिन यह वहाँ था—राख जैसा पीला, विशाल बादलों से तेज़ी से घिरा हुआ। यह उसके लिए नया था। हवा तेज़ हो गई होगी। वह सामने वाले कमरे में सोने जा रही थी। उसे देखना कितना दिलचस्प था, उस बुढ़िया को कमरे को पार करते हुए, खिड़की तक आते हुए देखना। क्या वह उसे देख सकती थी? ड्राइंग रूम में लोग अभी भी हंस रहे थे और चिल्ला रहे थे, ऐसे में उस बुढ़िया को चुपचाप सोने जाते देखना कितना दिलचस्प था। उसने अब पर्दा खींच दिया। घड़ी बजने लगी। उस युवक ने आत्महत्या कर ली थी; लेकिन उसे उस पर दया नहीं आई; घड़ी के एक, दो, तीन बजने के साथ, उसे उस पर दया नहीं आई, इन सब के बावजूद। देखो! बुढ़िया ने अपनी बत्ती बुझा दी थी! इस सब के चलते पूरा घर अंधेरा हो गया था, उसने दोहराया, और उसके मन में ये शब्द आए, अब सूरज की गर्मी से मत डरो। उसे उनके पास वापस जाना होगा। लेकिन कितनी अजीब रात थी! उसे किसी तरह खुद को उसके जैसा महसूस हो रहा था—उस नौजवान जैसा जिसने आत्महत्या कर ली थी। उसे खुशी थी कि उसने ऐसा किया; सब कुछ भुला दिया। घड़ी बज रही थी। सीसे के गोले हवा में घुल रहे थे। उसने उसे सुंदरता का एहसास कराया; उसे आनंद का एहसास कराया। लेकिन उसे वापस जाना होगा। उसे इकट्ठा होना होगा। उसे सैली और पीटर को ढूंढना होगा। और वह छोटे से कमरे से अंदर आई।

"लेकिन क्लेरिसा कहाँ है?" पीटर ने पूछा। वह सैली के साथ सोफे पर बैठा था। (इतने सालों बाद वह उसे "लेडी रॉसेटर" कहकर नहीं बुला सकता था।) "वह औरत कहाँ चली गई?" उसने पूछा। "क्लेरिसा कहाँ है?"
सैली और पीटर दोनों को लगता था कि कुछ महत्वपूर्ण लोग, राजनेता थे, जिन्हें वे दोनों अखबारों में तस्वीरों के अलावा नहीं जानते थे, जिनसे क्लैरिसा को अच्छा व्यवहार करना पड़ता था, उनसे बात करनी पड़ती थी। वह उनके साथ थी। फिर भी रिचर्ड डैलोवे कैबिनेट में नहीं थे। सैली को लगता था कि वे सफल नहीं हुए थे? खुद तो वह अखबार बहुत कम पढ़ती थी। कभी-कभार उनका नाम कहीं छपा होता था। लेकिन फिर—खैर, वह बहुत एकांत जीवन जीती थी, क्लैरिसा कहती थी, एकांत में, बड़े व्यापारियों, बड़े निर्माताओं के बीच, आखिरकार, उन लोगों के बीच जो काम करते थे। उसने भी काम किया था!
"मेरे पांच बेटे हैं!" उसने उससे कहा।
हे भगवान, हे भगवान, उसमें कितना बड़ा बदलाव आ गया था! मातृत्व की कोमलता; और साथ ही उसका अहंकार भी। पीटर को याद आया, पिछली बार जब वे मिले थे, तो चांदनी रात में फूलगोभी के बीच थे, पत्तियाँ "खुरदुरे कांसे जैसी" थीं, उसने अपने साहित्यिक अंदाज़ में कहा था; और उसने एक गुलाब तोड़ा था। उस भयानक रात में, फव्वारे के पास के दृश्य के बाद, वह उसे इधर-उधर घुमाती रही; उसे आधी रात की ट्रेन पकड़नी थी। हे भगवान, वह रो पड़ा था!
सैली ने सोचा, ये तो उसकी पुरानी चाल थी, जेब में रखा चाकू खोलना, जब भी वो उत्तेजित होता था तो चाकू खोलता-बंद करता रहता था। जब पीटर वॉल्श क्लैरिसा से प्यार करता था, तब सैली और पीटर वॉल्श बहुत करीब थे, और रिचर्ड डैलोवे को लेकर दोपहर के भोजन पर वो भयानक, हास्यास्पद घटना हुई थी। सैली ने रिचर्ड को "विकहम" कहकर पुकारा था। रिचर्ड को "विकहम" क्यों नहीं कहा? क्लैरिसा भड़क उठी थी! और सच में, उसके बाद से सैली और क्लैरिसा ने एक-दूसरे को कभी नहीं देखा था, शायद पिछले दस सालों में छह-सात बार ही मिले होंगे। पीटर वॉल्श भारत चला गया था, और सैली ने अस्पष्ट रूप से सुना था कि उसकी शादी नाखुशहाल रही थी, और उसे नहीं पता था कि उसके बच्चे हैं या नहीं, और वह उससे पूछ भी नहीं सकती थी, क्योंकि वो बदल गया था। वो थोड़ा मुरझाया हुआ सा दिखता था, लेकिन पहले से ज़्यादा दयालु था, सैली को लगा, और उसे उससे सच्चा स्नेह था, क्योंकि वो उसके बचपन से जुड़ा था, और उसके पास अभी भी

एमिली ब्रोंटे की एक छोटी सी किताब थी जो पीटर ने उसे दी थी, और उसे लिखना था, ज़रूर? उन दिनों में तो उसे लिखना ही था।
"क्या तुमने लिखा है?" उसने उससे पूछा, और अपना हाथ, अपना सुडौल और मजबूत हाथ, अपने घुटने पर उसी तरह फैलाया जैसा उसे याद था।
"बिल्कुल नहीं!" पीटर वाल्श ने कहा, और वह हंस पड़ी।
सैली सेटन अब भी आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली थीं। लेकिन ये रॉसेटर कौन थे? उन्होंने अपनी शादी के दिन दो कैमेलिया के फूल पहने थे— पीटर को उनके बारे में बस इतना ही पता था। "उनके पास अनगिनत नौकर हैं, मीलों लंबे संगीत कक्ष हैं," क्लैरिसा ने लिखा था; कुछ ऐसा ही। सैली ने ठहाके लगाकर इस बात को स्वीकार किया।
"हां, मेरी सालाना आय दस हजार है"—कर चुकाने से पहले या बाद में, उसे याद नहीं था, उसने अपने पति से कहा, "आपको किससे मिलना चाहिए," उसने कहा, "आप किसे पसंद करेंगे," उसने कहा, उसने उसके लिए ये सब किया।
और सैली पहले फटे-पुराने कपड़ों में रहती थी। उसने अपनी दादी की अंगूठी गिरवी रख दी थी, जो मैरी एंटोनेट ने उसके परदादा को बोर्टन आने के लिए दी थी।
ओह हाँ, सैली को याद आया; उसके पास अभी भी वह माणिक की अंगूठी थी जो मैरी एंटोनेट ने उसके परदादा को दी थी। उन दिनों उसके पास एक पैसा भी नहीं होता था, और बॉर्टन जाना हमेशा उसके लिए एक भयानक तंगी का कारण बनता था। लेकिन बॉर्टन जाना उसके लिए बहुत मायने रखता था—उसे लगता था कि बॉर्टन ने ही उसे मानसिक रूप से स्वस्थ रखा था, क्योंकि वह घर पर बहुत दुखी रहती थी। लेकिन वह सब अतीत की बात थी—अब सब खत्म हो चुका था, उसने कहा। और मिस्टर पैरी मर चुके थे; और मिस पैरी अभी भी जीवित थीं। पीटर ने कहा, "उन्हें अपने जीवन में इतना बड़ा झटका कभी नहीं लगा था!" उन्हें पूरा यकीन था कि वह मर चुकी हैं। और सैली को लगता था कि शादी सफल रही थी? और वह बहुत ही सुंदर, बहुत ही आत्मविश्वासी युवती एलिजाबेथ थी, जो वहाँ पर्दों के पास लाल रंग की पोशाक में खड़ी थी।
(विली टिटकॉम्ब सोच रहा था, वह चिनार के पेड़ जैसी थी, नदी जैसी थी, जलकुंभी जैसी थी। कितना अच्छा होता अगर वह गाँव में होती और अपनी मनपसंद चीजें करती! एलिजाबेथ को यकीन था कि वह अपने बेचारे कुत्ते के भौंकने की

आवाज़ सुन सकती थी।) पीटर वॉल्श ने कहा, वह क्लैरिसा जैसी बिल्कुल नहीं थी।
"ओह, क्लैरिसा!" सैली ने कहा।
सैली के मन में बस यही बात थी। वह क्लैरिसा की बहुत ऋणी थी। वे दोस्त थीं, सिर्फ़ जान-पहचान वाली नहीं, सच्ची दोस्त। आज भी उसे क्लैरिसा सफ़ेद कपड़ों में घर में फूलों से भरे हाथों के साथ घूमती हुई याद आती थी— तंबाकू के पौधे आज भी उसे बॉर्टन की याद दिलाते थे। लेकिन—क्या पीटर समझता था?—उसमें कुछ कमी थी। किस चीज़ की कमी थी? उसमें आकर्षण था; असाधारण आकर्षण था। लेकिन सच कहूँ तो (और उसे लगता था कि पीटर उसका पुराना दोस्त था, सच्चा दोस्त—क्या दूरी मायने रखती है? क्या फासला मायने रखता है? वह अक्सर उसे पत्र लिखना चाहती थी, लेकिन फाड़ देती थी, फिर भी उसे लगता था कि वह समझता है, क्योंकि लोग बिना कहे ही समझ जाते हैं, जैसे-जैसे इंसान बूढ़ा होता जाता है, और वह बूढ़ी हो चुकी थी, उस दोपहर अपने बेटों को ईटन में देखने गई थी, जहाँ उन्हें गलसुआ हो गया था), सच कहूँ तो, क्लैरिसा ने ये सब कैसे किया?—रिचर्ड डैलोवे से शादी कर ली? एक खिलाड़ी, एक ऐसा आदमी जिसे सिर्फ़ कुत्तों से प्यार था। सचमुच, जब वह कमरे में आता था तो उससे अस्तबल की गंध आती थी। और फिर ये सब? उसने हाथ हिलाया।
वह ह्यू व्हिटब्रेड था, जो अपनी सफेद जैकेट पहने टहल रहा था, धुंधला, मोटा, अंधा, अपनी नजरों से ओझल होकर, सिवाय आत्मसम्मान और आराम के।
"वह हमें पहचान नहीं पाएगा," सैली ने कहा, और सच में उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी—तो वह ह्यूग था! प्रशंसनीय ह्यूग!
"और वह क्या करता है?" उसने पीटर से पूछा।
पीटर ने उसे बताया कि वह राजा के जूते पॉलिश करता था या विंडसर में बोतलें गिनता था। पीटर ने अपनी तीखी जुबान पर लगाम लगाई! लेकिन सैली को खुलकर बोलना होगा, पीटर ने कहा। अब ह्यूग का वो चुंबन।
उसने यकीन दिलाया कि एक शाम स्मोकिंग रूम में उसके होंठों पर ऐसा हुआ था। वह गुस्से में सीधे क्लैरिसा के पास गई। क्लैरिसा ने कहा, ह्यूग ऐसी हरकतें नहीं करता! हे भगवान! ह्यूग के मोज़े तो उसने आज तक जितने भी देखे थे, उनमें सबसे खूबसूरत थे—और अब उसकी शाम की पोशाक भी। एकदम सही! और क्या उसके बच्चे भी थे?

"इस कमरे में मौजूद हर किसी के छह बेटे ईटन में पढ़ते हैं," पीटर ने उससे कहा, सिवाय खुद के। भगवान का शुक्र है, उसका कोई बेटा नहीं था। न बेटे, न बेटियाँ, न पत्नी। खैर, उसे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, सैली ने कहा। उसे लगा कि वह उन सभी से ज़्यादा जवान दिखता था।
लेकिन पीटर ने कहा कि इस तरह शादी करना कई मायनों में मूर्खतापूर्ण था; "वह बिल्कुल बेवकूफ थी," उसने कहा, लेकिन, उसने कहा, "हमने खूब मज़े किए," लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है? सैली सोच रही थी; उसका क्या मतलब था? और उसे जानते हुए भी उसके बारे में एक भी बात न जानना कितना अजीब था। और क्या उसने यह घमंड से कहा था? शायद, क्योंकि आखिरकार यह उसके लिए कष्टदायक रहा होगा (हालाँकि वह एक अनोखा, एक शरारती सा इंसान था, बिल्कुल भी साधारण आदमी नहीं), इस उम्र में बिना घर के, कहीं जाने की जगह न होना कितना अकेलापन भरा होगा। लेकिन उसे हफ़्तों तक उनके साथ रहना ही था। बेशक वह रहता; उसे उनके साथ रहना अच्छा लगता, और यही बात सामने आई। इतने सालों में डैलोवेज़ कभी नहीं आए थे। बार-बार उन्होंने उनसे पूछा था। क्लैरिसा (ज़ाहिर है, क्लैरिसा ही थी) नहीं आती थी। क्योंकि, सैली ने कहा, क्लैरिसा दिल से घमंडी थी—मानना ही पड़ेगा, घमंडी। और यही बात उन दोनों के बीच थी, उसे पूरा यकीन था। क्लैरिसा सोचती थी कि उसने अपने से कम दर्जे के व्यक्ति से शादी की है, क्योंकि उसका पति—जिस पर उसे गर्व था—एक खनिक का बेटा था। उनके पास जो भी पैसा था, वह उसने खुद कमाया था। बचपन में (उसकी आवाज़ कांप रही थी) वह बड़े- बड़े बोरे ढोता था।
(पीटर को लगा कि वह घंटों तक यही सब करती रहेगी; खनिक का बेटा; लोग सोचते थे कि उसने अपने से नीच दर्जे के आदमी से शादी की है; उसके पाँच बेटे; और एक और बात—पौधे, हाइड्रेंजिया, सिरिंगा, बेहद दुर्लभ हिबिस्कस लिली जो स्वेज नहर के उत्तर में कभी नहीं उगतीं, लेकिन मैनचेस्टर के पास एक उपनगर में एक माली के साथ उसने उनके क्यारियां बना रखी थीं, सचमुच क्यारियां! अब क्लैरिसा इन सब चीजों से बच निकली थी, क्योंकि उसमें मातृत्व की भावना बिल्कुल नहीं थी।)
क्या वह घमंडी थी? हाँ, कई मायनों में। वह इतने समय से कहाँ थी? काफी देर हो चुकी थी।
“फिर भी,” सैली ने कहा, “जब मैंने सुना कि क्लैरिसा पार्टी दे रही है, तो मुझे लगा कि मैं आए बिना नहीं रह सकती—मुझे उससे दोबारा मिलना ही है (और

मैं विक्टोरिया स्ट्रीट में रह रही हूँ, बिल्कुल बगल में)। इसलिए मैं बिना निमंत्रण के ही आ गई। लेकिन,” उसने फुसफुसाते हुए कहा, “बताओ, बताओ। ये कौन है?”
श्रीमती हिलबेरी दरवाज़ा ढूंढ रही थीं। कितनी देर हो चुकी थी! और, उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, जैसे-जैसे रात बढ़ती गई, लोग आते-जाते रहे, पुराने दोस्त मिलते गए; शांत कोने और खूबसूरत नज़ारे। क्या उन्हें पता था, उन्होंने पूछा, कि वे एक जादुई बगीचे से घिरे हुए हैं? रोशनी, पेड़, अद्भुत चमकती झीलें और आसमान। क्लेरिसा डैलोवे ने कहा था, पीछे के बगीचे में बस कुछ जादुई दीपक हैं! लेकिन वह तो जादूगरनी थी! यह एक पार्क था…। और वह उनके नाम नहीं जानती थी, लेकिन वह जानती थी कि वे दोस्त थे, बिना नाम के दोस्त, बिना शब्दों के गीत, हमेशा सबसे अच्छे। लेकिन इतने सारे दरवाजे थे, इतनी अनपेक्षित जगहें थीं, कि वह अपना रास्ता नहीं ढूंढ पा रही थी।
"बूढ़ी श्रीमती हिलबेरी," पीटर ने कहा; लेकिन वह कौन थी? वह महिला जो पूरी शाम पर्दे के पास चुपचाप खड़ी रही? वह उसका चेहरा जानता था; उसे बॉर्टन से जोड़कर देखा। क्या वह खिड़की के पास वाली बड़ी मेज पर अंडरवियर काटती थी? क्या उसका नाम डेविडसन था?
"ओह, यह एली हेंडरसन है," सैली ने कहा। क्लैरिसा उसके साथ बहुत सख्ती से पेश आती थी। वह चचेरी बहन थी, बहुत गरीब थी। क्लैरिसा लोगों के साथ बहुत कठोर व्यवहार करती थी।
पीटर ने कहा, "हाँ, वह कुछ हद तक वैसी ही थी।" सैली ने अपने भावुक अंदाज़ में, उस उत्साह के साथ कहा, जिसके लिए पीटर उसे प्यार करता था, लेकिन अब थोड़ा डरता भी था, क्योंकि वह बहुत ज़्यादा भावुक हो सकती थी—क्लैरिसा अपने दोस्तों के प्रति कितनी उदार थी! और यह कितना दुर्लभ गुण था, और कैसे कभी-कभी रात में या क्रिसमस के दिन, जब वह अपनी खुशियों को गिनती थी, तो वह उस दोस्ती को सबसे पहले रखती थी। वे जवान थे; बस यही बात थी। क्लैरिसा पवित्र हृदय की थी; बस यही बात थी। पीटर उसे भावुक समझता। और वह थी भी। क्योंकि उसे लगने लगा था कि कहने लायक एकमात्र चीज़ है - जो मन में हो। चालाकी करना मूर्खता है। जो मन में हो, वही कहना चाहिए।
"लेकिन मुझे नहीं पता," पीटर वाल्श ने कहा, "कि मैं क्या महसूस करता हूं।"

बेचारा पीटर, सैली ने सोचा। क्लैरिसा आकर उनसे बात क्यों नहीं कर रही? वह तो यही तो चाहता था। वह यह बात जानती थी। वह हर समय सिर्फ क्लैरिसा के बारे में सोच रहा था और अपनी चाकू से खेल रहा था।
पीटर ने कहा कि उसे जीवन सरल नहीं लगा था। क्लैरिसा के साथ उसके संबंध सरल नहीं थे। उसने कहा कि इसने उसका जीवन बर्बाद कर दिया था। (वे इतने घनिष्ठ थे—वह और सैली सेटन, यह कहना गलत नहीं होगा।) उसने कहा कि कोई दो बार प्यार नहीं कर सकता। और वह क्या कह सकती थी? फिर भी, प्यार करना बेहतर है (लेकिन वह उसे भावुक समझेगा—वह पहले बहुत समझदार हुआ करता था)। उसे मैनचेस्टर आकर उनके साथ रहना चाहिए। उसने कहा, यह सब बिल्कुल सच है। बिल्कुल सच। लंदन में अपना काम पूरा करने के बाद वह उनके साथ आकर रहना चाहेगा।
और क्लैरिसा ने रिचर्ड की तुलना में उससे कहीं अधिक प्यार किया था। सैली को इस बात का पूरा यकीन था।
"नहीं, नहीं, नहीं!" पीटर ने कहा (सैली को ऐसा नहीं कहना चाहिए था—वह हद से ज़्यादा बोल गई थी)। वह भले आदमी—कमरे के कोने में, हमेशा की तरह, अपने प्यारे रिचर्ड से बातें कर रहे थे। सैली ने पूछा, वह इतने प्रतिष्ठित दिखने वाले आदमी से कौन बात कर रहे थे? जंगल में रहने के कारण, लोगों के बारे में जानने की उनकी जिज्ञासा कभी खत्म नहीं होती थी। लेकिन पीटर को नहीं पता था। उसने कहा कि उसे उनका चेहरा पसंद नहीं आया, शायद कोई कैबिनेट मंत्री होगा। उसने कहा कि उन सब में, रिचर्ड उसे सबसे अच्छा लगता था—सबसे निस्वार्थ।
"लेकिन उसने क्या किया है?" सैली ने पूछा। उसने सोचा, जनसेवा। और क्या वे साथ में खुश थे? सैली ने पूछा (वह खुद बेहद खुश थी); क्योंकि उसने माना कि वह उनके बारे में कुछ नहीं जानती थी, बस अंदाजे लगाती थी, जैसा कि अक्सर होता है, आखिर कोई उन लोगों के बारे में भी क्या जान सकता है जिनके साथ वह हर दिन रहता है? उसने पूछा। क्या हम सब कैदी नहीं हैं? उसने एक अद्भुत नाटक पढ़ा था जिसमें एक आदमी अपनी कोठरी की दीवार पर खरोंचता था, और उसे लगा कि यह जीवन की सच्चाई है—कोई दीवार पर खरोंचता है। मानवीय रिश्तों से निराश होकर (लोग बहुत मुश्किल होते हैं), वह अक्सर अपने बगीचे में जाती और अपने फूलों से वह शांति पाती जो उसे कभी पुरुषों और महिलाओं से नहीं मिली। लेकिन नहीं; उसे पत्तागोभी पसंद नहीं थी; उसे इंसान पसंद थे, पीटर ने कहा।

वाकई, युवा सुंदर होते हैं, सैली ने एलिजाबेथ को कमरे के उस पार जाते हुए देखकर कहा। अपनी उम्र में क्लैरिसा से कितनी अलग! क्या वह उसे कुछ बना सकता था? वह अपने होंठ नहीं खोलना चाहती थी। ज्यादा नहीं, अभी नहीं, पीटर ने माना। वह एक लिली की तरह थी, सैली ने कहा, एक तालाब के किनारे खिली लिली। लेकिन पीटर इस बात से सहमत नहीं था कि हम कुछ नहीं जानते। उसने कहा, हम सब कुछ जानते हैं; कम से कम वह तो यही मानता था।
लेकिन ये दोनों, सैली ने फुसफुसाते हुए कहा, ये दोनों जो अभी आ रहे हैं (और वास्तव में उसे जाना ही होगा, अगर क्लैरिसा जल्दी नहीं आई), यह प्रतिष्ठित दिखने वाला आदमी और उसकी साधारण दिखने वाली पत्नी जो रिचर्ड से बात कर रही थी—ऐसे लोगों के बारे में कोई क्या जान सकता है?
"ये तो बिलकुल धूर्त हैं," पीटर ने उनकी तरफ देखते हुए कहा। उसकी बात सुनकर सैली हंस पड़ी।
लेकिन सर विलियम ब्रैडशॉ एक तस्वीर देखने के लिए दरवाजे पर रुक गए। उन्होंने कोने में उत्कीर्णक का नाम ढूंढा। उनकी पत्नी ने भी देखा। सर विलियम ब्रैडशॉ कला में बहुत रुचि रखते थे।
पीटर ने कहा, जब जवानी थी, तो लोगों से मिलने-जुलने का बहुत उत्साह था। अब जब बुढ़ापा आ गया था, ठीक बावन साल का (सैली ने कहा कि वह शारीरिक रूप से पचपन साल की थी, लेकिन उसका दिल बीस साल की लड़की जैसा था); पीटर ने कहा, अब जब परिपक्वता आ गई थी, तो वह देख सकता था, समझ सकता था, और उसकी भावनाओं की शक्ति कम नहीं हुई थी। नहीं, यह सच है, सैली ने कहा। वह हर साल और गहराई से, और जोश से महसूस करती थी। उसने कहा, यह बढ़ता गया, अफसोस, शायद, लेकिन हमें इस पर गर्व करना चाहिए—उसके अनुभव में यह बढ़ता ही जा रहा था। भारत में कोई थी। वह सैली को उसके बारे में बताना चाहता था। वह चाहता था कि सैली उसे जाने। उसने कहा, वह शादीशुदा थी। उसके दो छोटे बच्चे थे। सैली ने कहा, उन सबको मैनचेस्टर आना होगा—जाने से पहले उसे वादा करना होगा।
उन्होंने कहा, "ये लो एलिजाबेथ, उसे अभी उतना महसूस नहीं हो रहा जितना हमें हो रहा है।" लेकिन सैली ने एलिजाबेथ को अपने पिता के पास जाते हुए देखकर कहा, "ये दोनों एक-दूसरे के प्रति समर्पित हैं। एलिजाबेथ जिस तरह से अपने पिता के पास गई, उससे सैली को यह महसूस हो गया।"
उसके पिता ब्रैडशॉ परिवार से बात करते हुए उसे देख रहे थे और मन ही मन सोच रहे थे, "ये प्यारी लड़की कौन है?" अचानक उन्हें एहसास हुआ कि ये उनकी

एलिज़ाबेथ है, और उन्होंने उसे पहचाना नहीं था, वो अपनी गुलाबी फ्रॉक में कितनी प्यारी लग रही थी! एलिज़ाबेथ को भी महसूस हुआ कि जब वो विली टिटकॉम्ब से बात कर रही थी, तब उसके पिता उसे देख रहे थे। इसलिए वो उनके पास गई और पार्टी लगभग खत्म हो चुकी थी, इसलिए वे दोनों साथ खड़े होकर जाते हुए लोगों को देख रहे थे, और कमरे धीरे-धीरे खाली होते जा रहे थे, फर्श पर सामान बिखरा पड़ा था। एली हेंडरसन भी जा रही थी, लगभग सबसे आखिर में, हालाँकि किसी ने उससे बात नहीं की थी, लेकिन वो सब कुछ देखना चाहती थी, एडिथ को बताना चाहती थी। रिचर्ड और एलिज़ाबेथ को खुशी थी कि पार्टी खत्म हो गई, लेकिन रिचर्ड को अपनी बेटी पर गर्व था। उनका इरादा उसे बताने का नहीं था, लेकिन वो खुद को रोक नहीं पाए। उन्होंने कहा कि उन्होंने उसे देखा और सोचा, "ये प्यारी लड़की कौन है?" और ये उनकी बेटी थी! इससे एलिज़ाबेथ को बहुत खुशी हुई। लेकिन उसका बेचारा कुत्ता भौंक रहा था।
"रिचर्ड में सुधार हुआ है। आप सही कह रही हैं," सैली ने कहा। "मैं जाकर उससे बात करती हूँ। मैं उसे शुभ रात्रि कहूँगी। दिल के सामने दिमाग का क्या महत्व है?" लेडी रॉसेटर उठते हुए बोलीं।
"मैं आऊंगा," पीटर ने कहा, लेकिन वह एक पल के लिए वहीं बैठा रहा। यह कैसा भय है? यह कैसा परमानंद है? उसने मन ही मन सोचा। आखिर ऐसी कौन सी बात है जो मुझे इतनी असाधारण उत्तेजना से भर देती है?
उन्होंने कहा, यह क्लैरिसा है।
क्योंकि वह वहीं थी।

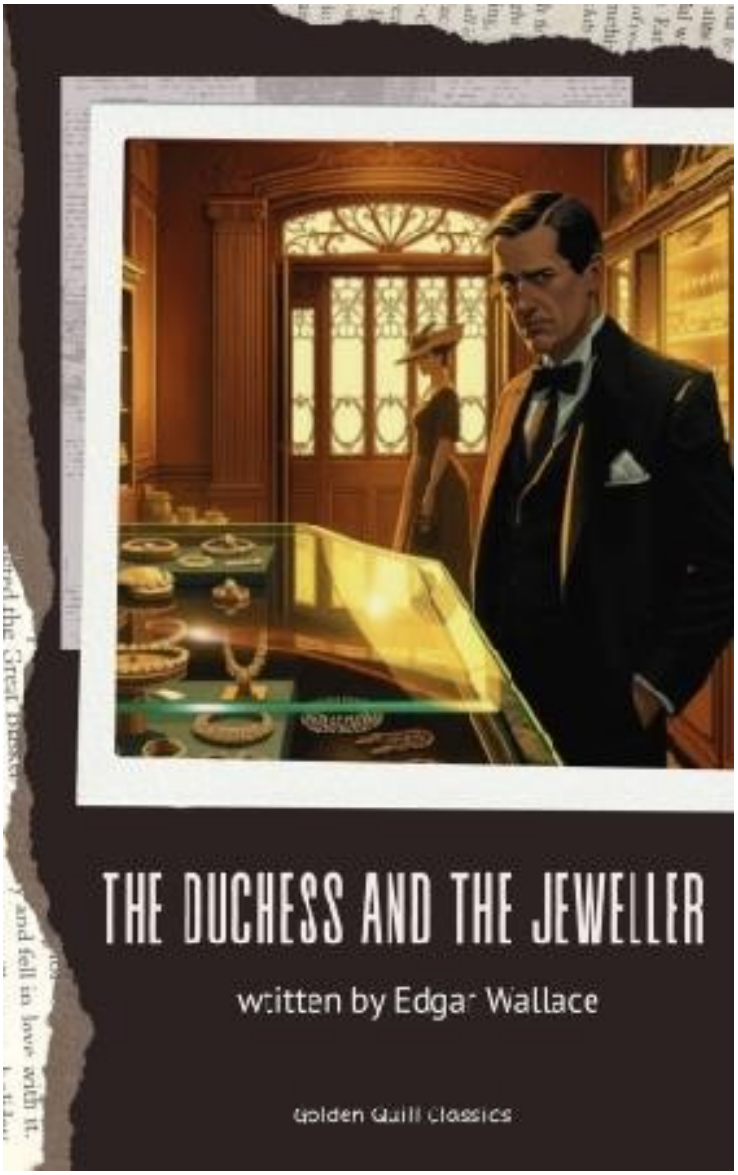

□□□□ □□ □□□□□

□□□□□, □□□□□□□□□□

9782387170507

20

□□□ □□□□□ □□□□ □□□□! (□□□□□□□□□)

□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ '□ □□□□ □□□ □ □□□□□□' (1938) □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□, □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□

□□□□ □□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□— □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□—□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□, □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□ □ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □ "□□□ □□□□□□" □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□ □□□□□ □□□□ □□□□! (□□□□□□□□□)

बाल साहित्य – खंड III
ऑस्टेन, जेन
9782387171146
74

अभी पढ़ना शुरू करें! (विज्ञापन)
साहित्य जगत की महान हस्ती बनने से पहले, जेन ऑस्टेन एक किशोरी थीं, जिनमें तीक्ष्ण बुद्धि और निडर कलम थी। जुवेनिलिया – वॉल्यूम III जेन ऑस्टेन की प्रारंभिक रचनाओं का संग्रह है, जिसमें उनकी युवावस्था में रचित चंचल कहानियाँ, रेखाचित्र और अंश शामिल हैं। ये रचनाएँ हास्य, व्यंग्य और कल्पनाशीलता से भरपूर हैं—यह इस बात का प्रमाण है कि उनकी प्रतिभा उनकी

□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□, □□□□□□□□□□□ – □□□□□□□□ III □ □□□□ □□□□□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□—□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □ "□□□ □□□□□□□" □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□

□□□ □□□□□ □□□□ □□□□! (□□□□□□□□□)

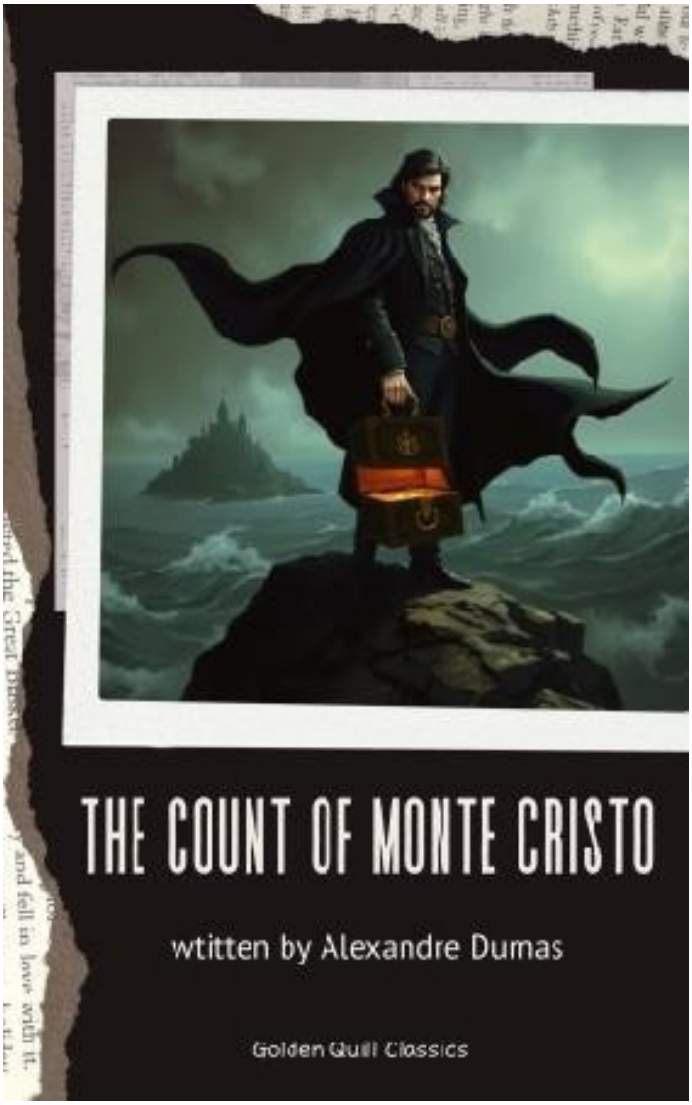
THE COUNT OF MONTE CRISTO
wtitten by Alexandre Dumas
Golden Quill Classics

□□□□□□□□

□□□□□□□□□□ □□□□□

9782387170095

1085

□□□ □□□□□ □□□□ □□□□! (□□□□□□□□□)

□□□□□□□□□□, □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□—□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ '□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□' □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□, □□□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□, □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□ □□□□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ '□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□' □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □ "□□□ □□□□□□" □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□

□□□ □□□□□ □□□□ □□□□! (□□□□□□□□□)

□□□□ □□□□□ □□ □□□□□

□□□□□□□□□, □□□□□
9782387170026
277

□□□ □□□□□ □□□□ □□□□! (□□□□□□□□□)

□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ '□ □□□□□□□□ □□ □ □□□□ □□□□□' □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□, □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□: □□ □□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□,

[illegible]

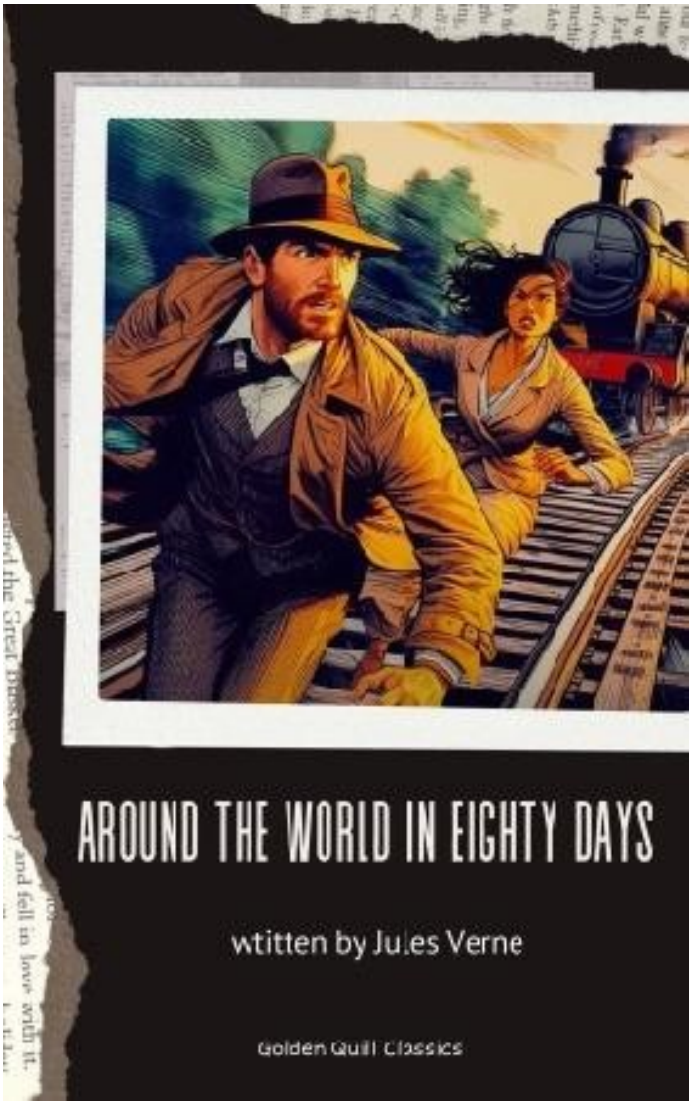

अस्सी दिनों में दुनिया भर की यात्रा

वर्न, जूल्स
9782387170194
108

अभी पढ़ना शुरू करें! (विज्ञापन)
एक शर्त। एक तूफानी सफर। समय के खिलाफ एक साहसिक चुनौती। जूल्स वर्न द्वारा लिखित 'अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज़' साहस, सूझबूझ और दृढ़ संकल्प का एक कालातीत उपन्यास है जिसने एक सदी से भी अधिक समय से पाठकों को रोमांचित किया है। कहानी एक अविचलित अंग्रेज सज्जन फिलियास फॉग की है, जो अपनी सारी संपत्ति दांव पर लगा देता है कि वह मात्र अस्सी दिनों में पूरी

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□, □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□: □□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□, □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ 19 □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□, '□□□□□□ □ □□□□□□ □□ □□□ □□□□' □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □ "□□□ □□□□□□" □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□
□□□ □□□□□ □□□□ □□□□! (□□□□□□□□)